अमरीका

मुक्ति-मार्ग

अमरीका के प्रसिद्ध उपन्यासकार हावर्डफास्ट के विश्व-विख्यात
उपन्यास फ्रीडम रोड (Freedom Road)
का हिन्दी रूपान्तर

अनुवादक
नूर नबी अब्बासी

सम्पादक
यज्ञदत्त शर्मा

साहित्य प्रकाशन, दिल्ली

प्रकाशक
साहित्य प्रकाशन
दिल्ली

मूल्य छः रुपये

मुद्रक
विश्व भारती प्रेस,
पहाड़गंज, नई दिल्ली

लेखक-परिचय

अमरीका में ऐतिहासिक उपन्यासों में सुधार करने अकेले ही हावर्ड फास्ट चले थे और अपने इस कार्य में वह पूरी तरह सफल उतरे। जनता से उन्हें अपार रुचि है,—चाहे वह जीवित हो या कभी की इतिहास के पृष्ठों पर पहुँच गई हो। इस रुचि और उनकी ऐतिहासिक खोज के सामंजस्य ने ही हमें 'लास्ट फ्रंटियर,' 'दि अनवैंक्विश्ड' और 'सिटिज़न टॉम पेन' जैसी पुस्तकें प्रदान की हैं।

११ नवम्बर १९१४ को न्यूयार्क शहर में हार्वर्ड फास्ट का जन्म हुआ था। उसी शहर में वह एक स्कूल में दाखिल हो गये। लेकिन वह कॉलेज में पढ़ना नहीं चाहते थे। इसलिए घर से भाग निकले और कुछ काम की तलाश में दक्षिण पहुँचे। शीघ्र ही जब उन्हें न्यूयार्क लौटना पड़ा तो उनकी जेब में एक सेण्ट भी न था। उसके बाद नेशनल एकडेमी आफ डिज़ाइन में दाखिल हो गये, लेकिन दो वर्ष बाद वहाँ से भी यह निष्कर्ष निकाल कर कि वह कलाकार कभी नहीं बन सकते, चले आये। तब से जीविकोपार्जनार्थ उन्हें सब कुछ करना पड़ा और अमरीका के हर स्थान पर जाना पड़ा है। रोज़ी के अलावा वह अपना लेखन-र्य भी करते रहे और उनका पहला उपन्यास 'टू वैलीज़' जो क्रांतिकारी युद्ध के ऽ के दिनों की अमरीकी सरहद की कहानी है, १९३३ में प्रकाशित हुआ। । से उन्होंने लिखना ही अपने जीवन का लक्ष्य बना लिया। वह बड़े ही तभाशाली लेखक हैं। ऐतिहासिक उपन्यासों के अतिरिक्त उन्होंने बच्चों के ए भी कुछ साहित्य लिखा है जिसका यथेष्ट स्वागत हुआ। उन्हीं के शब्दों में उनके शौक़ हैं—"लिखना, 'ब्रिज' खेलना, निश्चिंत रहना, पहाड़ पर चढ़ना, अमरीकी क्रान्ति, बातचीत, मछली का शिकार, मद्य-पान, चित्रकारी और खाना।"

इनके अन्य ऐतिहासिक उपन्यास जिन्होंने इनकी बहुमुखी प्रतिभा और

प्रकाशक

(ख)

असाधारण सूझ बूझ का परिचय दिया है, ये हैं—'दि प्राउड एण्ड दि फ्री,' 'स्पार्टाकस,' 'दि पैशन आफ सैक्को एण्ड विंजेटी'। अंतिम उपन्यास उनका ताज़ा उपन्यास है जिसमें रोंगटे खड़े कर देने वाली घटना बड़े गहरे प्रभाव के साथ चित्रित की गई है। हावर्ड फास्ट उन प्रगतिशील लेखकों में से एक हैं जिनकी लोकप्रिय पुस्तकों को अमरीका की कुख्यात 'अन अमेरिकन सक्टीविटीज़ कमेटी' ने जला दिया है और उन जली हुई पुस्तकों में ही 'फ्रीडम रोड' एक महत्त्वपूर्ण पुस्तक है जिसका यह हिन्दी-अनुवाद है।

भूमिका

अपने उपन्यास 'फ्रीडम रोड' के हिंदी संस्करण के लिए यह भूमिका लिखते हुए मुझे अत्यन्त हर्ष हो रहा है। इसका केवल यही अर्थ नहीं कि यह पुस्तक अब एक ऐसी भाषा में प्राप्त हो सकेगी जो एक प्राचीन एवं समृद्ध संस्कृति के करोड़ों लोगों की भाषा है, बल्कि इससे भी अधिक महत्त्व की बात यह है कि इसके द्वारा यहाँ अमरीका में हमारे संघर्ष का नाता आपके संघर्ष से जुड़ सकेगा। 'फ्रीडम रोड' अमरीका की अल्पसंख्यक महान् जनता—नीग्रो-जनता—के इतिहास के एक अत्यन्त महान् एवं शोकपूर्ण चरण की कहानी है। जब से यह लिखी गई है अब तक इसका संसार की लगभग प्रत्येक भाषा में अनुवाद हो चुका है और संसार में सभी जगह औपनिवेशिक जनता द्वारा बड़ी एकरूपता और प्रेम के साथ यह पढ़ी गई है। इसके द्वारा अब मैं यह और भी अच्छी तरह समझ गया हूँ कि उपनिवेशवाद की समस्या, लाभ के लिए लाखों लोगों के शोषण की समस्या सही मानों में हमारी अपनी ही समस्या है .... यह एक ऐसा फोड़ा है जो स्वयं हमारे राष्ट्र में भी पक रहा है और दुनिया के दूसरे देशों में भी। गत नौ वर्षों से अमरीका में हम लोग जो अपने आपको प्रगतिशील समझते हैं, जो शांति से प्यार करते हैं, जन-वाद का आदर करते हैं और जो युद्ध और फासिज़्म से घृणा करते हैं, पुलिस के दमनकारी राज्य में रह रहे हैं। पहले से कहीं ज्यादा गहराई के साथ हम आज हर जगह की औपनिवेशिक जनता को विपदाएँ, अपमान और शानदार वीरता को समझ गये हैं और एक तरह से उनका और हमारा अनुभव एक ही रहा है।

गत कई वर्षों में हमने हिन्दुस्तान की जनता को शान्ति और भविष्य के दृढ़ समर्थकों के रूप में उठते हुए देखा है और हमने हिन्दुस्तानी जनता की आवाज़ सुनी है जो शान्ति और मानवता के लिए बुलंद और स्पष्ट आवाज़ है। क्यों न फिर यह पुस्तक हिन्दुस्तान की और हमारी जनता के बीच एक कड़ी बने और उन भावी सम्बन्धों का श्रीगणेश करे जो किसी दिन और निकट के व स्थायी बन जायेंगे .... और उस समय दुनिया की सारी जनता भाई चारे के साथ मिल-जुलकर रहेगी.

हावर्ड फास्ट

समर्पण

उन काले, गोरे, पीले और साँवले पुरुषों व स्त्रियों को जिन्होंने
फासिस्टवाद के विरुद्ध संघर्ष में अपने जीवन बलिदान कर दिये ।

उपक्रम

युद्ध समाप्त होगया और नीली वर्दियाँ पहने सिपाही अपने घरों को वापस लौटे। यह अपने समय का सबसे लंबा और खूनी संघर्ष तथा संसार का सबसे महान् जन-युद्ध था। उदासीन, घायल और व्याकुल सिपाहियों ने विस्मय से इधर-उधर दृष्टि दौड़ायी और अपने उजाड़ खेतों को देखकर वे यह समझ गये कि युद्ध के परिणाम क्या होते हैं।

जनरल ली ने अपोमेटॉक्स के कोर्ट-हाउस में हथियार डाल दिये और फिर सब कुछ समाप्त होगया। दक्षिण के उष्ण-प्रदेशों में निवास करनेवाले चालीस लाख काले हब्शी गुलाम स्वतंत्र हो गये। यह स्वतंत्रता कितनी कठिनता से प्राप्त हुई और कितनी मूल्यवान् थी, इसका अनुमान तो युद्ध की कठिनाइयों और बलिदानों से ही लगाया जा सकता है।

स्वतंत्र मनुष्य अपने अतीत के बारे में भी सोचता है और अपने भविष्य की भी कल्पना करता है। दोनों ही उसके जीवन के अभिन्न अङ्ग हैं। परन्तु अब जहाँ यह बात है कि यदि वह भूखा हो तो उसका कोई मालिक नहीं है, जो उसे एक समय भोजन दे दे; परन्तु इसके साथ ही यह भी है कि वह अपनी इच्छा से चाहे जो भी करे, उसे टोकनेवाला कोई न हो।

युद्ध की समाप्ति के समय प्रजातंत्र के सिपाहियों में काले हब्शियों की संख्या दो लाख तक पहुँच चुकी थी। ये लोग अपने हाथों में फ़ौजी बन्दूकें लिए अपने घरों को वापस लौटे। गिडियन जैक्सन भी इनमें से एक है—एक लंबे कद का हृष्ट-पुष्ट और वृद्ध आदमी। वह आज कैरोलिना की भूमि पर कार्वेल के खेत में अपने घर वापस आया है। उसके शरीर पर थकावट के चिह्न हैं। हाथ में एक बंदूक है और उसकी नीली वर्दी का रंग फीका पड़ चुका है। सफेद दीवारोंवाली बड़ी इमारत अब भी बिल्कुल वैसी ही है जैसी वह उसे छोड़कर गया था। युद्ध ने उसे कोई क्षति नहीं पहुँचायी। लेकिन बाग और खेत अब वे नहीं हैं, जो

थे। उसके स्थान पर जंगल और झाड़-झंखाड़ के मैदान नजर आते हैं। परिवार वहाँ से चला गया; न मालूम कहाँ। हाल ही में आजाद हुए लोग पर गुलामों के पुराने कैम्पों या झोंपड़ियों में उन लोगों के साथ जिंदगी बस लगे जो कभी कार्वेल को छोड़कर कहीं गये ही नहीं थे।

जैसे-जैसे महीने गुजरते गये ये नये आजाद लोग अधिकाधिक संख्या में के शीत प्रदेशों से आने लगे; जहाँ वे स्वतन्त्रता की खोज में गये थे। यूनि सेना की पाँतों से, देवदार के जंगलों तथा निर्जन दलदली प्रदेशों में स्थित गुप्त स्थानों से निकल-निकलकर वे कार्वेल की जमीन पर आबाद होने लगे नया जीवन प्रारंभ करते समय उन्हें इस बात पर आश्चर्य हो रहा था कि स्वतंत्र हैं।

मुक्ति-मार्ग

मतदान

: १ :

नवंबर का महीना था। कुछ-कुछ सर्दी पड़ रही थी। प्रातःकाल कौओं के शोर से रैचल जल्द ही जाग उठी। लेकिन पुरानी चादर को उसने अपनी गर्दन तक खींच लिया और बिस्तर पर लेटी हुई कौओं के गीत सुनती रही। जेनी उसके सीने से लगी सो रही थी; जिससे रैचल के शरीर का वह भाग अपेक्षाकृत कुछ गरम हो गया था। दूर से कौओं के बोलने की ध्वनि आ रही थी—काँव, काँव, काँव। यह एक उदासीन ध्वनि ही सही, किन्तु दुःखप्रद नहीं थी और विशेषतया रैचल-जैसी स्त्री के लिए तो वह बिल्कुल ही दुःखप्रद नहीं थी। वह तो इस ध्वनि को प्रायः सूर्योदय तक सुनती रहती थी। दिन चाहे अच्छा हो या बुरा—लेकिन कौओं को इससे क्या? उनके लिए तो सब कुछ एक समान था।

उसके सीने से लगी हुई बच्ची कुनमुनाई और रैचल ने मन्द स्वर में कहा, "लेटी रहो, मेरी बच्ची! चुपचाप आराम से, सुनो; बूढ़े कौए कितना अच्छा गाते हैं।"

लेकिन अब दिन चढ़ चुका था और प्रकाश को कोई नहीं रोक सका। भूसे का गद्दा गर्म था और रैचल अब भी उस पर लेटी रहना चाहती थी। मगर मुश्किल यह थी कि सूर्य की किरणें सहसा कुहरे के पर्दों को हटा देती थीं और जहाँ पर दरवाजा नीचे की ओर फूला हुआ था और आसपास के पहिये भी मुड़े हुए थे वहाँ से धूप सारे कैबिन में फैल जाती थी। जेफ़ ने अपने पाँव फैलाये और फ़र्श पर एड़ियाँ पटकने लगा। जेनी अपनी माँ से टकरायी; और उसकी आँख खुल गयीं। वह रैचल के सीने से अलग हो गयी। उसके शरीर के उस गर्म भाग में भी,

जो रैचल के शरीर से लगा हुआ था, सर्दी लगने लगी । मार्कस शोर मचाने
जेफ़ ने उसे एक थप रसीद किया और फिर दोनों भाई फ़र्श पर गुत्थम-
करने लगे ।

रैचल अपने नेत्र बंद किये इन तमाम ध्वनियों को सुनती रही, जो प्रात
की सूचना देती हैं । उसने अपने आप से शायद सौ बार तो यह प्रश्न पूछा
कि आखिर लोग क्यों इतनी जल्दी जागकर अपने बिस्तर को अचानक छो
हैं और इस प्रकार शोर मचाने लगते हैं । एक क्षण और अपने बिस्तर प
रहने के बाद वह हड़बड़ाकर उठ बैठी और अपने बच्चों में बीच-
करने लगी ।

"जेफ़ ! छोड़ इसको !"

जेफ़ ने मार्कस के पेट को अपनी टाँगों में दबा लिया था । उसकी आ
केवल १५ वर्ष की थी; किन्तु उसका शरीर गिडियन की भाँति ही हृष्ट-पुष्ट था
लड़का युवावस्था को प्राप्त होने के पहले ही विशालकाय हो गया था
६ फीट लंबा था और उसका रंग रैचल की भाँति कत्थाई था । गि
बिल्कुल ही श्याम वर्ण का था । लेकिन वह जेफ़ की भाँति सुन्दर
उसका चेहरा भी उसकी तरह लम्बा था । वह एक ऐसा पुरुष था जिसकी सु
स्त्रियों को पाप की ओर आकृष्ट करती थी । मार्कस की आयु १२ वर्ष की थी
कद में छोटा था और उसकी खाल हड्डियों से लगी हुई थी । रैचल क्रुद्ध ह
और उसने जेफ़ को डाँटा ।

"अपने पैर उसके पेट से हटा; मूर्ख कहीं का !"

जेनी सातवर्षीय बालिका थी । वह उठी और उठते ही दरवाजे से निक
भागी । प्रतिदिन प्रातःकाल उसका पहला काम यही होता था कि प्रकाश
खोज में घर से बाहर चली जाय । दरवाजे पर उसे एक कुत्ता मिला, जो मूख
भाँति भूँक रहा था ।

जेफ़ खड़ा होगया और मार्कस ने उसे ठोकना शुरू किया; जैसे कठप
पेड़ में ठोंगें मारता है । जेफ़ गिडियन की ही तरह सहिष्णु और सुशील था;
उसमें वह लोहे की सी दृढ़ता नहीं थी, जिसने गिडियन को एक व्यक्तित्व

का ज्वाला भड़कने लगती था। लेकिन गिडियन का क्रोध उसके दिल में ही रहता था।

"निकल जाओ तुम दोनों यहाँ से," रैचल ने उनसे कहा, "चले जाओ, मैं कहती हूँ। निकलो बाहर यहाँ से।"

लेकिन इस क्रोध के पहले ही वह हँसने लगी थी। वह स्वयं बहुत छोटी-सी थी और बहुधा यह सोचकर उसे आश्चर्य होता था कि ये विशाल-काय काले मांस के लोथड़े उसी के हैं; उसके छोटे से शरीर ने इन्हें जन्म दिया है और ये उसके पेट की छोटी-सी थैली से निकले हैं। लेकिन उसका पति एक विशालकाय व्यक्ति था,—ये उसी गिडियन के बच्चे थे,—और वह इस बात पर बड़ा गर्व करती थी। वह कैबिन में इधर-उधर टहलने लगी।

दिन काफ़ी चढ़ चुका था और सारे कैबिन में धूप फैली हुई थी। दरवाज़ा अंदर की ओर खुला और जेफ़ अचानक प्रविष्ट हुआ। उसका सिर नाँद में भरे बरसाती पानी से भीगा हुआ था। रैचल भी पानी की नाँद के निकट गयी। उसने अपना हाथ, मुँह और सिर धोया और जेनी को पुकारने लगी, "आओ हाथ-मुँह धोलो। अब आ भी जाओ।"

जेनी को पानी से घृणा थी। उसके घुँघराले बालों को हाथों से पकड़कर पानी में भिगोने से पहले रैचल कम-से-कम पाँच बार जेनी को आवाज़ देती थी और जेनी इस प्रकार रोती-चीखती थी मानों ठण्डा पानी उसे काट लेगा।

जब रैचल कैबिन में वापस आयी तो जेफ़ आग जला चुका था। उसने लकड़ी का प्याला उठाया और उसमें दलिया निकालने लगी। जेफ़ कोयलों को सुलगाता रहा। कुत्ता आकर आग के सामने लेट गया,—नवम्बर मास के प्रातःकाल की ऐसे तीव्र सर्दी में आग की गर्मी से कुत्ता क्यों वंचित रहे?

लगभग दस वर्ष पूर्व अपने महान्तम वैभव के काल में कार्वेल के खेत दक्षिणी केरोलिना की सर्वोत्तम भूमि पर बाईस हज़ार एकड़ के क्षेत्र में फैले हुए थे। यह भाग समुद्री किनारे से सौ मील अन्दर की ओर उस सौम्य ढलवाँ प्रदेश में था, जो समुद्री किनारे के सपाट मैदान और ऊँचे पथरीले प्रदेश को विभाजित करता

था। उस समय, जब यहाँ रूई का राज्य था, इन खेतों की प्रति एकड़ ज़मी
डेढ़ गाँठ रूई मिलती थी और जब कपास की कलियाँ चटकती थीं तो दूर तक,
दृष्टि पहुँच सकती थी, एक सफेद समुद्र ठाठें मारता हुआ दिखाई देता ।

कार्वेल का बड़ा मकान इस दृश्य में सबसे प्रमुख था। यह चार मंज़िल
इमारत थी, जिसमें बाईस कमरे थे और जिसके स्तम्भ यूनानी मंदिरों के आक
बनाये गये थे। भौगोलिक दृष्टि से वह इस प्रदेश के लगभग मध्य में एक ऊँची प
पर स्थित था। रास्ते के दोनों ओर बेद-वृक्षों की पंक्तियाँ थीं। शाहबलूत के
की दीवार इस मकान की सुरक्षा का काम करती थी। इस मकान से आधे मील
फ़ासले पर स्थित गुलामों के कैबिनों से इस बड़ी इमारत को देखने पर तो
से उसकी समानता और भी बढ़ जाती थी। और जब उसके पीछे आकाश में
बादल तैरते थे तो यह भवन देश के इस भाग का एक अति सुन्दर और म
दृश्य बन जाता था।

यह तो पुराने ज़माने की बात थी। लेकिन उस वर्ष, सन् १८६७ ई०
कार्वेल के खेतों में कपास नहीं बोयी गयी। कहा जाता था कि डडले कार्वेल
चार्ल्सटन नगर में बस गया था; किन्तु किसी को ठीक से नहीं मालूम था कि
वह कहाँ रहता है। यह भी कहा जाता था कि कार्वेल के दोनों बेटे युद्ध में
गये थे। कर्ज़ और लगान न देने के कारण बहुत-से बड़े-बड़े खेत बेकार पड़े
दक्षिण प्रदेश के कई और ज़मींदारों के बड़े-बड़े खेत इसी अनिश्चित् अवस्था
पड़े हुए थे। कहा जाता था कि अब कार्वेल के खेतों पर सरकार ने अधिकार
लिया है और कार्वेल के हर गुलाम को चालीस एकड़ भूमि और एक घोड़ा
जायगा। इस प्रकार की बातें आग की तरह फैल गयीं। लेकिन कोई भी अभी
नहीं बता सकता था कि वास्तव में क्या होनेवाला है। कई बार गोरे आ
कोलम्बिया से यहाँ आये, लूट-मार की, और चले गये।

इस अर्से में आज़ाद किये हुए गुलाम किसी-न-किसी तरह अपनी गुज़र-
करते रहे। उनकी एक बड़ी संख्या युद्ध के समय भी इसी स्थान पर ठहरी र
उन्होंने खेतों में फ़सलें बोयीं और वे इस प्रदेश की देखभाल करते रहे।
लोग, जिनमें गिडियन भी शामिल था, यूनियन की सेना में भर्ती हो गये।

ऐसे भी थे जो भाग खड़े हुए और कहीं जाकर छिप गये। लेकिन मुक्ति के बाद भी उनमें से अधिकतर लोग इसी स्थान पर ठहरे रहे। इसलिए नहीं कि वे भागने के दण्ड से डरते थे; बल्कि इसलिए कि उनकी दृष्टि में कोई दूसरा ऐसा स्थान नहीं था, जहाँ वे भागकर शरण ले सकते। यही उनका घर था, यही जमीन थी, यही देश था, और यही सब कुछ था उनके लिए हमेशा से।

कार्वेल के कुटुम्बियों ने अधिकतः चार्ल्सटन में रहना शुरू कर दिया, और कृषि का कार्य उनके कारिन्दे सँभालते रहे। युद्ध के तीसरे वर्ष डडले कार्वेल केवल एक बार यहाँ आया और मकान में ताला लगाकर नौकरों-चाकरों को अपने साथ ले गया। आखिरी कारिन्दा १८६५ ई० में चला गया और उसके बाद बेचारे गुलाम अकेले रह गये। अब वे कपास नहीं बोते थे। इस फ़सल को केवल दूसरों के हाथ बेचने के लिए ही बोया जाता था और इसलिए यह नक़द लेन-देन की फ़सल कहलाती थी। उन्हें न तो इन फ़सलों की आवश्यकता ही थी और न ही वे इसके लेन-देन को समझते थे। इसलिए वे उस जमीन के निचले क्षेत्रों में गेहूँ और चावल की खेती करने लगे। उन्होंने बागों में सब्ज़ी, तरकारी आदि बो दीं। वे सुअर और मुर्ग़ियों को पालने लगे और इस प्रकार जीवन बिताने लगे।

वे कई अन्य स्वतन्त्र लोगों से अधिक सौभाग्यशाली थे। तीन बार बड़ी-बड़ी सेनाएँ इस मार्ग से गुज़रीं, उनके खेतों को साफ़ कर गईं, लेकिन वे इस अकाल के समय को भी सहन कर गये। अपनी पराजय पर झुँझलाये हुए सैनिकों ने उनमें से केवल चार को अपनी बन्दूक का निशाना बनाया था। लेकिन यहाँ तबाही व बर्बादी उन स्थानों की अपेक्षा बहुत कम हुई थी, जहाँ आजाद लोग रहते थे।

और अब कहीं दूर स्थित स्थान से कांग्रेस नामक किसी चीज ने मुक्त लोगों को यह आदेश दिया था कि वे चुनाव में अपना वोट दें। इस बात पर कार्वेल के नये-नये आज़ाद हुए लोग बहुत विस्मित थे।

मार्कस ने सबसे पहले गिडियन को वोट देकर वापस आते हुए देखा था, और यह बात कई दिन तक उसे याद रही थी। वह, एक्सल क्राइस्ट और कुछ दूसरे लड़के खेलते हुए उस बड़े मकान की ओर जा रहे थे। पहाड़ी के पास से वे सड़क को दो मील के फ़ासले तक देख सकते थे। यह सड़क शायद कहीं भी

नहीं जाती। कुछ लोग कहते थे कि यदि इस सड़क पर बहुत दूर चले जाओ यह कोलम्बिया पहुँचा देती है। लेकिन यह तो एक सुनी-सुनाई बात थी : सुनी-सुनाई बातों से दुनिया भरी पड़ी है। मार्कस और उसके दोस्तों के लिए यह सड़क बस एक सड़क थी और कोई जरूरी नहीं था कि वह किसी मं पर पहुँचे।

चार दिन पहले गिडियन और भाई पीटर ने इक्कीस वर्ष की आयु और उ अधिक के लोगों को एक स्थान पर एकत्र किया था। अधिकतर अनुमान से काम चलाया गया; क्योंकि बहुत-से लोग नहीं जानते थे कि उनकी अवस्था साल है, या बाईस साल है, या कुछ और है। आयु पर ही अंतिम फैसला नहीं होता, लेकिन अनुमान के लिए कोई मापदण्ड निश्चित करना ही पड़ता भाई पीटर ने अपना सिर खुजलाकर अपनी स्मरण-शक्ति पर जोर दिया और उम्रवाले हब्शी बच्चों को सबसे पहले अलग कर दिया। अंत में कोलाहल शोरगुल के बावजूद बैलों और बछड़ों को अलग-अलग खड़ा कर दिया,—बड़े ल और बच्चों के लिए वे इन्हीं शब्दों का प्रयोग करते थे। कुल मिलाकर मत लोग मतदान के अधिकारी माने गये।

"अब मत-दान कैसे होगा?" उन सबने गिडियन से पूछा।

मार्कस की समझ में यह बात आगई कि उन्हें इस प्रकार के प्रश्न गिडिय पूछने चाहिएँ। मौत और परमात्मा के संबन्ध में भाई पीटर से प्रश्न पूछे जाते लेकिन दूसरी तमाम बातें, उदाहरणार्थ बीमारी, खेती आदि की बातें वे गि से ही पूछा करते थे।

और अब वे वोट देकर वापस आरहे थे। धूल और गर्द से आच्छा सड़क पर दो मील दूर मार्कस ने आदमियों के एक समूह को आते हुए देखा सब धीरे-धीरे चल रहे थे। मार्कस चिल्लाता हुआ पहाड़ी से नीचे दौड़ आय

"आगये, आगये, अ हा हा!"

दूसरे लड़के उसके पीछे भागे और सब-के-सब इतनी जोर से चिल्लाये उनकी आवाज एक मील तक सुनाई देने लगी। बस्ती के लोग अपनी झोपड़ि यह देखने के लिए बाहर आ गये कि क्या हो गया है। रैचल ने सोच

शायद किसी की हत्या हो गयी है और मार्कस को यह समझाने के लिए उसे उसके सिर पर दो धप्प रसीद करने पड़े कि वह अपनी बातचीत का उसे अर्थ बताये।

"कौन आ गये ?"

"पापा।"

"गिडियन ?" बहन मेरी ने पूछा और किसी ने यह कह कर कि "भगवान् की कृपा है" सबकी भावनाओं का प्रतिनिधित्व किया। यह मतदान भी कोई अलौकिक बात है। इसमें ज़रूर कोई शकुन छिपा हुआ है। सारे मर्द चले गये थे और बस्ती पर प्रतीक्षा की निर्जनता छाई हुई थी। कोई भी यह न जानता था कि मतदान क्या होता है। अब हरेक ने अपनी आँखों के ऊपर हाथ रखकर सड़क की ओर देखा। निश्चय ही उनके ही मर्द वापस आ रहे थे। उनमें से जिनको गिनती आती थी उन्होंने गिनना शुरू किया और बताया कि सभी वापस आ रहे हैं। रैचल ने दूर से ही गिडयन को पहचान लिया। उसका विशाल शरीर सबसे अलग दिखाई दे रहा था।

गिडियन कई मनुष्यों का संग्रह था, जैसे कोई साँड हो। उसके कंधे भारी, कमर पतली और पाँव दुबले थे। कहा जाता है कि ऐसे शरीर का आदमी साँड की तरह होता है और उसकी सारी बुद्धि उसके हाथों में होती है। लेकिन गिडियन ऐसा आदमी नहीं था, जिसपर कोई भी कहावत चरितार्थ होती हो। गिडियन तो गिडियन ही था और इसका भी एक कारण था कि लोग उससे ही क्यों संबोधित होते थे। यह सही था कि उसका शरीर और बुद्धि दोनों ही धीरे-धीरे चलते थे; लेकिन आवश्यकता पड़ने पर वह तीव्र गति भी धारण कर लेता था। जब उसके दिमाग़ में कोई नयी बात आती तो वह उसपर बार-बार ग़ौर करता था और अंत में जब वह फ़ैसला कर लेता था तब वह उसकी अपनी बात हो जाती थी।

वह सबसे आगे था। रैचल ने उसे पहचान लिया। उसके झुके हुए कंधों और उसकी मंद गति से पता चलता था कि वह कई मील का सफ़र तै करके यहाँ तक पहुँचा है। वह अपनी बंदूक को इस तरीके से नीचे लटकाये हुए था

जैसा कि उसने फ़ौज में सीखा था। उसके कंधों पर एक थैली लटकी हुई जिसमें बच्चों के लिए कुछ-न-कुछ ज़रूर होगा। उसके एक तरफ़ भाई पं चल रहे थे, लंबे, दुबले-पतले और निहत्थे-बिल्कुल वैसे ही जैसे कि ईश्वर-भक्त को होना चाहिए। दोनों जेफ़रसन भाई अपनी रायफलें लिए हुए उ पीछे थे। हैनिबाल वाशिंगटन भी आरहा था। जेम्स एण्ड्रयू, फर्डिनैण्ड, अ क्ज़ेण्डर, हेराल्ड, बैक्स्टर और ट्रूपर,—ये लोग ऐसे थे जिनका कोई खान्दानी ही नहीं था। धीरे-धीरे उनके मस्तिष्क में यह विचार भी आयेगा और वे नाम भी रख लेंगे। लेकिन खान्दान का नाम सोचने और समझने की ची और इससे कई आदमी आसानी से सन्तुष्ट नहीं होता।

जेफ़ आनेवालों से मिलने के लिए सड़क पर दौड़ पड़ा और फ़ौरन लड़कों-लड़कियों और स्त्रियों का समूह उसके पीछे दौड़ने लगा। रैचल र रही। उसने मार्कस को भी गर्दन पकड़कर ठहरा लिया और उससे कहा कि कुँए से पानी खींचने में उसकी मदद करे; ताकि गिडियन अपनी प्यास सके। उसको जरूरत नहीं थी कि वह नासमझ बच्चों की भाँति गिडियन के दौड़ हुई जाय; क्योंकि वे एक-दूसरे को ऐसी छोटी बातों से नहीं, बल्कि अ गहराई से समझते थे। नवंबर के अन्त का तीसरे पहर का यह समय अ कुत गर्म था। जब गिडियन और उसके साथी बस्ती में आये, उनके चेह पसीना चू रहा था।

रैचल उनकी ज़रूरतों को समझती थी। उन्होंने कुँएँ का ठण्डा पिया और लकड़ी के प्याले उसके सामने बढ़ाने लगे। हरेक के दिल में न-कोई प्रश्न उठ रहा था और अचानक वर्षा की-सी तीव्रता के साथ हर से प्रश्नों का आक्रमण शुरू हो गया।

"यह मतदान क्या बला है?"

"तुम खाली हाथ ही वापस आगये, मतदान को अपने साथ नहीं लाये?"

"अच्छा, तुमने मतदान को खरीद लिया है न?"

"खरीद कर उसके दाम भी चुका दिये होंगे?"

"गोरे लोगों से तुम्हें कितना मतदान मिला था ?"

"वह कितना बड़ा होता है ?"

"उनकी संख्या कितनी है ?"

प्रश्नों का यह ताँता जारी रहता यदि भाई पीटर घबराकर यह घोषणा न करते कि, "भाइयो, बहनो और बच्चो, ज़रा शांति रखो, ज़रा खामोश रहो। हम तुम्हारे सब प्रश्नों का उत्तर देंगे।"

पुरुषों ने अपनी स्त्रियों और बच्चों के चुम्बन लिये। गिडियन ने भी रैचल को अपनी बाहों में लेकर बड़ी मुहब्बत से प्यार किया। उनमें से कुछ लोगों के पास मीठी मिश्री थी जिसे उन्होंने बाँटना शुरू कर दिया। उन्होंने अपने थैले खोले। गिडियन जेनी के लिए लाल कपड़े का बना हुआ गुलाब का एक फूल लाया था, जिसमें से गुलाब के फूलों की सी सुगन्ध आती थी। बातचीत बड़ी गर्मा-गर्मी से होने लगी; लेकिन मतदान के बारे में कोई कुछ भी नहीं बता रहा था। कुत्ते पागलों की भाँति इधर-उधर भाग रहे थे; क्योंकि वे कुत्ते भी अपने स्वभाव के अनुसार इस प्रेम का एक बड़ा भाग प्राप्त करना चाहते थे। अन्त में भाई पीटर ने अपने हाथ फैलाकर शांत रहने की प्रार्थना की और सब शांत हो गये। पुरुष ऊँकड़ें बैठ गए, बच्चे घास पर बैठ गए या लेट गए, औरतें भी बैठ गईं या अपने हाथ बाँध कर खड़ी हो गईं।

भाई पीटर ने कहा, "भाई गिडियन तुमको बतायेंगे कि चुनाव क्या होता है। किसी का विवाह है या बड़े दिन का उत्सव है, जिसमें सभी भाग ले सकते हैं। खुदा के फ़रिश्ते जिब्रील की भाँति, सरकार अपना बलशाली हाथ आगे बढ़ाकर कहती है, 'घोषणा करो तुम किसके समर्थक हो ?' और हमने यह घोषणा करदी और इसके साथ ही सरकार कहती है कि पाँच सौ कालों और गोरों में से अपना एक प्रतिनिधि चुन लो और हमने गिडियन को चुन लिया।"

गिडियन धीरे-धीरे उठा और लोग उसकी ओर अनिश्चय की दृष्टि से देखने लगे। रैचल समझ गयी कि वह झिझक रहा है। वह गिडियन की रग-रग से परिचित थी। उसको चुन लिया गया है इसका क्या मतलब था ? और यह प्रतिनिधि क्या होता है ?

"हम गये और हमने मत दिये" गिडितन ने कहना शुरू किया। उ
आवाज बड़ी कोमल थी और वह रुक-रुक कर बोल रहा था; क्योंकि वह चीजें
उलट-पुलट कर व्यवस्थित रूप से रखना चाहता था।

"मतदान—" गिडियन ने कहा।

गिडियन को याद था कि किस प्रकार कुछ दिन पहले इस बस्ती के
मतदान के लिए शहर गये थे। खुद उसके ग्मूद में इस बात पर शंका थी
मतदान का क्या अर्थ होता है। और गिडियन और भाई पीटर ने यह सम
का प्रयत्न किया था कि इसका अर्थ होता है अपने भाग्य को आप सँवारना
बिगाड़ना। वे स्वतंत्र थे और अब उसकी अपनी एक आवाज थी
इसलिए अब उनको यह अधिकार था कि जब कभी भी उनके जीवन-संबंधी
प्रश्न उठें तो वे अपनी इस आवाज़ का उपयोग कर सकें और इसी का नाम मत
था। लेकिन ये सब बातें काल्पनिक थीं और ऐसी काल्पनिक बातों से वे घब
थे। इसलिए उन्होंने तय किया था कि वे धैर्य रखेंगे और देखेंगे कि इ
व्यावहारिक रूप क्या होगा।

जब वे शहर पहुँच गये तो गिडियन को ऐसा अनुभव हुआ कि दुनियाँ
गोरे और काले दोनों ही वर्णों के सारे लोग वहाँ एकत्र हो गये हैं। सड़कें, इमार
कोर्ट-हाउस की गैलरियाँ इधर और उधर सभी स्थान उनसे भरे थे और सब-के-
मतदान के बारे में गला फाड़-फाड़कर बातें कर रहे थे। इनमें से आधे
और काले लोग अपने हाथों में बन्दूकें लिये थे। यूनियन के सिपाहियों
एक टुकड़ी भी थी जो प्रबन्ध आदि के लिए भेजी गयी थी। गिडियन ने यह देख
ख़ुदा का शुक्र अदा किया; क्योंकि इस विशाल समूह में बहुत-से लोगों के प
बन्दूकें थीं और इनमें से कई लोग ऐसे भी थे जिनका दिमाग़ हमेशा गरम र
करता है।

बहुत-से हब्शी यह सोचते थे कि मतदान का अर्थ यह है कि उनको चालीस
चालीस एकड़ जमीन और एक-एक घोड़ा मिलेगा। कुछ यह सोचते थे
मतदान उन्हें धनवान् बना देगा और मतदान के बाद कई लोग यह देखकर नारा
थे कि उन्हें कुछ भी नहीं मिला और वे ख़ाली हाथ वापस जायेंगे।

इसके बाद गिडियन ने अपने सुननेवालों को यह बताता कि जब उसकी वोट देने की बारी आई तो उसने क्या देखा। वह अदालत की पुरानी इमारत के गंदे और टूटे-फूटे अंदरूनी भाग में गया। एक लम्बी मेज़ के चारों तरफ़ बड़े-बड़े रजिस्टर खोले रजिस्ट्रार बैठे हुए थे। उनके पीछे सितारों और धारियोंवाली पताकाएँ बड़ी प्रमुखता से सजायी गयी थीं। लगभग आधे दर्जन सिपाही पोलिंग-बूथ और मतदान पेटियों पर पहरा दे रहे थे। उसने बताया कि उन्होंने किस प्रकार उसे कागज़ का एक टुकड़ा दिया जिस पर "वैधानिक सभा के पक्ष में" और उसी के नीचे "वैधानिक सभा के विरुद्ध" लिखा था, और उसके नीचे लिखा था ऊपर लिखी गई बातों में से किसी एक के आगे चिन्ह लगाकर अपना मत दो। दिन भर गोरे और काले दोनों वर्ण के लोग सडकों पर आपस में इस विषय पर बातचीत करते रहे कि हर हब्शी को सभा के पक्ष में क्यों मत देना चाहिए। यह बात समझ लेना उनके लिए कठिन न था कि सभा उनके लिए एक नया संसार निर्माण करेगी। कम-से-कम कहा यही जाता था। जैसे ही गिडियन ने कागज़ के टुकड़े पर दृष्टि डाली, रजिस्ट्रार ने थकावट और पीड़ा-भरे स्वर में कहा :

"सभा के पक्ष में हो या विरोध में, अपना चिन्ह लगा दो। तंबू के भीतर जाओ और अपना मतदान-पत्र तह करलो।"

दूसरे रजिस्ट्रार ने पढ़कर कहा, " 'ज' की सूची में गिडियन जैक्सन का नाम देखो।" मेज़ पर बैठे हुए लोगों ने जल्दी-जल्दी अपने रजिस्टारों के पृष्ठ पलटे एक ने कहा :

"यहाँ हस्ताक्षर कर दो, या अँगूठा लगा दो।"

गिडियड ने कलम उठा लिया और बड़ी कठिनाई से टेढ़े-मेढ़े अक्षरों में 'गिडियन जैक्सन' लिखा। उसके हाथों में कम्पन हो रहा था और हृदय में भय समा गया था; किन्तु फिर भी वह परमात्मा का आभार मान रहा था, जिसकी कृपा से उसने कम-से-कम अपने हस्ताक्षर करना सीख लिया था और अँगूठा लगाने की लज्जास्पद दीनता से वह बच गया। अब उसने मतदान-पत्र लिया और उसे लेकर तम्बू में जाने लगा और उस पर चिन्ह बनाने से पहले उसे पढ़ने का विफल प्रयत्न करने लगा। वह कह सकता था कि वह थोड़ा बहुत

पढ़ना जानता था, किन्तु "वैधानिक सभा" जैसे शब्द उसके लिए संस्कृत के श
थे। जहाँ "पक्ष में" लिखा था उसके सामने उसने चिन्ह बना दिया; क्योंकि कम
से-कम उतना तो उसने पढ़ ही लिया था। किन्तु इसके बावजूद भी उसे ए
अविस्मरणीय लज्जा का अनुभव हो रहा था। उसने श्रोताओं से कहा :

"अब हम बालकों की भाँति अज्ञानी और अबोध आपके पास लौ
हैं। भाई पीटर ने परमात्मा से प्रार्थना की। उसी की कृपा से हम सत्य व उचि
कार्य करने के योग्य बने"

"हील्लेलुजाह" का कुछ मंद स्वर प्रतिध्वनित हुआ।

"एक गोरे अमरीकन ने हमसे बातचीत की," गिडियन ने कहा। "उस
भेड़ों के समूह की भाँति हमें अलग-अलग टुकड़ियों में बाँट दिया। हर टुकड़ी
लगभग ५००-५०० आदमी थे। हम सबके-सब निरक्षरता और अज्ञानता
अंधकार में डूबे हुए उसकी ओर खड़े देखते रहे। 'एक प्रतिनिधि चुन लो' उस
हम से कहा और हमें मतदान-पत्र दिये। एक हब्शी ने भाषण दिया
फिर एक और हब्शी ने हमें संबोधित किया। और अंत में एक गोरा व्यक्ति
भाषण देने खड़ा हुआ। भाई पीटर ने खड़े होकर कहा, 'गिडियन हमा
प्रतिनिधि है।'"

इससे अधिक गिडियन और कुछ न कह सका। हरेक व्यक्ति यह समझ ग
कि गिडियन प्रतिनिधि कैसे बना और इस समाचार को सुनकर उन्हें एक अपू
गर्व का अनुभव हुआ। ऐसा अनुभव उन्हें पहले कभी न हुआ था। यद्यपि
इस बात को भली भाँति न समझ सके थे; फिर भी उनके मुख पर गर्व की भाव
नृत्य करने लगी। इसके बाद भाई पीटर ने बोलना शुरू किया और यह समझा
का प्रयत्न किया कि अब गिडियन किस प्रकार चार्ल्सटन जायगा और वह
सभा के कार्य में सम्मिलित होगा। रैचल के नेत्रों से अश्रु-धारा बह निकली
गिडियन ने भूमि पर दृष्टि गड़ाते हुए घूरा और घास को पैरों से कुरदने लगा
मार्कस और जेफ़ ने गर्व से अपने सीने तान लिये। आगामी एक सप्ताह के लि
विनम्रता धारण करना उनके लिए कठिन था।

"खुदा का शुक्र है" भाई पीटर ने कहा।

चुन लिया भला ?"

"मैं नहीं जानता।"

रैचल रोने लगी; किन्तु उन आँसुओं में उल्लास छिपा हुआ था। सुखप्रद और खुशी के अवसरों पर भी वह सहसा रो पड़ती थी। उसने अपने पति से कहा, "गिडियन, गिडियन प्यारे, तुम्हें वह दिन याद है जब तुम यैंकियों की सेना में भर्ती होने के लिए जा रहे थे? जब मैं रोकर अपना हृदय निकाले दे रही थी तो तुमने मुझ से कहा था, मर्दों का यही कार्य है और वही मैं कर रहा हूँ। और यह भी उससे किसी प्रकार भिन्न नहीं है, गिडियन!"

"वह कैसे?"

उसने अपने होंठ उसके कानों के समीप लेजाकर चुपके से कहा, "हब्शी खेत में खड़ा कपास चुन रहा है, कपास चुने जा रहा है और अपनी प्रेयसी के बारे में सोच रहा है।"

रैचल की बात सुनते-सुनते गिडियन सो गया, रैचल की बातों के अतिरिक्त अतीत की स्मृतियों तथा भय और आशा की भावनाओं ने उसके मस्तिष्क पर अपना प्रभुत्व जमा लिया था!

: २ :

दूसरे दिन प्रातःकाल नाश्ते पर सारा परिवार एक साथ बैठा और गिडियन ने बड़े गर्व से यह सोचा कि मुझ-जैसे भाग्यवान् बिरले ही होंगे, जिनके पास यह सब कुछ होगा, रैचल जैसी सुशील पत्नी, दो बलशाली पुत्र और सौन्दर्य की मूर्त्ति जेनी जैसी बेटी। उसके पुत्र बड़े उजड्ड और ज़िद्दी थे; परन्तु अपने समय में वह स्वयं भी तो ऐसा ही था। और उसकी पीठ पर सौ से भी ज्यादा कोड़ों के चिह्न थे, जो यह प्रकट करते थे कि बचपन में वह कितना ज़िद्दी था।

अभी उन्होंने मकई के भुट्टों पर शीरा लगाकर खाना शुरू ही किया था कि भाई पीटर ने दरवाजे से मुँह निकालते हुए कहा

"भाई, बहन और बच्चो नमस्ते।"

भाई पीटर को नाश्ते पर निमंत्रित करने के लिए उन्हें बहुत आग्रह न करना पड़ा। सारा कैबिन भुने हुए गर्म भुट्टों की सोंधी-सोंधी सुगन्ध से महक रहा था और उन्हें चखने के पहले ही भाई पीटर के मुंह में पानी आरहा था। उन्हों बैठते ही भुट्टों की जी भरके सराहना की। उसके बाद उन्होंने जेब से बच्चे के लिए मिश्री निकाल ली। रैचल अपने पकाये हुए नाश्ते की प्रशंसा सुनकर फूलि न समायी। उसका स्वभाव था कि जो उसके भोजन की प्रशंसा करता वह उसकी खूब आवभगत करती थी।

नाश्ते के उपरान्त भाई पीटर ने जेफ़ से पूछा, "क्यों बेटे, तुम अपने बापू के खेतों को सँभाल सकते हो ?"

"हाँ, मेरा ख्याल तो है कि मैं सँभाल सकता हूँ।" जेफ़ ने सिर हिलाया

गिडियन और भाई पीटर गेहूँ के ढेरों के समीप गये और लकड़ी के तख्त

से पीठ लगाकर फर्श पर पाँव फैलाकर बैठ गये। वहाँ धूप फैली हुई थी और प्रातः काल की ठंडी वायु के झोंके आ रहे थे। कुत्ता आया और उनके समीप ही लेट गया। उन्होंने ढेर में से तिनके घसीटे और उनको चबाने लगे।

"तुम्हारा कब जाने का विचार है गिडियन ?" भाई पीटर ने पूछा।

"कहाँ, चार्ल्सटन ?"

"हाँ-हाँ।"

जब गिडियन बहुत देर तक चुप रहा, तो भाई पीटर ने कहा, "तुम्हें भय किस बात का है ?"

"तुमने कैसे जान लिया कि मैं भयभीत हूँ ?"

"हाँ-हाँ ! मैं भला कैसे जानूँगा ? देखो गिडियन, मैं और तुम हम एक दूसरे को वर्षों से जानते हैं। भगवान् तुम्हें सुखी रखे, अब तुम छत्तीस वर्ष के हो जाओगे। भला बताओ, मैं यह सब कैसे जानता हूँ ? मुझे याद है जब तुम्हारी माँ का अंत समय आया उस समय तुम उसके पेट में थे। वह बिस्तर पर लेटी हुई थी और चीख रही थी, 'ईसामसीह मेरे नन्हें बच्चे की तुम रक्षा करो, अब मेरा समय निकट आ पहुँचा है।' मेरी आयु उस समय चौदह वर्ष की थी। तुम्हारे पिता ने मुझसे कहा था, 'पीटर दौड़ के जा और मालिक से कहना मेरी पत्नी सोफ़ी अपनी अंतिम घड़ियाँ गिन रही है।' मैं दौड़कर मालिक के पास पहुँचा और बूढ़े जिम ब्लैक ने, जो उस समय मालिक के यहाँ मुख्य कारिन्दा था मुझसे कहा था, 'हब्शी औरत के मरने का जब समय आता है तो वह कभी नहीं बचती, मैंने आज तक कभी ऐसा देखा नहीं।' फिर उसने पूछा था, 'क्या डाक्टर बुलाया है ?' मैंने उत्तर दिया था, 'नहीं' बूढ़ी अम्मी अन्ना, जो वहाँ की दाई थी, तीन दिन तक मृत्यु से लड़ती रहीं और तब जाकर तेरा जन्म हुआ था, लेकिन तेरी माँ न बच सकी। तब बूढ़े जिम ब्लैक ने मारे कोड़ों के मेरी खाल उधेड़ दी और मिस्टर कार्वेल के सामने झूठी क़सम खाकर कहा कि मैंने उसको सूचना ही नही दी थी। इसीलिए तुम्हारे जन्म की स्मृति मेरे मस्तिष्क में अब तक है। मुझे वे दिन भी याद हैं, जब हम चिलचिलाती धूप में कपास के खेतों में काम करते थे। मुझे यह भी याद है कि हम किस प्रकार बातचीत करते थे और वाद-

विवाद करते थे कि आखिर हब्शी के जीवन का क्या उद्देश्य है? तुम कहा करते थे कि मैं जान देदूँगा लेकिन मीठी नींद कभी नहीं छोड़ सकता। मैं हब्शी हूँ और परमात्मा की स्तुति करता हूँ, जो हमें पाप से बचाता है। तुमको याद है कि इन यैंकियों के साथ युद्ध में लड़ने जाने से पहले तुम किसके पास सलाह करने आये थे?"

"तुम्हारे पास आया था।"

"तुमने कहा था रैचल का और तीनों बच्चों का ध्यान रखना। और तुम्हारे चले जाने के बाद मैंने उनका ध्यान रखा।"

"हाँ,-हाँ!"

"और अब जब मैं कहता हूँ तुम्हें डर लगता है तो तुमको बुरा लगता है।"

"तुम यही चाहते हो न कि मैं चार्लस्टन चला जाऊँ?" गिडियन ने धीरे से पूछा, "मैं हब्शी हूँ, न पढ़ना जानता हूँ और न लिखना। ठीक से अपना नाम भी तो नहीं लिख सकता हूँ, और तुम मुझसे कहते हो कि सभा में शरीक होने चार्ल्सटन चला जाऊँ। एक ऐसे शहर में जाऊँ जहाँ असंख्य बड़ी-बड़ी सफेद इमारतें हैं,—बिलकुल उस इमारत जैसी जो वहाँ दूर दिखाई दे रही है, जहाँ के गौर वर्ण के निवासी मुझ-जैसे मूर्ख काले हब्शी का उपहास करेंगे।"

सामने पड़ी हुई रेत में उँगलियों से कुछ चिन्ह बनाते हुए भाई पीटर ने विनम्र भाव से पूछा, "तुम पहली बार चार्ल्सटन कैसे गये थे?"

"मैं यैंकी लोगों के साथ गया था," गिडियन ने याद करते हुए कहा। "मैं उस समय नीली वर्दी पहने हुए था और मेरे हाथों में बंदूक थी। मेरे साथ दस हजार सैनिक 'हालेलुजा गीत' गाते हुए चल रहे थे।"

"तुम उस समय भयभीत नही थे; लेकिन अब अकेले जाने में तुम्हें भय लगता है। अब तुम्हारे शरीर पर न नीली वर्दी है, न हाथों में बंदूक है और न ही ज़बान पर हालेलुजा गीत। अब तो तुम्हारे पास सिर्फ क़ानून का यह आदेश है जो कहता है,—हब्शी बच्चे! आज से तू आज़ाद है।"

गिडियन ने इसका कोई उत्तर नहीं दिया और भाई पीटर ने नम्रता से कहा,

"पवित्र ग्रंथ में लिखा है कि हजरत मूसा बड़े कायर व्यक्ति थे, किन्तु भगव उन्हें आज्ञा दी थी कि मेरे भक्तों का नेतृत्व करो ।"

"लेकिन मैं तो हजरत मूसा नहीं हूँ ।"

"जनता को नेता की जरूरत होती है गिडियन ! मतदान के समय मैं दिल में कह रहा था कि क़ानून की ओर से सब हब्शी गुलाम स्वतंत्र हैं । मतदान का अधिकार प्राप्त हो गया है । वे दासता की बेड़ियाँ तोड़कर निकल आये हैं । अब उन्हें अपना जीवन सँवारने या बिगाड़ने की पूरी अ है । हब्शी पढ़ना नहीं जानता, न लिख ही सकता है और न सोचने शक्ति रखता है । सोचने के अपराध में उसे कोड़े पड़ते थे या बेच दिया था । पढ़ना सीखने के भयंकर अपराध के दंड-स्वरूप उन्हें तीन सौ कोड़े जाते थे । हब्शी उन शिकारी कुत्तों की भाँति थे, जिन्हें घर से बाहर नि अपना भरण-पोषण खुद करने के लिए छोड़ दिया जाता था । मैं स्वयं से हूँ, आखिर इन लोगों का कौन नेतृत्व करेगा ? बड़ी-बड़ी बातें करनेवा या लम्बे-लम्बे डग भरनेवाले हों । यह सब-के-सब भीरू हैं, कायर हैं ! कौन नेतृत्व करेगा ?"

"तुमने मुझे ही क्यों चुना ?" गिडियन ने पूछा, "अपने आपको नहीं चुना ?"

"जनता ने तुम्हें चुना," भाई पीटर ने कहा "और अब से ऐसे ही करेगा ।" भाई पीटर ने झुक कर अपना दुर्बल हाथ गिडियन के घुटने प दिया, "इधर देखो भाई गिडियन ! तुम कहते हो तुम्हें पढ़ना नहीं आता लोग माँ के पेट से पढ़े-लिखे जन्म लेते हैं । क्या तुम पढ़ना नहीं सीख हो ? तुम भी पढ़ना-लिखना सीख सकते हो । मेरी ओर देखो, मुझे भी ज्यादा पढ़ना-लिखना नहीं आता । मुश्किल से दस-बीस शब्द लिख पाता हूँ फिर ऐसा करें कि मैं उन्हें लिखे देता हूँ और तुम उन्हीं शब्दों से लिखना शुरू कर दो ।"

गिडियन ने लाचारी से अपना सिर हिला दिया ।

"बातचीत के ही सवाल को ले लो ।" भाई पीटर ने कहा । "शब्दों की

रचना को गोरे लोग व्याकरण कहते हैं। कोई भी मनुष्य शब्दों का ठीक उच्चारण कर सकता है, मुझ जैसा बूढ़ा हब्शी चाहे न कर सके। इस विद्या को तुम किस प्रकार सीख सकते हो?"

"भगवान् जाने।" गिडियन ने कहा।

"भगवान् तो जानता ही है, मैं भी जानता हूँ। तुम तो बस सुनते रहो। तुम गोरे आदमियों की बातचीत ग़ौर से सुनो। दिन भर तुम सब सुनते रहो। तुम अपने आप सीख जाओगे। थोड़ा समय ज़रूर लगेगा, लेकिन तब तक तुम किताब पढ़ना भी सीख जाओगे। कोई चीज़ ऐसी नहीं जो पुस्तकों में न हो,—किताबों में ईश्वरीय सत्य मिलता है।"

"एक व्यक्ति फसल उगाने में अपना दिमाग़ लगाता है।" गिडियन ने कहा, "पूरा दिन वह उसी में लगा देता है तो फिर यह कैसे संभव हो सकता है कि वह शिक्षा भी उसी दिमाग़ में ठूँस ले?"

"जब हमारे सामने यह कठिनाई आयगी तब हमें उसे हल करना पड़ेगा। तब तक जेफ़ खेती का काम सँभाल सकता है। मार्कस भी बड़ा अच्छा लड़का है। भगवान् की तुम पर सभी प्रकार से कृपा है। अब तो हमें एक नूतन संसार का निर्माण करना होगा, गिडियन! एक प्रकाशमान नव-संसार का।" भाई पीटर ने मुस्कराते हुए गुलामों के खिड़कीहीन कैबिनों के झुंड की ओर इशारा किया।

"अच्छा छोड़ो भी इन बातों को।" गिडियन ने कहा और अपने लम्बे दुर्बल हाथों को बाँध कर सिर झुका लिया।

"ईश्वर हम पर दया रखे।"

गिडियन ने पूछा, "इस सभा के बारे में तुम्हारा क्या विचार है?"

"वही क़ानून बनाती है। विधान बाइबिल जैसा ही होता है। अब यह संसार इसी प्रकार अधिक समय तक नहीं चल सकता, जिसमें हब्शी लोग जंगली सुअरों की भाँति इधर-उधर मारे-मारे फिरें। गोरे हब्शियों से घृणा करते हैं, हब्शी गोरों से डरते हैं। यह कोई अच्छी बात नहीं है।"

"मैं भला अच्छे और बुरे क़ानून में फ़र्क कैसे करूंगा?"

"अच्छे और बुरे आदमी में तुम कैसे फर्क करते हो? एक पापिन स्त्री और

एक अच्छी स्त्री में तुम कैसे फ़र्क करते हो ?"

"इसके लिए मेरे पास मापदंड है।"

"तो फिर उसके लिए भी तुम्हारे पास मापदंड है।" भाई पीटर ने कहा। "अच्छा भला ऐसा क्यों है कि तुम न पढ़ना जानते हो और न लिखना। हब्शियों के लिए तो आज तक कभी कोई पाठशाला ही नहीं खुली,—ग़रीब गोरों के लिए भी कभी कोई मदरसा नहीं था। हम यहीं से शुरूआत कर सकते हैं। पाठशालाएँ खुलवाने के लिए क़ानून बनाओ, वह एक अच्छा क़ानून होगा। कार्वेल के खेतों को ही लेलो, कोई बीस हज़ार एकड़ ज़मीन होगी। किसकी है यह ज़मीन ? मि० कार्वेल की ? सरकार की ? हब्शियों की या गोरों की ? जैसे गोरों को ज़मीन की ज़रूरत है वैसे ही हब्शियों को भी ज़मीन चाहिए। और जमीन सभी के लिए काफ़ी है; लेकिन सवाल यह है कि इसका बँटवारा किस प्रकार होगा ?"

"मैं क्या जानूँ कैसे होगा ?"

"ज़रा धीरज रखो, गिडियन !"

"प्रतिनिधि तुम्हें बनना चाहिये था। भला तुम क्यों नहीं बने ?" गिडियन ने पूछा।

"तुम जानना चाहते हो ? लोगों ने जाकर मुझे मत क्यों नहीं दिया ? सोचने और समझने का भी ढंग होता है, गिडियन ! मैं एक बूढ़ा हब्शी हूँ। मैं अब तुम्हारी तरह चुस्त व चालाक 'नहीं रह सकता। किसी दिन तुम भी मुझे देखकर कहोगे कि यह बूढ़ा हब्शी किस काम आ सकता है, गिडियन। यह अशिक्षित और ज्ञानहीन हब्शी।"

"मैं तो ऐसा कभी नहीं कहूँगा।"

"भगवान् तुम्हें सलामत रखे। तुम यह न कहो, गिडियन, लेकिन तुम तो बिल्कुल दुधमुँहे बच्चे के समान बातें करते हो। तुम्हारे लिए सब कुछ तैयार है। बस अपने आपको भरलो; उसी तरह जैसे कि बाल्टी कुँए में जाकर अपने आपको भर लेती है। ज़रा सब्र करो और देखो।"

गिडियन ने अपना सिर हिलाया, "काश, मैं इन सब बातों पर विश्वास कर सकता कि—..."

"तुम इनपर विश्वास करो या न करो कोई फ़र्क नहीं पड़ता; गिडियन। जो कुछ होना है वह होकर रहेगा और बाल्टी कुँए में जाने के बाद ठंडा, निर्मल जल लेकर ही ऊपर निकलेगी।"

"अच्छा, अगर उन्होंने इस हब्शी की बातों को मज़ाक़ में उड़ा दिया तो?"

"अवश्य, वे निश्चय ही तुम्हारा उपहास करेंगे,—तुम पर हंसेंगे, गिडियन बेटे! हम भी तो उस समय कितना हँसते हैं जब कोई बेचारा हब्शी गुलाम मुक्त होकर आता है और हमसे पूछता है, मेरा स्वामी कहाँ है? हम उससे कहते हैं, तू अब आज़ाद है। और हब्शी स्वतंत्रता या आज़ादी का अर्थ इससे अधिक कुछ नहीं जानते कि वे अब शिकारी कुत्ते की भाँति भूखों मरने के लिए आज़ाद हुए हैं। स्वाभाविक तौर पर हमें उस बेचारे पर हँसी आजाती है। लेकिन तुम्हें मज़ाक़, तिरस्कार सभी कुछ सहना पड़ेगा। पहले दिन जब वे तुम्हें प्रतिनिधि के लिए निश्चित वेतन दें, जैसा कि उस दिन उस यैंकी ने हमसे कहा था, शायद वे एक डालर प्रतिदिन देंगे, तुम उसकी पुस्तक ख़रीद लेना। चाहे तुम उस समय कितने ही भूखे क्यों न हो, लेकिन तुम पुस्तक तो ख़रीद ही लेना; साथ ही एक मोमबत्ती भी, ताकि उसके उजाले में उसे पढ़ सको, और तुम उससे पढ़ाई शुरू कर देना।"

गिडियन ने सिर हिलाया। जितना ज्यादा भाई पीटर बोलते जाते थे उतना ही ज्यादा गिडियन चार्लस्टन की सभा का विचार करके भयभीत होता जाता था। लेकिन इसके बावजूद उसने अपने शरीर में उसी विस्मयपूर्ण झुरझुरी का अनुभव किया जो यूनियन की सेना में भर्ती होते समय उसने अनुभव की थी।

"पहले किस प्रकार की पुस्तक ख़रीदूँ?"

"तुम समझते होंगे कि मुझ-जैसे ईश्वर-भक्त को तो बाइबिल का नाम लेना चाहिए। लेकिन बाइबिल सरल नहीं है। गिडियन, तुम उसमें उलझ जाओगे। इसलिए पहले तुम सरल भाषा की पुस्तक ख़रीदना, फिर उच्चारण की पुस्तक। फिर शायद तुम्हें गणित की पुस्तक लेनी पड़े। तब तक तो तुम खुद ही जान जाओगे कि आगे कौनसी पुस्तक ख़रीदी जाय।"

"हाँ-हाँ, ठीक है।" गिडियन ने सहमति प्रकट की।

"लेकिन किताबों में सब कुछ नहीं लिखा हुआ है।" भाई पीटर ने यह समझाते हुए कहा। अब कु गुप्त बातें बतलाने का समय आगया है।

"वह कैसे ?"

"जब तक कुछ प्रत्यक्ष रूप में नहीं होजाता तब तक पुस्तकें नहीं लिखी जातीं। उदाहरण के लिए यह हब्शियों की स्वतंत्रता की बात ऐसी है जो आज से पहले कभी नहीं हुई। शायद उस समय से ऐसी घटना नहीं घटी है जबकि हजरत मूसा जनता को लेकर मिस्र से बाहर आये थे। मूसा के पास तो कोई किताब थी नहीं; इसलिए उन्होंने ईश्वर से संबोधन किया और पूछा, 'वे कौनसी अच्छी बातें हैं जिनपर मनुष्य को अमल करना चाहिए, ?"

"मैं भला वह क्या जानूँ ?"

"गिडियन, अपना हृदय प्रेम से भर लो। अपने हृदय में समझदारी को स्थान दो !"

"मुझमें कुछ होजाने का एक अवगुण है।" गिडियन ने स्वीकार किया।

"और किसमें यह अवगुण नहीं है ? हम सब जन्म से ही अपराधी हैं, भाई गिडियन ! तुम संसार में किसे सबसे अधिक विद्वान् और महान् समझते हो ?"

"जीवित मनुष्यों में या मृतकों में से ?" गिडियन ने विचारपूर्ण स्वर में कहा।

"किसी में से भी ?"

"मेरी दृष्टि से तो एब❋ है।"

"हाँ-हाँ ! भला एब वह सब कुछ कैसे जानने लगे थे ? उन्होंने यह कैसे समझ लिया था कि तमाम हब्शियों को यह संदेश पहुँचा दें कि तुम स्वतंत्र हो ?"

"शायद वह इस बात को सही समझते थे।"

"संभव है ऐसा ही हुआ हो। संभव है यह इस कारण हुआ हो कि उनका हृदय प्रेम व दया से भरा हुआ था। लोग कहते हैं कि वह देवदार वृक्षों के जंगलों में ही पले, बढ़े थे और हमसे किसी भाँति भिन्न नहीं थे। लेकिन उनका हृदय

❋ अब्राहम लिंकन

सामनेवाले खेतों में खड़ी हुई उस सफ़ेद कोठी से भी बड़ा था।"

"वास्तव में उनका हृदय विशाल था।" गिडियन ने सहमति प्रकट की।

"अब न्याय का प्रश्न लेलो। समझो, दो व्यक्ति गवाही देने तुम्हारे सामने आये। एक बड़े शहर का रहने वाला है, अच्छा बना-सँवरा, जो कहता है कि हवा नहीं बह रही है। दूसरा आदमी गंदा-भूखा है, जो कहता है कि वायु बड़ी अच्छी बह रही है। अब तुम्हें फैसला करना है कि वायु वास्तव में बह रही है या नहीं। तुम कैसे इसका फैसला करोगे?"

"मैं खुद अपना हाथ फैलाकर देखूँगा कि हवा चल रही है या नहीं,—"

"हाँ-हाँ! ठीक है। और अगर तुम खुद यह अनुभव न कर सको तो लोगों से पूछोगे; दस-बारह लोगों से। लेकिन किसी भी व्यक्ति की गवाही को इस कारण स्वीकार नहीं करोगे, क्योंकि वह बहुत ठाठ-बाट से रहता है या बड़े [illegible] स्वर में बातचीत करता है। सम्भव है गिडियन! तुम गोरों के प्रति कुछ कठोरता बरतो, क्योंकि उनके कोड़ों के निशान अब तक तुम्हारी पीठ पर मौजूद हैं और उनकी ओर से तुम्हारा हृदय भी कठोर हो गया है। यह सब इसी कारण है कि तुमने कठिनाइयाँ सही हैं, विपदाएँ झेली हैं और दुखी रहे हो। लेकिन याद रखो आज से तुम्हारे हृदय में वर्ण भेद-भाव के लिए कोई स्थान न होगा। काले और गोरे दोनों में भले-बुरे मनुष्य होते हैं।"

"मैं समझ गया।" गिडियन ने सिर हिलाया।

"अब इससे अधिक मुझे कुछ नहीं कहना है," भाई पीटर ने विचारमग्न होकर कहा। खुदा तुम पर दया करे और सदा तुम्हारे हृदय में रहे।"

"आमीन" गिडियन ने कहा।

: ३ :

जैसे-जैसे दिन गुज़रते गये और कोई घटना विशेष नही घटी तो गिडियन का सभा में चुना जाना भी एक पुरानी-सी बात हो गयी और उसका महत्त्व घटता गया। कभी-कभी तो उसे इसके बारे में दो-दो तीन-तीन दिन तक ख्याल भी नहीं आता था। वास्तव में उसके पास क्या प्रमाण था कि वह सभा का सदस्य है ? मतदान के समय भाई पीटर के लम्बे भाषण के शीघ्र बाद तो उसे ऐसा अनुभव हुआ कि उस समूह के सभी लोग गिडियन के पक्ष में हैं। बाद में किसी ने भी यह नहीं कहा कि हमने गिडियन के विरुद्ध मत दिया है और यही कारण था कि भाई पीटर और गिडियन ने स्वाभाविक तौर पर यह निष्कर्ष निकाल लिया कि गिडियन प्रतिनिधि चुन लिया गया। किन्तु मतदान तो गुप्त मतदान-पत्रिका के द्वारा हुआ था, और उन्हें बता दिया गया था कि मतों की गणना के बाद जो व्यक्ति निर्वाचित घोषित होगा उसकी उसे उचित सूचना मय उसके प्रमाणपत्र के दे दी जायगी। लेकिन उस बात को अब दो सप्ताह होने को आये; कोई सूचना नहीं मिली। आशा और भय के बीच डगमगाते हुए गिडियन ने बहुधा अपने आप से यह प्रश्न पूछा कि आखिर एक अच्छे गिननेवाले को ५०० या ६०० की गिनती में कितने दिन लगते होंगे। बाद में जैसे-जैसे दिन बीतते गये उसने भी यह प्रश्न अपने मस्तिष्क से निकाल दिया। उसने सोचा कि कोई भी होशमन्द यैंकी मूर्ख हब्शिओं को अपने प्रतिनिधि नहीं बनायेगा।

शरद-ऋतु के आगमन की तैयारी थी और उसमें उसे अपने आपको संलग्न रखने के लिए काफ़ी काम था। ग्रीष्म में जीविका अपेक्षाकृत सरल और जीवन बेहतर होता है। लोगों को शरद के आने से एक ठेस-सी लगती थी और वे उस पर चिंतित हो जाते थे। पूरे एक सप्ताह तक तो गिडियन ने अपने आदमियों को उस भाग के जंगल काटने में व्यस्त रखा, जिसे वे **निचला भाग** कहते थे।

पुराने ज़माने में, जबकि उस स्थान पर एक कारिंदा नियुक्त था तब जंगल एक सिरे से बिना किसी चीज़ को छोड़े हुए, और जड़ को दो फीट की खूँटी छोड़कर बिल्कुल साफ़ कर दिया जाता था। छोड़ी हुई दो फ़ीट की खूँटी वर्षों सड़ती रहती थी। गिडियन इसके बारे में विचारशील था और इस वर्ष उसने यह सुझाव रखा कि वृक्षों को ज़मीन खोद कर जड़ से काट दिया जाय।

"यह तो दुगुनी मेहनत हो जायगी" लोगों ने विरोध किया, "भला, ऐसा क्यों किया जाय ?"

"वृक्ष को तने-सहित उखाड़ना सरल है अपेक्षाकृत तने को वृक्ष के बिना उखाड़ने के।" गिडियन ने कहा।

"तने कौन उखड़वाना चाहता है ?"

"वह मुझे नहीं मालूम," गिड़ियन ने कहा, "मैं नहीं जानता यह ज़मीन किसकी है, लेकिन संभव है किसी दिन इसके तुम और हम ही स्वामी बन जायँ।"

"हम तो उसी दिन की प्रतीक्षा में बेचैन हैं, न जाने वह दिन कब आयेगा ?"

यदि गिडियन उनके उत्साह पर प्रहार न करता और यह सुझाव न रखता कि अब उनके पास मताधिकार है, वे उसका अपने जीवन-संबन्धी प्रश्नों पर उपयोग कर सकते हैं तो शायद वे इसी प्रश्न पर घण्टों वाद-विवाद करते रहते। वह यह सब कुछ कह तो गया; लेकिन यह सिद्धान्त कहाँ अमल में आयेगा इसके बारे में उसे शंका थी। वह नहीं जानता था कि ऐसे चमत्कारपूर्ण सिद्धान्त को दिन-प्रतिदिन के काम पर, यानी जंगल काटने-जैसे काम पर लागू करना, कहाँ तक उचित था। लेकिन उसका यह प्रयास सफल हो गया, मत का नाम सुनते ही लोग बिल्कुल स्तब्ध हो गये और गिडियन ने हाँ या ना का उत्तर माँगा।

यद्यपि लोगों ने चुनाव में सभा के पक्ष में मत दिया था, तथापि इस चीज की यंत्र-रचना उनके लिए बिल्कुल नयी और क्रांतिकारी थी। वे यह स्पष्ट करवाना चाहते थे कि एक आदमी हाँ या ना कह सकता है या हाँ और ना दोनों ही पर मत दे सकता है। लेकिन बाद में यही सिद्धान्त लागू किया गया और गिडियन का वृक्षों को जड़ से उखाड़ने का प्रस्ताव बहुमत से स्वीकार कर लिया गया।

फिर जब ट्रूपर ने, जो बैल की भाँति हृष्ट-पुष्ट और बलवान् था, आपत्ति क-

कि वह तो जिस लकड़ी को भी काटेगा उसे तीन बार आरे से काट सकता है; लेकिन हैनिबाल वाशिंगटन जैसा-मरियल आदमी तो इसका आधा भी नहीं कर सकता तो इस पर गिडियन को फिर मत की शरण लेनी पड़ी। इसी समय एक नयी पद्धति उभर कर आई; क्योंकि लोगों ने अपने-अपने औज़ार अलग रख दिये और इस बात पर वाद-विवाद शुरू हुआ कि पारस्परिक सहयोग के द्वारा हम किस प्रकार काम कर सकते हैं। कारिंदे के ज़माने से साथ-साथ काम करना एक स्वभाव-सा बन गया था और अब, जबकि वे अपनी स्वतन्त्रता के प्रति जागरूक थे, उन्होंने उस साथ-साथ काम करने की पद्धति पर आपत्ति की थी। हरेक व्यक्ति अपने लिए खुद काम क्यों न करे? यदि स्वतन्त्रता का यह अर्थ नहीं है तो फिर क्या अर्थ है?

भाई पीटर ने जो इस बार प्रस्ताव रखा था उस पर मत लेने के पहले हर दृष्टि से वाद-विवाद हुआ। हैनिबाल वाशिंगटन का छोटा, झुर्रियोंदार चेहरा क्रोध से लाल हो गया और उसने टूपर से कहा :

"इधर देख, अगर तू इतना ताकतवर है, जिसकी डींग मारता है, तो फिर जा तू खुद अकेला ही सारा जंगल काट। मैं कहता हूँ यहाँ बराबरी के काम का सवाल ही पैदा नहीं होता। यहाँ तो सबको मिलकर ही काम करना पड़ेगा। फिर तू मेरी खिल्ली क्या उड़ाता है, साले तू कौओं के मांस के लोथड़े?"

टूपर ने अपनी कुल्हाड़ी ऊपर उठाली। गिडियन और दूसरे लोगों ने उन्हें पकड़कर अलग किया और भाई पीटर ने चिल्लाकर कहा, "बड़ी शर्म की बात है कि तुम-जैसे लोग ऐसी टुच्ची बात पर खूना-खूनी के लिए तैयार होगये।"

कोई एक घण्टे बहस बड़ी गरमागरम और ज़ोर-शोर के साथ होती रही और इस बार प्रस्ताव बहुत थोड़े बहुमत से स्वीकार हुआ। बाद में गिडियन ने भाई पीटर से कहा :

"स्वतन्त्रता के बाद भी हमें तकलीफ़ों से छुटकारा नहीं मिलेगा?"

"और क्या, इन्सान बना किस लिए है?"

"कुछ भी हो, मेरे तो सिर में दर्द होने लगा,—यह भी कोई बात है, इतने बड़े-बड़े आदमी बच्चों-जैसा चीखते चिल्लाते हैं?"

"गिडियन, वे नहीं जानते कि साथ-साथ काम करने और अलग-अलग काम

करने में क्या फ़र्क है। वे तो अभी बच्चों के समान ही हैं। तुम उनसे बड़ी-बड़ी बातों की अपेक्षा कैसे कर सकते हो ? हब्शियों को स्वतन्त्र हुए अभी दो दिन ही तो हुए हैं ? समय की गति मंद ही होती है।"

लेकिन समय ही विपदाएँ लाता है। मतदान का समय उज्ज्वल सूर्योदय-सा था। किन्तु उसके बाद कोई विशेष बात नहीं हुई। जीवन उसी ढर्रे पर चलता गया, जैसा कि पहले था। गिडियन ने देखा कि अब लोग किस प्रकार बहुधा खेतों के मकान की खिड़कियों से झाँका करते थे। सारा मकान सुन्दर चीज़ों से भरा पड़ा था और उन चीज़ों के बारे में हर तरफ़ बातें गरम थीं। इन बातों में गिडियन के विरुद्ध भी कुछ भावना छिपी थी; क्योंकि कोई एक वर्ष पूर्व दक्षिणी केरोलिना के भंग होने के बाद कुछ सिपाही वहाँ आये और उस बड़े घर में घुस गये। जो कुछ वे चाहते थे उन्होंने उठा लिया और बाक़ी चीजें इधर-उधर बिखेरकर चल दिये। यह गिडियन ही था, जिसने उसमें चीजें फिर से व्यवस्थित ढंग से रखवायी थीं और मकान को ताला लगवा दिया था।

जब उन्होंने उससे पूछा, "यह सब किसलिए ?"

उसने उत्तर दिया, "इनमें से हमारा कुछ नहीं है।"

"अच्छा भला हमारे कपड़ों और हमारे रहने के मकानों से ये किस तरह भिन्न है ?"

"एक को उसकी ज़रूरत है दूसरे को नहीं।" गिडियन ने जवाब दिया।

और उसने मार्कस के पास एक चाँदी का चमचा देखा जिसे वह सिर्फ उसी बड़े मकान से लाया होगा।

तो फिर कैसे ?—क्या मार्कस घर में कूमल मारकर घुस गया ? यह एक अनियमित रूप से घूमने वाला बड़ा मकान था जिसमें सैंकड़ों प्रवेश-द्वार और बाहर आने के दरवाजे थे; और उसमें दरवाजे तोड़कर घुस जाना कोई कठिन काम नहीं था। लेकिन पहली बार गिडियन को यह उलझन महसूस हुई कि उसके बच्चों को किस तरह मार्ग पर लाया जाय। जब उसने इस प्रश्न पर विचार किया तो इस नतीजे पर पहुँचा कि लड़कों को अपने नियन्त्रण में रखने के लिए क्या करना चाहिए। यह वह अब तक जानता ही न था। अब उसे अपने अपार अज्ञान के अन्धकार का आभास हुआ; जिसमें अब तक वह फँसा हुआ

था। हर रोज़ रात को वह भाई पीटर की लिखी हुई शब्दों की सूची लेकर आ
के सामने बैठ जाता था। शब्द ये थे—चिउँटी, आदमी, औरत, लड़की, तु
आदि-आदि, मानो तथ्यों का एक पहाड़ उसके सामने खड़ा था जो उसे निरन्त
भयभीत और गड़बड़ी में डाल रहा हो। सही और गलत चीजें उसके साम
अक्षय होने की अपेक्षा लचीली हो गईं, और मार्कस को निश्चित रूप से दण्
देने के बजाय उसने कुछ अनिश्चय के भाव से उससे कहा :

"तुम उस बड़े मकान में क्यों गये थे, मार्कस ?"

"मैं वहाँ नहीं गया था।"

इस तरह मार्कस झूठ बोला। "तुम बड़े अच्छे लड़के हो बेटे," गिडियन ने
कहा। अब उसकी समस्याएँ और पहेलियाँ गुँथती जा रही थीं।

"यह चमचा तुम्हें कहाँ से मिल गया ?" गिडियन ने पूछा।

"मैंने इसे पड़ा हुआ पाया।"

"वह तुझे पड़ा हुआ नहीं मिला मार्कस, अब तू मुझे सच-सच बता दे।"

"कह तो दिया कि मैंने पाया।"

"कहाँ से पाया है ?"

उसने मार्कस को रंगे हाथों पकड़ लिया और झँझोड़ डाला और किस्सा धीरे-धीरे सामने आने लगा। वे रसोई-घर के तहखाने में से घुसकर मकान के अंदर गये थे। दूसरे लड़कों ने रेशमी कपड़ा, चाँदी वगैराह छिपा ली। गिडियन फिर मार्कस को न पीट सका, उसने अपने किसी भी बच्चे पर कभी हाथ नहीं उठाया था,—और न ही उसके पास-पड़ोसी कभी बच्चों को मारते थे। उन लोगों ने कोड़े और चाबुक गोरों को सौंप दिये थे। वह जानता था कि पीठ पर कोड़े की मार कैसी होती है। उसने लोगों को एक जगह एकत्र किया और मार्कस को उनके ठीक सामने खड़ा कर दिया और फिर पूरे किस्से को यों दोहराया मानो उसका एक-एक शब्द नश्तर की भाँति मार्कस के शरीर पर आघात कर रहा हो। भाई स्टीफेन ने पूछा :

"यह बड़ा मकान कब तक यूँ ही खड़ा रहेगा, भाई गिडियन ?"

"यदि जरूरी हुआ तो प्रलयकाल तक।"

"हब्शी तो गंदी-फूहड़ झोपड़ियों में रहें और वह साला बड़ा मकान योंही सड़ता रहेगा ? उसमें कोई नहीं रहेगा ?"

"सड़ने दो प्रलय, तक भी यदि वह पड़ा रहे तो रहने दो।" गिडियन ने कठोर स्वर में कहा।

और उसी रात रैचल सिसकियाँ भरती हुई गिडियन से शिकायत करने लगी, "यह तुमने मेरे बेटे के साथ क्या किया, गिडियन ?"

"वही जो मुझे करना चाहिये था।"

"यही कि उसे सारी दुनियाँ के सामने इस प्रकार नीचा दिखाओ ?"

"उसने दुष्कर्म ही ऐसा किया था।"

"मालूम होता है चुनाव के बाद सब कुरीतियाँ और दुष्कर्म ही हमारे भाग में पड़े हैं।"

"क्या—?"

"चार्ल्सटन जाओगे तो यहाँ हब्शी चीख-पुकार करते रहेंगे। न तुमसे कुछ होगा; न किसी चीज़ का फैसला कर सकोगे।"

गिडियन ने सोने का अभिनय किया। रैचल यह देखकर चुप हो गयी और वह रैचल की सिसकियाँ और रोने की आवाज़ सुनता रहा।

जब जेफ़ पंद्रह वर्ष का हुआ और अपनी आयु की सीमाएँ लाँघने लगा तो वह जंगली पशु की भाँति स्वस्थ और हठी था।

उसकी तुलना में गिडियन बूढ़ा था। भाई पीटर बूढ़े थे, उन्होंने उसके आस-पास सांसारिक जाल बिछाया और फाँसी के फंद की भाँति उसे खींचना शुरू कर दिया। उसे उस जाल में फँसा लिया गया और वह उस कारावास की जंजीरें तोड़ कर बाहर निकलना चाहता था। इस छोटी-सी बस्ती से वह बाहर निकलना चाहता था। इस बस्ती में-जहाँ किसी को पढ़ने-लिखने की कोई सुविधा नहीं, कभी कोई समाचार-पत्र यहाँ नहीं आया, समय का कोई मूल्य नहीं। वह लचकीला है जितना चाहो बढ़ाओ जितना चाहो छोटा करलो। यही यहां की परम्परा है जो सदियों से चली आई है। किसी के पास घड़ी नहीं है, उसकी जगह सूर्य-नारंगी के रंग और आकार का बड़ा रूप,—घड़ी थी, और ऋतुओं का मंद गति से आवा-

गमन ही उनका सीधा सादा कलेण्डर था। जेफ़ अब पंद्रह वर्ष का था। युद्ध के समय की बातें उसकी स्मृति से निकल चुकी थीं। एक धुंधली, अनिश्चित याद-दाश्त बाकी थी। गुलामी और आज़ादी के बारे में निरंतर चलती हुई बहसों का उस पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा। वह बड़े उपद्रव और हंगामे में जन्मा था और उसका सारा लड़कपन उसी अराजकता में बीता था।

अब वह एक तरुण राक्षस जैसा दीखता था। लेकिन अब भी था लड़का ही। जब बस्ती के और लोग चुनाव में मत देने गये और उसे वहीं छोड़ गये तो उसे इस पर बहुत दुःख हुआ। सड़कें उसके लिए गीत गाती थीं और उसे अपनी ओर आकर्षित करती थीं और वह भी सोचा करता था कि एक-न-एक दिन इन्हीं में से किसी एक पर निकल जाऊँगा और फिर कभी न लौटूँगा।

कभी-कभी गिडियन को भी अनुभव होता कि जेफ़ की दबी हुई इच्छाओं और भावनाओं का यही कारण था कि वह उसे निचले दलदली प्रदेशों में अकेला शिकार करने जाने देता था। जेफ़ उस दलदल में शब्दहीन जंगली गीत गाता हुआ घण्टों भटकता फिरता था। उसके गीत गीत नहीं केवल आवाज़ होते थे। उसकी तृष्णा यदि कोई चीज बुझा सकती थी तो वह थी शिकार। जब घूमता-फिरता वह किसी ठंडे तालाब के समीप पहुँचता और उसके आस-पास चक्कर काटता तो वहाँ कोई ऐसा व्यक्ति न था जो उसे यह बता देता कि वहाँ हिरन पानी पीने आते हैं या नहीं। वह वहीं पड़ा रहता, लगातार दस घण्टे गुज़र जाते। संतोष व आराम के साथ लेटा वह किसी साँभर या जंगली दलदली सूअर की प्रतीक्षा करता रहता। प्रतीक्षा की उन लम्बी और स्तब्ध घड़ियों में वह निराकार और अनन्त स्वप्न देखता रहता था।

वह स्वप्नों में उन नगरों को देखता जिन्हें उसने कभी न देखा था। देखते-देखते वह अप्सराओं की नगरी में पहुँच जाता था, उसी नगरी में जिसका मनुष्य शब्दों में वर्णन किया करता है। उसे स्वप्न में पिता अब्राहम, ईश्वर की भाँति निराकार, हालेलुजाह गीत गाते हुए दीख पड़ते थे। कभी-कभी उसे स्वप्न में एक निराकार, मार्मिक अभिलाषा के दर्शन होते थे जो रबर की भाँति उसके हृदय को फैला देती थी।

एक बार दलदल में उसकी दो गोरों से मुठभेड़ होगई और इस घटना को उसने गिडियन को कभी न बताया। ये बूढ़े जो भूरी, मैली-कुचैली और अस्त-व्यस्त वर्दी-पहने थे, फौजी सैनिक थे। उन्होंने जेफ़ की ओर देखा और उसे गालियाँ देने लगे, और उन्होंने अपनी बंदूकें उस पर उठाईं तो वह कूद कर एक पेड़ के पीछे छिप गया। दोनों बंदूकों में से गोलियाँ निकलीं और एक गूंज प्रतिध्वनित हुई, मानो दलदल में युद्ध छिड़ गया हो। यदि वह उनके हाथ आ जाता तो मरने वाले भोले-भाले हब्शियों की संख्या में केवल एक हब्शी और बढ़ जाता। वह मुंह के बल पानी में गिरता और दलदल और पतली पत्तियाँ धीरे-धीरे उसे सोख लेतीं और फिर वह शायद ऐसा विलीन होता कि धंधली स्मृति में न रह जाता।

यदि कोई ऐसी चीज थी जो जेफ़ के तरुण पुरुषत्व का प्रतीक थी तो वह यही घटना थी क्योंकि जब वे दल-दल में दौड़े तो वह उन दोनों को गोली मार सकता था, लेकिन उसने ऐसा नहीं किया,—वह केवल जिज्ञासा और उत्सुकता-पूर्ण यातना से, निर्भय हो वह इस गूढ़ प्रश्न पर विचार कर रहा था कि आखिर ये लोग इतनी जल्दी और इस निर्दयता से उसे मौत के घाट उतारने पर क्यों आमादा हो गये थे।

इस घटना का उसने किसी से भी जिक्र नहीं किया। ओवरसियर के जाने के बाद यह पहला अवसर था जबकि कार्वेल में एक पत्र आया था। चुनाव को समाप्त हुए और उसे भूले हुए सप्ताह गुजर चुके थे, इस लिए आज इस पत्र के आने और चुनाव के होने, इन दो असाधारण घटनाओं में कोई संबंध हो भी सकता है यह कोई न जानता था। एक दिन तीसरा पहर होते ही एक बग्घी कोलंबिया पाइक में आकर रुकी और उसमें से बूढ़ा पोस्टमास्टर कैप हाल्सटीन धीरे-धीरे सुस्ती के साथ बाहर निकला और उन स्वतंत्र हब्शियों से वार्तालाप करने में उसे बड़ी कठिनाई होने लगी। युद्ध के समय कैप हाल्सटीन ही पोस्टमास्टर के पद पर था और उसने पहले राजद्रोहियों के अधीन और बाद में यैंकियों के अधीन, फिर राजद्रोहियों के अधीन और बाद में यैंकियों के अधीन इस पद पर काम किया और उसे बरकरार रखा।

उसके पद के स्थायित्व का कारण उसकी राज्यभक्ति नहीं थी; बल्कि वह

जो तम्बाकू खा-खा कर थूकने वाला व्यक्ति विधान का एक अपवित्र शत्रु था और विधान के विरुद्ध सूर्योदय से सूर्यास्त तक विष उगलता रहता था। अपने जीवन में उसने कभी राष्ट्रीय ध्वजा को श्रद्धा की दृष्टि से नहीं देखा। लेकिन वही एक ऐसा अकेला व्यक्ति था जो जानता था कि युद्ध और युद्ध के उपरांत के अराजकता-काल में कौन कहाँ था और अब कहाँ है; केवल वही यह जानता था कि कौन जीवित है और कौन मर चुका है; कौन अपनी बस्ती में रह रहा है और कौन चॉर्ल्सटन, कोलंबिया और अटलांटा चला गया है,—और कौन उत्तर की ओर। केवल वही एक व्यक्ति था जो उन हज़ारों-लाखों गुलामों को जानता था जो वहाँ अब स्वतंत्र कर दिये गये थे। यही कारण था कि सेना ने उसे पोस्ट-मास्टर के पद पर रहने दिया था यद्यपि वह उन्हें दिन-रात कोसता, उलाहना देता रहता और शपथ खाता था कि अपने जीवन में कम-से-कम एक जन-तंत्रवादी को अपने हाथों मौत के घाट ज़रूर उतारूंगा।

अब कार्वेल की बस्ती में पहुँचकर उसने चिल्ला कर कहा :

"ए हब्शी हरामी के बच्चो!"

यह सच था कि उसे उस समय किसी भी चलते-फिरते व्यक्ति का भय नहीं था। उसकी आवाज़ सुनते ही मर्द, औरतें, लड़के और लड़कियाँ सभी दौड़ते हुए आपहुँचे। वे उसे घेर कर खड़े रहे, उसने तम्बाकू की पीक ज़मीन पर थूकी हाथ मले और जेब से एक लम्बा भूरे रंग का लिफ़ाफ़ा निकाला। उसने से कनखियों से देखते हुए पूछा :

"तुम चोर-बदमाशों में गिडियन जैक्सन किसका नाम है?"

गिडियन इस ठिंगने बूढ़े व्यक्ति की ओर देखकर मुस्करा रहा था। उसे उस पोस्टमास्टर की कुछ चीज़ पसंद थी, वह खुद न जानता था कौन सी! शायद भाई पीटर के इस वाक्य से यह प्रगट होती है, "कुछ ऐसे भी मनुष्य हैं जिनको नम्रता के प्रयोग में भी पीड़ा होती है।" गिडियन आगे बढ़ा, और कैप ने जो उसे जानता था, उसे सिर से पैर तक देखा और पूछा :

"गिडियन जैक्सन तू है?"

"जी हाँ।"

"यहाँ दस्तखत करो।"

"बहुत अच्छा साहब!"

हाल्सटीन ने पेन्सिल का एक टुकड़ा निकाला। "क्या तू लिख सकता है? यदि नहीं, तो फिर यहाँ अंगूठे का निशान लगादे।"

"मैं लिखना जानता हूँ।" गिडियन ने कहा। वह अपना नाम तो लिख ही सकता था। वहाँ लोगों ने उसे इस तरह घेर लिया कि उसे साँस लेना तक दूभर हो गया और फिर उसने हाल्सटन की गड़ी हुई निगाहों के सामने अपने दस्तखत कर दिये।

इससे पहले उसने कभी इस प्रकार अपनी लिखावट का आम प्रदर्शन नहीं किया था और उसके इस कौशल पर लोगों ने नम्र भाव से आलोचना शुरू कर दी। तब बुड्ढा पोस्टमास्टर अपनी बग्घी में जा बैठा, उसने उसे मोड़ा और खच्चर को चाबुक मारते हुए अपने घर की राह ली।

गिडियन ने धीरे से उस भूरे लिफ़ाफे को पलटकर देखा। बांई ओर ऊपरी कोने पर लिखा था :

यदि इस दिन की अवधि तक न
सौंपा जाय तो इस पते पर
लौटा दिया जाय

जनरल ई० आर० एस० कैनबी, यू० एस० एम० ओ० एफ़०, कोलम्बिया, एस० सी० एस० एम० डी०

इसमें से अधिकतर शब्द तो वह पढ़ सकता था; किन्तु अक्षरों की इस लम्बी पंक्ति का अर्थ वह न समझ सका। भाई पीटर ने उसके कंधों पर मुँह रखकर कहा:

"जनरल कैनबी जो है न वह नया यैंकी है। वह अब चीज़ों की देखभाल करने आया है। वह जो एस० सी० लिखा है उसका अर्थ है साउथ केरोलीना, एस० एम० डी० का शायद सैकण्ड मिलिट्री डिस्ट्रिक्ट होगा। हमें जो मतदान-पत्र मिला था न, उसमें भी ये ही अक्षर लिखे थे। दूसरे अक्षरों का मतलब भगवान् जाने क्या है।"

उसके दूसरे कोने में लिखा था:

सरकारी कार्य

यदि पोस्ट के स्टम्प चिपकाये बिना उपयोग किया गया तो १०,००० डालर जुर्माना होंगे।

न भाई पीटर और न उस पूरे समूह का कोई और ही उसका मतलब समझ सका। लिफ़ाफे के मध्य में पता लिखा था :

गिडियन जैक्सन साहब,

कार्वेल कृषि-क्षेत्र,

कार्वेल, एस० सी० एस० एम० डी०

भाई पीटर ने गिडियन का नाम तो ज़ोर से पढ़ दिया, लेकिन 'साहब' के शब्द पर आकर रुक गये। उन्होंने वह शब्द कभी न देखा था, और इसीलिए न उसके अर्थ की कल्पना कर सकते थे और न उसका उच्चारण ही। उन्होंने फिर भी शांति से होंठ हिलाकर उसे पढ़ने का प्रयत्न किया। हैनिबाल वाशिंगटन ने भी जो कुछ शब्द पढ़ सकता था, उसे पढ़ने का प्रयत्न किया। और वैसे ही मैरियन जैफ़रसन ने भी जिसने यूनियन की सेना में रहकर कुछ शब्द सीख लिये थे—किन्तु बस साक्षरता की यहीं चरम-सीमा थी। इसके उपरांत पूरा समूह पत्र की ओर दृष्टि गड़ाकर देखने लगा और तब अन्त में गिडियन ने कहा :

"आप यह शब्द भी समझे कि नहीं, भाई पीटर ?" भाई पीटर ने अपना सिर हिला दिया और हैनिबाल वाशिंगटन ने अनुमान लगाते हुए कहा, "शायद मिस्टर या कर्नल जैसा लगता है।"

"तो फिर यह गिडियन के नाम के पहले लिखा जाना चाहिये था, यह बाद में क्यों लिखा ?"

फिर भाई पीटर ने स्तब्धता तोड़ते हुए कहा, "इसे खोलकर देखो तो गिडियन।"

धीरे-धीरे गिडियन ने लिफ़ाफ़ा खोला। वह काग़ज़ों से भरा हुआ था। उन सबमें लिपटा हुआ एक ख़त गिडियन के नाम था जो उसी तरह लिखा था जैसा कि लिफ़ाफे पर। उसमें लिखा था :

"आपको सूचित किया जाता है कि आप कार्वेल-सिंकरटन जिले के दक्षिणी

केरोलिना से राज्य की विधान सभा में प्रतिनिधि चुने गये हैं, जिसका अधिवेशन १४ जनवरी १८६८ को चार्ल्सटन, एस० सी०, एस० एम० डी० में होगा।

"आपके लिए आदेश व प्रमाण-पत्र साथ ही नत्थी है। चार्ल्सटन के मेजर एलेन जेम्स को आपके निर्वाचन और स्वीकृति की सूचना दे दी गयी है और वह ही आपका प्रमाण पत्र लेंगे। संयुक्त-राज्य की सरकार को विश्वास है कि आप आदर-पूर्वक और न्यायपूर्ण ढंग से अपने कर्त्तव्यों का पालन करेंगे और संयुक्त राज्य की कांग्रेस आपसे माँग करती है कि आप दक्षिणी केरोलिना के राज्य के पुनर्निर्माण-कार्य में अपनी भूमिका सत्यता और भक्तिपूर्वक निभायेंगे।

ह० जनरल ई० आर० एस० कैनबी,

यू० एस० एम० ओ० एफ०, एस० एम० डी०

पत्र में यही सब लिखा था, लेकिन घण्टे बीत गये वे उसके अर्थ का एक अंश भी न समझ पाये। और सबसे बढ़कर बात तो यह थी कि गिडियन की दृष्टि में चुनाव एक भ्रष्ट, विकृत और ऐसी कुरूप चीज़ का प्रतिबिंब था जो उनकी सुन्दर, नवजात स्वतन्त्रता का उपहास उड़ा रही थी। निरक्षरता के काले पर्दों ने सब कुछ ढँक दिया था। उफ़, यह कालिख,—कालिख जो उसके चमड़े और अँधियारी रात्रि से तुलनीय थी। यह एक चमत्कार था, ठीक उसी प्रकार का चमत्कार जैसा कि आज़ादी के उस दौर में वह लगभग हर रात को स्वप्न में देखा करता था, वे स्वप्न जिनमें उसे अनुभव होता था कि उसके कंधों पर कोड़ों के प्रहार हो रहे हैं, जिनमें उसे अनुभव होता था कि वह चिलचिलाती धूप में रूई के खेतों में काम कर रहा है, और वे स्वप्न इतने वास्तविक होते थे कि वह रेंगता हुआ बिस्तर से निकलकर द्वार पर आ जाता था और अपनी आँखों से देखता था कि खेतों में कपास नहीं बोयी गयी है। अब तो उसका जागरण भी एक स्वप्न बन गया। वह वहाँ से भाग कर कहीं छिप जाना चाहता था।

और भाई पीटर और हैनिबाल वाशिंगटन खत पढ़ने की कोशिश कर रहे थे। लोगों की रुचि अब तक ठण्डी पड़ गई और सूर्यास्त हो गया। वे लोग गिडियन के कैबिन तक गये और आग के प्रकाश में उन काग़ज़ात को लेकर बैठ गये। हैनिबाल वाशिंगटन ने कहा :

"ऐसा क्यों न करें कि इन्हें क़स्बे में ले जायँ और वहाँ यैंकी लोग पढ़कर बता देंगे कि इसमें क्या लिखा है?"

गिडियन ने क्रोधित हो, गरजकर कहा, "नहीं," इसे सुनकर सभी की मुखाकृतियों पर विस्मय छा गया। मार्कस और जेफ़ ने कभी अपने पिता को इस प्रकार क्रोधित होते न देखा था, वे शांत हो बैठे रहे। किन्तु जेफ़ के लिए यह किसी चीज़ का आरम्भ था। उसने इन तीन शक्तिशाली व्यक्तियों की ओर देखा। यही तीन व्यक्ति थे, जिनका पूरी बस्ती आदर-सम्मान करती थी, जो ठोस, ईश्वर से भय खानेवाले, अच्छी फ़सल के रहस्य को जानने वाले, गाय, बछिया या सुअर की हत्या करनेवाले और अनेक दूसरी चीज़ों के जाननेवाले थे, जिन्हें आज एक काग़ज़ के टुकड़े ने पराजित कर दिया था और जो बलहीन सिद्ध हो रहे थे। शायद वह काग़ज़ उनसे अधिक बलवान् था। जेफ़ बहुधा कल्पना सागर में ही ग़ोते लगाया करता था और अब उसने छपे हुए शब्द की शक्ति को अपने शांत उद्देश्य व संकल्प के साथ उसके सामने खड़े देखा। वह जानता था कि एक-न-एक दिन वह भी पढ़ना-लिखना सीख जायगा और आज पहली बार उसने अनुभव किया कि वह गिडियन से उच्चतर है।

और आज ही पहली बार उसने गिडियन के प्रति कुछ ग्लानि का अनुभव किया और सोचा कि यदि वह गिडियन के स्थान पर होता तो अपनी निरक्षरता और पढ़ने की अयोग्यता के कारण इतना क्रोधित और व्यग्र न हो जाता। रैचल भी इस बात को समझ गयी क्योंकि वह इन व्यक्तियों की भावनाओं से उसी प्रकार बँधी हुई थी जिस प्रकार कि मधुर वीणा से तार। इस समय वही सबसे ज़्यादा व्याकुल थी। पिछली रात उसने अपनी बचायी हुई संपत्ति,—ताँबे का एक सिक्का बूढ़ी मामी क्रिस्ती को दिया और बुढ़िया ने उसके बदले उसे एक छोटी सी भाग्य-प्रतिमा दे दी जिसे रैचल ने केबिन में छिपा दिया था। यदि गिडियन को इसका पता चल गया तो वह बहुत क्रुद्ध और मलिन हो जाता, उसे इस प्रकार की चीज़ों से घृणा थी और जब कभी उसे अवसर मिलता तो वह दुर्भाग्य का बड़ी बिद्द के साथ विरोध करता था। और भाई पीटर ऐसी चीज़ों को ईसाई धर्म के विरुद्ध और नास्तिकता की बातें ठहराते थे।

अन्त में इन तीनों आदमियों ने पूर्ण या अपूर्ण रूप से खत का मतलब समझ लिया। 'पुनः निर्माण' और 'सत्यनिष्ठा से' जैसे शब्दों के अर्थ का तो वे केवल अनुमान ही कर सकते थे, दूसरे कई शब्दों का उन्होंने गलत अर्थ समझा लेकिन पूरे खत का सारांश वे समझ गये। एक बात तो वह अच्छी तरह जान गये कि गिडियन को चार्ल्सटन जाना है। सभा के अधिवेशन का अनिश्चित रूप सुदूर भविष्य में था, सम्भव था कि वह एक स्थायी चीज हो और सम्भव है न भी हो। गिडियन को उन्होंने सभा को दे दिया था अब; वह उनका अपना गिडियन नहीं था। लिफाफे के दूसरे पत्र व कागज़ उन्होंने सिर्फ सरसरी निगाह से देखे, उन्हें गिडियन अपने साथ ले जायगा अन्त में उनका अर्थ भी प्रकट हो जायगा।

गिडियन ने तिथि के बारे में पूछा। ठण्डी वायु के झोंके केबिन की दीवार की दरारों से होकर अन्दर प्रवेश कर गये। कहीं १४ जनवरी गुजर तो नहीं गई! लेकिन भाई पीटर ने सोचा लिफाफे की मुहर देख ली जाय।

"ये देखो इसमें २ जनवरी लिखा है।"

"चार्ल्सटन तक पैदल जाने में बहुत समय लगता है।" हैनिबाल वाशिंगटन ने साँस छोड़ते हुए कहा और इस बौने ने गिडियन की ओर ईर्ष्या से देखा।

"इस प्रकार थोड़े ही जा सकता हूँ," गिडियन ने वक्र दृष्टि से अपने फटे पजामे, पुरानी फौजी कमीज़ और फौजी बूटों को देखा।

"हाँ, यह तुम्हें शोभा भी नहीं देगा," भाई पीटर ने सहमति प्रकट की। "मेरे पास एक काला चोगा है। एक आस्तीन फट गई है लेकिन वह रैचल दुरुस्त कर देगी। तुम्हें थोड़ा तंग पड़ेगा पर तुम्हें बुरा नहीं लगेगा, गिडियन!"

"फर्डिनेण्ड के पास एक जोड़ा खूबसूरत पतलून का है।"

"ट्रूपर के कैबिन में जो वह पुराना ऊँचा हैट रखा है वह भी ले लो। बड़ा मजबूत और उम्दा हैट है,—थोड़ा फट जरूर गया है, लेकिन है बड़ा मजबूत और अच्छा।"

"प्यारे गिडियन, मैं कमीज को दुरुस्त करके धो दूँगी।" रैचल ने कहा।

हैनिबाल वाशिङ्गटन ने उदारतापूर्ण भाव से कहा, "गिडियन, मेरे पास

एक पुरानी घड़ी है जो मुझे एक यैंकी फ़ौजी ने दी थी।" यह उसकी बहुमूल्य सम्पत्ति थी। इन लोगों के इस घनिष्ट प्रेम को देखकर गिडियन को एक अनहोनी स्फूर्ति का अनुभव हुआ।

"तुम इसे ले लो, गिडियन", हैनिबाल वाशिंगटन ने कहा, "उसमें कुछ पुर्जे वगैराह नहीं हैं, न वह समय ही बतला सकती है, लेकिन बाँधने के लिए है बड़ी खूबसूरत।"

"तुम्हें एक रूमाल की भी ज़रूरत होगी," भाई पीटर ने निश्चय करते हुए कहा, "हब्शियों का जैसा पसीना पोंछने के लिए नहीं, बल्कि गोरों की भाँति ऊपर की जेब में रखने के लिए। मेरे पास एक उम्दा लाल-सफेद दरेज़ का टुकड़ा है; रैचल उसे सीकर उसका रूमाल बना देगी।"

इस प्रकार सब आवश्यक तैयारियों के बाद गिडियन जैक्सन चार्ल्सटन क़स्बे की अपनी लंबी यात्रा के लिए पैदल रवाना हुआ। दो दिन के बाद प्रातः काल वह कार्वेल की बस्ती से रवाना हुआ और उसे मीलों पीछे छोड़ता गया,—अब वह धूल-धूसरित सड़क पर लम्बे-लम्बे डग भरता हुआ चला जा रहा था। उसका हैट हवा में डगमगा रहा था और अपनी मंद ध्वनि में सेना का प्राचीन मार्चिङ्ग गीत गा रहा था।

"तीव्र गति से हम हुए हैं अग्रसर,
अब मुक्ति के इस मार्ग पर
तीव्र गति से हम हुए हैं अग्रसर
मुक्ति के इस मार्ग पर
बूढ़े दादा जान ब्राउन
आते हैं हम आते हैं
मुक्ति के इस मार्ग पर

यह एक विद्रोहपूर्ण गीत था। दक्षिणी केरोलिना की सड़क पर इस गीत का गाये जाने पर एक मनुष्य के जीवन का अन्त हो सकता था; किन्तु उस समय गिडियन के कुछ ऐसे ही भाव थे जो उस गीत में प्रकट हुए थे। अभी उसे अपनी मंजिल चार्ल्सटन तक पहुँचने में सौ मील का फ़ासला और तय

करना था,—उस खुली, चौड़ी सड़क के सौ मील और उस पर पैदल सफ़र। अब सिर ओखली में दिया जा चुका था और उसे उत्सुकतापूर्ण सुख और स्फूर्ति का अनुभव हो रहा था; ठीक उसी प्रकार का अनुभव जो उस लड़के को होता है जो एक तालाब में मछली पकड़ने जाता है। कुछ देर के बाद फिर वेही शंकाएँ और चिंताएँ उसे आघेरतीं, लेकिन एक बूढ़े गुलाम के लिए इस प्रकार की लम्बी यात्रा पर उल्लसित और प्रसन्न चित्त होने के सिवा और क्या हो सकता था?

गिडियन के प्रस्थान के पहले कुछ विवाद इस बात पर भी हुआ कि भय और संकटपूर्ण मार्ग पर जाते समय उसे अपने साथ कोई बंदूक भी लेजानी चाहिए। लेकिन वह भाई पीटर से सहमत था कि सभा में बंदूक हाथ में लिए जाना अनुचित होगा।

"वापस लौटो तो शांति और प्रेम अपने हृदय में लेकर आना,—और उसका दामन तुम्हारे हाथों से न छूटने पाये।" भाई पीटर ने कहा।

खैर, उसके कोट की ऊपरी जेब में संयुक्त राज्य की सरकार का प्रमाण-पत्र था, उसे छेड़ने का किसे साहस हो सकता है? उसके भूरे लिफ़ाफे पर "सरकारी कार्य" लिखा था।

उसकी हार्दिक भावनाओं और आशाओं का ज्वार-भाटा भी बड़ा विचित्र था, एक क्षण के लिए वह भयभीत हो जाता तो दूसरे ही क्षण सुख और उल्लास से उसका मुख चमकने लगता। जब वह डबलरोटी और गोश्त की पुटलिया अपनी बग़ल में दबाये गाता हुआ चला जा रहा था, तब देवदार के जंगलों से बहती हुई ठण्डी वायु का झोंका सड़क के दूसरे छोर से गुजर गया और वह सोचने लगा कि इस सभा का परिणाम क्या होगा? आश्चर्य की बात है कि जैसे-जैसे वह इस पर सोचता जाता उसे सभा के परिणाम-स्वरूप नये राज्य और नये जीवन की कल्पना साकार दिखाई देती, जिससे गिडियन-जैसे मनुष्य में भय और गर्व दोनों की भावनाएँ पैदा हो सकती हैं।

जैसे-जैसे वह चला जा रहा था सामने के देवदार के जंगलों का घनापन कम होता जाता था। पास ही में एक झोपड़ी और कोई दस एकड़

की चटियल भूमि नज़र आ रही थी। यह एब्नेर लेट की माफी की भूमि थी। ने उसे अब भी माफ़ी की ज़मीन कहते थे; हालाँकि एब्नेर लेट और उसके पूर्वज कार्वेल में बँटाईदार थे। लेट लंबा, दुबला-पतला, लाल बालवाला गोरा था और धीरे-धीरे बोलता था, तथा संसार की हर वस्तु को संदिग्ध और अनिश्चित दृष्टि से देखता था। वह कठिनाइयों से घिरा हुआ था; युद्ध के पूर्व बड़ी कठिनाई से वह उस भूमि से अपनी जीविका उपार्जित कर पाता था। जब फ़सल अच्छी होती थी तो कार्वेल के कुटुम्बी उसे हथिया लेते थे और जब ख़राब होती तो वह ऋण से दब जाता था।

जब युद्ध छिड़ा तो वह डडले कार्वेल की फ़ौज की टुकड़ी के साथ चला गया। साढ़े तीन साल तक अनगिनत लड़ाइयाँ लड़ने के बाद और चार बार घायल होने बाद वह बन्दी बना लिया गया; और तब से युद्ध के समाप्त होने तक वह यैंकियों के क़ैदखाने में बन्द रहा। उसके वहाँ से चले जाने के बाद किसी तरह उसकी बीवी और बच्चे जीवित रहे,—किस तरह यह वह खुद न जानता था और न उसकी बीबी को ही यह याद रहा। अब वह वापस लौट आया था और उसने दो फ़स्लें बोदी थीं। परिस्थितियाँ अब भी अच्छी न थीं; लेकिन पहले की अपेक्षा बेहतर थीं। कम-से-कम कार्वेल के लोग उसे भूल चुके थे। उसने कुछ फसलें काटीं। कुछ सुअर और मुर्ग़ियाँ पालीं और किसी-न-किसी तरह पेट भर ही लेता था।

एब्नेर लेट हब्शियों से वही चिर-परिचित घृणा का व्यवहार करता था जो उसके लिए एक नियम-सा बन गयी थी और जिसकी उससे आशा की जा सकती थी। वह खेतिहरों से घृणा करता था, जिसे वह बिल्कुल तर्कपूर्ण और नपी-तुली घृणा समझता था। गिडियन और उसके बीच एक सम्मानपूर्ण वैमनस्य था। जैसे ही गिडियन उस सड़क पर पहुँचा तो एब्नेर अपने खेत की मेंड़ पर कुदाली के सहारे झुककर खड़ा हुआ था।

"गुड मॉर्निंग मिस्टर लेट!" गिडियन ने कहा।

"यह गीत जो तुम गा रहे हो तुम-जैसे हब्शी को शोभा नहीं देता।"

"जब मेरे पैर सड़क पर पड़ते हैं तो मेरी ज़बान पर गीत आ जाता है।"

गिडियन मुस्करा दिया। "जब मैं यैंकियों के साथ मार्च करता था, तब भी हमारी जबान पर यही गीत होता था।"

"खुदा तुम्हें जहन्नम रसीद करे।" एब्नेर ने आलस्यपूर्ण स्वर में कहा। आज की सुबह क्रोध करना उचित नहीं था। उसके दोनों भूरे बालवाले लड़के पीटर और जिमी झेंपते हुए मेंड़ के समीप आ पहुँचे।

"काश, मैं तुम्हें इस समय यैंकियों के साथ देख पाता।" एब्नेर ने कहा, "मैं तुम्हारे शरीर को इस तरह छेद देता जैसे कि तुम्हारा यह काला कोट छिदा हुआ है। यह तुम बन्दर की भाँति कस-बंधकर कहाँ जारहे हो, गिडियन ?"

"सभा में भाग लेने चार्ल्सटन जा रहा हूं।"

"सभा ! खुदा की लानत हो इन सब पर।"

"चुनाव में मुझे प्रतिनिधि चुन लिया है।"

एब्नेर ने सीटी बजायी और कहा, "यह तुम क्या कह रहे हो, क्या मतलब है तुम्हारा ? हब्शी और चार्ल्सटन की सभा ! जानते भी हो गिडियन ? तुम्हारे मुँह खोलने के पहले ही वे तुम्हें मार-मार के अधमरा कर देंगे।"

"सम्भव है ऐसा भी हो जाय," गिडियन ने सिर हिलाया "पर मेरे, पास सरकार का लिखित प्रमाण-पत्र मेरी जेब में मौजूद है। तुम चुनाव में मत देने गये थे ?"

"हाँ, मैं गया था वहाँ, लेकिन मैंने हब्शी को मत नहीं दिया।"

वे कुछ देर तक और वहीं खड़े रहे, और उनमें से एक बच्चा साहसकर गिडियन के पास चला गया। गिडियन उसके भूरे बालों पर प्रेम भाव से हाथ फेरने लगा। फिर गिडियन ने उनसे विदा ली और सड़क पर चलने लगा। एब्नेर लेट ने उसे जाते हुए घूरा और बड़बड़ाते हुए कहा :

"ये देखो यह हब्शी चार्ल्सटन जारहा है। ईसा मसीह देखो, यह हब्शी सभा में सम्मिलित होने चार्ल्सटन जारहा है।"

गिडियन चलता रहा; यहाँ तक कि सूर्य उसके सिर पर चढ़ आया। तब वह सड़क के एक छोर पर रुका और वहीं झाड़ियों में कुछ आग सुलगाकर कुछ डबल रोटी और गोश्त खाया और उसके बाद आधा घण्टा वहीं आराम करने

लगा। अब उसे पहले से कुछ गर्मी महसूस होने लगी। चिड़ियाँ सुखप्रद मधुर गान गा रही थीं और समीपवर्ती सोते की ध्वनि उसे अपनी ओर आमन्त्रित कर रही थी। वह उसकी प्यास बुझाने के लिए उसे बुला रही थी। यह देखकर उसे बहुत आनन्द मिला।

जब रात हुई तो गिडियन किसी ऐसे स्थान की खोज करने लगा जहाँ वह सो सके। यदि जरूरी हुआ तो वह उन देवदार की झाड़ियों में थोड़ी आग जला लेगा और उन भूरी सुइयों के नम्र बिछौने पर लेट जायगा; वहाँ उससे बेहतर स्थान रात बिताने के लिए उसे न मिल सकता था। लेकिन गिडियन को इस प्रकार बिना किसी की हँसी या मानव की आवाज सुने, उस निर्जन स्थान पर रात्रि व्यतीत करना व्यर्थ जान पड़ा; उसे एकांत पसंद न था। पूरे दिन की पैदल यात्रा से वह थक चुका था और काफ़ी फासला तय कर चुका था,—शायद पच्चीस या तीस मील चल चुका था। वह एक क़स्बे से गुज़रा था और उसे भी काफी दूर छोड़ आया था। वह बेर की झाड़ियों के दलदली मार्ग से भी गुजरा था और अभी उसे सपाट समुद्री किनारे के प्रदेशों को पार करना था। संध्या के सौम्य धुँधलेपन से आकाश आच्छादित था और शीतल वायु के मन्द झोंके शरीर में कंपन पैदा कर रहे थे।

इसलिए जब गिडियन ने सामने की पठारी भूमि पर एक कैबिन की चिमनी से नीले धुएँ के निकलते हुए बादल और दरवाजे पर तीन काले रङ्ग के बच्चों को खेलते हुए देखा तो सन्तोष की साँस ली।

जैसे ही उसने मैदान पार किया कि एक आदमी उस मकान से उससे मिलने बाहर आया, वह भी साठ या सत्तर वर्षीयहब्शी था; लेकिन था बलवान् और स्वस्थ, और उसके होठों पर मुस्कराहट नृत्य कर रही थी।

"गुड ईवनिंग।" उसने गिडियन का अभिवादन किया।

"और मेरा भी आपको गुड इवनिंग।" गिडियन ने सिर हिलाया और देखा कि हर जगह बच्चे इस अजनबी को देखकर इसी प्रकार उत्सुक और उत्तेजित हो जाते थे।

"मैं आपकी क्या सेवा कर सकता हूँ?" वृद्ध पुरुष ने पूछा।

"मेरा नाम गिडियन जैक्सन है, महाशय! मैं ऊँचे प्रदेश कार्वेल कृषिक्षेत्र का निवासी हूँ,—और चार्ल्सटन जा रहा हूँ। यदि आप रात बसर करने के लिए मुझे अपने मकान में आश्रय दे दें तो आपका बहुत आभारी हूंगा। मैं कोई आवारा, भिखारी हब्शी नहीं हूं। मेरे पास इस पुटलिया में अपना खाना मौजूद है। मेरी जेब में कुछ सरकारी काग़ज़ात हैं।" बूढ़ा मुस्कराने लगा। गिडियन कहते कहते रुक गया और जो कुछ वह चार्ल्सटन सभा के बारे में कहने जारहा था उस सब को अपने आप ही निगल गया। बूढ़े आदमी ने कहा:

"कोई भी अजनबी क्यों न हो, मेरा घर उसके रहने के लिए और खाना खाने के लिए हमेशा खुला है। वह ओसारा तो ढोरों के लिए है। हम आपको बिस्तर तो नहीं दे सकते। हाँ, अगर आप बुरा न मानें तो अँगीठी के पास ही जगह और एक कम्बल आपको जरूर दे देंगे, सम्भव है यह आपके लिए पर्याप्त होगा। मुझे किसी भी आदमी के प्रमाण-पत्रों या परिचय-पत्रों की जरूरत नहीं होती, महाशय! मेरा नाम जेम्स एलेन्बी है।"

"आपका बहुत बहुत धन्यवाद, मि० एलेन्बी", गिडियन ने कहा। और बूढ़ा आदमी और ज्यादा मुसकराने लगा। तब एलेम्बी उसे उस झोपड़ी में ले गया जो पुरानी लकड़ियों के ढेर से बनी थी और शायद कुछ समय पहले किसी आजाद गोरे ने बनवाई थी; क्योंकि इसमें खिड़कियाँ और कुज़ाबे थे, जोकि साधारण तौर पर गुलामों के कैबिनों में नहीं पाये जाते। एक लड़की अंगीठी के पास झुकी हुई बैठी थी और बर्तन में कुछ घोल रही थी; जैसे ही वे प्रविष्ट हुए वह खड़ी हो गयी, लंबी, सुडौल शरीरवाली, कत्थई रंग की असाधारण रूप से सुन्दर, सिर शांत भाव से उठा हुआ, मानों वह सिर पर गगरी रखे उसे सँभाल रही हो। उसके नेत्र बड़े-बड़े और चमकदार थे। गिडियन ने यह सब उस संध्या-समय में भी देख लिया, लेकिन उसके नेत्रों में कुछ विचित्रता थी और वे नीचे झुक रहे थे। गिडियन को उन्होंने नहीं देखा। एलेन्बी ने उसका हाथ पकड़कर कहा:

"बेटी, आज रात हमारे यहाँ यह मेहमान आये हैं। इनका नाम गिडियन जैक्सन है। यह चार्ल्सटन जा रहे हैं और रात यहीं बसर करने के लिए मैंने इनसे कहा है। मेरे ख्याल से यह एक अच्छे और सज्जन व्यक्ति हैं।"

बूढ़े आदमी के इस वार्तालाप से और लड़की के इस दौरान में एक ही ओर टिकटिकी लगाये देखने से गिडियन को वह संकेत मिल गया जिसकी वह इतनी देर से खोज कर रहा था। जब उसने यह देखा कि लड़की अंधी है तो वह एक क्षण के लिए भय से काँप उठा। उसे इस हृदय-विदारक बात पर विश्वास न आया। वह इस भयानक कल्पना का आश्वासन प्राप्त करने के लिए उन बच्चों की ओर देखने लगा जो उस लड़की की घघरी से झूल रहे थे। उसने उस बर्त्तन से आती हुई सुगंध सूँघी और उस स्वच्छ किन्तु दरिद्रतापूर्ण कैबिन की ओर देखा। शायद वह उस बूढ़े आदमी की बेटी होगी, माँ नहीं; क्योंकि उसकी आयु बहुत कम थी। इस समय प्रश्न पूछना उसे अनुचित जान पड़ा। उसने कहा, "आपका इस घर में मैं स्वागत करती हूँ, महाशय।" और यह कहकर अँगीठी के पास वापस चली गयी। गिडियन देवदार की शाखाओं की बनी कुर्सी पर बैठ गया और एलेन्बी ने पतरे की तश्तरियाँ और चम्मच रखकर मेज सजा दी। बाहर अँधेरा हो चुका था। गिडियन का हृदय वात्सल्य से भरा था, उन्होंने भी उसके प्रति स्नेह दर्शाया और फौरन ही उनमें से एक उसकी गोद में जा बैठा और दो उसके घुटनों पर झूलने लगे।

"इन्हें गाने बहुत पसंद हैं।" बूढ़े आदमी ने कहा। गिडियन ने गाना शुरू किया :

खरगोश भाई रहते
जंगल की झाड़ियों में
नीले गगन के नीचे
और फूंस के ये छप्पर
उनको कभी न भाते.........!

गिडियन ने अपनी कहानी समाप्त की। चुनाव में उसका प्रतिनिधि चुना जाना आदि। अब रात बहुत हो चुकी थी और अँगीठी के अँगारे ठण्डे कोयलों में बदल गये थे। लड़की एलेन जोन्स सीढ़ियाँ चढ़कर ऊपर गयी और ओलती (मोरी), के नीचे जाकर सोगई। एक बच्चा उसी के पास सो रहा; दोनों बच्चे हैम और जैपेट भी एक ही फूस के बिछौने पर सो गये। बूढ़ा आदमी गिडियन के साथ

अँगीठी के पास बठा रहा।

"तो आप अब चार्ल्सटन जा रहे हैं ?" बूढ़े आदमी ने कहा। "सवेरा कितनी देर बाद होता है ? मुझे आपसे ईर्ष्या होती है गिडियन जैक्सन ! खुदा मेरी रक्षा करे; मुझे वास्तव में आपसे बहुत ईर्ष्या हो रही है। लेकिन जैसा कुछ भी है, ठीक है। आप नौजवान हैं, बलवान हैं और आप ही जैसे लोग यह कार्य कर सकते हैं। आप ही जैसे........."

"यह हम सब लोगों का कार्य है।" गिडियन ने कहा।

"हाँ ?—शायद ऐसा ही हो। मेरी क्या उम्र होगी, गिडियन ?"

"होंगे शायद पैंसठ —"

"सतहत्तर वर्ष का हूँ गिडियन ! मैं दस-बारह अँग्रेजों के खिलाफ़ युद्ध में लड़ चुका हूँ। हाँ, उस समय अपने देश की स्वतंत्रता के लिए हमें लड़ने की इजाजत थी। नहीं, मैं अपने स्वर में कठोर नहीं हूँ। उस समय वे सोचते थे कि गुलामी अपनी मौत आप मर जायगी। यह उस ज़माने की बात है जब कि रूई को नक़द रुपयों की फसल नहीं समझा जाता था। देश के अधिकांश भाग में गुलाम उस समय हानिकारक समझे जाते थे। उन्होंने मुझे शिक्षा दी, मुझे अध्यापक बना दिया; वे उस समय न जानते थे कि शिक्षा एक प्रकार का रोग है। वे नहीं जानते थे कि यदि किसी को साक्षर बना दिया तो वह गुलाम नहीं रहेगा और अपना स्वतन्त्रता का रोग सब में फैला देगा।"

"थोड़ी सी शिक्षा मुझे दे दो और मेरा हृदय उसके बदले में ले लो।" गिडियन ने प्रार्थना की।

शिक्षा और स्वतंत्रता ....। जरा संतोष करो, गिडियन ? ये दोनों साथ-साथ आती हैं। क्या मैं नहीं जानता ? जब वह अँग्रेज-विरोधी युद्ध समाप्त हुआ तो मेरे स्वामी ने देखा कि मैं दूसरे गुलामों को पढ़ना-लिखना सीखा रहा हूँ। वह कैसे देख सकता था और उसने मुझसे पूछा कि मैं यह किसकी आज्ञा से कर रहा हूँ। मैं ऐसा न कर सकूँ इस गरज से उसने मुझे नदी की वादी में जाकर बेच दिया। उसी प्रकार जैसे कि नियम-सा बन गया था और वस्तुएँ बेचीं जाती हैं गिडियन ! जहाँ कहीं भी गया मैंने देखा कि पढ़ने-लिखने, बाइबिल का कोई अंश

पढ़ने, दो एक शब्द के हिज्जे करने, किसी कुटुम्बी को जिससे वे स्नेह रखते थे और जो अब वहाँ से चला गया था एकाध-पत्र लिखने और साधारणतया थोड़ी शिक्षा प्राप्त करने की लगन सब तरफ़ मौजूद थी। मैं ऐसा न कर सकूँ इसलिए उन्होंने मुझे बेच दिया, मुझे कोड़े लगाये और डराया-धमकाया। क्या इस प्रकार किसी रोग का इलाज हो सकता है? मैंने वोल्तेअर, पेंन जेफ़रसन को और हाँ, शेक्सपियर को भी पढ़ा। गिडियन तुमने तो कभी उसका नाम भी न सुना होगा। न ही कभी उसकी मधुर ध्वनि सुनी होगी, लेकिन एक दिन वह भी आयगा जब तुम उसे पढ़ोगे—उसे सुनोगे। भला, यह सब पढ़कर भी क्या मैं खामोश रह सकता हूँ?"

गिडियन ने मूकता से सिर हिला दिया।

"मेरी तीन पत्नियाँ थीं, गिडियन! और मैं उन सबसे प्रेम करता था,—और हर बार उन्हें मुझसे छीन लिया गया, मुझे बेच डाला गया। मेरे बच्चे भी थे गिडियन! लेकिन अब वे कहाँ हैं,—मैं नहीं जानता। चार बार मैं उनके चंगुल से निकल भागा,—और हर बार उन्होंने मुझे ढूँढ निकाला, पकड़ लिया और कोड़ों से पीटा; लेकिन जान से नहीं मारा क्योंकि मैं उनके लिए संपत्ति था, मुर्दे साँड की खाल की भी कद्र होती है, लेकिन हमारी नहीं, क्योंकि हम इन्सान हैं और जिंदा इन्सान हैं। मैं यह सब किस्से हरेक को नहीं सुनाता गिडियन, सिर्फ तुम्हें ही सुना रहा हूँ, क्योंकि तुम्हारे लिए इनका महत्त्व है। तुम अपने गुज़रे ज़माने को न भूल जाना उन विपत्तियों को न भूल जाना जिनका हमारे हब्शी भाइयों ने अब तक सामना किया है। गिडियन तुम में नम्रता है, शक्ति है और उत्साह भी है। मैं यह सब देख रहा हूँ। तुम हमारी जनता के एक महान् नेता बन सकते हो; लेकिन अगर तुम अपनी जनता के बीते हुए ज़माने को भूल जाओ, तो तुम्हारा कोई मूल्य न होगा। अब शायद तुम्हें इस अन्धी लड़की और बच्चों को देखकर आश्चर्य हो रहा है। लेकिन मैं उनका क़िस्सा भी तुम्हें सुनाता हूँ—"

"अगर आप न चाहें तो कोई ज़रूरत नहीं।" गिडियन ने कहा।

"हाँ, मैं खुद चाहता हूँ और इसीलिए तुम्हें सुना रहा हूँ। ये तीनों बच्चे यतीम हैं। हमारा यह बेचारा दक्षिणी प्रदेश इस प्रकार के अनाथों और लेभू

भटके बच्चों से भरा पड़ा है। ये गुमशुदा बच्चे,—ये काले बछेरे क्या जाने कौन इनकी माँ है और कौन बाप। ये उसी प्रकार के पशु हैं जिन्हें बाजार के नष्ट हो जाने पर निःसहाय छोड़ दिया जाता है। जब अँग्रेज-विरोधी युद्ध शुरू हुआ तो मैं अलानामा में गुलामी की जिंदगी बसर कर रहा था। और जब हम लोग मुक्त हुए तो मैं उत्तर और पूर्व की ओर चल पड़ा; मैं यैंकियों के देश में जाना नहीं चाहता था,—मुझे इस दक्षिणी प्रदेश से प्रेम है,—लेकिन बहुत ही नीचे के दक्षिण प्रदेश सेकोई लगाव नहीं। वहाँ मुझ पर बड़ी निर्दयता से कोड़े लगाये गये थे। मैंने सोचा शायद कोरोलिना में या विर्जीनिया में कोई ऐसा स्थान हो, जहाँ मेरी—एक शिक्षक की जरूरत हो। और रास्ते में ही मैंने इन बालकों को अपने साथ लेलिया, ये मुझे वहीं भटकते हुए मिल गये। कैसे? यह प्रश्न बड़ा सीधा है। ऐसी घटनाएँ घटती रहती हैं; संभव है यही घटना तुम्हारे सामने भी घटे। वहीं यह लड़की भी मुझे मिली। एलैन की आयु सोलह वर्ष की है। इसका बाप अटलांटा का उन्मुक्त हब्शी डाक्टर था। वह भी एक कहानी है। अब वह मर चुका है; क्यों उसे उखाड़ें, उसकी आत्मा को शांत रहने दो। शर्मन क्या गया भयानक विपदाओं का पहाड़ टूट पड़ा। मैं किसी को दोष नहीं देता। कुछ विद्रोही सैनिकों ने,—और सेना में अच्छे, बुरे सभी प्रकार के सैनिक होते हैं,—उस लड़की के बाप को उसकी आँखों के सामने मार डाला, उसके शरीर को संगीनों से छलनी कर दिया और उसकी आँखें निकाललीं। जानते हो क्यों? क्योंकि उसने यैंकियों की सहायता की थी। गिडियन, यह सब तुम्हें इसलिए नहीं सुना रहा हूँ कि तुम्हारा हृदय घृणा से भर जाय, बल्कि इसे ठीक तरह समझो गिडियन,—तुम चार्ल्सटन जा रहे हो, एक नये विधान का, नये राज्य का, एक नये संसार का, एक नये जीवन का निर्माण करने। इसीलिए तुम इसे समझ लो कि भोले-भाले अज्ञान लोग किस तरह ऐसे शैतानी, भयंकर कृत्य करते हैं; क्योंकि वे अज्ञान के अंधकार में डूबे हुए हैं। उसके बाप को मार डालने के बाद भी वे सन्तुष्ट न हुए,—और उन्होंने उस पर भी आक्रमण किया और वह तब से अंधी होगयी। इन बातों के बारे में मैं कुछ नहीं जानता आया उस सदमे के कारण इसने अपनी आँखों की ज्योति खोदी या उसकी आँखों में कोई खराबी पहले से ही थी। लेकिन जब वह मुझे मिली तो वह अचेत थी, वह न

जानती थी वह कौन है। वह जंगली जानवर की भाँति झाड़ियों में रहती थी और जंगली जानवरों की ही भाँति डरपोक भी थी। लेकिन न जाने किस कारण उसने मुझ पर विश्वास किया और मेरे साथ हो ली।" वह कहते-कहते रुक गया। गिडियन अपने हाथ की मुट्ठी कभी बंद करता और कभी खोल लेता और टिकटकी लगाये कोयलों की तरफ देखता रहा। "गिडियन!" बूढ़े आदमी ने नम्रता से कहा।

"महाशय!"

"गिडियन, जब तुमने वे सरकारी प्रमाण-पत्र अपनी जेब में रख लिये तो तुम साधारण आदमी से सेवक हो गये। कोई भी आदमी अपने अंदर घृणा पैदा कर सकता है और उसी घृणा के फलस्वरूप कुछ और भी कर सकता है। वह यदि किसी को मारना चाहे तो वह कर सकता है; जैसा कि इस समय तुम खुद चाहते हो। लेकिन एक सेवक,—एक नौकर ऐसा नहीं कर सकता; क्योंकि उसका कर्तव्य है अपने मालिक की सेवा करना। जनता तुम्हारी मालिक है, गिडियन! और अब सुनो मैं तुम्हें बाकी किस्सा भी सुनादूँ।"

"मैं सुन रहा हूँ।" गिडियन ने कहा!

"मुझे यह झोपड़ी खाली पड़ी हुई मिली। खुदा जाने इसका मालिक कहाँ है! मेरा अनुमान है शायद युद्ध में मारा गया होगा। अपनी इस दक्षिणी भूमि पर ऐसी हजारों निर्जन झोपड़ियाँ हैं। दो वर्ष तक मैं यहाँ रहा। अपने पेट के लिए मैं थोड़ी फ़सल उगा लेता हूँ। मैंने यहाँ कुछ मुर्गियाँ भी पाल रखी हैं। जंगली सुअरों का एक गल्ला भी मेरे यहाँ है। जब से हम यहाँ हैं, आज तक हमें किसी ने नहीं सताया। एलेन अब काफी जागरूक है, लेकिन है अंधी। मेरे लिये तो यह बड़ी सौभाग्यपूर्ण बात है कि चार बच्चों को मैं शिक्षा देता हूँ। मैं गाँव में मजदूरी भी कर चुका हूँ; मैं अच्छा-खासा सुतारी का काम कर लेता हूँ, जूते बना लेता हूँ, बर्तन झालना या कलई करना भी मुझे आता है और मैं खत भी लिख सकता हूँ। इन सब धंधों से मैंने कुछ-न-कुछ कमाया है और अपने कपड़े और किताबें खरीदी हैं।"

उसने वहीं कहना बंद कर दिया और गिडियन भी बहुत देर तक खामोश रहा, और फिर, "तो क्या मरने का इरादा नहीं?"

"नहीं उस पर मैं सोच-विचार कर चुका हूँ," एलेन्बी ने उत्तर दिया, "अभी मैं भय और विपत्ति में फँसा हुआ हूँ।"

"और फ़र्ज़ करो तुम बीमार पड़ गये तो? या अगर कोतवाल आजाय और समझो कि इस झोपड़ी को जलाकर राख कर दे?"

"उस पर भी मैं ग़ौर कर चुका हूँ, गिडियन!"

"अच्छा, अब जरा मेरी भी सुन लो।" गिडियन ने बड़ी उत्सुकता और व्याकुलता के स्वर में कहा, "तुम-जैसा आदमी ज्ञानी पुरुष है। क्या हुआ जो तुम सतहत्तर साल के बूढ़े हो गये, यह उम्र है बहुत ज़्यादा; लेकिन तुम अभी तक भूरे और सशक्त हो, पुराने नारियल की भाँति; हो सकता है तुम कल ही मर जाओ। हम बूढ़े क्या जानें भगवान् की क्या इच्छा है और हो सकता है ऐसा भी हो कि तुम दस-पन्द्रह साल तक और जिंदा रहो।"

"तुम कहना क्या चाहते हो, गिडियन?"

"एक बात सूझी। लो, मुझे ही देख लो। मैं काला हब्शी मुक्त कर दिया गया और अब मोर की भाँति गर्व और उत्साह लिए सभा का प्रतिनिधि बन कर चार्ल्सटन पैदल चला जा रहा हूँ; लेकिन न लिखना जानता हूँ न पढ़ना। निरक्षरता और अज्ञान से लिपटा हुआ जा रहा हूँ। तुमने जो कुछ कहा उससे अंदाजा होता है कि इस दक्षिणी प्रदेश में लगभग चालीस लाख हब्शी होंगे जो शिक्षा ग्रहण करने की अभिलाषा रखते हैं। हमारी स्वतंत्रता एक सौम्य सुरीले गीत की भाँति बहुत ऊँची है; लेकिन कौन हैं उसके अधिकारी? वे ही हब्शी लोग न, जो अज्ञान की लाज से अपना सिर झुकाये हैं। तुम तीन छोटे बच्चों को पढ़ाते हो,—बड़ी अच्छी बात है। ऊपर कार्वेल के प्रदेश में मेरे कुटुम्बी रहते हैं,—वे भी ठीक तुम जैसे ही हैं, वे भी यही सोचते रहते हैं और इस प्रदेश के सभी हब्शियों की तरह वे भी अज्ञान में डूबे हुए हैं। कौन-सी चीज उनकी है, किस पर उनका अधिकार नहीं है, वे कुछ नहीं जानते। वे नहीं जानते कि जमीन का मालिक कौन है, किसकी झोपड़ियाँ हैं, जिनमें वे रहते हैं! और भला बताओ वे यह सब जान भी कैसे सकते हैं जब कि उस स्थान पर कोई आदमी ऐसा नहीं जो पढ़ा-लिखा हो?"

गिडियन रुक गया। जो कुछ बोलना चाहता था उसे रोक गया और फिर बड़ी उँगली उठाकर हर शब्द पर जोर देने लगा, "तुम ऊपर जाओ—हमारे-कार्वेल क्षेत्र में और अपने बच्चों को ले जाओ। वहाँ लोगों से जाकर कहो तुम्हें गिडियन ने भेजा है। भाई पीटर से मिलो, वह हमारे यहां के पादरी हैं, और उनसे कहो कि तुम पढ़ाना जानते हो और उन्हें पढ़ाओगे, वह तुम्हारा ठीक इंतजाम कर देंगे।"

एलेन्बी ने अपना सिर हिला दिया, "मैंने भी एक बार यही सोचा था, गिडियन! लेकिन मैं अब बहुत ज़्यादा बुड्ढा हो गया हूँ। मुझे अब डर भी लगता है,—नहीं, नहीं मैं यहाँ अच्छा हूँ। हमारे यहाँ स्वतंत्र लोगों का एक ब्यूरो है जो इन सब चीजों की देखभाल करता है—"

"तो फिर तुम प्रलय-काल तक यहीं पड़े रहो, उन स्वतंत्र लोगों के ब्यूरो के आदमियों की प्रतीक्षा करते रहो," गिडियन ने झिड़का, "तुम्हें डर किस बात का है? सीधे इस सड़क पर चले जाओ,—किसी से भी पूछ लो कार्वेलों की बस्ती कहाँ है, कोई भी बता देगा। वहाँ रहोगे तो यह तो न होगा कि किसी दिन सुबह होते ही बच्चे जो उठें तो देखें कि तुम ठण्डे हो चुके हो, कौन तुम्हारा क्रिया-कर्म करेगा, कौन तुम्हारी दाढ़ी बनाने आयेगा? कौन तुम्हारे लिए देवदार का संदूक बनाकर तुम्हें गाड़ेगा? क्या यह बेचारी अंधी लड़की सब कुछ करेगी?"

लेकिन बूढ़ा टस-से-मस न हुआ। वह अब भी तैयार न था और गिडियन निर्दयता से उसे फटकारता रहा। अंत में जब आग बिल्कुल ठंडी हो गयी तो उसने अपना सिर हिलाया और कहा, "अच्छा मैं जाऊँगा।" वह उस धुँधले प्रकाश में सिर झुकाये बैठा रहा; मानो अंधकार में वह किसी बात का आश्वासन खोज कर रहा हो। और तब उसने कहा:

"कहीं यह स्वतंत्रता की बात तुम्हें स्वप्न तो नहीं लगता, गिडियन?"

"यह कोई स्वप्न थोड़े ही है," गिडियन बड़बड़ाया, "मैं यैंकियों के साथ फौज में लड़ा हूँ। इस स्वतंत्रता का एक-एक टुकड़ा मैंने अपने इन दोनों हाथों से बनाया है। यह कोई स्वप्न नहीं है।"

अगले दिन न जाने क्या-क्या हो गया और गिडियन वही बात सोचने पर मजबूर हो गया जिसे वह पहले भी सोच चुका था। उसे ऐसा महसूस हुआ कि खुली लंबी चौड़ी सड़क की कुछ घण्टे की यात्रा गाँव के खेतों के कई महीनों की यात्रा के बराबर होगी। रास्ते में एक लड़के से अड़ियल खच्चर नहीं हाँका जा रहा था गिडियन ने उसे मदद दी और दो मील तक उसके छकड़े में बैठा हुआ गया। एक बूढ़ी औरत के साथ, जो अंडे बेचने गाँव जा रही थी, वह कोई पंद्रह मिनट तक बातचीत करता रहा और जहाँ तक उनका रास्ता एक ही रहा वह उसके अंडों की डलिया उठाये रहा। एक सफेद स्त्री ने अपनी लकड़ियाँ फड़वाने के बदले उसे खाना खिलाया और उसका पति जब दूध दुहकर झोंपड़ी से बाहर निकला तो बोला मैंने आज तक ऐसा हब्शी नहीं देखा; जो लकड़ियों को इस तरह चीरकर टुकड़े-टुकड़े उड़ादे। सफेद स्त्री ने उसे बड़ा स्वादिष्ट भोजन कराया और गिडियन ने उत्साह से ज़्यादा विवेक को महत्त्व देते हुए सभा की कोई बात नहीं छेड़ी। शाम के समय वह एक खेत से गुज़रा। वहाँ कुछ हब्शी एक गोरे ओवरसियर की निगरानी में सख्त जमीन में एक बड़ी गहरी नहर खोद रहे थे। "काम के पैसे मिलते हैं?" गिडियन ने पूछा। उन्होंने तो कोई उत्तर नहीं दिया। पर हाँ, ओवरसियर चुप न रह सका। उसने चीखकर कहा, "ए हरामी के बच्चे चला जा सीधा यहाँ से।"

तीसरे पहर के बाद बारिश होने लगी और उस मूसलाधार बारिश के थमने तक गिडियन ने एक घास के ढेर की शरण ली। वहीं एक गाय भी पहले से खड़ी थी और गिडियन उसी के गर्म शरीर से लगकर खड़ा हो गया और गुनगुनाने लगा :

"छोटे सफेद बछड़े,
सब को घेर लाओ,
ऐ मेरी प्यारी अम्मी
सब को घेर लाओ।"

लेकिन उसकी इस प्रकार की रगड़ से उसका काला कोट खराब हो गया। गिडियन ने अपने ऊपर से घास के तिनके तो झाड़ दिये; पर ऊँचे हैट के तिनके

झाड़ना कठिन हो गया। वह उसकी पहुँच के बाहर था। हैट का मुकुट गिर पड़ा और गिडियन इसी दुविधा में फँस गया कि बिना मुकुट के उसे अब पहना जाय या नहीं। उसे आभास हुआ कि बिना मुकुट के हैट पहनना अनावश्यक है। लेकिन वह उसे यों ही फेंकना भी नहीं चाहता था। उसे वैसे ही अपने साथ रखकर जब वह आगे बढ़ा तो एक बूढ़े काले आदमी को उसने दो रसीले सेबों के बदले वह हैट दे दिया।

उस रात उसे तारों की छाया में ही सोना पड़ा। सीली हुई जमीन और उसके बीच देवदार की टहनियों का बिछौना था। उसे किसी प्रकार का आराम तो नहीं मिला; लेकिन फिर भी वह संतुष्ट था। क्योंकि अब उसका हृदय विचार-गगन में विचरण कर रहा था और जीवनोद्देश्य के सुन्दर विचारों ने उसपर विजय पाली थी।

अगले दिन गिडियन समुद्री किनारे के निचले प्रदेश की ओर चलता रहा और चौथे दिन चार्ल्सटन की विशाल इमारतों की छतें उसे दिखाई देने लगीं।

: ४ :

चाल्सटन में प्रवेश करने के बाद जो आतंक गिडियन जैक्सन पर छाया वह बिल्कुल निराधार नहीं था। यह वह गहरा आतंक और अज्ञात भय था जिसे 'सफेद आदमी' कहते हैं। यह उसके बचपन की वह याददाश्त थी, जो आज उसे उस बड़े मकान के बरामदे में ले गयी :

"ले बे ऐ लौंडे," शायद तीस वर्ष पूर्व उसे किसी ने इन शब्दों से संबोधित किया था। मर्द और औरतें उस समय बरामदे में बैठी थीं। मर्द सुन्दर बूट, उम्दा कोट और तंग ब्रिचेस पहने हुए थे, और औरतों की वेशभूषा क्या थी कौन जाने ? उसे तो केवल सुन्दर ही कहा जा सकता है। पता नहीं, वह कौन औरत थी ? लेकिन उसके जूते कीचड़ से लथ-पथ थे। एक आदमी ने पुकारा, "ए लड़के इधर आ।" भय से काँपते हुए उसने औरत के जूतों की कीचड़ पोंछी और उस आदमी ने एक चाँदी का सिक्का उसके सामने फेंक दिया। उसे याद हो आया वह क्षण, जब उस सिक्के के कीचड़ में लुढ़क जाने पर उसे दौड़कर पकड़ना पड़ा। उसने उसे मुट्ठी में दबा लिया और फिर उनकी ओर प्रश्नसूचक दृष्टि से देखा तो वे ठहाका मारकर हँस पड़े। वह जानता था कि वह एक काला छोटा जानवर है छः—वर्ष का बालक जिस प्रकार भयभीत हो जाता है और एकांत उसे पीड़ित करने लगता है उसी प्रकार की स्थिति इस समय गिडियन की थी। आशा, जो प्रत्येक प्राणी के जीवन का एक आवश्यक और अभिन्न अंग होती है, उससे दूर चली गई थी। तभी से आज तक गोरा आदमी उसके लिए बन्द दरवाजा जैसा था और आज, जबकि वह उस दरवाजे के बिल्कुल समीप पहुँच गया, उसने उसे खोलने का प्रयत्न नहीं किया।

अब उसका हाथ उस दरवाजे पर था। पहली बार जब वह वहाँ गया था तो फौज से कंधे-से-कंधा मिलाकर मार्च करता हुआ गया था। उसके कंधों पर बंदूक थी; लेकिन अब वह अकेला था, भयभीत था और काँप रहा था।

गिडियन शहर में घूमता रहा। उसके पास न पैसे थे और न खाना, और ऐसी स्थिति में उसे यह साहस भी न हुआ कि वह सभा के अधिकारी से जाकर मिल ले। वह भूख से छटपटा रहा था और उसका शरीर थकावट से चूर था। अब उसने महसूस किया कि उसकी पोशाक कितनी जर्जर, गंदी और हास्यस्पद है। यहाँ तक कि अपने चौकोर रूमाल को देखकर भी, जो उसके कोट की ऊपरी जेब से लटक रहा था, उसे कोई प्रसन्नता नहीं हुई।

अब उसे चार्ल्सटन आने पर पश्चाताप हो रहा था। वह सोच रहा था, "मैं घर से यहाँ आया ही क्यों? मैं भाई पीटर के लुभाव में आकर इस जाल में क्यों फँस गया? जाहिर है कि मैं इस हालत में सभा में तो जा ही नहीं सकता। तो फिर क्या? क्या घर वापस लौट जाऊँ? और अगर वहाँ लोगों ने मुझ से सभा के बारे में पूछा तो? तो क्या जवाब दूँगा उन्हें? क्या कहूँगा उनसे? झूठ बोलूँगा? अपने ही भाई-बंदों से, भाई पीटर से, रेचल से? और जेफ? कहीं उसने मेरे चेहरे को उदासीन देखकर भाँप लिया तो? और फिर क्या मालूम उन लोगों को क्या दंड होता है जो सभा के प्रतिनिधि चुने जाते हैं और उसके अधिवेशन में सम्मिलित नहीं होते? अच्छा अगर मैं ग़ायब हो जाऊँ तो?" उसके दिमाग में एक के बाद एक इसी प्रकार के मूर्खतापूर्ण विचार पैदा हो रहे थे। और फिर ग़ायब हो जाने का विचार तो बिल्कुल ही मूर्खता का था। "रैचल, अपने बच्चों, अपने भाई-बन्दों को छोड़कर गायब हो जाऊँ,—उन्हें उसी प्रकार निराश्रित छोड़ दूँ जैसे कि बेच दिया गया हूँ और अपने कुटुम्बियों से बिछुड़ गया हूँ! क्या मेरी बुद्धि बिल्कुल भ्रष्ट हो गयी है?'

उसके क़दम उसे खींचे चले और वह कीचड़ से लथपथ सड़कों और गलियों में से होता हुआ हब्शियों की बस्ती की ओर चला। वहाँ हब्शी झोपड़ियों में रहते थे, उन झोपड़ियों में जो युद्ध के बाद बड़ी जल्दी में बनायी गयी थीं। वहीं कुछ और वैभवशाली भवनादि भी खड़े थे, जिन्हें गोरे छोड़ गये थे। उसने किसी औरत के शब्द सुने, वह कह रही थी, "देखा तुमने उस मोटे साँभर को, ऐ, कहाँ जा रहे हो?" कहाँ जा रहा है, यही तो वह खुद भी न जानता था। वह शहर के उस पुराने भाग से भी गुज़रा जहाँ यूनानी इमारतों के ढंग के बरामदों

वाले बड़े-बड़े सफेद मकान उसे दिखाई दिये। ताड़ के बड़े-बड़े वृक्ष, लोहे के बड़े-बड़े फाटक और बालाखानों ने उसे विस्मित कर दिया। कोई दयालु व्यक्ति वहाँ नहीं था। किसी ने उससे नम्रता से बातचीत नहीं की। वह शहर-का-शहर मानो इस घृणित और तुच्छ विचार पर क्रुद्ध हो उठा था, क्योंकि उसका अपमान हुआ था; सभा ने गिडियन जैक्सन—जैसे हब्शी को अपना प्रतिनिधि बनाया था। इन विचारों ने गिडियन का सभी कुछ तो छीन लिया। उसे महसूस होने लगा कि वह गिर पड़ेगा ठीक वैसे ही, जैसेकि निराशापूर्ण आत्म-ग्लानि की काँपती हुई दीवार गिर पड़ती है।

जब शाम हो चुकी तो गिडियन एक सुन्दर, भव्य इमारत के सामने पहुँचा। उसके फाटक के ऊपर बड़े-बड़े अक्षरों में लिखा था, "विधान सभा"—इसके आगे के शब्द उसकी समझ में नहीं आये; पर बड़ी कठिनाई के बाद वह यह जरूर समझ गया कि यही वह स्थान है जहाँ सभा भरने वाली है। इमारत के सामने कोई एक दर्जन यैंकी तम्बाकू मुँह में ठूँसे बड़ी सुस्ती और आलस्य से अपनी बंदूकों के बल झुके खड़े थे। पास ही हब्शियों के और गोरों के अनेक छोटे-छोटे समूह भी थे जो आपस में बातचीत कर रहे थे और हाव-भाव दिखा रहे थे, और कभी-कभी अच्छे शब्दों को चिल्लाकर भी सुनाते थे। गिडियन के शरीर में लज्जा और शर्म की लहर दौड़ गयी, जब उसने देखा कि कुछ लोग बड़ी सुन्दर पोशाक पहने हुए हैं, कोई नीले-मोती के रंग का पतलून और चारखाने का कोट और सुन्दर-सा गुलूबन्द पहने है, तो दूसरा ऊँचे बूट और सफेद पतलून पहने है, तो कोई पट्टू का सूट पहने हुए है। शायद ऐसे वस्त्र तो गिडियन को स्वप्न में भी न मिलें। वहाँ कुछ लोग गिडियन, जैसे ही मैले-कुचैले और फटे वस्त्रों में भी थे, कुछ का हाल और भी बदतर था। कोई ग्रामीण किसानों की बेतुकी पोशाक पहने था और कई के पास न हैट था न गुलूबंद; लेकिन इन्हें देखकर गिडियन को किसी प्रकार का संतोष न हुआ।

वह चलता रहा एक चौराहे से तोपखाने तक और वहाँ से फिर पूर्वी तोपखाने की ओर। इस समय चार्ल्सटन जिसे युद्ध के समय बहुत क्षति पहुँचायी गयी थी, फिर से एक महत्त्वपूर्ण बंदरगाह बननेवाला था। बंदरगाह में जहाज़ खड़े थे

और पूर्वी बेय स्ट्रीट पर गोदियों में जहाजों के मस्तूल एक पंक्ति में ऐसे दिखाई पड़ते थे; मानो पुराने टूटे हुए कंघे के किनारे हों।

अब सूर्यास्त का समय था और जब गिडियन तोपखाने के समीप से गुजरा तो समुद्र की सुनहरी लहरें जगमगा रही थीं और दूर बंदरगाह में स्थित सम्टर किला परिस्तान के गुलाबी आवरण जैसा दिखाई दे रहा था। सारे तोपखाने पर समुद्री चिड़ियाँ चीखती-चहचहाती उड़ रही थीं।

इन सब दृश्यों ने गिडियन की निराशा और उद्विग्नता को और गहरा कर दिया। वह भूखा था और बहुत थक चुका था; उसके पास न पैसे थे और न सोने के लिए कोई जगह। ईस्ट बेय स्ट्रीट पर एक अहाते में रूई के बड़े-बड़े ढेर लगे हुए थे। उनमें से तीन गुफा जैसे लग रहे थे। गिडियन उन्हीं में प्रवेश कर गया। अब तो उसमें इतनी भी शक्ति न थी कि कोई गाना गाकर या गुनगुनाकर अपने में स्फूर्ति पैदा कर सके। वह घण्टों जागता रहा और अपनी दरिद्रता और निराशा में डूबा हुआ अंत में सो गया।

दूसरे दिन सूर्योदय होते ही उसकी मुलाकात कुछ काले जहाजी कुलियों से हुई। वह गोदी में से तेजी से गुजर रहा था और वहीं वे बैठे एक जहाज की प्रतीक्षा कर रहे थे, जिसे उन्हें खींचकर किनारे लगाना था। उन्होंने उसका लम्बा कोट खींच लिया।

"देखो तो, यह तो कोई पादरी जान पड़ता है।"

"पादरी न होगा तो छोटा पादरी तो जरूर ही होगा।"

"यह देखो इसका कोट! मालूम होता है, रूई के ढेर में लोटकर आया है!"

उनके चुभते हुए, अर्ध-उपहासपूर्ण कटाक्ष का गिडियन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा; वह शांत और दुखी भाव-भंगिमा लिए खड़ा रहा और उन जहाजियों को कातर दृष्टि से ताकता रहा जो डबलरोटी, घर के बने हुए पनीर और प्याज का नाश्ता कर रहे थे, और वास्तव में उसकी निराशा और व्याकुलता को देखकर, जो स्पष्टतया उसके चेहरे पर झलकती थी, उन्हें दया आ गयी। उन्होंने अपनी फब्तियाँ और व्यंग्य बंद कर दिये और एक ने कहा:

"रोटी खाओगे पादरी साहब?"

गिडियन ने सिर हिलाकर असहमति प्रकट की।

"कहीं काम करते हो ?"

गिडियन ने सिर हिलाकर कर इन्कार कर दिया।

"हमारे यहाँ गोरा मालिक पचास सेंट पर मज़दूर रखता है।"

गिडियन ने फिर सिर हिला दिया। इस समाज में इन्सान दो ही चीजें कर कर सकता है—काम करे या भूखों मरे। हो सकता है, कई कार्य ऐसे हों जिनके वह योग्य न हो, लेकिन उसके दो मज़बूत हाथ और साँड-जैसी कमर थी। और कुछ नहीं तो रूई की गाँठें तो पीठ पर लाद कर ले ही जा सकता है। उस समय जैसी स्थिति थी, उसमें पचास सेंट रोज़ाना मिलना अच्छा-खासा सौदा था। और क्यों न हो ? उसने वह काम शुरू कर दिया।

उस दिन वह एक अलौकिक संतोष का अनुभव कर रहा था। उसे कुछ भान न था। उसके चेहरे से पसीना टपक रहा था, रगों में पीड़ा हो रही थी, वे सूज गयी थीं और वह बड़ा कठोर परिश्रम कर रहा था। कुछ हब्शियों ने आदरपूर्ण भाव से चिल्लाकर कहा—

"यह कोई नदी के निचले प्रदेश का साँभर मालूम होता है। देखो न, यह तो रूई ढोनेवाला ही है।"

उसने अपना कोट उतारकर अलग रख दिया, लेकिन सरकारी काग़ज़ात अपने पास ही रखे। उसने उन्हें अपने पतलून की जेब में रख लिया और उनकी कडकड़ और सख्ती से उसे कुछ संतोष हुआ। कुछ क्षण के लिए वह भविष्य के बारे में भूल गया और उसे उस समय संतोष का अनुभव हुआ। जहाजियों ने उसे दोपहर के खाने पर बुलाया, लेकिन उसके स्वाभिमान ने इसे उचित न समझा और उसने इन्कार कर दिया। शाम को जब काम खत्म हुआ तो वह बहुत थका हुआ था और भेड़िये की भाँति भूखा था; [illegible] में गर्मी थी,—उसकी जेब में पचास सेंट मौजूद थे। जोय और हार्को दोनों जहाजियों के साथ वह कम्बर लैण्ट स्ट्रीट के पास एक मकान पर गया, जहाँ एक बूढ़ी काली औरत चावल, मछली, जेरुसलेम के चुकंदर सभी प्रकार के शाकादि अनेक लोगों के लिए बनाती मैंथी। दस सेंट रकाबी भरके खाना देती थी और मात्रा के नाप के लिए उसमें

दो तोलिएँ लगा देती थी। गिडियन ने पेटभर कर खाया। पैसे हों, और उनसे खाना खरीदकर खाना और पेट भरकर खाना वास्तव में बड़ी अच्छी चीज़ होती है; यों कहिये कुछ गर्माहट पैदा करती है। जोय का एक भ्रष्ट और कामुक स्त्री से सम्बन्ध था और उसने गिडियन से भी पूछा, "चलते हो?"

लेकिन गिडियन ने इन्कार कर दिया। वह यकायक वास्तविकता के संसार में कूद पड़ा। उसके सामने रैचल की तस्वीर खड़ी हो गयी, भाई पीटर की बातचीत उसे याद हो आयी जब उन्होंने उसे समझाया था कि यह अजनबी और निराशा-जनक मार्ग उसे कहाँ ले जाकर गिरायेगा।

उसी शाम को गिडियन ने अपने भय का अर्थ समझ लिया और यह भी जान लिया कि मेजर एलेन जेम्स के यहाँ जाकर अपने प्रमाण-पत्र देना बड़ा सरल और स्वाभाविक था। उसमें यह परिवर्तन क्योंकर आ गया और इसका क्या कारण है आदि प्रश्नों और शंकाओं का निवारण वह बाद में कर लेगा—आया यह उस अखबार के खरीदने की बदौलत था, जिसे उसने पाँच सेंट में खरीदा था और बड़े राब व गर्व के साथ उसे बग़ल में रख लिया था, या यह उस स्थान के कारण था जहाँ उसे सोने के लिए जगह मिली थी—मिस्टर जेकब कार्टर का मकान; या उस शाम को घटी अनेक घटनाओं में से कोई और घटना थी, जिसने उसमें यह असाधारण परिवर्तन पैदा कर दिया था?

जेकब कार्टर एक चमार था और युद्ध के समय और उसके बाद भी वह आज़ाद हब्शी की स्थिति रखता था। वह एक परिश्रमी और स्वाभिमानी व्यक्ति था, जिसने वर्षों पाई-पाई करके इतना धन एकत्र किया था, जिससे वह अपनी स्वतंत्रता खरीद सके। चार्ल्सटन के एक छोर पर उसका चार कमरों का मकान स्थित था और उसने उसके बाहर एक तख्ती लगा रखी थी जिस पर लिखा था, "सभा में सम्मिलित होनेवाले प्रतिनिधियों के निवास का यहाँ प्रबन्ध है"। अखबार बेचनेवाले ने उसे इस स्थान का पता भी बतला दिया; गिडियन को "साहब" कहकर सम्बोधित किया; शायद इसीलिए कि उसने अखबार खरीद लिया था। इसका चाहे कुछ भी कारण हो, उसकी इस नम्रता का गिडियन की निराशा और उदासीनता पर अच्छा प्रभाव पड़ा।

जब गिडियन कार्टर के मकान पर पहुँचा तो अँधेरा हो चला था। उसने दरवाज़ा खटखटाया। दरवाज़ा आधा खुला, जिसमें से पीली रोशनी उसे नज़र आयी और एक औरत संदिग्ध दृष्टि से उसे घूरने लगी।

"क्या चाहते हो?"

"जी, साहबा," गिडियन ने कहा, "मैं रात को सोने के लिए जगह तलाश कर रहा हूँ—बाहर तख्ती देखी तो यहाँ तक आ गया। कार्टर साहब का मकान यही है न?"

"जी हाँ, यही है। आप कौन हैं?"

तब एक आदमी उसके पीछे से आया और उसने दरवाज़ा खोल दिया और गिडियन की ओर कुछ कम संदेह से देखने लगा।

"मेरा नाम गिडियन जैक्सन है साहब, मैं प्रतिनिधि हूँ।"

"प्रतिनिधि?"

"जी हाँ।" गिडियन को अपने कपड़ों का एहसास हुआ, "कपड़े मेरे पुराने हो गये हैं," उसने धीरे से कहा। "शहर से चीज़ें ख़रीदने का समय नहीं मिला। मैं ऊपरी प्रदेश के देहात का रहनेवाला हूँ।"

कार्टर मुस्कराया और बोला, "अंदर आजाइये।"

शहरी लोगों में कार्टर के मकान में प्रविष्ट होते ही उसका शक दूर हो गया। यह पहला शहरी था, जिसके घर में वह दाखिल हुआ था। उन्होंने उसे एक छोटा पर साफ़-सुथरा कमरा रहने के लिए दिया, एक बिस्तर दिया; जिसमें एक रूई का गद्दा था। जिंदगी में पहली बार वह उस बिछौने पर सोया था। साथ ही उसे एक लालटैन भी दी। इसके अलावा दो जून भोजन, दो डॉलर हर हफ्ते के हिसाब से उसे दिये। जब उसने उन्हें बताया कि शायद सभावाले उसे पाँच डालर हर हफ़्ते न दें तो वे उसकी सादगी और भोलेपन पर मुस्करा दिये। उन्होंने उसे विश्वास दिलाया कि सरकार किसी भी प्रतिनिधि को हफ़्ते में पाँच डालर से कम तो देगी ही नहीं बल्कि इससे ज़्यादा दे सकती है,—शायद दस डालर भी दे दे।

कार्टर के कोई संतान न थी और अब वह अधेड़ उम्र का हो चुका था। युद्ध-कालीन दो वर्षों के आतंक और युद्ध के उपरांत दो वर्षों के भयानक आतंक के समय

जब वे निर्मम काले कानून प्रचलित थे, उन्होंने अपनी स्वतंत्र हब्शी और मकान-मालिकों की स्थिति और सम्मान की रक्षा के लिए बड़ा साहसपूर्वक संघर्ष किया था। हालाँकि दूसरे स्वतंत्र हब्शी अनपढ़ों से बहुत घृणा करते थे और ऊपरी प्रदेश के काले हब्शियों के लिए तो जो प्रतिनिधि थे उनके दिल में कोई दया ही न थी, फिर भी, कार्टर ने अपनी सरलता व सादगी के स्वभाव के कारण गिडियन—जैसे लोगों से वही व्यवहार किया जो कि वह अपने मित्रों और कुटुम्बियों से करता।

उसी रात, जबकि उसके कमरे में लालटैन का पीला प्रकाश फैला हुआ था और चीजें साफ और चमकीली दिखाई दे रही थीं, गिडियन ने अखबार पढ़ने में दिमाग़ खपाया। वैसे तो अखबार उसने पहले भी बहुत देखे थे; लेकिन पढ़ने के लिए वह आज पहली बार ही बैठा था। अखबार की छपाई बहुत छोटे टाइप की थी और उसे पढ़ना मुश्किल होता था। इसलिए उसकी साधारण पढ़ने की रफ़्तार भी कम करनी पड़ी और वह हर शब्द के नीचे उंगली रखता और तब तक रखे रहता जब तक उसका विश्लेषण न करता—उसे समझ न लेता या अंदाजे से उसका मतलब न जान लेता।

चूँकि वह बहुत धीरे-धीरे और रुक-रुक कर पढ़ रहा था इसलिए उसके विचारों का क्रम न बँध सका। अनेक शब्द ऐसे थे, जो उसकी समझ में नहीं आते थे और बहुत-सी लम्बी खाली जगहें भी छूटी हुई थीं। फिर भी उसने सभा पर लिखे गये सम्पादकीय पर मेहनत की, जिसमें हब्शियों का मजाक उड़ाया था—उनकी बन्दरों से तुलना की थी, होने वाले अधिवेशन को सर्कस, अजायबघर और बंदरों का समुदाय कहा गया था। अखबार में उसकी एक आकर्षक कहानी पर नजर पड़ी, जो एक जहाज़ के चकनाचूर होने के बारे में थी और उसे पढ़ते समय एक असंबंधित समाचार भी देखा, जिसमें पूरे राज्य में हब्शियों द्वारा किये गये अत्याचारों के संबंध में एक बयान था और उसे आश्चर्य हुआ कि ऐसे अत्याचारों और ज़्यादतियों के बारे में उसने क्यों कभी न कोई बात देखी और न सुनी।

अन्त में जब वह इतना थक गया कि उसकी आँखें मिचने लगीं तो उसने अपने कपड़े उतारे और धीरे से उस नरम और सुखप्रद बिस्तर पर लेट गया। पलंग में लोहे की स्प्रिंगें लगी थीं और उनका मज़ा लेने के लिए उसने उस पर

उचकना शुरू कर दिया; उसे ऐसा महसूस हुआ मानो हवा में उड़ रहा हो। इस प्रकार उसे नींद आगई। वह अपने भाग्य को सराह रहा था और उस स्वप्न-संसार का निर्माण कर रहा था, जहाँ वह और रैचल रात को इसी प्रकार बिस्तरे पर साथ-साथ सोयेंगे।

अगले दिन बिना किसी भय या कठिनाई के, निर्भय हो गिडियन मेजर जेम्स से मुलाकात करने चला। श्रीमती कार्टर ने उसका कोट साफ कर दिया था, फटी हुई जगहों पर उसे रफू कर दिया और उस पर इस्तरी कर दी थी। जैकब कार्टर ने गिडियन के बाएँ जूते पर जहाँ से वह फट गया था पैबन्द लगा दिया और दोनों बूटों पर पालिश कर दी। कार्टर ने बड़ी विनम्रता और सविनय भाव से कहा,— यह चारखानेदार रूमाल पतलून की जेब में बेहतर रहेगा बजाय इसे कोट की ऊपरी जेब में लटकाने के। और काफी हुज्जत और समझाने के बाद वह राजी हो गया और उसने इतवार को पहनी जानेवाली एक कमीज पहन ली। कार्टर के पास ऐसी दो कमीजें थीं, जिन्हें वह बरसों से सँभालकर रखता आया था और उन्हें सिर्फ 'सबाथ' के दिन ही पहना करता था। लेकिन आज वह और उसकी पत्नी दोनों गिडियन पर मोहित थे, और जैसा कि बूढ़े लोग करते हैं, उन्होंने भी उसे एक अभिन्न हृदय बालक की भाँति अपना लिया था जैसे कि वह एक छोटा बच्चा हो।

वे पानी गरम करके एक बर्त्तन में गिडियन के कमरे में ले गये और गिडियन ने एक सप्ताह से जमी गर्द रगड़नी शुरू की और कार्टर उसके पास किस्सा सुनने बैठ गया। गिडियन ने अपनी जिंदगी की कुछ घटनाएँ सुनानी शुरू की ताकि कार्टर में उसके लिए और निकटता आ जाय। अपनी बारी पर कार्टर ने भी चार्ल्सटन के क़िस्से सुनाये, हब्शियों और गोरों की बातें कीं और साथ ही उस विचित्र व अशुभ तनातनी का जिक्र किया जो सभा की बैठक की घोषणा के समय से सारे शहर में फैली हुई थी।

"मालूम होता है कि हर गोरे के लिए दो हब्शी प्रतिनिधि आये हैं।" कार्टर ने कहा, "गोरे आदमी अधिकतर यूनियन की सेना के सैनिक हैं जिन्हें यहाँ के लोग 'स्कैलावाग्स' कहते हैं। समय बद से बदतर होता जा रहा है और मालूम होता है कि अब बुरे दिनों के सिवा बहुत समय तक कुछ नहीं होगा। शायद तुमने

देखा होगा हर जगह यैंकी सिपाही तैनात हैं।"

"हाँ, मैंने देखा है।"

"पर मैं, मैं यैंकी सिपाहियों पर विश्वास नहीं करता, जरा-सा भी नहीं।" कार्टर ने कहा।

"क्यों?"

"भला तुम ही बताओ गिडियन! उनका यहाँ काम ही क्या है? मैं कहता हूँ उन्हें वापस अपने घर क्यों नहीं भेज दिया जाता?"

"मेरे ख्याल से तो अगर ये यैंकी सिपाही न हों तो स्वतन्त्र लोग रह ही नहीं सकते।" गिडियन ने शांत भाव से कहा। "और न यह सभा ही हो।"

कार्टर ने इस प्रश्न पर कोई बहस नहीं की। गिडियन नहीं जानता था कि कार्टर हर बात की गहराई में जाता है, लेकिन इस बौने चमार की उदारता, स्वार्थ रहित थी। वह धार्मिक व्यक्ति था और उसके वार्तालाप का दो तिहाई भाग चर्च की बातों में गुज़रता था।

जब गिडियन तैयार होकर वहाँ से चला तो काला कोट, तंग, सफेद कमीज़ और काली टाई उसे बहुत जँच रहे थे। जब लोग उसकी ओर घूम-घूमकर उसकी ऊँचाई, कंधों की चौड़ाई और साफ़ बड़ी आकृति को देखने लगे तो उसे विश्वास हो गया कि वे लोग उसकी सफ़ेद कमीज़ और काली टाई की अवश्य सराहना कर रहे होंगे।

मेजर जेम्स बहुत उद्विग्न थे; क्योंकि न केवल विधान-सभा बहुत अस्त-व्यस्त और असंगठित हुई जा रही थी; बल्कि सारा-का-सारा चार्ल्सटन ही बारूद से भरी हुई तोप जान पड़ता था।

मेजर जेम्स संकेत तथा चिन्हों से चीजें पहचानने में निपुण था; जिसका कारण यह था कि उस लम्बे और कठोर युद्ध के समय उसने कोई आधे दर्जन शहरों को देखा था, जो गोरे यैंकी फ़ौजियों के कब्जे में थे। वह जानता था कि शहर एक जीता-जागता जीवधारी तत्त्व होता है, जिसका हृदय भी होता है और स्वभाव भी। जिसकी कभी-कभी उदासीन और मलिन चित्तवृत्ति हो जाती है और कभी वह उल्लसित और आनन्दित हो जाता है। शहर की स्थिति भी उसकी चित्तवृत्ति पर ही अव-

लम्बित होती है—यदि उसकी प्रतिक्रिया बुरी हो तो सारा शहर संकट से घिर जाता है और यदि इसके प्रतिकूल हो तो शहर पर कोई आपत्ति नहीं आती ? उस मनुष्य की भाँति, जिसमें सभी प्रकार के सांसारिक गुण-अवगुण होते हैं—गर्मी, चीखना-चिल्लाना और निरन्तर क्रोधित होजाना आदि, जो क्रोधाग्नि से उबल उठता था और विस्फुटित हो जाता था मेजर एलैन जेम्स को इतना व्याकुल न करता जितना कि इस शांत और अशुभ चार्ल्सटन ने किया था। बहुत-से दरवाजों को कुण्डियाँ लगी हुई थीं, अनेक प्रमुख व्यक्तियों ने कई दिनों तक—कई हफ्तों तक घर से बाहर क़दम न रखा था।

और वे लोग जो अपने व्यापार की खातिर या किसी और कारण घर से बाहर आते तो चुपचाप सामने देखते हुए और बिना कुछ कहे सड़कों पर शीघ्रता से चले जाते थे।

जो कुछ भी हो रहा था वह मेजर जेम्स की दृष्टि में अच्छा नहीं था। उन बंद दरवाजों के पीछे न जाने क्या हो सकता है। चार्ल्सटन में कितनी बन्दूकें होंगी? कितनी भरी हुई पिस्तौलें होंगी? उसके अफ़सर कर्नल फेण्टन ग्रेस ने बिना कल्पना किये कहा, "होने दो जब होगा तो हम उसे खत्म कर देंगे, और तभी हमें अपनी स्थिति का भी अन्दाज़ा लग जायगा कि हम कितने पानी में हैं। खैर, पर तुम जितनी ज़्यादा पीते हो उतना ही ज्यादा सोचते भी हो।" भला वह व्यक्ति जो मेजर जेम्स की भाँति शांतिपूर्ण सभा और सैनिक राज्य-तंत्र से नागरिक राज्य की ओर संक्रमण और छः मास की छुट्टी तथा पद-वृद्धि का लोभी था उस प्रश्न का क्या उत्तर देता? मेजर जेम्स को दक्षिणी प्रदेश से घृणा थी; वह शत्रुओं का प्रदेश था। उसे न गोरों पर विश्वास था और न कालों पर; और न ही वह इन दोनों में से किसी दल को अच्छी तरह समझता था। उसे हब्शियों से कोई लगाव न था और वह उन्हें ही युद्ध-अपराधी मानता था; बोर्बन गोरों से तो स्वभावतः घृणा ही करता था क्योंकि वह स्वयं ओहियो मध्यवर्ग में जन्मा था; और जहाँ तक साधारण, दरिद्र दक्षिणी गोरों का संबंध था तो वे तो उसके लिए शत्रु से भी बुरे थे; क्योंकि उन्होंने ही तो उसके साथियों को मारा था—खुदा इन उपद्रवियों का नाश करे!

किन्तु जैसे ही सभा के सदस्य एकत्र हुए और आकर अपने प्रमाणपत्र देने लगे

वैसे ही सफल परिणाम की उसकी आशा अदृश्य होगयी। कैसे लोग थे ये? अधर्मी, अज्ञान, गंदे, अश्लील लोग! यह किस किस्म का नृशंसतापूर्ण और पागलपन का सर्कस था, जिसे उग्रपन्थी यैंकियों ने, साँभरों ने, स्टीवेनों ने और दूसरे लोगों ने दक्षिण पर थोप दिया था? काश्तकार लोग जो कोई सौ-दो सौ मीलों से पैदल चलकर आये थे, इन बौड़मों को यह भी पता नहीं था कि लंबे सफ़र के लिए रेलें बनी हुई हैं और प्रतिनिधि होने के नाते उन्हें रेलों में सवार होने का अधिकार था। सेना भंग होने के बाद हब्शी फ़ौजी अपने आपको उसके बराबर समझते थे; क्योंकि एक बार उन्होंने भी यूनियन की नीली वर्दी पहनी थी और हाथ में बन्दूक रखी थी। अनपढ़ और निरक्षर लोग, बड़े शरीरोंवाले अनपढ़ गोरे पहाड़ी जिन्होंने यूनियन का इसलिए समर्थन किया था वे गुलाम रखनेवालों से घृणा करते थे। काले स्कूल के अध्यापक अपने आपको बहुत विद्वान् समझते थे; क्योंकि वे कुछ लिख-पढ़ सकते थे।

वास्तव में यह कोई आश्चर्य की बात नहीं थी कि सारा चार्ल्सटन गुस्से से उबल रहा था?

मेजर जेम्स की यह समझ में आने लगा कि इन बाग़ियों के प्रतिनिधि चुने जाने में कुछ औचित्य ज़रूर है और वह समझ गया कि हब्शी जंगली होते हैं और इनका दिमाग़ बचपन में ही कुंद हो जाता है, इनकी बुद्धि विकसित नहीं हो पाती। उसके इस विचार की पुष्टि तब हुई जब एक विशालकाय हब्शी काला कोट सफेद तंग कमीज़, जो इतनी तंग थी कि सीवनों पर से उधड़ी जारही थी और पैबंद लगा पतलून पहने उसके सामने आकर खड़ा हुआ। वह कार्वेल सिक्स्टन के प्रतिनिधि की हैसियत से वहाँ पहुँचा था। उस हब्शी का नाम था गिडियन जैक्सन और वह पैदल चलकर चार्ल्सटन तक आया था। लिखना-पढ़ना सिर्फ इतना ही जानता था कि अपने दस्तख़त करले, इससे अधिक कुछ नहीं। क्या वह पढ़ भी सकता था? जी हाँ, थोड़ा पढ़ भी लेता था।

वह साक्षरता के लगभग सौ शब्दों का ज्ञाता था, और उसे उसपर भी गर्व था। क्या प्रतिनिधि की हैसियत से वह अपने कर्तव्य जानता था? या दूसरे शब्दों में औ कहिए, क्या वह सभा के महत्त्व को समझता था?

महत्त्व ? जी नहीं, महत्त्व तो दूर की बात है वह इस शब्द का अर्थ भी नहीं समझता था। इसे समझने के लिए उसे खण्ड 'अ' कक्षा में जाना पड़ता—जहाँ पढ़ाई प्रारम्भ होती है, तब उसे समझ में आता कि यह राज्य की पुनर्स्थापना के लिए हो रही है, और उसकी शुरूआत एक विधान की रचना से होगी। लेकिन फिर भी वह उसे समझ में न आया, यह सब समझना उसके लिए असम्भव था। परेशान हो जेम्स कर्नल ग्रेस के पास गया और उसने उससे पूछा :

"क्या उस प्रकार के लोग भी सभा में सम्मिलित किये जायेंगे, साहब ?"

"हाँ, यदि वह क़ानूनी तौर से चुना गया हो।"

"हाँ, उसके पास प्रमाणपत्रादि भी हैं। यदि इसे क़ानूनी तौर पर होनेवाला चुनाव कहा जाय तब तो उसके पास सब कुछ है।"

कर्नल ग्रेस ने कठोर स्वर में कहा, "चुनाव क़ानूनी तौर पर सही हुए या नहीं इससे मुझे कुछ नहीं करना है। आप यह याद क्यों नहीं रखते साहब कि हमारी विपत्ति के समय इन्हीं हब्शियों ने हमारा साथ दिया था और ये हमारे प्रति वफ़ादार रहे थे।" इस बात पर दोनों की रायें भिन्न थीं, ग्रेस ने यह नौकरी स्वेच्छा और गर्व से अपनायी थी। वह बुर्दाफ़रोशी का उन्मूलन करनेवालों में से था।

"मैं आपको सावधान करदूँ, महाशय ! कि इस शहर के लोग गँवार किसानों द्वारा शासित होना गवारा नहीं करेंगे।"

"तो फिर मैं भी आपसे कह दूँ, महाशय।" कर्नल ग्रेस ने शांत भाव से कहा, "कि यह शहर उसी तरह चलेगा जैसाकि सरकार इसे हुक्म देती है।"

"यहाँ के लोग स्वाभिमानी हैं।"

"जी हाँ, उनके स्वाभिमान को मैं खूब अच्छी तरह जानता हूँ। वही स्वाभिमान जो पाँच लाख आदमियों को क़ब्र में सुला देना चाहता है।" कर्नल ने कहा।

मेजर जेम्स भन्नाता हुआ वहाँ से चला गया और उसने गिडियन को दक्षिणी केरोलिना के राज्य की विधान सभा में सम्मिलित होने का अधिकार-पत्र दे दिया।

जैसे ही गिडियन सैनिक-दफ़्तर से बाहर निकला, उसे एक अच्छे वस्त्र पहने हुए गोरे व्यक्ति ने रोका, और अपना परिचय उससे करते हुए बोला, "मुझे

फ्रांसिस एल कार्डोज़ो कहते हैं। क्या आप सभा के सदस्य हैं?"

"जी हाँ!" गिडियन ने उत्तर दिया।

"यदि मैं आपके साथ चलूँ तो कोई आपत्ति?"

"जी, आपत्ति? पता नहीं क्या होगी लेकिन," गिडियन ने अनिश्चय से कहा। इस अच्छे वस्त्र पहने और सुभाषी व सभ्य व्यक्ति ने इस प्रकार उससे संबोधित होकर उसे घबराहट में डाल दिया था। वे सड़क पर चलने लगे, गिडियन बार-बार उसे संदिग्ध भाव से देखता रहा और आखिरकार तब कार्डोज़ो ने सिर हिलाते हुए पूछा, "यदि आप इजाज़त दें तो क्या मैं पूछ सकता हूँ, आपका नाम क्या है साहब?"

"गिडियन जैक्सन!"

कार्डोज़ो ने कहा, "मैं भी जिला चार्ल्सटन से सभा का मेम्बर हूँ। क्या आप कुछ और सदस्यों से मिलना पसन्द करेंगे? आज तीसरे पहर क़रीब ३ बजे वे सब मेरे यहाँ एकत्रित होंगे। हम लोग सभा के ही मामले पर कुछ बहस करनेवाले हैं। क्या किसी और प्रतिनिधि से आपकी अब तक मुलाक़ात हुई?"

"जी नहीं, अभी तक तो नहीं हुई।" गिडियन ने कहा।

"लेकिन जैसे ही सभा शुरू हुई कि फिर तो आपकी कई लोगों से मुलाक़ात होगी। यह सभा जो अभी मेरे घर होनेवाली है उससे आपको कुछ बातें समझ में आयेंगी। मैं आपको विश्वास दिलादूँ मिस्टर जैक्सन कि ये बहुत अच्छे लोग हैं।"

"मैं ज़रूर आपके यहाँ आऊँगा," गिडियन ने कहा।

"तो ज़रूर आइये, मैं आपको पता देदूँ।"

उसने एक कार्ड पर पता लिख दिया और गिडियन को दे दिया। उन्होंने हाथ मिलाये और विदा हो गये।

उस सलाम की ध्वनि गिडियन के कानों में देर तक गूँजती रही—मिस्टर जैक्सन, उसकी सुन्दर ध्वनि और बढ़ता हुआ आश्चर्य। वहाँ तो घटना ऐसी घटी मानो गिरजे में गीत गाये जाते हों। कुछ देर पहले गिडियन अपने प्रमाणपत्र पेश करने में भी झिझक रहा था। कल सभा की कार्रवाई शुरू होगी। गिडियन के हृदय की भारी व अस्वाभाविक गति अब उसके लिए एक महत्त्व का प्रश्न थी। वह

बड़ी तेजी से सड़कें पार करता हुआ चला जा रहा था और अपने आप से कहता जा रहा था, "अब सारी दुनियाँ में सूर्य का प्रकाश फैल गया है। ईसा मसीह अवतरित हो रहे हैं। मैं गुलामों के घराने में पैदा हुआ था और शायद कल तक गुलाम था। मेरे छोटे बच्चे भी पैदायशी गुलाम थे। और अब देखो—क्या से क्या होगया!"

एक गोरा आदमी, जो गिडियन के सामने से चला आ रहा था, उसके बिल्कुल सामने आकर रुक गया और उसने सोचा कि गिडियन वहाँ से हट जायगा। लेकिन गिडियन अपने आपे में न था। वह यह भूल गया था कि दुनिया अब भी वजूद में है। वे दोनों एक-दूसरे के सिर से टकरा जाते; लेकिन उसके नजदीक आते ही वह आदमी हट गया और उसने अपनी बेंत उठाई और उससे गिडियन को पीटना शुरू किया। उसे कमर से पूरी तरह जकड़ लिया और बेंत की मार पड़ते ही गिडियन चौंक पड़ा; मानो वह वास्तविकता के संसार में कूद पड़ा हो। वह खड़ा हो गया विस्मित, भिन्नाया हुआ, शर्मिंदा; उसकी कमर पर बेंतों की मार का निशान जल रहा था, उसके अन्दर क्रोधाग्नि भड़क उठी; क्रोध, शर्म और उस गोरे को झपट कर दबोचने की भावना जाग्रत हो उठी। लेकिन वह रुक गया। किसी चीज ने उसे यह सब करने से रोक दिया और तब तक गोरा आदमी किसी चौराहे से मुड़कर अदृश्य हो चुका था।

गिडियन चलता रहा और फिर संसार अपनी उसी स्थिति को लौट गया; जहाँ उसे अब भी सुधार-संशोधन की आवश्यकता थी; जहाँ यह अभी तक परिपूर्ण अथवा परिपक्व नहीं हो पाया था। गिडियन ने अपने आपसे प्रश्न किया, "आखिर उसने यह सब क्यों किया?"

गिडियन की जेब में अब भी पच्चीस सेण्ट पड़े थे। पैसों का ढंग बिल्कुल ही निराला है। ये कोई चावल या आलू जैसी फ़सल नहीं है, जो जमीन में उगती है और जिसके बारे में किसी प्रकार का ठोस और कड़ा अन्दाज लगा लिया जाय— कि एक दिन में इतना चावल खाया गया और इस दिन रसद खत्म हो गई। पैसों के खर्च के बारे में एक खास लचकीलापन होता है; चाहे इसे एक काम में खर्च कर दो या दूसरे में, या खर्च ही न करो। शीतल, स्फूर्ति-

दायक वायु के झोंके से उसकी भूख जाग उठी और वह उस स्थान पर रुक गया, जहाँ पर लोग पाँच सेंट में थाली भरकर गरमा-गरम चावल और प्याज़ बेच रहे थे। फिर उसने एक और अख़बार ख़रीदा, गोदियों में गया और वहाँ रूई के एक ढेर पर बैठ गया। उसने अख़बार खोल लिया, कमर में बेंत की मार का दर्द अब मिट चुका था। अख़बार की छपाई को देखकर उसे फिर वही कौतूहल और आश्चर्य हुआ जो पहली बार अख़बार लेने पर हुआ था; इससे उसकी जिल्द सिकुड़ गयी और स्फूर्ति और उत्तेजना की झरझरी उसके शरीर में प्रवेश कर गयी। उसने पढ़ना शुरू किया :

"जौर्जिया की ख़बरों से ज्ञात हुआ है कि अब अधिक **स्थिरता**—"यह एक ऐसा शब्द था जो भविष्य के लिए उसके मस्तष्क में अंकित हो गया। यह कोई रहस्य-पूर्ण शब्द था। उसने उस शब्द को पढ़ने का प्रयत्न किया, "अथि—अइस्थिर—नहीं इस्थि—"और इसके बाद वह आगे पढ़ने लगा, "न्यूयार्क मार्केट के रूई के भावों में भविष्य में स्थिरता—" यह **भविष्य** क्या बला है? "मार्केट" शब्द उसकी समझ में आ गया—वह स्थान जहाँ चीजें बिकती हैं, यह तो उसके लिए एक घरेलू शब्द था; लेकिन यह न्यूयार्क में कौनसा मार्केट था, जहाँ रूई भविष्यकाल की रूई बन गयी थी? उसकी आँखों में दर्द होने लगा और वह ऊँघने लगा। उस तीसरे पहर की गर्मी में उसे कुछ देर झपकी लग गयी। हर बार उसकी आँख खुल जाती और वह फिर अख़बार पढ़ने लगता। इधर-उधर के शब्दों पर उसकी नज़र पड़ने लगी, "कांगो के हब्शी—काले जंगली—" जहाज़ी कुली अपना भारी वज़न ढोते जा रहे थे और गाने गा रहे थे। कांगो केरोलिना में था या जौर्जिया में? जंगली शब्द उसका जाना-पहचाना था, ये लोग हब्शियों को जंगली, रेड इण्डियनों के रूप में पेश कर रहे थे। दूर खाड़ी में एक भरा हुआ जहाज़ आगे-पीछे हिल रहा था और सारी सुमुद्री चिड़ियों के झुण्ड-के-झुण्ड उसके पीछे दौड़ रहे थे। गिडियन ने सूरज की ओर देखा और अनुमान लगाया कि शायद क़रीबन तीन बजे होंगे।

वह कार्डोजो के मकान पर पहुँचा। उसने अपना अख़बार ठीक से तह करके बग़ल में रख लिया। जब उसका मिस्टर नाश, मिस्टर राइट, और

मिस्टर डेलानी से जो चार्ल्सटन के अधेड़ उम्र के हब्शी थे, परिचय हुआ तो उसने उचित ढंग से झुककर उनसे हाथ मिलाया। उसके कपड़ों को देखकर व कोमल और अस्पष्ट देहाती भाषा को सुनकर सभी ने भौंएँ सिकोड़ लीं। गिडियन इन्हें देखकर बहुत प्रभावित हुआ; ये लोग सुशिक्षित थे और सुन्दर काले वस्त्र पहने हुए थे। उसकी समझ में यह आने लगा कि कुछ हल्कों में सफेद कपड़ों के बजाय काले कपड़े ज़्यादा पसन्द किये जाते हैं और कहीं रंगीन कपड़े लोगों के भाते हैं जैसे कि कुछ प्रतिनिधि पहने हुए थे। मिस्टर नाश ने कहा :

"मेरा ख़्याल है मिस्टर जेक्सन, आपके वोटरों ने कुछ आदेश तो आपको ज़रूर दिये होंगे।"

"हमारा विचार है कि यदि एक संयुक्त कार्यक्रम पहले से ही बना लिया जाय तो अच्छा हो।" मिस्टर डेलानी ने समर्थन किया।

"जी नहीं, मैं कुछ नहीं जानता।" गिडियन ने धीरे से कहा।

कार्डोज़ो और भी अधिक विनीत भाव का व्यक्ति था। "यह तो सब ऊँची-ऊँची बातें हैं मि० जैक्सन!" वह मुस्कराया, "सभा का प्रतिनिधि बन जाने के बाद आदमी अपना आधा दिमाग़ तो पतलून की जेबों में छोड़ देता है और फिर आधे दिमाग़ से जो शायद कभी उसके पास है या नहीं वह कुछ करना चाहता है।"

गिडियन ने केवल सिर हिला दिया और निश्चय कर लिया कि वह चुपचाप सुनता रहेगा। मिस्टर राइट ने भविष्य के बारे में पूर्ण निराशा प्रगट की। उन्होंने कार्डोज़ो से कहा :

"लेकिन फ्रांसिस अगर तुम यही बात करते हो तो फिर लगभग तीस ऐसे प्रतिनिधि हैं जो न पढ़ना जानते हैं, न लिखना।"

गिडियन को इस बात की प्रसन्नता थी कि उसकी बग़ल में तह किया हुआ अख़बार रखा है। वे लोग उसे समझ क्या रहे हैं और उन्होंने उसे वहाँ क्यों बुलाया था?

"तो यह तो और भी अच्छा है।" कार्डोज़ो ने सिर हिलाया।

"लेकिन ज़रा समझ से काम लो भाई।"

"मैं तो फ्रांसिस से सहमत हूँ," नाश ने कहा, "इस संसार के शिक्षित

लोगों ने कोई चमत्कार नहीं किये हैं।"

"खैर वह तो बकवास है। हमारे सामने जो समस्या पेश है वह यह कि हम इन काश्तकारों को सभा में शामिल करके विधान कैसे बनायेंगे। यह तो सही है कि इस बात से गोरों की आबादी में एक प्रकार की क्रोधाग्नि फैल गयी है; लेकिन हमारा प्रश्न तो सीधे इन्हीं काश्तकारों से संबंधित है। वे लोग वहाँ करेंगे क्या ?"

"उसका प्रबन्ध हो जायगा।"

कार्डोज़ो ने नम्रता से कहा, "क्या आपका विचार है कि आप मान जायेंगे मिस्टर जैक्सन ?"

"जी ?" गिडियन ने अनुभव किया कि उसे उपहास का निशाना बनाया जा रहा है। उसकी घबराहट क्रोध में बदल गयी।

"नाराज़ न होइये, मिस्टर जैक्सन !" कार्डोज़ो ने कहा।

"आप थे तो गुलाम ही ?"

"जी हाँ, मैं था।"

"काश्तकार ?"

"जी हाँ, वह भी हूँ।"

"सभा की इस कार्रवाई के बारे में आपका क्या विचार है ? मेरा मतलब है, आप गंभीरता से जवाब दें। जो विधान बनने जा रहा है और जिसके बनाने में आपका भी कुछ हाथ है, उसमें आप क्या चाहते हैं ?"

गिडियन ने उन सबकी ओर देखा, भारी भरकम नाश, पतला-दुबला और चापलूस कार्डोज़ो, गोलमटोल और सुशील राइट जो खाये-पिये घरेलू नौकर जैसा लगता था; जिस कमरे में वे बैठे थे वह भी गिडियन को बड़ा सुन्दर प्रतीत हुआ—इतना सुन्दर कि उसे उसपर विश्वास नहीं हो रहा था। गद्दीदार कुर्सियाँ, भूसे से भरी हुई एक गिलहरी और फर्श पर एक ऊनी दरी बिछी हुई थी और दीवारों पर खड़िया से बने तीन चित्र लगे थे। काले हब्शी को भला इतनी चीजें कहाँ से मिल गयीं ? यह इन सब चीजों के लायक़ कैसे बन गया ? और दूसरे प्रतिनिधि भी तो हैं जो रुई के खेतों में इस्तेमाल होनेवाले बेतुके जूते पहनकर अपने-अपने ज़िलों से पैदल चलकर यहाँ तक पहुँचे हैं !

"इन बातों का बुरा न मानिये मिस्टर जैक्सन!" कार्डोज़ो ने फिर कहा।

गिडियन ने सिर हिलाया, "मुझे तो बुरा नहीं लगा। आप मुझसे जवाब चाहते हैं न? आप समझते हैं; मैं अनपढ़ हूँ—न लिख सकता हूँ न पढ़ सकता हूँ; क्योंकि एक बूढ़ा हब्शी हूँ? कोसों दूर अपने रुई के खेतों से पैदल चलकर यहाँ तक पहुँचा हूँ। यही मेरी वक़त है न; आपकी नज़रों में? मैं क्या चाहता हूँ विधान में? शायद जो कुछ आप लोग चाहते हैं मैं न चाहूँ—मैं चाहता हूँ, उसमें शिक्षा का प्रबन्ध हो—और सबके लिए हो—कालों और गोरों के लिए। मैं चाहता हूँ हमें आज़ादी मिले—वह आज़ादी जो फ़ौलाद की चहारदीवारी से तुलनीय हो। मैं चाहता हूँ कोई भी मुझे सड़क पर धक्का न मारे। मैं चाहता हूँ कि हब्शी को ज़मीन का थोड़ा टुकड़ा दिया जाय, जहाँ वह अपनी फ़सल उगाये और हमेशा जीविका कमाता रहे। यही सब कुछ है जो मैं चाहता हूँ।"

इसके बाद सब शान्त हो गये, और गिडियन भी घबरा गया। उसे अकारण ही उत्तेजना, शक्ति और अपनी ऊँचाई का आभास हुआ। उसने कहा तो बहुत कुछ था; लेकिन उसमें बुद्धिमत्ता की कोई बात न थी। थोड़ी देर के बाद दूसरे लोग विदा हो गये; लेकिन जब गिडियन जाने के लिए उठा तो कार्डोज़ो ने उसकी आस्तीन पकड़ ली और उससे कुछ देर रुकने के लिए अनुग्रह किया। जब और लोग चले गये तो गिडियन से उसने कहा :

"चाय पी लें और फिर हम लोग कुछ बातें भी करें। आपको इन सब में बुलाकर मैंने मूर्खता ही की है न?"

"ठीक है, कोई बात नहीं है।" गिडियन ने सिर हिलाकर कहा और जाना चाहा; लेकिन वह नहीं जानता था कि जाते समय उससे इजाज़त क्योंकर ली जाय। इतने में कार्डोज़ो की पत्नी अन्दर दाखिल हुई। वह छोटे क़द की सुन्दर और साँवले रंग की स्त्री थी। गिडियन तो उसके सामने दैत्याकार लग रहा था।

"क्या पहाड़ी लोग इसी तरह मोटे-ताजे और लम्बे-चौड़े होते हैं?" उसने बातचीत शुरू करने के विचार से पूछा। गिडियन ने जो अब हर बात पर बुरा मानने लगा था, जवाब दिया, "मैं पहाड़ी नहीं हूँ साहबा! मैं तो देश के मध्य-प्रदेश का निवासी हूँ।"

कार्डोज़ो ने कहा, "तो क्या आप ठहरियेगा नहीं ? हमें तो अभी बहुत बातें करनी हैं।"

गिडियन ने सिर हिला दिया।

"तो फिर इस प्रकार समझिये," कार्डोज़ो ने कहा, "यहाँ पर कुछ हब्शी मुक्त कर दिये गये हैं जो कि जनता से उतने घनिष्ट सम्पर्क में नहीं हैं जितने कि होना चाहिएँ। चालीस लाख गुलामों में हम चन्द लोग ही तो हैं जो कुछ जानते-बूझते हैं। किताबें हमारे सामने खुली हुई थीं और हमने कुछ पढ़ना-लिखना सीख लिया—लेकिन विश्वास कीजिये एक तरह से हम आपसे भी ज्यादा गुलाम रहे हैं और अब हमारे सामने कुछ अजीब-सी परिस्थिति आन खड़ी हुई है, जो बहुत ही विचित्र और बहुत ही पेचीदा है। इतनी पेचीदा कि दुनियाँ उसको ठीक से समझ नहीं सकती।

"यूनियन की सरकार जिसे सैनिक मशीनों की, जिन्हें उसने युद्ध के समय बनाया था, सहायता मिलती है—दक्षिण के गोरों और कालों से कहती है, अपने लिए नये जीवन का निर्माण करो, और वह भी शुरू से। एक नया विधान, नये क़ानून और नये समाज का निर्माण करो। गोरे खेतिहर इसके विरुद्ध विद्रोह करते हैं; लेकिन उन्हें पराजित कर दिया गया है। फिर भी उन्होंने चुनाव में भाग नहीं लिया। इसके फलस्वरूप यहाँ के हब्शियों ने जो कल तक गुलाम थे, अपने लोग चुने और उन्हें अपना प्रतिनिधि बनाकर सभा में भेज दिया।

क्या आपको मालूम है मिस्टर गिडियन कि हम काले लोगों का सभा में बहुमत है, १२४ प्रतिनिधियों में से ७५ प्रतिनिधि हब्शी हैं ? इनमें से ५० से ज़्यादा पुराने गुलाम हैं। यह १८६८ वाँ साल है। हम कितने दिनों तक गुलामी की जंज़ीरों में जकड़े रहे ? इजराइल के बच्चे ४० वर्ष तक जंगलों में भटकते रहे।"

एक क्षण बाद, गिडियन ने धीमे स्वर में कहा, "जब मैं स्वयं भयभीत होता हूँ तो धार्मिक ग्रन्थों का हवाला नहीं देता। मैं खुदा से डरता हूँ, लेकिन जब डर मुझ पर बुरी तरह छा गया था तो मैंने बन्दूक उठाई और अपनी स्वतन्त्रता के लिए संघर्ष किया।"

"पर खेतिहर अदालतों में क्या करेंगे ?"

तो ? शुक्र है खुदा का, मैं हँसा नहीं वरना हँसी तो मेरे होठों तक आगई थी। हम कैसे जानवर हैं !"

गिडियन ने कार्टर से कार्डोज़ो के बारे में पूछा। एक प्रकार से, यानी बिल्कुल सामाजिक दृष्टि से; जिसे गिडियन अर्थ तक न समझ पाया था। कार्टर इस बात से बहुत प्रभावित हुआ था कि गिडियन कार्डोजो के मकान पर गया।

"वह यहूदी है," कार्टर ने कहा। "इसीलिए उसका यह नाम पड़ गया है। यह बड़ा घमण्डी हब्शी है।"

गिडियन ने पहले कभी किसी यहूदी को नहीं देखा था। उसने विस्मय से कहा, "लेकिन दीखता तो बिल्कुल हब्शी जैसा ही है।"

"पर है बड़ा जिद्दी।" कार्टर ने कहा।

कार्टर ने गिडियन को चिराग का उपयोग करने की इजाजत देदी थी और कहा था कि महीना खत्म होने पर जब निश्चित रूप से सब प्रतिनिधियों को पगार मिल जायगी, तब वह उसे तेल के पैसे दे दे। गिडियन कोई आधी रात तक लेटे हुए हिज्जों में गुथा रहा। वह अखबार के हाशिये पर शब्द लिख लेता और उन्हें जोर-जोर से पढ़कर उनकी प्रतिध्वनियों से पहचानता कि वे कुछ विचित्र तो नहीं हैं। उसकी निरन्तर जोर-जोर की और अस्पष्ट बोली सुनकर कार्टर जाग गया और दरवाजे पर आ खड़ा हुआ।

"क्या तबियत खराब है ?" कार्टर ने पूछा।

"जी नहीं, जरा पढ़ रहा हूँ।" गिडियन ने क्षमा-याचना करते हुए कहा।

हिज्जों की पुस्तक बड़ी बढ़िया थी, लेकिन उसमें शब्दार्थ नहीं थे—और गिडियन को आश्चर्य हो रहा था इस बात पर कि कोई ऐसी भी पुस्तक होगी जिसमें शब्दों के साथ-साथ शब्दार्थ भी दिये हों। फिर उसने 'व्यवहार' पुस्तक उठाई जिसमें एक पैराग्राफ ऐसा था !

"वैसे तो शब्दों को संक्षिप्त करना साधारण तौर पर बुरा है ही लेकिन 'नहीं है' शब्द तो बिल्कुल ही गंदा और ग़लत है। इसका उच्चारण ही प्रकट कर देता है कि इसका उच्चारण किस वर्ग का है और आया वह सज्जन पुरुष कह-लाने का इच्छुक है या नहीं। कोई भी सज्जन व्यक्ति यथासंभव शब्दों को न तो

सिकोड़ेगा और न ही संक्षिप्त करेगा और किसी भी परिस्थिति में 'नहीं है' का कभी प्रयोग नहीं करेगा। इस शब्द के संक्षेप की असंदिग्धता किसी भी सुसंस्कृत व्यक्ति को यह इजाजत नहीं देगी कि वह इसका प्रयोग करे; क्योंकि इसके तीन अर्थ हो सकते हैं।

'नहीं है' या 'नहीं हूँ' या 'नहीं हैं'। सुसंस्कृत व्यक्ति अपने भाषण में भी उतना ही शुद्ध और नपा-तुला होगा, जितना कि वह अपने विचारों और अपने स्वभावों में होता है।''

गिडियन ने इतना पढ़ने के बाद निश्चय कर लिया कि वह 'नहीं है' शब्द के व्यवहार से उसी प्रकार परहेज़ करेगा जैसा कि महामारी रोग से। शब्दों के व्यवहार के बारे में वह जितना अधिक पढ़ता जाता था उसका भय उतना ही बढ़ता जाता था और पढ़ाई उसे उतनी ही भयानक और डरावनी जान पड़ रही थी। कुछ आशापूर्ण भाव से उसने 'आथेलो' को उठाया और वह आशा की किरण भी अदृश्य हो गई जब उसने पढ़ा :

इयागो—मैं इसे पूरा करने का संकल्प कर चुका हूँ; लेकिन मेरा अन्वीक्षण मेरे मस्तिष्क से उसी प्रकार खिंच आता है जैसे कि चिड़ियाँ पकड़ने का दाना खेतों से चला आता है........

और इसके पढ़ते ही उसकी आँख लग गयीं, उसके सिर में दर्द हो रहा था और उसकी व्याकुलता पहले से अब कहीं अधिक थी।

कार्डोज़ो गिडियन से भी ज़्यादा देर तक जागता रहा। अपने शेल्फ से वे तीन किताबें हटाने के बाद जो रिक्त स्थान रह गया था उसे ऐसा लग रहा था मानो वह उसके जीवन, मानव-इतिहास और मानव-जाति के पीड़ित, रेंगते हुए जीवन का रिक्त स्थान था। वह गिडियन जैक्सन से क्योंकर मिला? यह विशालकाय धीरे-धीरे चलनेवाला, रुक-रुककर बोलने वाला काला आदमी कौन था जो केरोलिना के प्रदेश से, गुलामी से, अंधकार से निकलकर यहाँ आया था और उसने कार्डोजो को इतना छोटा महसूस करने पर क्यों मजबूर कर दिया? आखिर किसी आदमी को नापने का क्या तरीका था? वह, कार्डोज़ो, स्वतंत्र ही पैदा हुआ था; उसे याद था कि उसने ग्लासगो विश्वविद्यालय में शिक्षा प्राप्त की थी; उसे यह भी याद था कि लंदन के बाहर कई गार्डन-पार्टियाँ भी हुई थीं। कहीं एक सभा

हुई थी, जहाँ उसने तीन हजार अंग्रेजों के सामने एक भाषण दिया था और वहाँ उसका आदर-सत्कार किया गया था। उसने कई महासागरों का भ्रमण किया था और कितने ही महान् व्यक्तियों के यहाँ मेहमान रहने का उसे सौभाग्य प्राप्त हुआ था।

न्यू हैवन में वह मंत्री रह चुका था और दास-प्रथा के विरोधियों ने उसी के घर बैठकर अपने षडयंत्र रचे थे। उसकी रगों में सफेद, काला खून दौड़ता था, वह हब्शियों का, हिन्दुस्तानियों का, यहूदियों का और शरीफ लोगों का सम्मिश्रण था। यहाँ तक कि चार्ल्सटन के गोरे भी उसका सम्मान करते थे। वह, कार्डोज़ो एक प्रिंगल से अधिक निकट था अपेक्षाकृत गिडियन जैक्सन के।

फिर भी उसने उस घोर अंधकारमय गड़बड़ी से मोक्ष पाने का साधन गिडियन जैक्सन में देखा; यह विशालकाय काला आदमी उगते हुए सूर्य की ओर देख रहा था, जिसकी ओर कार्डोज़ो ने अब तक न देखा था। कार्डोजो जागता रहा क्योंकि उसके अनगिनत भय उसे घेर रहे थे। उसकी आकांक्षाएँ निराशा में परिणत होती जा रही थीं। वह इस उन्मत्त गुलाम से ईर्ष्या कर रहा था और उसे नींद नहीं आ रही थी।

साधारणतः जैसा होता है, आखिरकार एक वह दिन भी आया—चाहे वह दिन कितने ही लंबे समय के बाद क्यों न आया हो—जबकि सभा की बैठक शुरू हुई और गिडियन जैक्सन प्रतिनिधियों में जाकर बैठा। उसे ऐसा अनुभव हुआ मानो उस क्षण समय की गति स्थिर होगयी है। वह अब छत्तीस वर्ष का हो चुका था; उसका जन्म उस चीखते-चिल्लाते काले छोकरे की भाँति हुआ था जिसने गर्भ में ही मा को मार-डाला था; जबसे वह पाँव चलना सीखा उसकी गणना उन पशुओं में होने लगी जिनको खरीदते समय लोग नोचते हैं, परखते हैं और उसका मूल्य निश्चित करते हैं—और अब वह उन लोगों के दरम्यान बैठा हुआ था जो एक नया संसार निर्माण करनेवाले हैं—स्थिर शांत और गतिहीन। संसार असीम प्रतीत होता था। गिडियन ने अपने हाथ बाँध लिये, घुटने सिकोड़ लिए और बिना साँस लिए अपने हृदय की धड़कनें गिनने लगा। जी हाँ, जिस प्रकार कि हाल ठसाठस भरा हुआ था वैसी स्थिति में साँस लेना भी दूभर था; कुर्सियों की

पंक्तियों पर पंक्तियाँ लगी हुई थीं। गोरे और काले आदमियों के चेहरे-ही-चेहरे दिखाई पड़ रहे थे। कोई देहाती कपड़े पहने था तो कोई शहरी पोशाक में सुशोभित था, कोई बढ़िया वस्त्र पहने था तो कोई घटिया और गंदे कपड़े पहने था। कुछ लोग तंग काले लंबे कोट पहने हुए थे, तो कुछ पुरानी फौजी जाकिटें पहने थे। बूढ़े और जवान, गुलाम और आजाद, स्कैलावाग्स के निवासी और कालीन बुननेवाले, पहाड़ी गोरे यूनियनिस्ट, विद्रोहियों से कंधे-से-कंधा मिलाकर चलनेवाले आज यैंकियों से कंधे-से-कंधा मिलाकर चलनेवालों के साथ सटकर बैठे थे। नहीं, ऐसे में साँस लेना बड़ा कठिन था।

और मानों यह सब भी काफी नहीं था। चार्ल्सटन के शहरी आखिरकार अपने घर छोड़-छोड़कर वहाँ धक्का-मुक्की करते हुए आ पहुँचे थे और चाहते थे कि यह सर्कस देखें, उन काले लंगूरों को देखें। अखबार के प्रतिनिधि और संवाददाता भी वहाँ उपस्थित थे,—न केवल स्थानीय संवाददाता बल्कि जॉर्जिया, लुइसाना अल्बामा और दूसरे दक्षिणी राज्यों के वे घृणापूर्ण लेखक भी थे जो हमेशा के लिए इस पागलपन और बौलप्पे को देखकर अपनी इच्छा पूरी करना चाहते थे। न्यूयार्क के नजाकत पसंद संवाददाता इस भीड़ भड़क्के में से कुछ ऐसी खबर निकालने का प्रयत्न कर रहे थे जो वहाँ के स्थानीय पाठकों को रुचिकर मालूम दे; बोस्टन के लेखक भी वहाँ मौजूद थे, न्यू इंग्लैण्ड के वे पुराने संपादक जो गुलाम-प्रथा के विरोधी थे वे भी वहाँ थे, और जाहिर है कि वाशिंगटन के लोग तो वहाँ थे ही जो बड़ी उत्सुकता से उस बात की प्रतीक्षा कर रहे थे जो सारी राजधानी में सनसनी फैला दे। इसके अलावा यैंकी फौजी सारे हॉल में भरे हुए थे और हाल में तिल भर भी जगह नहीं थी।

सब भय, अपेक्षा और उत्तेजना के बावजूद सभा का पहला अधिवेशन व्यवस्थित, शांतिपूर्ण ढंग से समाप्त होगया। हाज़िरी ली गयी; जब तक गिडियन का नाम न पुकारा गया वह रोगी और भयभीत सा बैठा रहा। जब उसका नाम आया तो उसने कहा, "हाज़िर साहब!" और सभापति आगे बढ़ गये। उसे महसूस हुआ मानो उसकी आवाज व्यर्थ ही इन लोगों ने सुनी।

हाज़िरी खत्म होने के बाद दक्षिणी केरोलिना के भूतपूर्व गवर्नर, और सभा के

सामने भाषण देने खड़े हुए। उन्हें विशेष निमंत्रण देकर वहाँ बुलाया गया था। यह इस बात का प्रतीक था कि प्रतिनिधि जनता के साथ संपर्क रखकर ही कार्य करेंगे उससे दूर नहीं जायँगे।

पूरे हाल में स्तब्धता छागई और गिडियन आगे की ओर झुककर बड़े ग़ौर से भाषण सुनने लगा। पहले तो उसे खुशी हुई; क्योंकि आर ने कहा कि पुराने ग़ुलामों में शिक्षा की बहुत सख्त ज़रूरत है लेकिन बाद में बड़े निश्चय के साथ और स्पष्ट तौर से घोषणा करते उसने कहा कि इस सबके बावजूद वे ग़ुलाम-राज्य की बुद्धिमत्ता, धन और भवितव्यता के प्रतिनिधि नहीं। उन लोगों को बालिग़ मताधिकार देना सिवाय ख्वाबोख्याल के और कुछ नहीं है।

इसमें से काफ़ी चोजें गिडियन न समझ पाया। उसे अपने ऊपर क्रोध आगया। अस्पष्ट भाषा में व्यक्त किये विचार उसकी समझ में नहीं आये और हर तीसरे या चौथे शब्द का अर्थ वह न जानता था। उसने सोचा— कहीं आर उनकी हँसी तो नहीं उड़ा रहा, उनके प्रति ग्लानि का भाव तो नहीं दर्शा रहा या कहीं उन पर आक्रमण तो नहीं कर रहा।

आर के भाषण की समाप्ति पर कोई विशेष तालियाँ नहीं बजीं, लेकिन सब ओर अनुशासन व व्यवस्था थी। अगले दिन का कार्यक्रम निश्चित किया गया और अधिवेशन उस समय के लिए स्थागित कर दिया गया।

सभा की समाप्ति के बाद जब प्रतिनिधि बाहर आये तो सड़क पर खड़े होकर बड़ी [illegible] बहस छिड़ गयी। गिडियन भी बहस को गौर से सुनने लगा। वे सब ग्रामीण हृष्टपुष्ट खेतिहर किसान थे जिनके चौड़े कंधे इस बात की गवाही दे रहे थे कि उन्होंने वर्षों खेत में हल चलाया है। उनमें से एक वृद्ध पुरुष जो काजल की भांति काला लंबे चेहरे वाला था और जिसकी आँखें चमकदार थीं, कह रहा था :

"शिक्षा? उससे तो हम बिल्कुल ही वंचित हैं,—और कौन ऐसा है इस राज्य में जिसने शिक्षा ग्रहण की हो? सारे के सारे ज़िलों में स्कूलों का कहीं नाम तक नहीं। बड़े आदमी को इसकी क्या परवाह, वह चाहे तो अपने घर किसी मास्टर को बुलाकर पढ़ सकता है; चाहे तो अपने बच्चों को यूरोप भेज सकता है। लेकिन वह तो बुद्धिमत्ता या शिक्षा नहीं है जैसा कि आर कह रहा था। हमें स्वतंत्र

हुए अभी दिन ही कितने हुए हैं,—दो बरस, और सभा केवल एक ही दिन मिली है। मैं तो कहता हूँ कि आर हमें इस तरह क्यों तबाह करना चाहता है?"

एक ऊँचा गोरा नौजवान जो पहाड़ियों की तरह रुक-रुक कर बोलता था भीड़ में से निकला और कहने लगा :

"इसके कई कारण हैं चचा!"

"वे कौन से?"

"चचा, मैं कहता हूँ—आप हब्शी लोग अपनी आँखें क्यों नहीं खोलते? यह समानता किसी मसरफ की नहीं है अगर आप लोग खुद इसे अपने हाथों में नहीं रखते। जाहिर है कि वे तो यही कोशिश करेंगे कि तुम्हारा मुँह बंद करदें और मुझे भी चुप करदें। तुम हब्शी हो, मैं ग़रीब गोरा हूँ। गोरे ग़रीबों ने मुझे चुन कर भेजा है और हब्शियों ने तुम्हें। और हो सकता है कुछ गोरों ने तुम्हें वोट दिये हों और कुछ हब्शियों ने मुझे वोट दिये हों। मेरे दिल में हब्शियों के लिए कोई प्रेम नहीं है; लेकिन मैं तर्क-बुद्धि के पक्ष में हूँ। मैं चाहता हूँ कि दो-दो चार वाली बातें हों और साफ-साफ हों। यही तर्क-वितर्क की बातें मुझे बतलाती हैं कि यदि हम होशोहवास में हों तो क्या-क्या कर सकते हैं। लेकिन यह मैं भी नहीं जानता कि वे लोग इसके बाद हमें जानवर नहीं समझेंगे।"

"तो फिर तुम्हारा इसके बारे में क्या विचार है?" किसी ने पूछा।

"मैं चाहता हूँ कि आप अपने होशोहवास बरक़रार रखें और इस सभा से शिक्षा व मताधिकार का हक़ लेकर ही उठें। मैं जानता हूँ, हमारे दुश्मन इस पर क्या कहने वाले हैं।"

"तो तुम उन्हें कहने दोगे?"

"हाँ, और फिर हम भी तो अपनी बात कहेंगे।"

"और ज़मीन? अगर हमारे पास खेती करने के लिए ज़मीन ही न हो तो फिर इस मताधिकार और स्कूलों को क्या हम चाटेंगे?"

"ज़मीन," गोरे आदमी ने शब्द चबाकर कहा, "भाई साहब, आप ज़रा ज़मीन माँगिये तो उनसे, मैं कहता हूँ वे आपके मुँह रगड़ देंगे। इस सभा से आपको कोई ज़मीन नहीं मिलनेवाली। अगर हमें ज़मीन की ज़रूरत है तो हमें

उसके लिए काम करना पड़ेगा,—खून पसीना एक करना पड़ेगा और उसे ख
पड़ेगा।"

"क्या हम ज़मीनों पर गये सौ वर्षों से काम नहीं कर रहे हैं ? क्या हम
फ़स्लें नहीं उगायी हैं ? और उन्होंने यही तो किया है कि जाकर हमारे
गाँव उजाड़े हैं, उन्हें नष्ट किया है। फिर तुम्हीं बताओ ज़मीन का सही ह
कौन है—हम या वे ?"

"यह अधिकार का सवाल नहीं है, यह सवाल है जायदाद का। मैं
तारों को देखकर निशाना नहीं साधता; मैं तो सामने की पहाड़ी की चो
निशाना लगाता हूँ।"

इसी प्रकार तर्क-वितर्क होता रहा, गर्माहट बढ़ती गयी। जब गिडि
देखा कि गोरा आदमी वहाँ से चल पड़ा है तो उसने भी उसका पीछा
और आस्तीन खींचकर कहा :

"मिस्टर ?"

गोरा आदमी रुक गया। उसने अपनी नीली ठंडी आंखों से गिडि
ओर देखा और वे दोनों साथ चलने लगे। गिडियन ने महसूस किया कि
आदमी संघर्ष चाहता है, वह दक्षिणी प्रदेश में जन्मा और वहीं पला
उसे ग़ुलाम-प्रथा से घृणा थी जिसने उसे भूमिहीन भंगी रहने पर मजब
दिया था। लेकिन साथ ही उसे हब्शियों से भी नफ़रत थी, जिनकी अर्थ-व्य
ने उसे उस वर्ग में रख छोड़ा था। शायद अब उसकी सफेद चमड़ी ही
चीज थी जो आदर की भावना आकर्षित कर सकती थी।

"सुनिये मेहरबान, मैं आपसे कुछ बातें करना चाहता हूँ।" गिडियन ने
"मेरा नाम गिडियन जैक्सन है।"

"और मेरा नाम है ऐण्डरसन क्ले।" गोरे आदमी ने ईर्षाभाव से
और वे दोनों साथ-साथ चलते रहे।

"मैं कोई बहस करना नहीं चाहता।" गिडियन ने कहा। "और न
किसी प्रकार की ज़िद करता हूँ। लेकिन ज़मीन के बारे में जो कुछ आपने
वह मैंने सुना है। मेरे लिए यह अत्यंत महत्त्व की बात है कि मेरे लोग

ज़मीन मिले। आपका अनुमान है कि वे हमें ज़मीन बिल्कुल नहीं देंगे ?"

"जी हाँ, बिल्कुल नहीं देंगे।"

"तो फिर हम ज़िंदा कैसे रहेंगे ?"

"हब्शी दोस्त, वही तो तुम्हें सोचना है।"

कुछ देर तक उसी शांत वातावरण में चलते हुए अंत में गिडियन ने कहा, "तो फिर ऐसा क्यों न करें कि हम इसी प्रश्न पर बाद में फिर बातें करें ?"

"हाँ, ठीक है।"

"मैं आप जैसे व्यक्ति से मिलकर धन्य हूँ," गिडियन ने कहा।

कुछ दिनों बाद गिडियन ने अपनी ज़िंदगी में पहली बार अपनी पत्नी का पत्र लिखा। हरेक शब्द के लिखते समय उसे एक विचित्र कौतुहल और आश्चर्य का अनुभव हो रहा था। उसने लिखा :

"प्यारी रैचल,

तुम्हारी याद हर वक्त मेरे दिल में समाई रहती है। तुम्हारी तस्वीर मेरी आँखों के सामने रहती है। और मुझे हर वक्त यही अनुभव होता है कि तुम कितनी सुन्दर हो। ठीक उसी प्रकार जैसे कि मैं यैंकियों की फौज में था और तुमसे दूर था, उसी प्रकार अब भी तुम्हारी जुदाई कभी-कभी मुझे दुखी कर देती है। मैंने किताबों से पढ़ना-लिखना सीख लिया है और मैं सभा का प्रतिनिधि हूँ। मैं अब अच्छे-अच्छे क़ानून बनाने वाला हूँ। मेरी तनख्वाह काफी है, तीन डालर रोजाना मुझे मिलते हैं इसमें से काफी बचा भी लेता हूँ। हर रात सोने के पहले मुझे तुम्हारा और बच्चों का ख्याल आता है और मैं यही दुआ करता हूँ कि खुदा तुम सब पर अपना रहम करे। यह जो अच्छा खत मैं तुम्हें लिख रहा हूँ यह किताबों की ही बदौलत है। जब मैंने पहली बार सभा में तनख्वाह के बारे में भाषण दिया तो मुझे बड़ा डर लग रहा था। यहाँ इस भाषण को 'वाद-विवाद' कहते हैं। अगर जेम्स एलेन्बी वहाँ आये तो उसके साथ अच्छा व्यवहार करना, मैं जल्द ही तुम्हें दूसरा खत लिखूँगा।"

गिडियन ने यह खत रात को घंटों बैठकर लिखा और हरेक शब्द जाँच-परखकर अपनी ख़रीदी हुई नोटबुक में लिख लिया। उससे उसे अनुभव हुआ

कि वह रैचल के और अपने उन हमसायों के निकट पहुँच गया है जिन्हें वह केरोलिना छोड़ आया था। जब उन लोगों को पता चलेगा कि उसने सभा के वाद्-विवाद में भाग लेना शुरू कर दिया है तब भला वे क्या सोचेंगे? इसलिए नहीं कि यह कोई महत्त्व की बात थी और न ही इसलिए कि वह कुछ बोलना चाहता था; लेकिन किसी-न-किसी तरह वह बोल ही तो गया,—ठीक किस तरह यह उसे याद नहीं था। वह खड़ा हो गया था और बोल रहा था। प्रतिनिधियों के वेतन का प्रश्न भी सभा में ही उठाया गया था।

बहस शुरू करते हुए एक शख्स मिस्टर लैंगली ने कहा कि बारह डालर रोज़ाना तो ज्यादा न होगा। "बिल्कुल, इस सभा के प्रतिनिधि इस वेतन के हक़दार हैं!" वहाँ पर जो प्रेस-संवाददाता उपस्थित थे वे बड़ी शीघ्रता से रिपोर्ट लिख रहे थे। राइट जो हब्शी था खड़ा होगया और उसने कहा, "दस डालर रोज़ाना काफी हैं। हर प्रतिनिधि की बुनियादी और आवश्यक ज़रूरतें तो इससे पूरी हो ही जायँगी।" सारी गैलरी ने इसका विरोध किया और लोग चीखने चिल्लाने लगे। सभापति ने सभा में अनुशासन रखने का आदेश दिया। पारकर, एक गोरे आदमी ने कहा, "ग्यारह डालर होने चाहिएँ।" यह रक़म सभासदों में से पंद्रह प्रतिशत लोगों को, जिनमें वे लोग थे जो जिंदगी भर हाथ-पाँव चलाकर काम करते थे; कुछ गुलाम थे, कुछ मझोले किसान थे, कुछ ऐसे भी थे जिन्होंने अभी तक चाँदी के सिक्कों की चमक भी न देखी थी—बेहूदा लगी। एक काला प्रतिनिधि मिस्टर लैजली खड़ा होकर चिल्लाया और तीन स्कैलालावाग के प्रतिनिधियों ने और दो क़ालीन बुननेवालों ने उनका समर्थन किया।

मि० लैजली बोले :

"मैं अपनी सेवाओं के लिए तीन डालर रोज़ाना लेने को तैयार हूँ। एक काले आदमी की हैसियत से मैं यह चीज़ रेकार्ड में लिखवाना चाहता हूँ। मैं समझता हूँ कि मेरी सेवाओं का यही मूल्य है। मैं आप प्रतिनिधियों से पूछता हूँ,—यदि ऐसी ही किसी और संस्था के लिए आपको जेब से पैसे देने पड़ते तो आप कितने देते? यही न एक डालर या पचास सेण्ट? फिर यह आठ, नौ और दस डालरों का सवाल क्यों पैदा होता है? यह मुझे तो धोखाधड़ी मालूम पड़ता है।"

एक साहब मिस्टर मेलरोज़ भी बोले और काफी तालियाँ बजीं

"यह सुझाव कि प्रतिनिधियों को एक डालर और पचास सेण्ट रोज़ाना वेतन के बतौर दिया जाय, हम लोगों का भारी अपमान है, हमारी हतक है !"

इसके बाद ही इस अविश्वासनीय अन्तर्द्वन्द्व में वह समय आया जब गिडियन अपने को भूल गया और बोलने खड़ा हुआ। उसकी गहरी और बुलन्द आवाज़ से सारा हाल गूँजने लगा।

"मैंने आप सब लोगों की बातें सुनीं, दस डालर रोज़ाना और ग्यारह डालर रोज़ाना ! मैंने अखबार पढ़ा है जिसमें हमें लुटेरे कहा गया है और मुझे इस पर गुस्सा आगया और मैं आपे से बाहर हो गया। हम लुटेरे डाकू नहीं हैं—लेकिन ऐसा क्यों हो रहा है ?" और उसी समय उसे अनुभव हुआ कि जो कुछ वह कह रहा है उसका कितना महत्त्व है और वह कितनी बड़ी चीज़ है। उसे महसूस हुआ कि उसके शरीर में कुछ सर्द-गर्म लहरें दौड़ रही हैं और फिर उसने रुकते-रुकते आगे कहा, "मैं आज से कुछ साल पहले येंकियों की फ़ौज में था और उन्हीं के साथ चार्ल्सटन आया था,—क्या तनख्वाह मिलती थी मुझे उस समय ?—शायद बीस सेंट रोज़ाना। लेकिन मैं उस समय स्वतन्त्रता के लिए लड़ रहा था। मैं ग़ुलाम था, इसलिए मुझे कभी कोई तनख्वाह ही नहीं मिलती थी। जब मैं सभा शुरू होने के पहले चार्ल्सटन आया तो मुझे अपनी रोज़ी कमाने के लिए काम करना पड़ा। और फिर यहाँ आकर गोदी में मैंने रुई ढोई और पचास सेण्ट रोज़ाना पाये। तो फिर बताओ अब मेरे काम की क़ीमत दस डालर रोज़ाना कैसे हो सकती है ?" किसी तरह उसका डर दूर हो चुका था, अब उसे अपने आप पर विश्वास हो गया। उसने स्पष्ट शब्दों कहा, "शायद यह शान है, जैसा कि कुछ लोगों ने कहा, तो फिर तीन डालर भी कोई शान के ख़िलाफ़ नहीं हैं। एक गोदी कामगार और प्रतिनिधि में इस वेतन से फ़र्क़ तो पड़ता है। हो सकता है वह फ़र्क़ सही न हो; लेकिन मेरे काम का या सेवाओं का मेहनताना दस डालर रोजाना नहीं हो सकता।"

यही गिडियन के लिए पहला अवसर था जब वह सभा में बोला और उसका प्रस्ताव मंजूर भी हो गया।

: ५ :

जैसे-जैसे सभा के अधिवेशन के दिन हफ़्तों में और हफ़्ते महीनों में परिणत होते गये, गिडियन के दिल से वह भय और अजनबीयत दूर होती गई, जिसे वह पहली बैठक में अपने साथ ले गया था। जीवन की दूसरी घटनाओं की ही भांति वे सभी अस्वाभाविक बातें अब स्वाभाविक होती गईं और जो कुछ अब तक अजीव व वचित्र दिखाई देता था अब जाना-पहचाना और परिचित होता गया। यह गुणात्मक परिवर्तन जो उसमें आया था वह उसकी अपनी चेतना नहीं थी। कोई भी ऐसी बात नहीं हुई, जबकि वह रुका हो और उसने अपने आपको परखा हो और यह समझा हो कि अब वह वैसा नहीं है जैसा कुछ समय पहले था। हर काम के करने से उसे उसका अभ्यास हो गया था। भाई पीटर ने उससे एक बार कहा था कि जब लोग भाषण करते हों तो वह उन्हें ग़ौर से सुने; क्योंकि भाषण भी एक ऐसी चीज है जिससे किसी मनुष्य को जाँचा जा सकता है—और तीस, चालीस और नव्वे दिनों तक वह सभा-भवन में बैठा और लोगों के भाषण सुनता रहा। कभी-कभी उसने भी भाषण दिये—और इसे यह जानने की कभी कोई उत्सुकता न हुई कि हर बार जब उसने भाषण दिया तो लोगों ने और ज्यादा ध्यान से उसे सुना।

उसके कामों का आखिरकार उसे फल भी मिला। वे तीन किताबें जो कार्टर के उस कमरे में रखी थीं अब एक दर्जन हो गईं और बढ़कर फिर दो दर्जन तक पहुँच गयीं। हर रात अपना भोजन करने के बाद वह कमरे में जाता, दरवाजा बन्द कर लेता और फिर अपनी छोटी मेज पर चिराग़ की रोशनी में किताब खोल लेता। मुश्किल से ही कोई ऐसा दिन गुजरा हो जब उसने तीन घण्टे से कम पढ़ा हो। कभी-कभी तो पाँच-पाँच घण्टों पढ़ता रहता और कभी सारी रात जागता रहता था,—जैसा कि जब उसने 'अंकल टाम्स केबिन' नाम की पुस्तक

शुरू की तब उसे रात भर जागना पड़ा। यह पहला उपन्यास था और जब सभा के एक सभासद, काले आदमी मिस्टर डिलार्ज ने उसे वह दिया तो गिडियन ने इन्कार करते हुए कहा, "मेरे पास इस समय कहानियों की किताबें पढ़ने के लिए समय नहीं है।"

"यह," डिलार्ज ने कहा, "उन बातों में से एक है, जिसने तुम्हारे लिए यहाँ इस सभा में आना सम्भव बनाया।"

"इस किताब ने?"

"जब बूढ़े अब्राहम लिंकन मिस्टर स्टोव से मिले, जिन्होंने यह पुस्तक लिखी थी तो उन्होंने कहा था, क्या यही वह साधारण स्त्री है, जिसने एक महान् राष्ट्र को युद्ध में झोंक दिया है?"

गिडियन ने मुस्कराते हुए कहा, "मैं समझता हूँ कि इसके अलावा और भी कुछ कारण होंगे।"

"लेकिन किताब लेकर पढ़ने में क्या हर्ज है?"

गिडियन वह पुस्तक घर ले आया। उसे पढ़ने में उसे कई हफ्ते लग गये। और फिर एक नये संसार का प्रारम्भ हुआ। कार्टर व उसकी पत्नी ने उसे समझाया कि यदि वह ठीक से न सोयेगा तो निश्चय ही बीमार पड़ जायगा। पुस्तक के कुछ अंशों की उसने अपनी कापी में नकल की—कई बातों के जो उसकी समझ में नहीं आई थीं और जो उसे व्याकुल किये देती थीं, उसने अर्थ इस पुस्तक में ढूँढ लिये थे और उन्हें अपनी कापी में लिख लिया था; अब वे गूढ़ समस्याएँ उसके लिए बिल्कुल साधारण और सरल हो चली थीं जैसे कि इस अंश से प्रकट होता है:

"अब एक रईस को ले लीजिए। आप जानते हैं कि दुनिया के किसी भी रईस में मानव-जाति के लिए एक विशेष, निर्धारित सामाजिक सीमा से बढ़ कर कोई सहानुभूति नहीं होती। इंग्लैण्ड में एक सीमा है; बर्मा में दूसरी और अमेरिका में तीसरी; लेकिन इन देशों के रईस लोग कभी भी इन सीमाओं को पार नहीं करते। जो कुछ उसी के वर्ग के लिए कठिनाई, विपत्ति और अन्याय है वही दूसरे वर्ग के लिए शान्त और सरल बात है। मेरे पिता की विभाजक-रेखा

का आधार वर्ण-भेद था। उनकी स्थिति के लोगों में कोई भी उससे ज्यादा न्यायपूर्ण और उदार नहीं था। लेकिन उन्होंने भी हब्शियों को आदमी और पशु के बीच की ही एक कड़ी समझा था और उनके न्याय व उदारता के विचार इसी अनुमान पर आधारित थे............।"

और यह एक और अंश था।

"अल्फ्रेड, ऐसा कौन घोर स्वेच्छाचरी शासक है जो इस प्रकार के विचारों की रक्षा ही नहीं करता; बल्कि इस बात का भी समर्थन करता है कि शक्तिशाली ही को अधिकार दिया जाय। और वह कहता है और मेरे ख्याल से बुद्धिमत्ता-पूर्वक ही कहता है कि "अमेरिकन किसान केवल वही कर रहा है जो इंग्लैण्ड के पूँजीवादी व अभिज्ञात वर्ग वहाँ के निम्न वर्गों के साथ कर रहे हैं।" यानी उनका शोषण कर रहा है,—उनके शरीर का, उनकी हड्डियों का, उनकी आत्मा और शक्ति का अपनी इच्छा, सुविधा और उपयोग के लिए शोषण कर रहा है। वह उन दोनों का संरक्षण भी करता है,—और मेरे ख्याल से निरंतर करता है। वह कहता है कि जनता को गुलाम बनाये बगैर उच्च सभ्यता चाहें वह नाममात्र की हो अथवा वास्तविक, जीवित नहीं रह सकती। वह कहता है कि ऐसा एक वर्ग जरूर होना चाहिए जो शारीरिक श्रम करता हो और जानवरों की सी जिन्दगी बिताने पर मजबूर किया गया हो। इससे उच्च वर्ग को अपनी बुद्धिमत्ता और सम्पत्ति बढ़ाने व अपने को बेहतर बनाने का अवकाश मिले और वह निम्न वर्ग की आत्मा पर शासन करने के योग्य हो। अतः वह यह तर्क करता है क्योंकि जैसा मैंने कहा, वह रईस-परिवार में उत्पन्न हुआ है। लेकिन मैं इन बातों पर विश्वास नहीं करता क्योंकि मैं एक पैदाइशी जनवादी हूँ।"

उसने इन अंशों की नक़ल की और उनका अध्ययन किया। जब अगली बार वह डिलार्ज से मिला तो कहने लगा, "मैं आपकी पुस्तक पढ़ रहा हूँ।"

"और सीख भी रहे हो न?"

"हाँ, थोड़ा-थोड़ा तो पढ़ ही रहा हूँ," गिडियन ने मुस्कराते हुए कहा, "यह बताइये कि क्या किताब अंग्रेजी में भी छपी थी?"

"जी हाँ, और जर्मन, रूसी, हंगेरियन, फ्रांसीसी, स्पेनिश और एक दर्जन के

क़रीब और भाषाओं में भी इसका अनुवाद निकल चुका है। यूरोप में तो मजदूर लोग इसे अपनी 'बाइबिल' कहते हैं।''

''अच्छा! काले गुलामों पर लिखी इस किताब को?''

''हाँ गुलामों पर लिखी किताब को, गिडियन!''

आखिर इस कठिन काम का उस पर असर पड़ा। जिंदगी में पहली बार गिडियन की आँखों में दर्द शुरू हुआ। उसका वज़न कम होगया, वह दुबला हो गया और अब उसे उस समय से कहीं ज़्यादा थकावट महसूस होने लगी जितनी कि हल चलाते समय या फौज में तीस मील पैदल चलने में भी न हुई थी। जिंदगी के छत्तीस सालों में उसे महसूस हुआ था कि हर काम के लिए उसे अवकाश मिलता रहेगा। दिन ऐसी शीघ्रता से गुजरते गये जैसे सूरज उदय हुआ हो और अस्त होगया हो। कपास के खेतों की ग्रामीण मधुर ध्वनि, वे घटनाएँ जो हमेशा घटती रहती थीं, देवदार का कचरा, अंधियारे दलदल, काम करने वालों के गीतों की मंद और शोकाकुल ध्वनि; लेकिन यहाँ तो एक ऐसा संसार था जो निरंतर बहता था, कभी उसमें विराम तो आता ही नहीं था, परिवर्तन होते ही रहते थे; हर दिन और हर घण्टे का यहाँ महत्त्व था। उसने एक शब्द-कोश खरीदा जिसमें लगभग पचास हज़ार शब्द थे और अब इन्हीं शब्दों को अपने औजारों के रूप में वह प्रयोग करने लगा। ज्ञान अनन्त था और गिड़ियन को हमेशा यही महसूस होता कि वह अभी केवल धरातल को ही कुरेद रहा है। एक पूरा सप्ताह उसने जोड़ व बाक़ी सीखने में और गुणा करने में बिता दिया; एक पूरी रात जागकर उसने अपने उस एक पृष्ठ के भाषण की तैयारी की जो उसे अगले दिन शिक्षा के विषय में देना था। यह उस भाषण की कल्पना थी—जो गिडियन जैक्सन हाल में खड़े होकर देने वाला था—

''गत कुछ दिनों में मेरे सहप्रतिनिधियों ने जो शिक्षा पर भाषण दिये हैं और कहा है कि उसे कानून के रूप में लागू किया जाय, उन्हें मैंने ग़ौर से सुना है। मैंने कुछ महाशयों को यह भी कहते सुना है कि शिक्षा को क़ानूनी बनाकर लागू करना मूर्खता है और उसकी आशा करना भी ग़लत बात है। मैं इस तर्क से सहमत नहीं हूँ। यदि कपड़े पहनने का कानून न होता, तो शायद लोग नंगे ही

करते । वे इसीलिए कपड़े पहनते हैं; क्योंकि ऐसा करने का क़ानून है और ब ही ऐसे कानूनों के आदी हो जाते हैं । मैं समझता हूँ कि आगामी पाँच या र्षों में लोग इस बात के भी आदी हो जायँगे कि उन्हें स्कूल जाना अनि- है, चाहे वे इसे पसंद करें या न करें । ऐसा क्यों होता था कि गुलाम रखने अपने गुलामों को उसी वक्त बेच देते थे, जब उन्हें पता चल जाता था कि वह न लिखना या पढ़ना जानता है । मैं आपको इसका कारण बतलाता हूँ। यह सब ए होता था क्योंकि केवल अज्ञानी लोग ही गुलाम रह सकते हैं । वे लोग ज्ञानी हैं और किसी चीज को जान नहीं सकते, उनके लिए जनवाद और समानता ई अर्थ नहीं होता; और जब तक लोग इन बातों को न समझलें वे । नहीं हो सकते।"

इस छोटे टुकड़े को लिखने में उसने सारी रात बिता दी और उसके बाद उसने व किया कि वह भाषण कितना नाकाफ़ी था, किस तरह बुरे शब्द उसमें प्रयोग गये थे और उसमें वे चीजें नहीं थीं जो वह कहना चाहता था और जिसके की वह आशा रखता था। लेकिन इन तमाम त्रुटियों के बावजूद कार्डोज़ो पास आया और उसने जानने की कोशिश की ।

"तुम इतने दिनों से कहाँ छिपे रहे, गिडियन ?"

"छुपा रहा ?"

"मेरा मतलब है तुम अधिवेशन खत्म होते ही चले जाते हो ।"

"मैं पढ़ता हूँ।" गिडियन ने कहा ।

"रोजाना रात को ?"

"जी हाँ, रोज़ाना रात को ।"

"न आराम करते हो ? न खेलते हो," कार्डोज़ो ने विचारपूर्ण भाव से कहा किसी से मिलते भी तो नहीं हो ना ? और यह कोई अच्छी बात है ।"

"मैं हर रोज तो अधिवेशन में आता हूँ ।"

"ठीक है, लेकिन मैं चाहता हूँ कि तुम लोगों से मिलो,—कालों से और गोरों दोनों से । यह बात महत्त्व की है कि तुम लोगों को जानो-समझो और तुम्हें यह

भी मालूम हो कि वे क्या सोच रहे हैं, क्या कह रहे हैं और क्या करना चाहते हैं। में गोरों के साथ निकट और निकटतर सम्पर्क में रहकर काम करना है गिडियन!"

"हाँ, मैं भी यही समझता हूँ।" गिडियन ने सिर हिलाते हुए कहा।

"तो फिर कल हमारे साथ खाना खाना। क्यों खाओगे न?"

"खाना?" गिडियन संकोच में पड़ गया; लेकिन कार्डोजो ने उस पर ज़ोर डाला, "ज़रूर आओ,—मेहरबानी करके ज़रूर आओ।"

"ठीक है।"

"लेकिन मैं यही सब कुछ तो नहीं कहना चाहता था। तुमने जो अनिवार्य शिक्षा के बारे में कहा उसका मुझ पर बड़ा अच्छा प्रभाव पड़ा। यह एक ऐसी बात है जिसमें मुझे बहुत ज़्यादा दिलचस्पी है और मैं समझता हूँ अगर हम इस काम में असफल हुए तो फिर हमारे विधान का सारा काम ही विफल होजायगा। अगले हफ्ते यही प्रश्न कमेटी के सम्मुख पेश होने वाला है। क्या तुम कमेटी में सम्मिलित होना चाहते हो?"

गिडियन ने कार्डोज़ो को घूरकर देखा; लेकिन कार्डोज़ो की आँखों में तनिक भी उपहास नहीं था। गिडियन ने सहमति प्रकट की।

"मुझे बड़ी खुशी हुई।" कार्डोजो ने कहा।

इसके कुछ दिनों पहले गिडियन ने फैसला किया कि उसे कपड़ों का एक जोड़ा ज़रूर खरीद लेना चाहिए। श्रीमती कार्टर के पैबन्दों के बावजूद जो कोट गिडियन पहने था उसकी हालत बिगड़ती जा रही थी और वह जल्द ही खत्म होने वाला था। मुश्किल से कोई दिन गुज़रा हो जब उसका लम्बा कोट जो बहुत तंग था एक सीवन पर से या दूसरी पर से न उधड़ता हो। जैकब कार्टर ने दो डालरों में गिडियन के लिए बड़ा अच्छा जूता तैयार कर दिया था, लेकिन कपड़ों की हालत तो निश्चय रूप से खतरनाक हो चली थी। श्रीमती कार्टर ने उससे कहा कि एक प्रतिनिधि की हैसियत से उन्हीं पुराने चिथड़ों में सभा में बैठना उसके लिए लज्जास्पद बात थी।

"कपड़े" गिडियन ने कहा, "पैसों से आते हैं। और मुझे दूसरे अच्छे कामों में पैसा खर्च करना होता है।"

"कपड़ों से ही तो मनुष्य की पहचान होती है।" श्रीमती कार्टर ने कहा। बस यही बात गिडियन को जँच गयी और वह बूढ़े चचा बैडी के यहाँ गया, जिनकी रटलेज अवेन्यू पर हनरी प्लेस के पीछे झोंपड़ी थी। हेनरी प्लेस बड़ा विशाल सफ़ेद जार्जियन मकान था और चचा बैडी हेनरी के ग़ुलामों में से थे। युद्ध के ज़माने में और उसके बाद भी न जाने कितने वर्षों से वह ग़ुलामी का जीवन बिता रहे थे। उनकी उम्र अब शायद पचहत्तर वर्ष की होगी, संभव है ८० की हो। हेनरी-परिवार ने उन्हें दर्जी का काम सिखाया था और दो पीढ़ियों तक वह टाँगें सिकोड़े झोंपड़ी में अपनी मेज़ पर बैठे रहते और बालरूम-पोशाक, किमख्वाब के गाउन्स और सभ्य पुरुषों के बढ़िया कत्थई, काले और भूरे रंग के कपड़े सींते रहते। जब ग़ुलाम मुक्त हुए तो भी वह वहीं ठहरे रहे। हेनरी-परिवार ने अपने कुटुम्ब के कपड़े सीने के बदले उन्हें एक झोंपड़ी देदी थी और बाद में तो वह कुछ काटने-सीने का बाहर का काम भी कर लेते थे।

कार्टर ने गिडियन को वहाँ भेज दिया। बूढ़े आदमी ने गिडियन को ऊपर से नीचे तक देखा, फिर आँखें मिचका कर कहा, "तुम्हारी कुछ लम्बाई-चौड़ाई का ठिकाना भी है या नहीं? भला बताओ; तुम जैसे-हब्शी को ढँकने के लिए मैं कहाँ से इतना बड़ा कपड़ा लाऊँगा?"

"कोई ऐसे ज़्यादा कपड़े की ज़रूरत नहीं है" गिडियन ने कहा, "बस इतना ही लम्बा हो जितना मेरे बदन पर आजाय।"

"ज़्यादा कपड़ा नहीं? क्या मतलब है तुम्हारा? मैं यहाँ हेनरी-परिवार के लिए चालीस-पचास वर्ष से कपड़े सी रहा हूँ, समझे, अब तुम मुझे पढ़ाने की कोशिश न करो।"

गिडियन ने क्षमा-याचना की, और दो सप्ताह बाद 'सूट' पूरा हो गया। दस डालर क़ीमत में खूबसूरती से सिला हुआ काले ऊनी कपड़े का सूट। गिडियन ने उसी दिन रैचल को खत लिखा :

"प्यारी रेचल,

"मेरे पुराने कपड़े बिल्कुल जवाब दे चुके थे, इसलिए मुझे नये कपड़े सिलवाने पड़े। मुझे यह कपड़ों का जोड़ा दस डालर में पड़ा। ज़्यादा क़ीमत तो कपड़े में

ही लग गयी। मैं समझता हूँ इतना पैसा खर्च करना मेरे लिए शर्म की बात है, लेकिन क्या किया जाय? यहाँ चार्ल्सटन में हर चीज़ मँहगी है। यह जानकर मुझे बड़ी खुशी हुई कि आप लोग सब सकुशल हैं और सुखी हैं। और मि० जेम्स एलेन्बी बच्चों को पढ़ा रहे हैं और वह भी सुखी हैं। मि० एलेन्बी के ख़त से मुझे यह मालूम करके बड़ा दुःख हुआ कि सिंकरटन में कुछ उद्दंडकारियों ने चार हब्शियों की हत्या करदी। ये उद्दंड लोग हमसे घृणा करते हैं और आतंक फैलाते हैं। लेकिन ये सब कुरीतियाँ विधान के बनते ही समाप्त हो जायँगी और हमारी नागरिक-सरकार सुन्दर केरोलिना को एक अच्छी पवित्र भूमि में परिणत कर देगी। यहाँ मेरी मुलाक़ात अच्छे आदमियों से होती है और मैं सोचता हूँ कि अब सब कुछ अच्छा हो जायगा। ज़रा सब्र व सन्तोष की ज़रूरत है। मेरी ओर से बच्चों को प्यार करना। खुदा तुम पर और उन पर अपना रहम करे।"

उसने लिफ़ाफे में एक डालर भी रख दिया। हर रोज़ वह ऐसा ही करता था और किसी-न-किसी तरह अब रोज़ाना रैचल को ख़त लिखा करता था। कार्डोज़ो के यहाँ खाने के निमंत्रण पर गिडियन नया सूट पहन कर गया।

१८६८ में कार्डोजो के यहाँ हुआ भोज ऐसा प्रतीत हुआ मानो इतिहास में एक प्रकार का विराम आ गया हो। वैसे तो सभा का भरा जाना स्वयं एक विराम का सूचक था; एक रिक्त स्थान का; एक छिद्र का सूचक था जिसने अमेरिका में यूनियन की संगीनों से शासित उस बढ़ती हुई बाढ़ को रोक दिया था। चार्ल्सटन, अप्सरा की भाँति सुन्दर और छोटे ताड़-वृक्षों से आच्छादित नगर, जो दक्षिण का वैभव और मुकुट था, अब छिन्न-भिन्न हो चुका था,—निर्जीव-सा हो गया था। युद्ध ने इस नगर की जान निकाल ली थी। मुश्किल से ही कोई एकाध जार्जियन सफ़ेद इमारत होगी, जिस पर इस मृत्यु और आर्थिक अभाव का प्रभाव न पड़ा हो। वे बड़ी-बड़ी विशाल और सुन्दर इमारतें, जिनका सारे अमेरिका में कोई जोड़ नहीं था, केवल एक चीज़ पर आधारित थीं,—काले ग़ुलामों की चौड़ी पीठ पर, उनके कड़े परिश्रम पर। इन काले ग़ुलामों का परिश्रम ही संपत्ति का एकमात्र साधन नहीं था, बल्कि वे ग़ुलाम स्वतः ही संपत्ति का काम करते थे, वे ही दक्षिण की अति महत्त्वपूर्ण संपत्ति समझते थे, यों कहिये कि वे प्राचीन काल के मशीनी

औज़ार थे; जिन्हें खरीदा जाता था, पाला-बढ़ाया जाता था और उस समय व
दक्षिणी अर्थ-व्यवस्था की वे ही ठोस बुनियाद थे। फिर युद्ध शुरू हो गय
विनाशकारी युद्ध, जिसने दक्षिण की आर्थिक व्यवस्था को चूर-चूर कर दिया। वहाँ
बंदरगाहों की नाकेबन्दी करदी और इनमें चार्ल्सटन प्रमुख था। फ़ौजें एक दिश
से दूसरी दिशा को और दूसरी से तीसरी दिशा को मार्च करती रहीं,—चार व
तक वे इस भूमि को अपने पैरों तले रौंदती रहीं, और फिर ग़ुलाम मुक्त हो गये
वह मुक्ति किस प्रकार अमल में आयी,—एक घोषणा हुई और उस संधिपः
पर ह्वाइट हाउस में बैठे उस थके-माँदे, महान् व्यक्ति ने हस्ताक्षर किये। यः
मुक्ति यूनियन की सेना की शक्ति और उनकी बंदूकों ने उन पर लागू की थी।

युद्ध की समाप्ति के शीघ्र बाद के काल में दक्षिण बिल्कुल निर्जीव और गति
हीन हो गया था। दो लाख काले ग़ुलामों ने उत्तरी प्रदेश की वर्दियाँ और शस्
धारण कर लिए थे और इस स्वतन्त्रता के अन्तिम व भयानक संघर्ष में जूझ पड़
थे। दक्षिणी सेनाएँ भंग हो चुकी थीं; दक्षिणी नेता बेचारे थके-माँदे आश्चर्य
पूर्वक इसको देख रहे थे। यह ठीक उसी प्रकार का था जैसे कि रेत क
मकान पूरी तरह बन चुकने के बाद सहसा ढह जाता है। खेतिहर-राजा इ
युद्ध का संचालन कर रहे थे; उन्होंने इसे शुरू किया था; वे ही इसके लि
ज़िम्मेदार थे और उन्होंने खून में अपने हाथ कुहनियों तक इसलिए डुबो लि
थे; ताकि रूई, चावल, शक्कर और तम्बाकू के उनके साम्राज्य सुरक्षित रह सकें
लेकिन उन्होंने असम्भव को संभव होते देखा,—ग़ुलामों को मुक्त होते देखा
लाखों, करोड़ों और अरबों डालरों की संपत्ति जिसके वे एक समय स्वामी थे, उनं
हाथों से निकलकर देखते-ही-देखते हवा में विलीन हो गयी।

शायद मानव-इतिहास में पहले कभी ऐसी घटना न घटी थी, जबकि राष्ट्र वे
शासक-वर्ग की सारी-की-सारी जायदाद इस प्रकार इतने विस्मय और शीघ्रत
से छीन ली गयी हो।

इस सब की पहली प्रतिक्रिया जो खेतिहरों पर हुई वह थी,—खामोशी
रोगपूर्ण और व्याकुलतापूर्ण खामोशी, जिसके दौरान में उन्होंने अपने इस विनाश
का अनुमान लगाया। वे विद्रोह नहीं कर सकते थे; क्योंकि उनके पास विद्रोह वे

साधन नहीं थे, न ही वे कोई योजना इस प्रकार की तैयार कर सके, क्योंकि गुलामों से रहित भविष्य की उन्होंने कभी कल्पना ही नहीं की थी। इनमें से कुछ लोगों ने अपनी गुलामों की संपत्ति का बड़े-बड़े क़र्ज़ों से विनिमय कर लिया था और जब वर्षों से चली आयी दासता का अन्त हो गया तो उनकी जागीरें भी उसी के साथ अदृश्य हो गईं। बड़े-बड़े खेत खाली और बेसहारा पड़े हुए थे, या फिर उन हब्शियों ने अनियमित रूप से उन पर खेती की थी, जिनके पास जाने के लिए और कोई जगह नहीं थी। दूसरे खेतों को नीलाम कर दिया गया या बेच दिया गया क्योंकि उनके उपयोग करने वालों पर काफ़ी कर्ज़ा या कर चढ़ा हुआ था। बड़े-बड़े खेत उजाड़ पड़े थे। कपास की खेती बिल्कुल दम तोड़ रही थी और कहीं-कहीं तो बिल्कुल नष्ट हो गयी थी।

जब पहला शक्तिहीन करनेवाला सदमा गुज़र गया तो खेतिहरों में कुछ चेतना आयी। उन्होंने समझ लिया कि मुक्ति का यह उपहासपूर्ण नाटक अधिक समय तक नहीं खेला जायगा,— गुलाम गुलाम ही रखे जायेंगे; हब्शी है तो हब्शी ही। यह शुरूआत है और इसका अन्त भी शीघ्र ही होगा; वाशिंगटन में क्या हो रहा है, वह एक चीज़ है, और दक्षिणी लोगों की व्यावहारिक ज़रूरतें दूसरी। बिल्कुल पागलपन की शीघ्रता से उन लोगों ने बैठकर कुछ क़ानून, जिन्हें 'काले क़ानून' की संज्ञा दी गयी, गढ़ डाले। वे क़ानून थे जिन्होंने हब्शियों को ठीक उसी परिस्थिति में रखने का निश्चय किया जिसमें वे युद्ध के पहले थे। पहले तो बहुत सरल जान पड़ा। व्हाइट हाउस के सभापति ने, जिन्होंने बड़ी उद्दण्डता के साथ आतंक फैला रखा था, उसका समर्थन किया। वे एक दूसरे को देखकर मुस्करा देते और कहते, टेनसी जौनसन बड़ा काम का आदमी है। इस प्रकार उसी से घृणा करते थे और फिर उसी से अपना काम भी निकलवा लेते थे। एक बार फिर खेतिहरों ने अपने भविष्य की कल्पना की, किन्तु यह वही भविष्य था जिसकी वे हमेशा से कल्पना करते आये थे,—जो चालीस लाख काले वर्ण के गुलामों के खून-पसीने से बना था।

और फिर उनकी बालू की भीत ढह गयी। एक कटु, क्रोधपूर्ण क्रान्तिकारी कांग्रेस ने, जिसने मानव-जाति के इतिहास में अति भयंकर युद्ध लड़ा था, फैसला

किया कि जो रक्त बहाया गया वह व्यर्थ नहीं जाना चाहिए। अपनी उसी क्रोधा-वस्था में उन्होंने सभापति पर अभियोग लगाये, उन्होंने दक्षिण में सेनाएँ भेजीं और आतंक के शुरू होते ही उसे दबा दिया। उन्होंने विद्रोही इलाकों को क़ानूनी तौर पर नष्ट कर दिया, ज़िलों के सैनिक-राज्य स्थापित किये और सम्पूर्ण आबादी को आदेश दिया कि वे राज्य की विधान-सभाओं में अपने प्रतिनिधि चुनकर भेजें। ये सभाएँ राज्य के लिए नये विधान बनायेंगी और दक्षिण में एक नये जनवाद का निर्माण करेंगी, जिसके अनुसार काले और गोरे कंधे-से- कंधा मिलाकर एक साथ निर्माण-कार्य करेंगे।

दक्षिणी केरोलिना में काले रंग के लोगों की जन-संख्या गोरों से कहीं अधिक थी। यूनियन के इस दूसरे भयानक आघात के बाद गोरे काश्तकारों ने एक ही उपाय सोच निकाला,—वह यह कि उन्होंने चुनाव के प्रति घृणा प्रकट की, उसका बहिष्कार किया और उसमें भाग नहीं लिया। उन्होंने सोचा कि इन निरक्षर हब्शियों और गोरे गरीबों को वोट देने दिया जाय तो नतीजा यह निकलेगा कि कांग्रेस का यह अविश्वसनीय और घृणित मंसूबा धूल में मिल जायगा। और फलस्वरूप वैसा ही हुआ जैसा कि उन्होंने सोचा था, चुनाव में बड़े बहुमत से हब्शी सभा के प्रतिनिधि चुने गये। फिर भी जहाँ नतीजे ने तिरछा रूप धारण किया वह यह था कि गोरे-कालों की सभा सर्कस बनने के बजाय धीरे-धीरे, कठिनाई से लेकिन निश्चित रूप से एक स्वस्थ विधान-सभा के रूप में कार्य करने लगी; और इसमें एक विधान की रचना हो रही थी।

चार्ल्सटन में जब यह सब हो रहा था, गोरे रईसों ने अपने घर के कुंडी-कुलाबे लगा दिये, उन पर ताले लगा दिये, और इस सभा के भयानक परिणाम की प्रतीक्षा करने लगे। सड़कों पर गश्त देने-वाले यैंकी सैनिकों की संगीनें देखकर वे कुछ समय के लिए भयभीत होगये और शक्तिहीन-सा अनुभव करने लगे। उस क्षण न वे अपने अतीत को याद कर सकते थे और न ही भविष्य की कल्पना कर सकते थे। उस गहरे विचित्र गढ़े में जो इतिहास के प्रवाह को वेग से रोककर बनाया गया था कुछ नई और अपरिचित चीजें हो रही थीं।

उसी समय कार्डोजो के मकान पर एक भोज का आयोजन किया गया। जिसमें गिडियन जैक्सन ने अपना काले ऊनी कपड़े का सूट पहना।

गोरे खेतिहर प्रतीक्षा में मग्न थे।

इस भोज का कौतूहल-पूर्ण भाग वह था, जिसने इसे एक महान् अवसर में परिणत कर दिया, कि इसमें गिडियन को सम्मानित अतिथि के रूप में आमन्त्रित किया गया था। इस रात कार्डोजों के घर पर आये हुए मेहमानों में एक स्टीफेन होम्स था, जो सभा का प्रतिनिधि था और गुलामों का स्वामी था। औपचारिक रूप से होम्स स्कैलवाग था, यह वह संज्ञा थी जो दक्षिणी प्रदेश के उस गोरे के लिए प्रयुक्त होती थी जो उन्मुक्त गुलामों और यैंकियों का साथ देते थे। वास्तव में वह उनमें से नहीं था। अधिकांश भागों में स्कैलवाग्स ग़रीब थे परन्तु होम्स पहले भी धनवान् था और अब भी। उसने अकेले ही इस नियम का विरोध किया था कि गोरे खेतिहर इस क्रांति में भाग न लें और इसका बहिष्कार करें। उसे चुनाव में उसके पुराने गुलामों के ही वोट मिले थे। वह सभा में दर्शक की हैसियत से बैठा करता था। उसने सिर्फ लोगों को देखा और सुना था, कभी कुछ कहा नहीं था। वह काले और गोरों से समान व्यवहार करता था और नम्रता बरतता था और इसी कारण वह एक ऐसी गूढ़ पहेली बनकर रह गया था, जिसे कार्डोजो ने आज हल करने का निश्चय किया था।

प्रकट रूप में उसके ऐसे कोई रहस्य नहीं थे। दक्षिणी करोलिना के परिवार का वह आखिरी सदस्य था; उसका भाई और बेटा युद्ध में मारे गये थे। होम्स स्वयं एक सेनापति था। उसने जैक्सन और ली के साथ ही युद्ध में भाग लिया था और न उसे कोई यश मिला, न ख्याति ही। ऐसा कहा जाता था कि उसने युद्ध की भर्त्सना की थी और शुरू से ही उसका विचार था कि उत्तर और दक्षिण का अलग-अलग करना मूर्खतापूर्ण था, बेकार था। कोलम्बिया के समीप ही कांगेरी नदी पर उसके भी किसी समय कुछ खेत थे। लेकिन अब वह अपनी माँ के साथ चार्ल्सटन में ही रहा करता था। और यह समझ लिया गया था कि उनके खेत या तो कर्ज़े के कारण या कर न देने के कारण ख़त्म हो गये थे; लेकिन उसने कभी इसका ज़िक्र नहीं किया।

वह सुन्दर था, उसका चेहरा पीला था और उसमें आत्म-बलिदान की भावना मौजूद थी। पेट के दर्द ने उसके चमड़े पर पीले रंग का खोल चढ़ा दिया था, वह काले रंग का था, उसका चेहरा लंबा था और सिर पर घने बाल थे। वह औसत दर्जे के आदमी से अधिक ऊँचा था, उसकी गति में बड़ी कोमलता थी, वह जागरूक रूप से एक सज्जन पुरुष था, और बड़े शांत स्वभाव का था। बात-चीत करने में बहुत नम्र था।

उसने कार्डोजो को अपना मित्र बना लिया था। उससे कई बार बातचीत की थी, ज़मीन और शिक्षा में अपनी रुचि प्रकट की थी और बड़ी नम्रतापूर्वक कार्डोजो का अनिश्चित आमंत्रण स्वीकार कर लिया था।

यही निमंत्रण और स्वीकृति कार्डोजो को व्याकुल किये दे रही थी। चाल्र्सटन में जब गोरे और काले साथ-साथ भोजन करते थे तो संसार गतिहीन हो काँपने लगता था और यही भावना कार्डोजो में समाई हुई थी, जब उसने गिडियन जैक्सन का, जो पहले एक गुलाम था, होम्स से जो पहले गुलामों का स्वामी था, परिचय कराया। और होम्स ने कहा—

"आप से मिलकर मुझे बहुत खुशी हुई मि० जैक्सन!" इन शब्दों को मुस्कराते हुए और मंद स्वर में उसने इस प्रकार कहा, मानो यह एक दैनिक व्यवहार की बात थी। वह गिडियन की ओर सम्मान की दृष्टि से देख रहा था। इस समय गिडियन उस सम्मान का अधिकारी भी था, उसके चौड़े कंधों पर अच्छी तरह सिला हुआ काला ऊनी कोट, सफेद कमीज और काली टाई सुशोभित थे। उसके घुँघराले बाल अच्छी तरह जमाये गये थे, दाढ़ी बिल्कुल साफ़ बनी हुई, उसके हावभाव बिल्कुल स्पष्ट थे और वह आज हमेशा के विपरीत बड़ा दुबला-पतला लग रहा था। उसे देखकर होम्स को याद हो आया कि यदि यही व्यक्ति नीलाम पर चढ़ाया जाता तो दंगे की नौबत आजाती। नीलाम की बोलियाँ आश्चर्यजनक ऊँचाई पर पहुँच जातीं और नीलाम करनेवाला चिल्लाकर कहता, "मेरे दोस्तो और महाशयो, आपको नस्ल की पहचान है और आप उसकी क़द्र करते हैं तो फिर इस घोड़े को देखिये ऐसा बीजाख आपने आज तक कभी न देखा होगा।"

"आपसे मिलकर मुझे बड़ी खुशी हुई साहब !" गिडियन ने कहा ।

डा० रैनडोल्फ, जो छोटे कद का जल्दी-जल्दी बोलने वाला और कत्थई रंग का व्यक्ति था वह भी सभा का एक प्रतिनिधि था। वह आज के निमंत्रण में चौथा व्यक्ति था । होम्स के सामने वह गिडियन और कार्डोजो से भी ज़्यादा घबराया हुआ था; बोलते वक्त हकला जाता था । श्रीमती कार्डोज़ो मेज़ पर अकेली ही महिला थीं और वह लोगों की खातिर-तवाज़ो की कोशिश कर रही थीं। होम्स भी उन्हीं के साथ बैठ गया और वे दोनों आगे पीछे से बड़े विनम्र दिखाई देने लगे। गिडियन ने घबड़ाहट में अपने आपसे पूछा, 'यह आदमी क्या है, क्यों है किस तरह है और कौन है ?' आज पहली बार उसने होम्स के वर्ग के आदमी से हाथ मिलाया था; पहली बार ऐसे व्यक्ति से आमने-सामने होकर बातचीत की थी; आज पहली बार वह एक गोरे आदमी के साथ खाना खाने बैठा था । ज़ाहिर है कार्डोज़ो की ऐसी स्थिति नहीं थी। रैनडोल्फ की भी ऐसी हीं स्थिति था । रैनडोल्फ बहुत भयभीत था । गिडियन ने अपनी मेज़बान के पीछे घूमकर देखा तो ताक़ में तीतर की खाल रूई से भरी हुई, काँच के एक खोल में रखी थी। दीवारों पर कुछ आकृतियाँ व चित्र बने थे। कार्डोज़ो को सांसारिक बातों का अनुभव था; लेकिन गिडियन होम्स से बातचीत करते समय बड़ी सावधानी बरत रहा था । उस ने होम्स से कहा, "शिक्षा बड़ी ज़रूरी चीज़ है साहब ! समझे आप ?"

"ज़रूरी चीज़ है ?" होम्स ने पूछा । होम्स ने अपने आपको पूर्ण रूप से तटस्थ बना लिया था और स्वयं किसी प्रकार का बयान नहीं दे रहा था। केवल प्रश्न पूछे जा रहा था । इसी प्रकार हर बात से वंचित रहकर ही वह दूसरों को अच्छी तरह प्रभावित कर रहा था ।

"केवल इस तथ्य को व्यक्त कर देना ही पर्याप्त है; कि जब चालीस लाख अशिक्षित गुलामों का होना संभव है तो चालीस लाख अशिक्षित हब्शियों का होना असंभव है ?"

"यह इस बात को देखने का बड़ा कुतूहलपूर्ण ढंग है ।" होम्स ने स्वीकार किया, "आपका क्या विचार है मि० जैक्सन ?"

"मेरे ख्याल से शिक्षा बंदूक की तरह होती है।" गिडियन ने कहा।

"बंदूक की तरह ?"

कार्डोज़ो ने भौंहें चढ़ालीं और रैनडोल्फ अपने काँटे से खेलता रहा। "जारी रखिये।" होम्स ने मुस्कराकर कहा।

होम्स की मुस्कराहट में कुछ ऐसी चीज़ थी, जिसे गिडियन ने ढूँढा और पालिया। वह थी गुणात्मक परिवर्तनों का संतुलन जिसका, कुछ अंश होम्स में था, कुछ उसमें खुद में, यानी वह शक्तियों का सम्मिश्रण था। उसी समय बड़े रूखेपन से उसने स्टीफेन होम्स की बातों को समझने का प्रयत्न बंद कर दिया। शायद वह होम्स को कभी न समझ पायेगा।

"बंदूक के समान।" गिडियन ने कहा। "शायद उससे भी बेहतर हो। आप किसी आदमी को बंदूक दे दीजिये, फिर उसे गुलाम बनाने की कोशिश कीजिये, तो आपको वह बंदूक उससे वापिस लेनी पड़ेगी। फिर आपको अपना भाग्य परखना होगा। हो सकता है वह आपको उस बंदूक से मार डाले, शायद न भी मारे। लेकिन आपको बंदूक तो उससे हर हालत में वापस लेनी ही पड़ेगी। क्यों ?"

"क्या यह भी पूछने की बातें हैं ?"

"जी हाँ, यह पूछने की बात है।" गिडियन ने धीरे से कहा। वह विचार व्यक्त करने के लिए अँधेरे में पड़े शब्दों को ढूँढने लगा। अपने विचारों से संघर्ष करने लगा और हाथों से मेज़ को ज़ोर से पकड़ने लगा।

"जिस आदमी के पास बंदूक है वह गुलाम है या नहीं यह कई बातों पर निर्भर करता है। अगर मनुष्य बंदूक के होते हुए गुलाम नहीं है तो वह बात एक चीज़ यह है कि,—बंदूक पर जब वह साधारण व्यक्ति की भाँति आता है तो आपको उसकी बंदूक वापस लेनी पड़ती है, लेकिन यही बात शिक्षा पर लागू नहीं होती। आप किसी भी आदमी की शिक्षा नहीं छीन सकते और मेरा दृढ़ विश्वास है कि जो आदमी शिक्षित है वह कभी गुलाम नहीं रह सकता। एक तरह से यह बंदूक के समान है, दूसरी तरह बंदूक से बेहतर।"

"मैं इसे इस तरह नहीं पेश करूँगा।" कार्डोज़ोने मुस्कराते हुए कहा।

"जी हाँ, आप ज़रूर इसे इस तरह न पेश करेंगे।" होम्स ने लापरवाही से कहा।

"फिर भी मिस्टर जैक्सन का विश्लेषण दिलचस्प है, क्योंकि वह शिक्षा पर दो दृष्टियों से विचार करते हैं, यानी स्वतंत्रता और गुलामी से उसकी तुलना करते हैं। मेरे ख्याल में यह है भी समझने लायक बात। आप पहले गुलाम थे न मिस्टर जैक्सन ?"

"जी हाँ, मैं गुलाम था।"

"लेकिन गुलामी तो अब निर्मूल कर दी गयी है।"

गिडियन ने धीरे से सिर हिला दिया।

"लेकिन आपका ख्याल है वह फिर से लाद दी जायेगी ?" होम्स ने विनीत भाव से पूछा।

"जी हाँ, हो सकता है फिर से लागू कर दी जाय।"

गिडियन ने सहसा श्रीमती कार्डोजो की ओर देखा, जिनकी आँखों से उस समय पाशविक आतंक झलक रहा था.........

भोज शीघ्र ही समाप्त हो गया; लेकिन इसका परिणाम कुछ और ही हुआ। कोई एक सप्ताह बाद सभा से बाहर आते समय होम्स ने गिडियन को रोक लिया और उससे कहा :

"मैं अपने मकान पर कुछ लोगों को निमंत्रित कर रहा हूँ मिस्टर जैक्सन! आप भी आयेंगे न ?"

गिडियन संकोच में पड़ गया, और होम्स ने विजयी भाव से कहा, "मैं चाहता हूँ, आप जरूर आयें। विश्वास कीजिये आपका आना वहाँ जरूरी है। अगर हमें मिलकर काम करना है तो फिर—"

गिडियन ने निमंत्रण स्वीकार कर लिया।

सभा के कार्य में प्रगति होती गयी। पहले की उलझनों के बाद धीरे-धीरे क़ानून के बाद क़ानून बनाये गये; पहले छोटे-छोटे और बाद में बड़े बड़े। छोटी-छोटी चीज़ों पर लोग सहमत होगये। द्वन्द्व का अंत हो गया था। बहुमत के वोटों से यह फैसला कर लिया गया था कि कर्ज़े के न अदा करने पर जो क़ैद

का दंड दिया जाता था वह खत्म कर दिया जाय। कुछ सरल स्वभाव के लोगों का सभा में बहुमत था और उन्होंने अपनी सरलता के ही कारण विधान बनाये और नये व कौतूहलपूर्ण मार्ग निकाल लिए। उनके मस्तिष्क में अब वह पुराना भयानक, रोबदाव डालनेवाला क़ानून का गढ़, पुरानी रूढ़ियाँ, रिवाज, स्वभाव व छल-छिद्र नहीं था। जो अब तक हल न करने योग्य प्रश्न थे वे अब स्पष्ट हो गये थे। और बहुतसी स्पष्ट बातें कठिन और असाध्य हो गयीं। इस प्रकार जब इन लोगों के सामने यह प्रश्न आया कि समाज में पुरुष-स्त्रियों का परस्पर क्या सम्बन्ध होना चाहिए, उन्होंने सदियों से चली आई दीवारों को ढा दिया। दलदली प्रदेश के एक गोरे प्रतिनिधि ने कहा :

"मैं चार साल तक यैंकियों से युद्ध करता रहा और इस दौरान में मेरी पत्नी ने ही घर का सब कुछ काम चलाया। उसी ने मेरे बच्चों को पाला-पोसा, उन्हें खिलाया-पहनाया. जमीन खोदी, फस्लें बोयीं, काटीं और अब मैं इन महाशयों से पूछना चाहता हूँ कि क्या वे अब मुझे वोट देंगे, लेकिन मेरी पत्नी को नहीं ?"

गिडियन भी भाषण देने खड़ा हुआ। उसने कहा, "मैंने गुलामी के दिनों में ही विवाह किया था। हमने छिपा-चोरी इसलिए शादी की थी; क्योंकि हमारा मालिक गुलामों को शादी करने की इजाज़त नहीं देता था। हम उसकी नजर में जानवरों के समान थे। जब हम काम करते थे, वह तब भी हमें जानवर समझता था और जब हम काम करते-करते कपास के खेतों में बेहोश हो जाते थे, तब भी वह हमसे जानवर ही के समान व्यवहार करता था। और यह भी निश्चित बात है कि हमने पशुओं ही की भाँति कष्ट भी सहे हैं। तो फिर मैं कहता हूँ, मेरी पत्नी भी सभा की नज़रों में बराबर का ही दर्जा पायगी।"

सार्वभौमिक बालिग़ मताधिकार के वे उतने ही निकट आ गये थे जितना कि वे आ सकते थे और उसे स्वीकार न करने में उन्हें केवल यही संकोच था कि वह नियम बहुत अधिक आगे बढ़ा हुआ था और उन्हें भय था कि उसे स्वीकार करने में कहीं वे दूर-स्थित वाशिंगटन की कांग्रेस के दिये हुए अधिकारों का दुरुपयोग न कर डालें। फिर भी उनके वाद-विवाद के फलस्वरूप 'तलाक-क़ानून' मंजूर कर

लिया गया। यह क़ानून केरोलिना के इतिहास में पहली बार बनाया गया था। इस साधारण और स्वस्थ तलाक़-कानून ने सारे दक्षिणी अख़बारों में तहलका मचा दिया और वे चीखने-चिल्लाने लगे कि काले जंगलियों ने देश को अभी से अपमान और अपयश के गढ़े में धकेल दिया है। उनके विवाद के फलस्वरूप एक और कानून पास हुआ जिसमें किसी भी व्यक्ति के कर्ज़े चुकाने के लिए उसकी पत्नी की जायदाद बेची जाना ग़ैर-क़ानूनी क़रार दे दिया गया। यह भी दक्षिणी कैरोलिना में पहला क़ानून था।

उनके वाद-विवाद में एक और भी कुतूहलपूर्ण और स्वस्थ प्रश्न उठ खड़ा हुआ, जो मताधिकार से संबंधित था। यह विवाद इतना तीव्र होता गया कि गिडियन को बार-बार संयुक्त राज्य के विधान का अध्ययन करना पड़ा और अन्त में उसे वह पूरा ज़बानी याद हो गया। दूसरों के साथ मिलकर उसने इस भेदभाव-पूर्ण जोर-जबर्दस्ती के बंधन के विरुद्ध और चुनाव में गोरों-कालों के साथ समान व्यवहार के लिए संघर्ष किया। और यह प्रस्ताव भी मंजूर कर लिया गया।

मार्च का महीना शुरू हो गया था और बसन्त के शुभागमन की तैयारी थी।

चार्ल्सटन में आकाश का रंग दुनिया के किसी भी देश के आकाश से ज़्यादा गहरा नीला था। समुद्री चिड़ियाँ खाड़ी पर उड़ रही थीं और शोर मचा रही थीं। कोहरे की भाँति सुहावनी वर्षा की फुहार पड़ रही थी और उन्होंने आकाश को और ज़्यादा निर्मल बना दिया था। सभा-भवन में उपस्थित प्रतिनिधियों में से एक ने सुझाव रखा कि यह वर्ष "वैभवशाली वर्ष" के नाम से स्मरण किया जाय, लेकिन इस प्रस्ताव को हंसकर उड़ा दिया और वह रद्द हो गया। फिर भी लोग यह जानते थे कि यह एक अपूर्व वर्ष था और 'हेराल्ड' न्यूयार्क के संवाददाता ने लिखा :

"यहाँ चार्ल्सटन में बहुत ही अनोखे आशापूर्ण और फिर भी अविश्वसनीय प्रयोग किये जारहे हैं, जिनका मानव-इतिहास में उदाहरण नहीं मिलता।"

चार्ल्स केवोर नाम के एक बूढ़े काले प्रतिनिधि पर पुराने चार फौजियों ने हमला किया और उसे बुरी तरह पीटा, लेकिन चार्ल्सटन में जिस धमाके का अंदेशा था वह न हो सका। ताड़ के वृक्षों में हरी पत्तियाँ फूट रही थीं और गिडियन

समुद्र की सुहावनी हवा का आनन्द ले रहा था,—वह तोपखाने के समीप खड़ा खाड़ी से जानेवाले सफेद बादबान खोले हुए जहाजों को देखता रहा। उसे एक किताब मिली थी "घास के पत्ते।" जिसमें ये पंक्तियाँ अंकित थीं :

"हे धरतीमाता! तू शायद किसी चीज के लिए मेरे हाथों की ओर देख रही है। बता ऐ बूढ़ी, चुटियावाली तू क्या चाहती है?"

"तू क्या चाहती है" की ध्वनि उसके मस्तिष्क में बार-बार गूँजने लगी। वह सारा संसार अपने हाथों में लेना चाहता था और अब वह उसके हाथों में आ गया था। जहाजी कुली भी काम पर जाते समय गीत गा रहे थे और वे जानते थे कि यह वर्ष 'हाले लुजाह, का वर्ष है। अब गिडियन अकेला ही नहीं पढ़ता था, आठ प्रतिनिधियों ने मिलकर एक कक्षा बनाली थी, जो कार्डोजो के मकान पर सप्ताह में तीन बार भरती थी और वे वहाँ अर्थशास्त्र का अमरीकी इतिहास का अध्ययन करते थे। इस कक्षा के दो सदस्य गोरे थे। गिडियन भी एक बार सभा के बाहर आते समय एण्डर्सन क्ले के कहने पर इसमें भर्ती हो गया था। एण्डर्सन क्ले ने कहा था :

"जैक्सन, दस एक मिनट ठहरना तो।"

गिडियन रुक गया, और फिर वे दोनों साथ-साथ चलने लगे। क्ले गिडियन से भी ज्यादा ऊँचा था, उसके भूरे बाल लम्बे थे और बिखरे हुए थे और धूप में तो वह पीतल जैसा पीला लगता था।

"मैं आजकल यह सोच रहा हूँ," क्ले ने रूखे स्वर में कहा "कि आप हमारे साथ काम करने वाले हैं, हमारे खिलाफ़ नहीं।"

"वह कैसे?"

"हब्शियों से भरी सभा में बैठकर कौओं की जो काँय-काँय मैंने इन गत सप्ताहों में सुनी है, वह आजतक जिन्दगी में कभी नहीं सुनी। मैंने तो शुरू में यही सोचा था कि घर लौट जाऊँ। हब्शियों की बस्ती में रहूँ और वहीं इसके बारे में कुछ गड़बड़ खड़ी करूँ।"

"आपको उस तरह से नहीं सोचना चाहिए।" गिडियन ने नम्रता पूर्वक कहा।

"ठीक है। मैं अब यह विश्वास करना शुरू करदूँ कि गोरे और काले साथ-साथ मिलकर रह सकते हैं,—पता नहीं यह कहाँ तक सम्भव है ? क्या आप इसी बात पर बहस करना चाहते हैं ?"

"जी हाँ, मैं भी आपसे इसपर बातचीत करना चाहता हूं !" गिडियन ने कहा।

कुछ देर तक, वे खामोश चलते रहे। उन दोनों में से कोई भी इतना साहस न कर सका कि उनके बीच खड़ी हुई ऊँची और पुरानी दीवार को ढादे। वे चार्ल्सटन की धूप में तंग गलियों से होते हुए और पुती हुई दीवारों के बीच से गुज़रते हुए चले जा रहे थे। इन्हीं पुती हुई दीवारों ने घरों और दुनिया को एक-दूसरे से अलग कर रखा था। अन्त में क्लै ने कहा :

"जब नये संसार का निर्माण हो चुकेगा तो तुम क्या करोगे ? तुम उसका कोई नमूना बनाओगे या उसे नष्ट कर दोगे ? मुझे वे लोग नापसन्द हैं जो नाश करने के लिए तैयार बैठे हैं।"

गिडियन इन दिनों ज़्यादा नहीं सोता था। शिक्षा-समिति में काम करते-करते उसका कार्डोजो से गहरा सम्पर्क होगया था और गिडियन को अब यह बात भी बुरी नहीं लग रही थी कि यह चालाक, सुसंस्कृत नीग्रो उसे अपनी कठ-पुतली बनाये उसका उपयोग कर रहा था। इनमें से एक तो शिक्षा की उपज थी और दूसरा वह व्यक्ति था जो इसे चखते ही मस्त हो गया था। उन दोनों ने साथ ही एक विषय पर, या यों कहिये कि राज्य के नये विधान के आधार पर सार्वभौमिक अनिवार्य शिक्षा के लिए कंधे-से-कन्धा मिलाकर काम किया था। कुछ लोगों ने उसका समर्थन किया था; पर साथ ही कुछ विरोधी भी थे, उन्होंने इस प्रकार विरोध किया :

"समझौता या सन्धि कर लीजिए। निरक्षरों की इस भारी जनसंख्या पर आप शिक्षा थोंप नहीं सकते।"

"क्यों ?"

"वे इसे स्वीकार नहीं करेंगे।"

"तो फिर हम इसे क़ानून बना देंगे।"

"अगर आप लोगों ने सब अनपढ़ों को पढ़ा-लिखा बना कर वकील बना दिया तो फिर खेती किसानी कौन करेगा ?"

"सभी आदमी तो वकील नहीं बन जायेंगे। न्यू इंग्लैंड में हालाँकि शिक्षितों की संख्या ज्यादा है, फिर भी वहाँ सभी वकील नहीं हैं। शिक्षित आदमी भी अनपढ़ की ही तरह खेती–किसानी कर सकता है।"

"गोरे बच्चे कालों के साथ स्कूल नहीं जायेंगे।"

"तो हम उनके लिए अलग-अलग स्कूल बना देंगे। लेकिन गोरे-काले सभी बच्चों को स्कूल तो जाना ही पड़ेगा।"

"यह पागलपन है। इस देश में आज से पहले कभी ऐसा क़ानून नहीं बनाया गया।"

"कोई बात नहीं तो हम ही इसकी शुरूआत कर दें। आखिर शुरूआत तो कभी-न-कभी करनी ही पड़ेगी।"

"तो क्या पढ़कर केरोलिना के लोग वे सब चमत्कार कर लेंगे जो आज तक बड़े-बड़े लोग नहीं कर सके ?"

"हम कोशिश करेंगे।"

अन्त में कमेटी ने बिल बहस के लिए पेश किया और घण्टों गरमा-गरम बहस चलती रही। गिडियन ने यह देखा कि जहाँ उन्हें सबसे कम समर्थन की आशा थी, वहाँ उन्हें काफी समर्थन मिला,—वे लोग थे-दक्षिणी प्रदेश के गोरे प्रतिनिधि, वे ग़रीब गोरे थे, जिन्हें अखबारवाले हब्शियों से भी ज्यादा लांछित और अपमानित करते थे। ये घृणित स्कैलावाग्स, लम्बे, दुबले-पतले, रुक-रुक कर बोलनेवाले लोग थे, जिन्हें दलदली प्रदेश व देवदार की झाड़ियों के प्रदेश से गरीब भूमिहीन काले किसानों ने चुनकर विधान-सभा में भेजा था। एन्डर्सन क्ले खड़ा हो गया और उसने गरजकर कहा, "हाँ, ऐसा ही होगा। अगर हमारे सामने इसके सिवा और कोई चारा नहीं है कि गोरे और काले बच्चे एक साथ स्कूल में पढ़ें, तो निश्चय ही मैं स्कूलों का समर्थन करूँगा! अगर मैं इस सभा-भवन में हब्शियों के साथ बैठ सकता हूँ तो मेरा बच्चा भी उनके साथ बैठ सकता है।"

और फिर दलदली प्रदेश के क्लैअर बून ने कहा, "मैं गत युद्ध में लड़ चुका हूँ। तीन साल तक लड़ने के बाद मैं इतना सीख पाया कि एक किताब या अखबार पढ़ सकूँ। मेरे दो भाई थे, वे मारे गये—क्यों? वह युद्ध उन साले गुलामों के स्वामियों को उनके पदों पर बरकरार रखने के लिए ही तो चलाया गया था! हमें कसम खुदा की इस बात का कोई पता नहीं था! खैर, गोली मारो इन बातों को, मैं कहता हूँ शिक्षा दो—और शिक्षा के बाद जो नतीजे निकलें उनको हम भुगत लेंगे। हम इस राज्य की जनता के प्रतिनिधि की हैसियत से यहाँ बैठते हैं और हर बात जो हम करते हैं उसके नतीजे पर हम उँगली चबाते हैं और सोचने लगते हैं न जाने क्या नतीजा हो जाय?"

गिडियन ने भी कुछ देर भाषण दिया, "कोई भी आदमी स्वतन्त्र नहीं रह सकता" उसने कहा, "मुझे इतिहास की कुछ जानकारी है और जो कुछ थोड़ी जानकारी मैंने हासिल की है वह मुझे बतलाती है कि यह भी हमारे संघर्ष का ही एक भाग है। स्वतन्त्रता के लिए सबसे जरूरी चीज है,—शिक्षा की बन्दूक। मैं कहता हूँ, हमें अपने आपको सशस्त्र बना लेना चाहिए।"

दूसरे दिन कार्डोजो ने सिंहावलोकन करते हुए कहा, "कल आप में से कुछ सदस्यों ने यह तर्क किया था और इस पर जोर भी दिया था कि हमें विधान में वे सब सम्भव क़ानून सम्मिलित करने का भरसक प्रयत्न करना चाहिए जिनके द्वारा हम विरोधियों को अपने पक्ष में कर लें। उनसे सुलह करने में मुझसे ज़्यादा कोई आगे नहीं बढ़ेगा। लेकिन यह समझौता करते समय हम सबको सावधान रहना चाहिए। पहले तो कुछ ऐसे लोग भी यहाँ हैं जो हर बात में हमारा विरोध करने की ठान चुके हैं। ऐसे लोगों से हम कोई समझौता नहीं कर सकते। वे उस विधान के विरोधी नहीं हैं जिसका हम निर्माण करने जा रहे हैं, बल्कि वे इस बात के विरोधी हैं कि हम यहाँ विधान-सभा में क्यों बैठे हैं। उनकी आपत्तियाँ व विरोध ऐसी बुनियादी बात के हैं कि विधान बनाते समय उन्हें प्रसन्न रखने की हम चाहे कितनी ही कोशिश क्यों न करें, सब असफल होंगी। दूसरे कुछ ऐसे लोग हैं जो चाहते हैं कि हम ऐसा विधान तैयार करें जिससे हमारे शत्रु प्रसन्न हों और वे वायदा करते हैं कि यदि हम उनकी यह शर्त मान लें तो वे हमारे साथ आ मिलेंगे

और भी एक तीसरी कोटि के लोग हैं जो हमारी विधान बनाने की क्षमता पर प्रामाणिक रूप से संदेह करते हैं और हमें इस योग्य नहीं मानते। मैं उनकी विचार-धाराओं का सम्मान करता हूँ और मुझे विश्वास है कि यदि अपने विधान को निश्चित रूप से जनतांत्रिक सरकार व उदारवादी सिद्धान्तों पर आधारित करके हम उनके साथ न्याय कर सकें तो उस वर्ग के बुद्धिमान पुरुष अवश्य हमारे साथ आ जायेंगे।

"इस प्रश्न पर विवाद करने के पहले मैं चाहता हूँ कि उन झूठे काल्पनिक परिणामों को इस प्रश्न से अलग करके देखूँ जिनके बारे में कुछ महाशयों ने यह तर्कहीन दलील पेश की है कि यदि उस धारा को 'अनिवार्य' शब्द के साथ पास कर दिया गया तो परिणाम बुरे होंगे। उनका कहना है कि अनिवार्य शिक्षा का अर्थ होगा कि गोरे व काले बच्चे एक ही स्कूल में शिक्षा पावेंगे। इस धारा में इस प्रकार की कोई शर्त नहीं है। इसमें केवल इतना ही कहा गया है कि सभी बालकों को शिक्षा ग्रहण करना चाहिए। किन्तु कैसे? यह बात उनके माता-पिता पर निर्भर करती है। पिता को यह स्वतंत्रता होगी कि चाहे वह अपने बच्चों को आम स्कूलों में भेजे या खास स्कूलों में। गोरों और कालों के लिए अलग-अलग स्कूल बनाये जा सकते हैं। यह सुभीता इसलिए रखा गया है कि यदि कोई बालक गोरे बच्चों की पाठशाला में पढ़ना चाहे तो उसे ऐसा करने की स्वतंत्रता है। इसमें मुझे कोई संदेह नहीं है कि अधिकांश बस्तियों के काले लोग स्वयं अलग पाठशालाएँ पसंद करेंगे,—विशेष रूप से उस समय तक जबतक कि उनकी नस्ल के विरुद्ध पनपे हुए द्वेष दूर न होजायें।"

गिडियन ने दृष्टि फेर कर हॉल में बैठे हुए उन लोगों की पंक्तियों को देखा वहाँ गोरे और काले लोगों के चेहरे मूर्तिवत् निश्चल थे। ये उन दर्शकों के चेहरे थे जो उस समय से विधान-गैलरी में नहीं देखे गये थे जबकि क्रांति के समय वोट देने के लिए किसान व शिल्पी एकत्र हुए थे। ये उन दर्शकों के चेहरे थे जो कार्डोजो के शब्दों का मूक समर्थन कर रहे थे। उन लोगों की उपस्थिति से गिडियन को शक्ति, गर्मी और भाईचारे का अनुभव हुआ; उसने चाहा कि वह सिर हाथों पर रखकर रोये; उसने सोचा कि काला आदमी एक गुम हुए बालक

जैसा है जिसका न कोई देश है और न अपनी जमीन का टुकड़ा; लेकिन अब वे भूमि दिलाने के लिए कानून बना रहे थे। सभापति का मंच लाल, सफेद और नीले रंग से रंगा हुआ था और उसके पीछे यूनियन के दो झण्डे लगे थे। गिडियन ने उन झण्डों की ओर देखा और रेनडाल्फ की लड़खड़ाती जबान में भाषण सुनने लगा :

"हम नीचे हस्ताक्षर करने वाले दक्षिणी केरोलिना के लोग जो यहाँ सभा के अधिवेशन में एकत्र हुए हैं यह प्रस्ताव रखते हैं कि शरणार्थियों, मुक्त लोगों और छोड़ी हुई जमीनों के लिए जो दफ्तर हैं वे उस समय तक जारी रखे जायँ जब तक कि सरकार न कायम होजाय; और इसके बाद शिक्षा के लिए भी कुछ दफ्तर खोले जायँ ताकि स्कूलों में सुयोग्य व उचित शिक्षा-प्रणाली का प्रबन्ध हो—।"

गिडियन के समीप ही एक बूढ़ा काला आदमी बैठा हुआ रो रहा था और जब सारा हॉल तालियों से गूँज उठा तो वह धीरे-धीरे अपना सिर हिला रहा था; अखबार के संवाददाता फुर्ती से बाहर निकल रहे थे, क्योंकि उन्हें अपने समाचार-पत्रों में कुछ खबरें प्रकाशित करनी थीं, जैसा कि अगले दिन के 'ओबज़र्वर' में निम्नलिखित समाचार प्रकाशित हुए :

"बेधड़क हब्शियों का निन्दनीय कृत्य"

कल सभी प्रकार के भय व लिहाज को ताक़ पर रखकर सर्कस के हब्शियों ने, जो अपने आपको विधान-सभा के सदस्य समझते हैं, एक प्रस्ताव पेश किया जो इस राज्य के नाश व दिवालियापन को पूरा करने में सफल होगा। सभी वर्गों के हब्शी और गोरे बच्चों को एक ही तरह के स्कूलों में ठूँस दिया जायगा। दक्षिणी प्रदेश की लड़कियों का स्त्रीत्व भी बीस वर्ष की आयु से पहले ही अपमानित और भ्रष्ट हो जायगा और प्रामाणिक नागरिकों को भूखा मारा जायगा व उन्हें नष्ट किया जायगा; परन्तु उन्हें इस भ्रष्ट स्कूल के ढाँचे का समर्थन करना पड़ेगा ..."

इस प्रकार की बातें आये दिन प्रकाशित होती ही रहती थीं। हर अधिवेशन केबाद ऐसा होता था और गिडियन को अब इसकी आदत पड गई थी। अब

सभा का विधान स्पष्ट से स्पष्टतर होता गया। अदालत-प्रथा सुधरती गयी। जज निर्वाचित होने लगे; जाति-पांति व भेदभाव का उन्मूलन हो गया, बोलने-चालने की आज़ादी दे दी गयी और उसकी रक्षा की जाने लगी। एक प्रस्ताव इस प्रकार का भी पास हुआ जिसमें सरकार से यह प्रार्थना की गयी थी कि वह बड़े-बड़े खेतों की ज़मीन स्वयं ख़रीद ले और उन्हें बाँट दे। इनमें से अंतिम प्रस्ताव कुछ अनिश्चय जान पड़ा; क्योंकि फेडरल सरकार से यह कहना कि खेतों की अब तक चली आई प्रथा को नष्ट कर दे, समय की दृष्टि से अनुचित था और उसकी अपेक्षा करना भी ठीक नहीं था, लेकिन फिर भी सिद्धान्त को सामने रखते हुए यह प्रस्ताव भी स्वीकृत हो गया...

अब ऐसा लगता था मानो गिडियन को कार्टर के मकान में आये वर्ष बीत चुके हों। वह खाने की मेज़ पर बैठा इन बूढ़ों के उज्ज्वल भविष्य का चित्रण करता था और यही कारण था कि कार्टर अपने मित्रों से जब यह कहते थे कि गिडियन जैक्सन, प्रतिनिधि हमारे साथ रहता है, तो उन्हें गर्व का अनुभव होता था।

स्टीफेन होम्स ने अपनी माँ से कहा, "कल रात खाने पर एक हब्शी भी आने वाला है।"

और माँ यह सोचते हुए कि वह नौकरों के बारे में कह रहा है बोली, "ज़ाहिर है, स्टीफेन!"

"मेरे ख्याल से आप समझी नहीं अम्मी! मेरा मतलब है—रात को खाने पर एक मेहमान को मैंने बुलाया है।"

माँ ने कहना शुरू किया, "अच्छा होता अगर तुम न बुलाते, स्टीफेन! कभी-कभी तुम ऐसी बातें कह देते हो

"मैं मज़ाक नहीं कर रहा अम्मी! आप समझने की कोशिश कीजिए। कल खाने पर मैंने एक हब्शी को निमंत्रित किया है। आप समझ लीजिए वही कल के हमारे मुख्य अतिथि होंगे।"

वह एक कुर्सी पर बैठ गयी और उसकी ओर घूरने लगी। स्टीफेन उसके सिर की ओर देखकर फिर खिड़की से सम्टर क़िले की धुँधली रूप रेखा को देखने

लगा। उसकी ओर देखकर माँ ने भाँप लिया कि अब वह निश्चय कर चुका है; अगर उसके साथ कुछ देर बहस भी की तो नतीजा कुछ न होगा; वह करेगा अपनी ही। अब वह काफ़ी शक्तिशाली हो चुका था। उसकी बौद्धिक शक्ति का अनुमान लगाना माँ की समझ से बाहर था। यदि लोग स्टीफेन के बारे में इधर-उधर की बातें उससे करते या उसकी प्रशंसा अथवा निंदा करते तो वह स्टीफेन का ही पक्ष लेती और हमेशा कहती, "आप मेरे बच्चे को समझते नहीं हैं। माना वह ऐसे काम करता है कि .."

मार्था होम्स की उम्र अब साठ के लगभग थी। वह काफ़ी बूढ़ी और शिथिल हो चुकी थी। वह स्वीकार करती थी कि संसार का एक हिस्सा पिछली खून-खराबी में विलीन हो गया और वह बचे हुए हिस्से से चिपकी रहना चाहती थी। इसके विपरीत स्टीफेन न तो इस बात को ही मानता था कि सब कुछ असाध्य रूप से खोया जा चुका है और न ही बचे हुए हिस्से से संतोष करना चाहता था। जब उसने अपनी माँ से कहा, "प्यारी अम्मी, मैं सभा में इसलिए जा रहा हूँ कि ये हब्शी जो भयानक कारनामे कर रहे हैं उसके खिलाफ़ लड़ने के लिए पहली शर्त है कि उसे ठीक से समझा जाय, और उसे समझने का केवल एक ही तरीक़ा है, वह यह कि इस चीज़ का हम स्वयं एक हिस्सा बन जायें" माँ ने इस बात को समझने की कोशिश की पर वह समझ न सकी। स्टीफेन ने कहा :

"अम्मी, खाने पर हब्शी को आमंत्रित करना मेरे लिए आवश्यक है। जब मैं कहता हूँ कि एक चीज़ जरूरी है तो आप कृपया उसे मान लिया करें।"

"लेकिन क्यों ? आखिर इसका कोई कारण भी तो हो ?"

"जी हाँ, सैकड़ों ऐसे कारण हैं और वे बहुत प्रामाणिक हैं। मैं बड़ी खुशी से आपको समझा सकता हूँ कि..."

"स्टीफेन ! मैं नहीं समझ सकती।"

"माँ ! आप समझ सकती हैं, और समझ जायेंगी; मैं कहता हूँ समझ जायेंगी।"

"स्टीफेन, अगर तुमने तय ही कर लिया है कि तुम गँवारों जैसे काम करो

और मूर्ख बने रहो तो कम-से-कम मेरी भावनाओं का तो कुछ सम्मान किया करो—'

"प्यारी अम्मी!" होम्स ने कहा, "मैं आपकी भावनाओं का जितना सम्मान करता हूँ उतना और किसी की भावनाओं का नहीं करता।"

"और लोग क्या कहेंगे?"

"वे कुछ नहीं कहेंगे। कर्नल फेण्टन, श्रीमती फेंटन, सैन्टेल, राबर्ट जेन दूप्रे, कार्वेल और जनरल गैनफ्रेट और उनकी पत्नी कल सभी यहाँ आयेंगे।"

"तो क्या उन्हें मालूम है कि कल कोई हब्शी भी खाने पर आनेवाला है?"

"जी हाँ, उनको मालूम है।"

"यह हब्शी है कौन, स्टीफेन?"

"कार्वेल के खेतों पर काम करनेवाला एक गुलाम है।" होम्स ने कहा। उसका नाम गिडियन जेक्सन है······"

× × × × × ×

और आखिर गिडियन के सामने फिर वही स्मृतियों की दीवार खड़ी हो गई,—बचपन, किशोरावस्था, युवावस्था,—उन हजारों स्मृतियों की दीवार जो उसे याद दिला रही थी कि इन्हीं लोगों ने किसी जमाने में हब्शियों को जानवरों की तरह पाला था। इसका उस पर काफ़ी प्रभाव पड़ा था। यदि कार्डोजो न कहता तो शायद वह इस निमंत्रण को अस्वीकार कर देता। कार्डोजो ने कहा था:

"जाओ गिडियन, तुम्हारा वहाँ जाना महत्त्वपूर्ण है। होम्स ने तुम्हें क्यों बुलाया है, इसके तीन कारण हो सकते हैं; पहला यह कि शायद वह ईमानदारी से हमारे साथ काम करना चाहता है और हमें समझना चाहता है। पर मुझे इस पर शक है। वह बड़ा चालाक है और पहले गुलामों का मालिक भी रह चुका है। दूसरे शायद वह तुम्हें बेवकूफ बनाना चाहता है। लेकिन मुझे इसमें भी शंका है। मैं नहीं समझता कि वह तुम्हें आसानी से बेवक़ूफ़ बना सकता है। क्योंकि वह ऐसे नादानी के काम कभी नहीं करेगा और न ही तुम आसानी से बेवक़ूफ़ बनाये जा सकते हो। पर तीसरा कारण जिस पर बहुत हद तक विश्वास किया जा सकता है, और जो एक मात्र कारण है, वह यह कि शायद होम्स समझता है कि हब्शी लोग

कोई गुप्त षडयंत्र कर रहे हैं और वह तुम्हें बुलाकर उसे समझाना चाहता है। वह चाहता है कि उसकी पीठ के पीछे क्या-क्या होता है यह जान ले। अगर यही बात है तो फिर इसमें छिपाने की कोई वजह नहीं; तुम्हें ज़रूर जाना चाहिए।"

गिडियन के पास अपने भय के सिवाय कुछ छिपाने को नहीं था। उसके पुराने भय ने, सभी पुराने जमाने के डरों ने, उसके पेट में बीमारी बनकर घर कर लिया था। मनुष्य अपने आप से यह और वह हज़ार बातें कह सकता है। आज़ादी मिल गई है और गोरे व काले सभी मिलकर एक नया संसार बनाने में जुटे हुए हैं; पुराने बंधन टूट गये हैं, गुलामी अब एक कटु स्मृति बनकर रह गई है, ये सब मनुष्य अपने आपसे कह सकता है; लेकिन फिर भी पुराने भय और स्मृतियाँ शरीर पर जलाये हुए हिस्से की भाँति जलती रहती हैं, मारपीट, भगदड़, पुराने गीत, मेरी जनता को जाने दो, मेरी जनता को जाने दो, नफ़रत व घृणा :

वह धीरे-धीरे बैटरी की सड़क पर चलते-चलते आखिर उस भव्य श्वेत भवन के समीप पहुँचा जो खाड़ी के सम्मुख खड़ा था। दरवाजे के पास की घंटी उसने बजाई; उसके बजने से उसमें कंपन-सा हुआ और एक बूढ़े हब्शी ने उसे पहले तो कौतूहलपूर्ण दृष्टि से देखा पर उसे पहले से सावधान कर दिया गया था; इसलिए वह चुप रहा। वह ऊपर की ओर चला और सीढ़ियाँ चढ़कर बरामदे में पहुँच गया। उसके पाँव इतने शिथिल थे कि वह लड़-खड़ा रहा था। फिर मकान का दरवाज़ा खुला और वह अंदर प्रविष्ट हुआ।

आज जिंदगी में पहली बार गिडियन ऐसे मकान में दाखिल हुआ था। इस प्रकार के प्रकाशमान, ईर्ष्याजनक और अवर्णनीय सुन्दर मकान में वह पहली बार आया था। बचपन में वह कार्वेल साहब के बावर्चीखाने के अन्दर और बाहर आया जाया करता था, पर खास कमरों में वह कभी नहीं गया था। बाद में जब वह बड़ा हुआ तो कार्वेल साहब के खाली और वीरान मकान में गया था। लेकिन यह मकान वीरान नहीं, सिर्फ खाली था। लालटैनों और बत्तियों का प्रकाश उसकी आँखों में चकाचौंध पैदा कर रहा था। हाल में लगी हुई लकड़ी बर्फ की भांति सफेद थी। मेज़-कुर्सियों में पुराने ज़माने के तर्ज़ की मेहराबें और झालर लगी थीं। सीढ़ियाँ घूमती हुई बहुत ऊपर तक चली

गई थीं। सामने का दीवानखाना शैतान के मुँह की भाँति जम्हाई ले रहा था। उसे बीमारी और निराशा का अनुभव हुआ और उसकी भावनाओं में किसी प्रकार की बेहतरी न आई, यद्यपि होम्स ने बड़े उल्लास और प्रसन्नता से उसका स्वागत करते हुए कहा," बड़ी खुशी हुई तुम आगये, जैक्सन !"

गिडियन कुछ बोल न सका, उसने सिर हिला दिया। होम्स उसे उस असाधारण रूप से प्रदीप्त दीवानखाने में ले गया और वहाँ की गर्मी के बावजूद गिडियन ने महसूस किया कि वहाँ लोग बर्फ में से काट-काटकर रख दिये गये थे। औरतें बहुत सुन्दर वस्त्रों में सुशोभित थीं; पुरुष काले और बर्फ के समान सफेद कपड़ों में खाने पर बैठे थे। बड़े फानूस से अत्यन्त भड़कीली और चकाचौंध कर देनेवाली रोशनी फूट रही थी। महोगनी की लकड़ी से बनी हुई मेज़-कुर्सियों के सामने कार्डोज़ो की वस्तुएँ कोई चीज़ न थीं। चारों ओर चाँदी और शीशे की वस्तुएँ रखी हुई थीं। होम्स ने एक-एक करके सभी व्यक्तियों का गिडियन से परिचय कराया; लेकिन न तो कोई खड़ा हुआ और न ही किसी ने गिडियन से हाथ मिलाया और जब गिडियन का डडले कार्वेल से, जो किसी ज़माने में उसका स्वामी था, सामना हुआ तो कार्वेल ने उसे पहचाना तक नहीं,—और ऐसा होना ठीक और न्यायपूर्ण था; क्योंकि गिडियन केवल किसान ही था।

जब गिडियन ने प्रवेश किया तो वे सब लोग बातें कर रहे थे और परिचयादि के बाद भी आपस में ही बातें करते रहे। गिडियन की ओर किसी ने ध्यान ही न दिया; मानो वे केवल होम्स से ही परिचित था। होम्स ने एक कृत्रिम मुस्कराहट के साथ कहा :

"इनकी उपेक्षा का बुरा न मानना, जैक्सन। कभी-कभी हम लोग अपनी तथा कथित विनम्रता को भूल जाया करते हैं। क्या पियोगे ?"

काले नौकर कमरे से ऐसे गुज़र रहे थे, मानों परछाइयाँ आ जा रही हों। गिडियन के लिए उस समय हर चीज़ धुँधली और भयानक सपने की भाँति थी। किसी भी चीज़ की उसके मस्तिष्क में स्पष्ट और साफ़ आकृति नहीं आरही थी। उसने अपना सिर हिला दिया। कुछ नहीं, बिल्कुल कुछ नहीं। कुछ भी नहीं कह वह चट्टान की भाँति निश्चल खड़ा रहा। उसके सारे शरीर में चुभन

हो रही थी। नौकर जिस तरह उसे देख रहे थे उससे वह उसका अनुभव कर रहा था। मालूम होता था, जैसे वह एक जानवर है और पिंजरे में बंद कर दिया गया है; जैसे वह एक फ़रार गुलाम है, जिसे वहाँ ले आया गया है। मालूम होता था उसे वहाँ रस्सी से बाँध कर पीटा जानेवाला हो,—और इस सबसे बुरी, कटु और अत्यंत भयंकर बात यह थी कि वह इस समय भयभीत था।

अंत में जब वे खाने पर बैठे तो गिडियन को अनुभव हुआ कि मानो उसे बैठे हुए सदियाँ बीत गयी हों।

अनेक लोगों को खाते हुए उसने देखा था। उसके खेतिहर लोगों के खाने का तरीका एक था; कार्टरों का दूसरा और कार्डोजो का बिल्कुल तीसरा। लेकिन जैसा यहाँ उसने देखा वैसा और कहीं नहीं था; कहीं भी, चाँदी की रकाबियाँ इतनी बड़ी और इतनी ज्यादा तरह की नहीं थीं। जिस तरह वे काँटे और चमचे पकड़े हुए थे वैसा करना उसके लिए कठिन था; वह बड़े भद्देपन से खा रहा था; उसने छुरी-काँटे रख दिये और उन लोगों को खाते हुए देखने लगा; और उन्होंने भी समझ लिया कि वह उन्हीं को घूर रहा था। अपने आप वह इस जाल में फँसा ही क्यों? सैकड़ों बार वह बेवक़ूफ़ बना है, उसके विचार पिंजरे में गिलहरी की भांति दौड़ने लगे। आखिर होम्स का मतलब क्या है? यह सब क्या था? होम्स को इससे क्या फ़ायदा होनेवाला था?

अब उसे महसूस हुआ कि वे लोग उसीसे बातचीत कर रहे थे और वह भी उनके जवाब दे रहा था। बातचीत होम्स ने ही शुरू की; होम्स ऐसी चीज़ कहना चाह रहा था जिसे गिडियन न समझ पाया। अब गिडियन का दिमाग़ साफ़ हो गया। अब उसे इन लोगों पर क्रोध आरहा था जिनसे छत्तीस साल की उम्र में आज पहली बार वह मिला था और पहली बार ही उनकी बातें उसने सुनी थीं। वे उसी भाषा में बातचीत कर रहे थे जिस भाषा का वह स्वयं प्रयोग करता था। वह उनका उसी भाषा में जवाब भी दे रहा था।

वह बड़े ग़ौर से उनकी बातें सुन रहा था, इनमें बुद्धिमत्ता का कोई विशेष अंश नहीं था; एक ही क्षण में वह कोई सदी पीछे निकल गया और दूसरे ही क्षण वह सँभल गया और चकराता हुआ लौट आया। एण्डरसन क्ले, ग़रीब

गोरा उन लोगों से ज़्यादा गम्भीरता और ठंडे दिमाग़ से चीज़ों की जड़ तक पहुँच जाता था। उन्होंने सोचा,—वे उसे फँसा रहे हैं; लेकिन वह धीरे-धीरे अपनी भारी आवाज़ में जवाब देता रहा; वह ऐसा कच्चा नहीं था कि उनके फँसाने में आजाय। होम्स ही एक ऐसा व्यक्ति था, जो उसकी बराबरी का था। होम्स किंचित मुस्करा दिया, जब कर्नल फैण्टन ने कहा :

"मेरा खयाल है जैक्सन, यह क़ानूनसाज़ी तुम्हारे दूसरे कामों में बाधा डालती होगी। उनमें परिवर्तन पैदा करती होगी, है ना?"

"कपास चुनने से तो यह कहीं अधिक लाभप्रद है।" गिडियन ने जवाब दिया, "हमें रोज़ाना तीन डालर मिलते हैं। यह तो अपने खून-पसीने से कमाये जानेवाले पारिश्रमिक से भी कहीं ज़्यादा है।"

"हब्शी भला इतने सारे पैसों का क्या करता होगा?" जेन दूप्रे ने अचम्भे से कहा। वह एक पतली-दुबली, गोरी-चिट्टी कोमल स्त्री थी और जब उसने यह प्रश्न पूछा तो उसके पति की त्यौरियाँ चढ़ गईं। इस अनुकूल व्यवहार ने गिडियन को एक विशेष सामाजिक प्रतिष्ठा प्रदान की।

"वह उसे खाने पर और कपड़ों पर खर्च कर सकता है।" गिडियन ने कहा, "लेकिन अधिकतर वह उसकी शराब ही पी जाता है।"

यह सब कुछ वैसे देखने में तो बड़ा ही सरल था और वे सब स्वयं न समझ सके कि आख़िर उसका मतलब क्या है। एक बात तो पक्की थी और वह यह कि वे सब बड़ी उलझन में पड़े हुए थे; क्योंकि वे समझ गये थे कि होम्स इस समय परिस्थिति से मज़ा ले रहा था। बाद में जेन दूप्रे ने कहा कि जब उसने उस हब्शी को खाते हुए देखा कि वह काँटे को फावड़े जैसा थामे था तो उसका जी मचलाने लगा था। उसे लगा मानो वह वहीं मेज़ पर उल्टी कर देगी।

जनरल गैनफ्रेट ने कहा, "मेरा ख्याल है कि क़ानून बनाने के लिए शिक्षा का होना पहली शर्त होती है। क्या आपको स्वयं सभा में कार्य करते समय कठिनाई नहीं महसूस होती?"

"जी हाँ, मुझे बड़ी कठिनाई होती है," गिडियन ने स्वीकार किया। "मुझे यों और भी ज्यादा ऐसा महसूस होता है क्योंकि मुझे पता चला है

कि आप कुछ वर्ष पहले कार्वेल के यहाँ खेतिहर का कार्य करते थे।"

"जी हाँ, मैं खेतिहर था।" गिडियन ने मुस्कराकर कहा।

सैन्टल, पचास वर्षीय बूढ़ा जिसका लम्बा मुँह, ठोस बदन और छोटी आँखें थीं, जो पूरी रियासत में सबसे बड़ा स्वामी था, कहने लगा कि अब गिडियन उभरकर दुनिया के सामने आ गया है। गिडियन ने कहा, "हाँ, मैं भी यही समझता हूँ, लेकिन अब दुनिया बदल रही है।"

"और वह भी बदतरी के लिए," किसी ने कहा।

गिडियन ने सिर हिलाकर कहा, "वह तो आपकी समझ पर निर्भर है, आप जैसा चाहें इसे समझ लें।"

"आप पढ़ते ज़रूर हैं," महिलाओं में से एक ने व्यंग किया।

"जी हाँ, जब मैं फौज में था तभी मैंने थोड़ा बहुत पढ़ना सीखा था।"

"आप फौज में कब थे?" जनरल ने पूछा।

"मैं उन यैंकी फौजों के साथ था, जिन्होंने चार्ल्सटन पर आक्रमण किया था,—आपको वे काले दस्ते याद नहीं?"

कमरे में एक 'फ्यूज़' जल रहा था और उसके नीचे बारूद का पीपा रखा हुआ था। होम्स मुँह बंद करके हँस रहा था, लेकिन जनरल व दूसरे लोग बिल्कुल स्तब्ध थे। गिडियन को वे फिर बर्फ के टुकड़े दिखने लगे। वे ही पुरानी बातें फिर उसके दिमाग़ में घूमने लगीं—नहीं, कुछ नहीं; सब कुछ गोरे मालिकों का है; हब्शी का कुछ नहीं है; वह समझ गया कि यह सब ऐसे ही नहीं चलता रहेगा; कुछ-न-कुछ फूट पड़ने वाला है। श्रीमती होम्स ने क्षमा-याचना की और मेज़ पर से उठ गई। उसके जाते ही आँसुओं की धारा और सिसकियों की ध्वनि सुनाई पड़ी। होम्स जो उसके पीछे जा रहा था वापस लौटा, और उसने कहा, "क्षमा कीजिये, मेरी माँ को। उनकी ज़रा तबियत ठीक नहीं है।"

जनरल फिर भयानक स्तब्धता में डूब गये; फेंटन ने इस दुःखप्रद स्तब्धता को दूर करते हुए गिडियन से कहा, "तुम्हारा दक्षिणी नाम बड़ा सुन्दर है जैक्सन! लेकिन मैंने तो सुना है कि हब्शी अपने मालिकों के नाम रख लेते हैं।"

"जी हाँ, कुछ लोग ऐसा ही करते हैं," गिडियन ने कहा, "लेकिन मेरा तो तब तक कोई खांदानी नाम ही न था जब तक मैं फौज में सार्जेण्ट न बन गया। यैंकी कैप्टन ने कहा, "गिडियन, तुम्हें नाम तो रखना ही चाहिए और खान्दान का नाम। तुम्हारा मालिक कौन था?" गिडियन कुछ रुका, फिर कार्वेल की ओर नज़रें फेरकर उसने सिर हिला दिया। उसे कुछ-कुछ ऐसा विश्वास हो रहा था कि अगर महिलाएँ वहाँ मौजूद न होतीं तो शायद वे उसे मार ही डालते। "मैंने उससे कहा," गिडियन ने कहना शुरू किया, "उस शख्स का मैं नाम कभी नहीं अपना सकता जिसने मुझे गुलाम रखा था।"

गिडियन ने किस्सा पूरा नहीं किया। कार्वेल खड़ा हुआ और बोला, "निकल जा यहाँ से हब्शी! सूअर कहीं का!"

जब गिडियन घर लौट रहा था तो उसे एक विचित्र थकान सी महसूस हो रही थी। कितने रहस्य उसने देखे जो अंत में शून्य होकर विलीन हो गये। कितने भय ऐसे थे जो निराधार सिद्ध हुए थे? सारी दुनिया तभी तक एक अनजानी चीज़ रहती है जब तक उसे आप जाँच न लें। पहली खाड़ी जो अब अंधकार में डूबी हुई थी और भूत के समान भयंकर लग रही थी कल बड़ी खाड़ी शान्त और प्रकाशमान पानी की सतह दिखाई देगी। जो जंजीरें उसके लोगों को अब तक जकड़े हुए थीं अब फिर कभी न पहनाई जायेंगी। सूर्य के प्रकाश में उन जंजीरों, उन बंधनों का कोई स्थान नहीं। बहुमत पर कुछ लोगों का शासन, अंधकारमय और सबसे भारी कुरीतियाँ जिन्हें मनुष्य ने अपनी स्मृति में आश्रय दे रखा था पानी भरे गुबारे की भाँति फोड़ दी जायेंगी और पानी उसी तरह बाहर निकल आयगा। गिडियन ने धीरे-धीरे गाना शुरू किया:

"सुना है मिस्र में रहते थे इज़राईल,
कहा मूसा ने जाने दो।
मेरी जनता को जाने दो।
वह इस जुल्मो सितम को सह नहीं सकती,
मेरी जनता को जाने दो।"

होम्स के मकान से स्त्रियाँ जा चुकी थीं और मेज़ पर अब मर्द बैठे सिगार

पी रहे थे; जनरल ने कहा,

"होम्स, यह बात अक्षम्य है।"

"मुश्किल से ही।"

"आपने कहा था कि कुछ कारण है," सेण्टल ने अपनी सर्द और सख्त आवाज़ में कहा। "तुम कह रहे थे कई बात हैं जिनके कारण हमें उस हब्शी के साथ बैठकर खाना खाना है। तुम हमेशा अपने कारण लिए फिरते हो और वे तुम्हारा मनोरंजन करते रहते हैं। जब तुम सभा में गये तो तुम बिलकुल अज्ञान और रहस्यमय जान पड़ते थे। तुमने कई हब्शियों की खुशामद की, चापलूसी की, ताकि वे तुम्हें सभा में शामिल कर लें और तुमने तब भी, कहा था कि तुम किसी कारणवश ऐसा कर रहे हो। मैं तो तुम्हारे इन कारणों से ऊब गया। भगवान् बचाए तुम्हारे कारणों से।"

"कारण," होम्स ने लापरवाही से कहा, "फिर भी कम महत्त्व की बात नहीं है। आज तो खैर बहुत थोड़े ही कारण थे और अगर आप मुझे इजाजत दें तो मैं कहूँगा कि वह हब्शी आप सब लोगों को बेवकूफ बना गया।"

जनरल ने कहा, "मेरे ख़याल से तुम बहुत कह चुके हो स्टीफेन, जरा जबान को काबू में रखो।"

"मैं नहीं समझता, उसने बहुत कुछ कह लिया," कर्नल फेण्टन ने कहा। "स्टीफेन ने तो कुछ भी जो हमारे बारे में कहा वह ठीक ही है। वह हब्शी वास्तव में मूर्ख बना गया। अब इसे मान भी लीजिए महाशय!"

"मैं स्टीफेन से इसकी कैफियत चाहता हूँ वरना--"

होम्स बीच ही में बोल उठा, "खुदा के लिए तुम मुझसे झगड़ा मत मोल लो। वह तो बहुत ही बुरी चीज होगी। क्या हम बच्चे हैं—? दूध पीते क्यों? मूर्ख हैं? मैंने आप लोगों को आज रात इसलिये निमंत्रित किया था कि मैं समझता था आप सब महानुभाव किसी-न-किसी रूप में सशक्त चरित्र के हैं। मुझे इजाजत दीजिये कि मैं अपने कुछ भ्रम आपके सामने रखूँ।"

"होम्स!"

"अच्छा खैर! तो फिर मुझे कुछ देर और बातें करने दीजिए! आप कहते

आपत्ति है। उन्होंने जो सभा को लंगूरों का सर्कस कहा है वह उचित नहीं है। अगर हम उस तरह से सोचेंगे तो हमारी ही हार होगी। यह सभा लंगूरों का सर्कस नहीं है, यह उन बुद्धिमान, दृढ़ विचार-लोगों की सभा है जो बहुत हद तक अपने विचारों में ईमानदार हैं।"

"आप बकवास कर रहे हैं," जनरल ने आपत्ति की।

"वास्तव में ? क्या आप किसी अधिवेशन में गये हैं ?"

"मैंने अखबारों में पढ़ा है।"

"और अखबारवाले झूठ बोलते हैं। मुझ पर विश्वास कीजिए, मैं लगभग सभी अधिवेशनों में गया हूँ,—और अखबारों ने जो कुछ भी उसके संबंध में लिखा है वह सब झूठ है। उस हब्शी को यहाँ लाने का मेरा यह कारण था कि वह दो-तीन साल पहले बिल्कुल अनपढ़ था। उसके कुछ वर्ष पहले वह कार्वेल का गुलाम था। क्या आपने उसे अब देखा था ? क्या वह लंगूर था ? हमने जिन हब्शियों को दो सौ वर्ष बेचा और खरीदा है, उनमें कौन से गुण हैं, हमें नहीं मालूम है महाशय लोगो, और न ही हम उसकी कल्पना करने का साहस कर सकते हैं। गिडियन जैक्सन जैसे आदमी क्या आसानी से अपना सर्वस्व त्याग देंगे ? और फिर वे अकेले नहीं हैं। वे ग़रीब गोरों के साथ काम करना सीख रहे हैं, उन ग़रीब गोरों के साथ जिन्हें हम घृणा की दृष्टि से देखते रहे और तब तक उन्हें हमने कुछ न समझा जब तक युद्ध के लिए हमें उनकी जरूरत न पड़ी। और ये ही गोरे जो हमारे लिए युद्ध में लड़े थे, अब समझने लगे हैं। महाशय लोगो, पहली ग़लती तो आपने युद्ध छेड़ कर ही की और दूसरी यह की कि सभा की सारी जिम्मेदारी इन हब्शियों और ग़रीब गोरों को देदी। आप कहते थे सभा चूर-चूर हो जायगी, पर वह नहीं हुई। ३ महीने से ज्यादा समय से वह काम कर रही है और अब उसने अपना विधान भी तैयार कर लिया है। आपने कहा था कि समूचा राष्ट्र इस भूत के खिलाफ़ अपने पूरे प्रकोप के साथ उठेगा और इसे कुचल देगा। लेकिन वह प्रकोप नहीं दिखाई दिया। इसके विपरीत यैंकी संवाददाता सारे देश में सभा के बारे में सच्ची बातें फैला रहे हैं। जब युद्ध के उपरांत हमने अपने उन काले क़ानूनों को, उस आतंकमय शासन को जारी किया

तो सोचा कि हमने काफी शक्ति और साहस से उस दुश्मन को हरा दिया जिसने युद्ध में हमें पराजित कर दिया था। हमने उस मूर्ख जॉनसन का इस्तेमाल किया और समझा कि जनता उसका अनुसरण करेगी लेकिन इसके विपरीत सभा ने उसे कुचल दिया। और अब हब्शी वह सहानुभूति प्राप्त कर रहे हैं जिसकी हमने बलि दे दी थी और वह भी हमारी ही भूल थी।"

दूप्रे ने कहा, "तुम्हारी हमारे बारे में अच्छी राय नहीं है होम्स!"

"स्पष्टतः यदि कहूँ तो नहीं। एक तरीके से मेरी उस हब्शी के बारे में बेहतर राय है जिसे मैं यहाँ लाया था।"

"और मैं भी—"

फेण्टन ने कहा, "खुदा के लिए खामोश रहो दूप्रे।" और फिर होम्स से संबोधित होते हुए, "तो फिर स्टीफेन, तुम्हारा क्या सुझाव है? अब तुम भाषण तो देना बंद करो। हमने उस हब्शी को देख लिया और तुम्हारा मक़सद पूरा हो गया। अब यह बताओ कि क्या करना चाहिए?"

"अच्छा ठीक है," होम्स ने सिर हिलाया।" आपने उस हब्शी को देख लिया,—आपको यह स्वीकार कर लेना चाहिए कि वह दक्षिणी प्रदेश के ४० लाख निवासियों का प्रतिनिधि है और उसमें कौन-कौन गुण हैं।"

"ठीक है, कहे जाओ।"

"आइए ज़रा इस सभा के बारे में कुछ सोचें और देखें कि इसने क्या-क्या किया है। पहली चीज़ जो करने की है वह है शिक्षा; उसने शिक्षा समूचे राज्य में व्यापक और अनिवार्य करदी है। जिसका मतलब है कि हब्शी और ग़रीब गोरे हम से बराबरी के साथ लड़ेंगे—"

"लेकिन रहेंगे तो हब्शी और गोरे गरीब ही।"

"खुदा मेरी मदद करे, क्या आप वास्तविकता को नहीं देख सकते? यह शिक्षा अगर पीढ़ी तक सफलता से चलती रही तो मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि हमारा नामोनिशान तक न रहेगा। आप दूसरी बात को लीजिए। सभा ने यह प्रस्ताव रखा है और सरकार से दरख्वास्त की है कि जमीनों को बाँट दिया जाय और बड़े-बड़े खेतों के टुकड़े करके उन्हें छोटे-छोटे खेतों में बदल दिया

इस बात को शिक्षा से मिलाओ और तुम्हारी खेती का संहार। सभा ने जाति व वंश का भेदभाव मिटा कर सब को एक कर दिया है, जरा इसे समझने की कोशिश कीजिए महाशय! सभा ने हमें आश्वासन दिया है कि काले गोरों के साथ जूरी में बैठेंगे।

काले हब्शी न्यायाधीश का पद लेंगे इसे भी समझ लो। मेरे दोस्तो! आपका कानूनी ढंग से शासन के हथियाने का वह खयाल भी पूरा न हो सकेगा; क्योंकि सभा ने मतदान की रक्षा का बीड़ा उठाया है और आखिर में मैं कहूँगा कि सभा ने निरन्तर काले और गोरों से साथ-साथ अपील की है, हर कानून में, हर फर्मान में, हर प्रस्ताव में ग़रीब गोरों को हब्शियों के साथ मिलाया है। क्या इसका आप लोगों पर कोई असर नहीं पड़ता?"

लम्बी स्तब्धता को तोड़ते हुए जनरल ने कहा, "वे यह सब पूरा नहीं कर पायेंगे, होम्स! यह सब विफल हो जायगा। इस राज्य के कोष में इतना पैसा कहाँ है जो यह सब चल सकें। चुनाव में—"

"चुनाव में वे फिर सरकार में जायेंगे, ठीक उसी तरह जैसे वे सभा में पहुँच गये।"

"तो फिर हमारा क्या हाल होगा, स्टीफेन?" कार्वेल ने पूछा।

"जाहिर है, आप कहीं के न रहेंगे।"

"तो फिर उन्हीं का साथ क्यों न दिया जाय?"

"और वोटरों को क्या पेश करेंगे? रोजाना २० सेण्ट की तनख्वाह? फिर उन्हें गुलामी की ओर भेजेंगे? छोटे खेतों को नष्ट कर देंगे? अज्ञान फैला देंगे?"

"इसके भी तरीके हैं।"

"हाँ, लेकिन वह नहीं जो आपने बतलाया। हमारे हाथों में शासन था, हमने खो दिया। अब उसे हम फिर से हासिल करना चाहते हैं सिर्फ यही ना? आज आपने उस हब्शी को देखा। क्या आप उसे फुसला सकते हैं, पुचकार सकते हैं, धोखा दे सकते हैं?"

"नहीं—"फेण्टन ने सोचकर कहा। "लेकिन तुम उसे फाँसी ज़रूर चढ़ा

सकते हो।"

जनरल ने कहा, "हमने आतंक फैलाने का भी प्रयत्न किया, पर हम असफल रहे, स्टीफेन! और तुम यह पहले बता चुके हो।"

"हाँ हम असफल इसीलिए हुए कि वह आतंक मूर्खतापूर्ण था और आतंक केवल आतंक के साथ ही जब किया जाता है तो वह जरूर असफल होता है। हमने लोगों के झुण्ड-के-झुण्ड यैंकियों की संगीनों के सामने झोंक दिये। हमने अनैतिकतापूर्ण अत्याचार किये, पुराने सिपाहियों को लाठियों और लोहे की छड़ियों से हमने मारा पीटा और उन पर अत्याचार किया। और इस सबके लिए न हमारे पास कोई योजना थी, न कोई उद्देश्य था और न ही सबसे आवश्यक बात संठगन था?"

फेण्टन ने ताजी चुरुट सुलगा ली। एक स्त्री ने दरवाजा खोला और कहा, "क्या हमेशा यहीं बैठे रहोगे?" एक काला नौकर विस्की लेकर अंदर आया तो होम्स ने उससे कहा, "जब तुम चले जाओ तो मैं चाहता हूँ कि कोई हमारी बातचीत में दखल न दे।" स्टीफेन की चुरुट की राख काफी हो गई थी; उसने उसे छूआ और वह कपड़े पर गिर पड़ी फिर उसने उसे फूँक कर उड़ा दिया।

"संगठन," उसने कहा, "योजना और उद्देश्य यही सब हमें चाहिएँ।"

फेण्टन ने कहा, "तुमने क्लान के बारे में भी कुछ सोचा है, स्टीफेन?"

"जी हाँ, उसके बारे में मैंने कुछ सोचा है। उनके दो साल के अस्तित्व का रेकार्ड न तो कोई विशेषता रखता है और न ही उनमें कोई प्रतिभा-जनक है, लेकिन उनमें एक बात जरूर है उनका संगठन है। और बजाय इसके कि हम फूट-परस्ती की नीति अपनायें और उनके विरुद्ध ताकतों को संगठित करें ज्यादा बुद्धिमानी की बात यह होगी कि हम उनको ही मजबूत करें और उनके साथ काम करें। और यदि हम तय कर लेते हैं कि ऐसा करना चाहिए तो फिर शीघ्र ही ऐसा हो जाना चाहिए नहीं तो, कहीं ऐसा न हो कि वे अपनी उपयोगिता ही समाप्त कर बैठें।"

"उनके फौजी लोग अफसर हैं," जनरल ने कहा।

"यह तो और भी अच्छी बात है और इससे तो हमें ही मदद मिलेगी।

दूप्रे तो पहले से ही क्लान के सदस्य हैं, वह हमारी इस काम में मदद कर सकते हैं। लेकिन यह गोरे बदमाशों का मामला और क्रॉसों का जलाना मूर्खता है, फिर भी इसका कुछ उपयोग है ही। न्योवले की तरह भीरू, भयभीत--जब वे अपने चेहरे छिपाते हैं तो अचानक साहसी बन जाते हैं।"

"मुझे इस प्रकार की बातचीत पसन्द नहीं है।"

"क्या तुम्हें भी पसन्द नहीं हैं, दूप्रे? तो क्या तुम चाहते हो कि एक सफेद नेपकिन अपने सिर पर डाललो और रात भर दौड़ते फिरो? नहीं – यह एक औज़ार है हमें इसको समझना चाहिए और इसे चलाने के लिए हमें आदमियों की ज़रूरत पड़ेगी। वे कहाँ से आयेंगे? कुछ फौजी भी चाहिएँ, आपने हमारी फौजों के बारे में कहा उनमें साहस था, और हाँ सम्मान भी उसी प्रकार का सम्मान जिसकी हम बातें करते हैं। वे लोग इन सफेदपोशी, आतंक, फाँसी इत्यादि को अच्छा नहीं समझेंगे और न ही वे इन्हें मानेंगे।"

"पता नहीं तुमने इसे न जाने किस ढंग से पेश कर दिया स्टीफेन।" जनरल ने कहा।

"तो फिर आप ही बताइए कैसे कहूँ? क्या हम अपने आपसे भी सच नहीं बोल सकते?"

लेकिन हमें आदमी तो बहुत मिल जायेंगे, वे गंदे अछूत, जिनका हम ओवरसियरों के लिए उपयोग करते थे, गरीब गोरे जो गुलामों का क्रय-विक्रय किया करते थे; वे लोग जो हाथ में हमेशा कोड़ा और मुँह में गाली रखते थे जिनका एक ही गुण था,—सफेद चमड़ी। महाशय लोगो, हम उसी सफेद चमड़ी पर एक राग अलापेंगे, हम उसे सम्मान का चिन्ह बनायेंगे। हम उसकी चमड़ी को हर प्रकार का सुभीता देंगे। हम नालियों और दलदलों के उम्मीदवार बनायेंगे और हम उन्हें उनकी सफेद चमड़ी वापस कर देंगे—और उसके बदले में वे हमें वह सब लौटा देंगे जो हमने उस पाशविक युद्ध में खो दिया है, हाँ वह सब कुछ।"

"लेकिन कैसे, स्टीफेन?" फेण्टन जानना चाहता था। "जब हम पहले इसकी कोशिश···"

"हाँ, लेकिन इस बार हम जानते हैं। हम धीरे से शुरूआत करेंगे,—शुरू में हमारे पास संगठन और संगठन के सिवा और कुछ न होगा। हम क़ालों में दाखिल होंगे, उसकी मदद करेंगे। हाँ महाशयो, हमारे पास जो कुछ थोड़ा-बहुत बचा है, हम उसी से उनकी मदद करेंगे। जब तक यहाँ गश्ती फौजें हैं तब तक हम कुछ न करेंगे—यानी ऐसा कुछ नहीं जिसका वे विरोध करें। बस कुछ कानून बनालें, हब्शी को उसकी पिछली स्थिति में भेज दें, बलात्कार और मारपीट—ये सब अपने आप हो जायेंगे और जब यह सब हो जाय तो क्लान सवार हो सकता है। अगर प्रचार की बात है तो आप कह सकते हैं कि रोमांटिक जिन रात को घूमते फिरते हैं लेकिन यह सिर्फ प्रचार के लिए ही। हमें प्रतीक्षा करनी होगी, हमें पहचानना होगा और हम कोई भी कच्ची बात न करेंगे। साथ ही हममें से जो लोग राजनीति में भाग ले सकें उन्हें भाग लेना चाहिए, विरोधी की हैसियत से नहीं, बल्कि पुनर्निर्माताओं की हैसियत से काम करके। मैं चाहता हूँ, मैं यही काम करूँ और दूसरे मेरा साथ दें। हम क़दम-ब-क़दम आगे बढ़ेंगे और तलाश में रहेंगे···"

"और तलाश कब तक करते रहेंगे?" जनरल ने पूछा।

"यह मैं नहीं कह सकता—लेकिन दो-तीन वर्ष तक तलाश करना ही होगी। हो सकता है पाँच वर्ष भी लग जायें। लेकिन हमें तब तक प्रतीक्षा करना पड़ेगी जब तक हमें अपनी सफलता का निश्चय न हो जाय; जब तक कि पुनर्निर्मित दक्षिणी प्रदेश राष्ट्रीय राजनीति में एक महत्त्वपूर्ण विषय न बन जाय; जब तक एक-एक यैंकी फौजी यहाँ से न बुला लिया जाय। और जब हम प्रतीक्षा करेंगे तो कोई हाथ-पर-हाथ धरे भी नहीं बैठे रहेंगे। हम दुःख सहेंगे; मुसीबतें झेलेंगे, पागलों की भाँति नहीं, बल्कि संतोष से और पौरुष के साथ और हम उत्तरी प्रदेश को बतादेंगे कि हम किन-किन मुसीबतों और विपदाओं को झेल रहे हैं। हम मूर्खों की तरह रोयेंगे नहीं; बल्कि शान के साथ यह घोषणा करेंगे कि हमारे साथ अन्याय हुआ है और जब हम काफ़ी कह चुकेंगे तब लोग हम पर विश्वास भी करेंगे। उत्तर के वे लोग जिन्होंने अब तक हम से ईर्ष्या की है, उन सब से ईर्ष्या की है जिनके खिलाफ़ वे लड़े थे, हमारी खेतों की व्यवस्था, हमारे गुलाम, हमारा

वैभव, हमारा तर्ज़-जिंदगी—और उन्होंने इस हद तक इन चीज़ों से ईर्ष्या की थी कि अब उनके भोंडे, झूठे नैतिक ढोंगों से वह नहीं छिपाई जा सकती—लेकिन वे सब फिर हमारे हमदर्द हो जायेंगे; हमारा समर्थन करेंगे। और उस समय वे हब्शी पर, गुलाम पर, बंदी पर दया करते थे और जब हम दुनिया को बता देंगे कि वही हब्शी उत्पीड़न कर रहा है, सज्जनों की और हमारी महिलाओं की सभी चीज़ें उनसे छीन रहा है,। मानवता, भलाई, नम्रता और दया कहाँ रहेगी, उसका क्या होगा?"

"और हो भी यही रहा है," जनरल ने नम्र भाव से कहा।

"बहुत अच्छा, हम अपने समर्थकों को पैदा करेंगे। हम उत्तरी भाग के लिए उत्पादन करेंगे। उत्पादन का केंद्र इंग्लैंड से उत्तर को स्थानान्तरित हो रहा है; वे कपास के लिए रोयेंगे, चिल्लायेंगे; हम उन्हें थोड़ी सी रूई दे भी देंगे लेकिन काफ़ी नहीं। लेकिन हम उनके लिए उत्पादन करेंगे, उनके उद्योग को दक्षिण में निमंत्रित करेंगे, उन्हें भविष्य के लिए अपना आधार बना लेंगे, यह वह आधार होगा कि जिसका तब महत्त्व होगा जब वे उस नैतिक मदान्धता को भूल जायेंगे जिसने उन्हें युद्ध में ढकेला था, जब वे यह समझने लगेंगे कि उनका युद्ध न्यायोचित नहीं था, और हम आज़ादी चाहनेवाले लोग हैं जो अपनी अमरीकी आज़ादी की रक्षा के लिए लड़े थे।"

"और हमने किया भी तो ऐसा ही था," जनरल ने कहा।

"और जब वह समय आजायगा, चाहे दो साल में आये या पाँच साल में, तो हम आक्रमण करेंगे—ज़बरदस्त आक्रमण। पूरी शक्ति और आतंक के साथ, क्योंकि आतंक और शक्ति ही ऐसी चीज़ें हैं जो हमारे भविष्य की निर्णायक होंगी। लेकिन तब तक तो हम अपना उद्देश्य पूरा कर चुकेंगे; उत्तर को इसका पता भी न चलेगा और अगर थोड़ा-बहुत पता चल भी गया तो वे उस पर विश्वास नहीं करेंगे। क्लान तब तक एक सेना में परिणत हो जायगा और यही क्लान इस चीज़ को ऐसा कुचल देगा कि वह फिर कभी सिर न उठा सकेगी। महाशयो, हब्शी फिर गुलाम कर लिया जायगा जैसा कि वह पहले था, और जैसा कि उसकी तक़दीर में लिखा है। हाँ, वह लड़ेगा ज़रूर—लेकिन वह आतंक व ज़ोर के लिए

संगठित नहीं होगा; केवल हम ही होंगे। अनेक गोरे भी उसकी तरफ से लड़ेंगे, ज्यादातर नहीं; कम भय और गोरी चमड़ी का निशान उन्हें सावधान कर देगा। और महाशय लोगो, जब वह समय आ जायगा तो हम जीत जायेंगे!"

जब स्टीफेन होम्स यह सब कुछ बोला तो उसके स्वर में ज्वाला और उत्साह भड़क रहा था, उसमें एक ऐसी गति याने शक्ति थी जिससे जनरल भी प्रभावित हुआ, शायद वही उन लोगों में सब से कम भावुक व्यक्ति था। लेकिन जब उसने अपना भाषण खतम किया तो सारी ज्वाला बुझ चुकी थी, और उत्साह पूर्ण सभ्यता की धुँधली आकृति में विलीन हो गया था। उसने दूसरा चुरुट जला लिया और जब सबने उसकी योजना के दोनों पहलुओं पर विचार कर लिया तो उसने सुझाव रखा:

"क्या अब महिलाएँ अन्दर आ सकती हैं?"

: ६ :

सभा विसर्जित हो गई। विधान बन गया। एक के बाद दूसरे कानून बनाये गये और संयुक्त राज्य अमरीका की यूनियन के लोगों ने जिसकी माँग की थी उसी स्वतंत्रता, जीवन, स्वाधीनता और सुख के अनुसरण की परिभाषाएँ भी निश्चित करली गईं। सन् १८६८ की वसंत ऋतु थी। एक नये, उज्वल वर्ष, काल का प्रारम्भ हो रहा था। पादरी ने कहा :

"ए रहीम! हमें शक्ति दे कि हम समझना, क्षमा करना सीखें, हमें अपने प्रयत्नों में अपना आशीर्वाद दे। हमारी ग़लतियाँ इष्ट नहीं थीं बल्कि इस लिए हमने ग़लतियाँ कीं कि हम मर्त्य जीव हैं और हम से बुराई, पाप और वे सब अपराध होना स्वाभाविक हैं जो एक मर्त्य जीव करता है . . . ."

इसके बाद सभा के सभी सदस्यों ने खड़े होकर गौरवशाली और प्रभावशाली आवाज़ में यह गीत गाया :

"वतन मेरे प्यारे वतन
मेरी जिंदगी तुझ पर कुर्बान
ऐ आज़ादियों की हसीं सरज़मीं
तेरे बस तेरे गीत गाता हूँ मैं
वतन मेरे प्यारे वतन"

"अब तुम्हारा क्या कार्यक्रम है?" कार्डोज़ो ने गिडियन से पूछा।

"घर जाऊँगा।"

"घर छोड़े हुए तुम्हें काफी दिन हो गये हैं, है ना?"

"हाँ, बहुत दिन हो गये हैं," गिडियन ने मुस्कराकर कहा। "काले लोगों को घर की जुदाई बहुत दुखदाई होती है फ्रान्सिस। पुराने ज़माने में हब्शी नदी के उस पार लेजाकर बेच दिया जाता था, और उनके लिए वह मार डालने से भी अधिक दुखदाई होता था। मैं घर जाने के लिए व्याकुल हूँ।"

"और उसके बाद ?"

"उसके बारे में मैं अभी सोच रहा हूँ," गिडियन ने गंभीरता से कहा। हमारे यहाँ के लोग जमीन की जातियाँ समझते हैं। थोड़ी रूई उगा लेते हैं और थोड़ा अन्न भी उगा लेते हैं, अधिक नहीं; फिलहाल तो वे कार्वेल की जमीन पर रहते हैं, पर वहाँ हमेशा के लिए नहीं रह सकते। मैंने दफ्तर में जाकर मालूम किया था। कार्वेल के हाथों से वह जमीन जाती रही थी, क्योंकि उस पर कर्जा चढ़ा हुआ था। इसलिए उसने उसे कुर्क करा दिया और कर्ज़दार उसे इसलिए खो बैठे कि वे कर नहीं दे सकते थे। और एक दिन वह भी आने वाला है जब उन्हें भी वहाँ से निकाल दिया जायगा, और ज़मीन नीलाम कर दी जायगी, तब भला हमारे लोग कहाँ जायेंगे ?"

"वहाँ जहाँ पर और दूसरे काले लोग जो भूमिहीन, बेघरबार और भूखे हैं, यही सबसे बड़ी समस्या है गिडियन ! जो हमारे सामने है।"

"हो सकता है मैं इसके बारे में कुछ कर सकूँ। अधिक तो नहीं, हाँ इतना तो उन्हें बता ही सकता हूँ कि वे थोड़ी सी ज़मीन कैसे खरीद सकते हैं। वैसे मुझे इसके बारे में भी बहुत विश्वास नहीं है। संभव है मैं उन्हें कोई मार्ग बता सकूँ और शायद न भी बता सकूँ। मुझे पता नहीं है, लेकिन फिर भी मैं घर जाकर प्रयत्न करूँगा।"

"इससे कुछ लोगों का भला भले ही हो जाय, पर इससे हमारी समस्या का सही हल नहीं होगा।"

"यह मैं जानता हूँ।"

"गिडियन, तुमने कभी राजनीति के बारे में भी कुछ सोचा है ?"

"वह क्या है ?"

कार्डोज़ो ने मुस्कराते हुए और कुछ अनिश्चय के भाव से गिडियन को अपनी पहली मुलाकात की याद दिलाई। "मैं तभी से यह समझने लगा था," उसने कहा, "कि मुझे तुम जैसे लोगों पर विश्वास करना ही पड़ेगा।"

"मुझ-जैसे लोगों पर ही क्यों ?"

"क्योंकि कुछ विरोधी अल्पमतों को छोड़कर इस सारे राज्य का, बल्कि सारे

दक्षिणी प्रदेश का एक ही भविष्य है और वह है अपने परिश्रम के बल पर जीवित रहना। तुमने ऐसा किया है और दूसरे सैकड़ों लोगों ने भी ऐसा ही किया है। हम लोग एक मत नहीं हैं, बहुत से विषयों में हमारी राय में जमीन आसमान का फर्क होता है। तुम यद्यपि बड़े सज्जन हो फिर भी हिंसा का प्रयोग करते हो और मैं इसका विरोधी हूँ। फिर भी तुममें ऐसी कई विशेषताएँ हैं जो मुझ में नहीं हैं, तुममें महान् शक्ति है, महान् गुण हैं और मुझ में उनका अभाव है। भला इसका उपयोग तुम कैसे करोगे ?"

"यदि ऐसा है," गिडियन ने मुस्कराते हुए कहा, "तो मुमकिन है भी और न भी हो, मैं निश्चय से नहीं कह सकता, मैं इस पर सोचना चाहता हूँ। कुछ सीखना चाहता हूँ। फ्रांसिस, मैं अज्ञान हूँ, यदि मैं तीन महीने पहले ही यह जान जाता कि मैं कितना अज्ञान हूँ तो तभी इसे दूर कर लेता।"

"गिडियन, जाने का फैसला करने के पहले थोड़ा विचार जरूर कर लेना। कुछ ही दिनों में इस राज्य के जनवादी प्रतिनिधियों की सभा होने वाली है। मैं भी उसमें भाग लेने वाला हूँ। जरा इसके बारे में तो सोचो गिडियन, अब्राहम-लिंकन की पार्टी यहाँ आने वाली है, वही हमारे राज्य का शासन करने वाली है। हमें मालूम है और हमने सभा में वोटों का परिणाम भी देखा है। इसका मतलब है ऊपर से नीचे तक की सारी विधान सभा, सारा सरकारी ढाँचा, प्रतिनिधि, सिनेटर सभी लोग उसमें होंगे। गिडियन तुम तो इस सभा में शुरू से ही रहे हो और हमारे विधान का चाहे वह एक छोटा-सा भाग ही क्यों न हो तुम्हारे ही हाथों बना है। देखलो अभी तुम्हारे लिए मौका है। तुम इन कानूनों को लागू करवा सकते हो।"

"वह कैसे हो सकता है ?" गिडियन ने धीरे से कहा।

"हममें से कुछ लोगों की राय है कि तुम स्टेट सिनेट के उम्मीदवार हो जाओ।"

गिडियन ने अपना सिर हिला दिया।

"क्यों नहीं ?"

"मैं यह काम नहीं कर सकता," गिडियन ने कहा।

"क्या तुम्हें डर लगता है ?"

"नहीं, मुझे अब किसी तरह का डर नहीं है," गिडियन ने मुस्कराकर कहा। "पर मुझ से काम नहीं होगा—मैं जानता हूँ मैं कितने पानी में हूँ। शायद साल भर में या पाँच साल में ऐसा संभव हो जाय पर आज नहीं। मैं अभी इस काम के योग्य नहीं हूँ, फ्रांसिस !"

"तुम उन कई लोगों से अधिक योग्य हो जो वहाँ प्रतिनिधि होकर जायेंगे।"

"हो सकता है," गिडियन ने कंधे सिकोड़ कर कहा।

"तो फिर तुम इस पर सोचने वाले हो ना ?"

"नहीं, अभी तो मैं घर जा रहा हूँ।"

"और अगर मैं कहूँ कि गलती कर रहे हो, गिडियन !"

"मुझे वही करना है जिसे मैं खुद ठीक समझता हूँ।"

"तब तुम से बहस करने का कोई फायदा नहीं है ?" कार्डोजो ने निष्कर्ष निकाल लिया।

"ठीक ही कहते हो, कोई फ़ायदा नहीं।"

"मुझे अफसोस है।" कार्डोजो ने मैत्री भाव से कहा।

दोनों ने हाथ मिलाये और एक क्षण बाद कार्डोजो ने कहा, "तुमसे मिल कर मुझे अनुभव हुआ था कि एक अच्छी बात हुई।"

"वह कैसे साहब ?"

"हो सकता है, मैं भी कुछ दिन में घर चला जाऊँ।"

जब गिडियन के घर जाने का समय आया तो श्रीमती कार्टर बिना किसी संकोच व लज्जा के खूब रोई। उन्होंने गिडियन को अपनी बाहों में दबा लिया और उसका मुँह चूम लिया। "अब जब भी तुम चार्ल्सटन आओगे हमारे ही साथ रहना, गिडियन !" उन्होंने बड़े ढोंग-दिखावे का प्रदर्शन किया। उसके लिए खाने का एक डिब्बा तैयार किया। कार्टर ने रैचल के लिए एक जोड़ा काले बटनों वाले जूतों का तैयार किया था। गिडियन उनके दाम देना चाहता था। "यह तो ज़रासी भेंट है गिडियन बेटा !" दूसरा उपहार था बाइबिल पुस्तक। "यह हार्दिक संतोष के लिए है।" कार्टर ने कहा, "तुम बड़े अच्छे

लड़के हो, गिडियन ! लेकिन खुदा को हमेशा याद रखना ।" गिडियन को अनुभव हुआ कि उसके जाने के बाद वे लोग कितने दुखी और व्याकुल होंगे। उन्होंने उसके लिए बड़ा भोज तैयार किया। भुनी हुई मुर्गी, भुनी हुई मछली, गरम गरम रोटी, सब्जी वगैरह। आस-पड़ोस के लोग एक के बाद दूसरा गिडियन को बिदाई देने आये और कुछ देर में सारा मकान भर गया। गिडियन न जानता था कि यह सब हो जायगा। वे सभी उससे हाथ मिलाना चाहते थे, और आँसू तो इस तरह बहा रहे थे कि किसी मुर्दे पर भी न बहाते होंगे। गिडियन के लिए तो विधान और विधान-सभा ही सब कुछ था, गर्व से रोते हुए और हंसते हुए लोगों से उसका अब तक सम्बन्ध ही न था......

एण्डरसन क्ले के साथ उसे एक घण्टा बिताना पड़ा, एण्डरसन क्ले ने कहा, "गिडियन मैं दूसरों की भांति खुशी और "हाले लुजा" से पागल नहीं हूँ; यह तो केवल प्रारम्भ है। फर्ज करो, सब कुछ नष्ट हो जाय, तो हम फिर से प्रारम्भ करेंगे। हम में से कुछ न कुछ लोग तो इधर-उधर रहेंगे ही, हम एक दूसरे से सम्बन्ध बनाये रखेंगे।"

"हाँ हाँ, हम एक दूसरे से सम्बन्ध क़ायम रखेंगे।" गिडियन ने उस ऊंचे, पतले-दुबले लाल चेहरे के व्यक्ति से हाथ मिलाते हुए सिर हिलाया।

लेकिन चीज़ें पहले से ही उसके आगे पीछे हो रही थीं। वह वहाँ से चला आया लेकिन यह छोटा सा संसार जहाँ वह १५ हफ्ते तक रहा था, अब उथल-पुथल और परिवर्तनों से दो-चार था। जब वह अपनी किताबों का भारी पुलंदा बाँध रहा था और थैले में अपने कपड़े जमा रहा था तो उसे बड़ा एकान्त अनुभव हो रहा था, वह अपने कुटुम्बियों और लोगों से मिलने को बेचैन हुआ जा रहा था। हाँ, अब वह कार्वेल पैदल चल कर नहीं जा रहा था, उसके पास रेल का टिकट पहले से मौजूद था। इस समय कुछ अंश में उसे उस काले आदमी से ईर्ष्या हो रही थी जो बड़े लंबे-लंबे डग भर कर १०० मील चला था और घर से चार्ल्सटन तक आया था।

क्या कार्वेल में अब तक कोई परिवर्तन नहीं हुआ था ? जिस बूढ़े काले आदमी ने गिडियन को अपनी खच्चरगाड़ी में बैठाकर आखिरी बीस मील

तै किये थे उसे तो सभा के बारे में कुछ पता ही नहीं था, चार्ल्सटन में भूकंप आ रहा था, महान् घटनाएँ घट रहीं थीं जिनका गिडियन भी एक भाग था, पर वह बूढ़ा इन सबके बारे में अंधकार में ही था। "सभा? जी नहीं मैंने तो कभी इसका नाम भी नहीं सुना है—" और जब बूढ़े ने गिडियन को अपने देहात व उस प्रदेश की खबरें सुनाईं तो वे वही पुरानी खबरें थीं। जन्म, मृत्यु, देहाती जीवन के शांतिपूर्ण और हिंसात्मक उपद्रव जो छोटे-छोटे गुप्त ज्वालामुखी की भाँति फूट पड़े थे।

"श्रीमती बुलर का लड़का क़स्बे में घूमता-फिरता था। पाँच गोरों ने उसे पकड़ लिया, लाठियों से पीटा और फिर एक पेड़ पर उसे फांसी लगा दी।"

"उसने क्या किया था?"

"जहाँ तक मैं जानता हूँ कुछ भी नहीं, सिर्फ घूमा-फिरा था।" बूढ़े ने गिडियन से कहा कि दलदली प्रदेश में रेल की पटरी बनाई जा रही है और दल-दल के बिलकुल बीच से वे लोग एक पुल बाँधने वाले हैं।

"वे लोग मजदूरों को काम पर लगा रहे हैं और उन्हें एक डालर रोज़ मजूरी देते हैं।"

"काले आदमियों को एक डालर रोजाना?" गिडियन को आश्चर्य हुआ वह सही बात जानना चाहता था।

"हाँ, एक डालर रोजाना, यहाँ येंकी लोग यह सड़क बनारहे हैं।" और कार्वेल में क्या हो रहा है गिडियन ने उससे पूछा। उसने उत्तर दिया कि वह गत वर्ष से कार्वेल तक नहीं गया, और न उसे कोई जानकारी है। "तुम क्या सुन रहे हो? तुम क्या चाहते हो, नौजवान क्या करना चाहते हो?" बूढ़े ने उसे भाँपने की कोशिश करते हुए कहा। "वही जिसके लिए आप सब लोग अब तक बेचैन हैं। आप जरा ठहरिए और देखिए क्या होता है। कोई राज्य तो कायम हो नहीं जायगा मैं कहता हूँ। यही होगा कि गाय, बछड़े और हब्शी लोगों को पेट भर खाना मिल जायगा। तुम्हें और क्या चाहिए?" इस प्रकार गिडियन ने यह सब अपने दिल में रक्खा और मालूम किया कि मौसम कैसा है। छः हफ़्ते पहले कैसे था और हर हफ्ते कैसा रहता है। अब वसन्त आगई थी और बड़ी सुहानी

वसन्त। फ़सलें बोदी गई थीं। कौवे इसी प्रकार काँव-काँव कर रहे थे जैसा पहले उड़ते थे, वही एक आदमी शिकार की तलाश में था, उसकी बंदूक बग़ल में थी और उसका शिकारी कुत्ता हरी घास पर उसके आगे आगे चल रहा था।

और अब तीसरा पहर आ पहुँचा। परछाइयाँ लम्बी और थकी हुई मालूम पड़ रही थीं। गिडियन कार्वेल वापस आ गया था, कार्वेल की महान् जमीन पर स्थित सफेद मकान अपनी बुलंदियों का दूर से ही प्रदर्शन कर रहा था। सूर्य की किरणें उस पर पड़ रही थीं, एक ओर सफेद छाया पड़ रही थी तो दूसरी ओर का भाग गुलाबी और सुनहरे रंग से आच्छादित था। खच्चर अब थक गया था और धीरे-धीरे चल रहा था। "बहुत दूर तक चला है न," बूढ़े आदमी ने शिकायत की। "और मुझे वापस लौटते समय तो घने अन्धेरे में ही चलना पड़ेगा।"

हमेशा की भाँति बालक वृंद ही सबसे पहले ज़ोर से चीखता चिल्लाता हुआ दौड़ा, हर तरफ से बालक ऐसे दौड़ रहे थे मानो हरियाली में बटेरें छोड़ दी गई हों और वे दौड़ रही हों; मार्कस भी इन्हीं में था, जेफ अब बड़ा होगया था, मर्दाना चाल से चलता हुआ दिखाई दे रहा था, वह दौड़ नहीं रहा था। इसीलिए बच्चों के पीछे था। और अन्त में गिडियन रैचल को अपने बाहुपाश में लिए खड़ा था। उसके नेत्र भीग गये थे और अपने आँसुओं पर बच्चों के सामने उसे शर्म आ रही थी।

रैचल को अब गिडिलन मिल गया था, अब उसके लिए भी समय रबर की भाँति एक लचकीली चीज़ बन गया था। जिसे खींच कर लम्बा किया जा सके और यदि सिकोड़ दिया जाय तो एक छोटी-सी गाँठ में ही बँधा रहे।

ये तीन महीने कितने लम्बे थे, और रैचल ने अपने मन में यह समझ लिया था कि अब गिडियन कभी न लौटेगा।

उसकी शंकाएँ निराकार और परिवर्तनशील थीं। परछाईं की भाँति उनका अस्तित्व भी अज्ञान था। वे पहाड़ी की चोटी से, क्षितिज से प्रारम्भ होकर सारी दुनिया में फैले हुये थे। उसके लिए हर चीज़ का कार्वेल ही प्रारम्भ था और वही अन्त; क्योंकि वह कहीं और कभी गई ही न थी। उसकी माँ उसे वर्जीनिया से

लाई थी और चार्ल्सटन में नीलाम कर दिया था। उस समय वह दुधमुँही बच्ची थी और बयालीस डॉलर में बिक गई थी। यही थी रैचल की स्मृति जो कार्वेल से प्रारम्भ हुई थी और कहीं और गई ही न थी। एक बार एक नवयुवक, जिसके गाल सुर्ख थे, नीली आँखें और भूरे सुनहले बाल थे, गंदी नीली वर्दी पहने, काले घोड़े पर सवार हो थकी हुई एक लम्बी पंक्ति के साथ कार्वेल के मैदानों में आया था,—उसने कहीं यैंकियों को जिंदगी में पहली बार देखा था। नवयुवक चिल्ला कर कह रहा था, "लैसी, तुमने आखिरी बार विद्रोहियों को कब देखा ?"

वह उसके उच्चारणों को न समझ सकी क्योंकि वह न्यू इंग्लैण्ड में नाक से बोले जानेवाले उच्चारण थे। मार्कस भयभीत हो उसके लँहगे के पीछे दुबक गया और रैचल को सहसा इस भय ने घेर लिया, कि कहीं ये लोग मार्कस को ले न भागें, वह वहाँ से भाग आई और यैंकी लोग बाद में जब वह लौटी तो जा चुके थे। जैसे-जैसे समय बीतता गया और यैंकी वहाँ आने लगे, विद्रोही-सेनाएँ भी उधर से गुजरीं, युद्ध की बाढ़ कार्वेल से पहले एक तरफ से फिर दूसरी तरफ से टकराई। उस बाढ़ के एक रेले में गिडियन और हैनिबाल वाशिंगटन और दूसरे सब बह गये थे,—उन्होंने सेना में भर्ती होकर यैंकियों की बन्दूकें उठाईं और अपनी मुक्ति के लिए संघर्ष किया। जम्हाइयाँ लेते हुए उस बड़े और रहस्यमय संसार के पेट ने उन लोगों को निगल लिया, और 'रैचल' उन दो बच्चों के साथ अकेली रह गई और यही आशा लगाये रही कि वे कभी तो लौटेंगे। लेकिन गिडियन सूर्योदय व सूर्यास्त की भाँति विशाल और निश्चित था। जब दूसरी स्त्रियाँ रोतीं तो रैचल अपनी आँखों में कभी आँसू तक न लाती और अपने आप से कहती, "गिडियन ने कहा था कि जरूर वापस आयेगा।" उसका यह विश्वास व श्रद्धा चाहे कैसी ही क्यों न हो उससे उसकी शंकाएँ शांत न हुईं। यदि गिडियन जाता रहा तो उसके लिए सारा संसार ही समाप्त हो जायगा। दूसरी स्त्रियाँ ऐसा न करती थीं, वे दूसरों को पाप पूर्ण ढंग से अपना शरीर अर्पण कर देती थीं। इस प्रकार की घटनाएँ, अकेलापन और इच्छाएँ उसे भी ऐसा ही करने को उकसातीं, परन्तु रैचल अपनी कल्पना से एक ऐसी स्थिति तैयार कर लेती जहाँ

उसे अनुभव होता कि वह गिडियन के साथ अन्याय कर रही है, उसे धोखा दे रही है और ऐसा सोचते ही उसे स्थिति का सारा अस्पष्ट आकार लुप्त हो जाता और वह मुस्करा देती, क्योंकि वह गिडियन थी और गिडियन वह। दोनों अभिन्न हृदय थे, दो शरीर किन्तु उनकी आत्मा एक थी। यहाँ तक कि जब उनका विवाह हुआ तो वे रात में भाई पीटर के यहाँ गुप्त धार्मिक रीति करवाने गये थे, जबकि बहुत से स्त्री-पुरुष विवाह को एक क्षणिक चीज समझते थे,—एक अस्थायी कराननामा जो एक दिन, एक मास या एक वर्ष तक जारी रह सके। वे विवाह को ईश्वर के सामने किया हुआ पवित्र करारनामा नहीं बल्कि उसे एक झिलमिलाता हुआ क्षणिक सुख समझते थे जो उनके बिकने, व्यापार करने या भ्रष्ट करने के पहिले किया जाता था। इसलिए वे विवाह के बिना ही एक-दूसरे को अपना शरीर अर्पित कर देते थे। फिर भी रैचल और गिडियन ने एक-दूसरे के प्रति शपथ ली थी और विवाह किया था।

एक प्रकार से वह सुखी थी; क्योंकि लोग उसका सत्कार करते थे और अच्छी स्त्रियों के लिए उसका उदाहरण देते थे। 'रैचल की भाँति' अच्छी स्त्री। यदि बुलबुल अच्छा गाती थी तो कहा जाता था वह रैचल की भाँति गाती है। वह अपने पति को भली भाँति जानती थी; जब भगवान् ने उसे गिडियन-जैसा पति प्रदान किया है तो वह स्वयं मुस्करा रहा था, वह यह जानती थी। जब वह उसे छोड़कर युद्ध में चला गया तो उसकी विपदाएँ बढ़ गईं, पर वह भी उसे सह्य था क्योंकि गिडियन-जैसा पति उसे मिला था, और वह उसे पहचानती थी, खूब समझती थी। उन विपदाओं को अपने इस सुख का ही एक भाग समझती थी। उसकी समझ गिडियन से भिन्न थी। बचपन में उसे और बच्चों ही की तरह सिखाया गया था कि वृक्षों की शाखाएँ हिलती हैं और हवा चलती है, परन्तु जब गिडियन ने उसे बताया कि ऐसा नहीं होता; इसका उल्टा सही है तो वह मान गई क्योंकि गिडियन ने ऐसा कहा था। गिडियन के सामने 'क्यों' हमेशा रहता था, वह बिना कारण किसी की चीज़ के अस्तित्व को मानने से इन्कार करता था। पर रैचल के अन्दर गर्म खून की हरकत ही कारण व विवेक का काम देती थी। उसके गहरे, सशक्त विचार उसे हर बात जानने में सहायता देते थे और कभी-कभी तो उसका

ज्ञान विचित्र तौर पर सही भी निकल आता था। उसे चार्ल्सटन, सभा, नये संसार का निर्माणादि के बारे में सोचने की कोई जरूर न थी कि जो आदमी वहाँ जा रहा है बिल्कुल बदल जायगा। आवश्यकता नहीं थी उसे यह भी सोचने की। "मेरी जनता को जाने दो" नामक गीत का अर्थ उसके लिए केवल यही था कि गिडियन उसका ही रहे, उसके बच्चे सदा जिन्दा रहें, फिर भी गिडियन की उसी प्रकार प्रतीक्षा करती थी जिस प्रकार क्षितिज सूर्य के प्रकाश की प्रतीक्षा करता है। जिन्दगी में पहली बार गिडियन ने उसे चार्ल्सटन से पत्र लिखे थे और शुरू में वह उन्हें भाई पीटर से या जेम्स एलेन्बी से पढ़वाया करती थी। इस निरक्षरता की शर्म ने उसे पढ़ना-लिखना सीखने को विवश कर दिया और वह दूसरे स्त्री-पुरुषों के साथ रात को छोटे से केबिन में बैठकर पढ़ती थी और एलेन्बी उसे उसी प्रकार पढ़ाता था जैसे वह दिन में बच्चों को पढ़ाया करता था; पर उसने धीरे धीरे पढ़ना सीख लिया, उसके सिर में दर्द होने लगता था। गिडियन उससे दूर, अधिक दूर होता गया...

और फिर वह वापस आ गया और उसे उसने अपने बाहुपाश में ले लिया और अब वह पहले से कहीं अधिक यह समझ गई कि 'मुक्ति बड़ी कठिनाई से प्राप्त होती है' का क्या अर्थ होता है।

गिडियन के आने के दूसरे दिन इतवार था, और भाई पीटर ने धूप में ही एक सभा मैदान में बुली ली। अपनी जोरदार आवाज़ में लोगों ने गाया:

खुदा, ऐ खुदा, मेरे अच्छे खुदा !
मेरा हाथ लें और बन रहनुमा !!

भाई पीटर ने ईसा की पुस्तक खोली और पढ़ा,—सुनो, देखो खुदा अपना शक्तिशाली हाथ लेकर संसार में उतरेगा और उसका बाजू ही उसके लिए शासन करेगा; देखो उसका प्रतिफल उसी के साथ है और उसका काम उसी के सामने। वह अपनी भेड़ों को उसी तरह पाले-पोसेगा जैसे एक गडरिया पालता है, वह अपनी बाजुओं में मैमनों को भरकर चला करेगा और उसे अपने दिल में जगह देगा और उनका निर्देशन करेगा जो छोटों के साथ हैं। "आमीन," लोगों ने अपने सिर हिलाये। बालक वृन्द हिला-घूमा और एक दूसरे के बाल खींचने

लगा। कुत्तों की ओर देख-देख कर छू-छू करता। गिडियन रैचल, जेफ़, मार्कस और जेनी के साथ बैठा हुआ था पर रैचल ने उसे घास पर नहीं बैठने दिया क्योंकि वह अपने चार्ल्सटन के बढ़िया वस्त्र पहने था; उसके नीचे एक कपड़ा बिछा दिया,—सब लोगों ने उसकी ओर देखा और उसके व्यक्तित्व से प्रभावित हो उन्होंने एक गौरव का अनुभव किया। "तुम भी कहो आमीन," लोगों ने सिर हिलाकर कहा। जेफ़ बार-बार उसी की ओर देख रहा था, जहाँ अंधी लड़की एलेन जोन्स मि० एलेन्बी के साथ बैठी थी, इसे देखकर गिडियन ने त्यौरियाँ चढ़ा लीं। मैरियन जेफरसन की ओर छोटी लड़की रोने लगी और उसने उसकी ओर झुकते हुए कहा, "चुप, चुप होजा। अब!" "हाले लुजाह," लोगों ने कहा और आगे-पीछे झूमने लगे। भाई पीटर ने कहा :

"आज मैं आपके सामने कोई धार्मिक उपदेश नहीं दूँगा क्योंकि भाई गिडियन अब फिर हममें मौजूद हैं,—खुदा ने हमें मुक्ति का पात्र समझा, उसने हमारी प्रार्थना सुन ली, उसने हमें इस जमीन के, जो दूध और शहद की भाँति उपजाऊ है, योग्य समझा और हमें यह वरदान दिया; जबकि दूसरे काले लोंगो.को वह न खाने को देता है न बसने को घरबार ही देता है। खुदा ने हमें वोटिंग का अधिकार दिया, हमें इसके योग्य समझा और उसने भाई गिडियन का उस सुदूर स्थान चार्ल्सटन में भी निर्देशन किया। यह कैसे हो सका? भला भाई गिडियन उन बड़े-बड़े ऊँचे लोगों के साथ सभा में कैसे बैठे,—खुदा ने उन्हें यह सम्मान प्रदान किया, उसी प्रकार जिस प्रकार कि बादशाह दाऊद को किया था :

"आमीन," लोगों ने कहा।

"भाई गिडियन वापस लौट आये हैं और आज मेरे उपदेश के बजाय वह आपके सामने भाषण करेंगे। वह हमें बतायेंगे कि यह सब कैसे हुआ। खड़े हो जाओ भाई गिडियन! यहाँ आ जाओ ताकि सारे लोग तुम्हें देख सकें।"

इस प्रकार गिडियन खड़ा हुआ और उसने भाषण दिया। जितने सरल ढंग से वह कह सकता था उसने उन्हें सब कुछ बताया,—वह कैसे पैदल चलकर चार्ल्सटन गया; उसके भय, उसने कैसे जहाज़ पर कुलीगीरी की, वह कैसे कार्टर के यहाँ रहने लगा और किस प्रकार अंत में वह सभा में जाकर

बैठा। आज पहली बार वह वोटिंग का अर्थ उन्हें समझा सका, और कांग्रेस द्वारा निर्धारित नीति का क्या अर्थ है, और अब जबकि राज्य का विधान बन चुका है पुर्ननिर्माण की प्रक्रिया किस प्रकार आगे चलेगी इन सब बातों को उसने उन्हें समझा दिया। एक-एक करके उसने उनके सामने उन सब कानूनों की रूप-रेखा खींच दी जो विधान में मिला लिये गये थे। पर समझाते समय साथ-ही-साथ वह यह भी स्पष्टतया बताता गया कि एक कानून के विधान से मिलाये जाने और उसे व्यावहारिक रूप देने में कितना अन्तर होता है। विधान में कहा गया था कि दक्षिणी केरोलिना के प्रदेश में शिक्षा सार्वभौमिक कर दी जायगी, लेकिन लागू होने से पहले पैसों की ज़रूरत होगी, शिक्षकों को ट्रेण्ड करना होगा पाठशालाएँ बनानी पड़ेंगी,—और जब तक यह कार्य समाप्त न हो तब तक उन्हें जैसे सम्भव हो स्वयं प्रयत्न करके पढ़ना होगा। उसने यह भी बताया कि जातीय भेद-भाव के उन्मूलन पर पास किया गया कानून उसे तुरन्त ही निर्मूल नहीं कर करता, ऐसा करने के लिए तो कई वर्ष लगेंगे।

"और हमारा क्या होगा,—हम लोगों का जो यहाँ रहते हैं?" गिडियन ने कहा। "हम भविष्य में कहाँ होंगे? मैंने इसके लिए इधर-उधर दौड़-धूप करके एक बात मालूम की है। डडले कार्वेल के हाथों से यह ज़मीन जा चुकी है। जिस व्यक्ति के पास यह थी उसने भी लगान के डर से इसे छोड़ दिया है। इसका मतलब है कि आज या कल यह ज़मीन नीलाम पर चढ़ा दी जायगी और जो भी सबसे ज्यादा दाम लगा देगा उसे दे दी जायगी। अगर हम उस समय के पहले ही कुछ नहीं करते तो हम यहाँ से निकाल दिये जायेंगे। मैं नहीं जानता आप लोग क्या करनेवाले हैं। मैं इस पर काफी सोच-विचार कर चुका हूँ, और मैंने तो यही निष्कर्ष निकाला है कि हम चाहे जो करें सबसे पहली ज़रूरी चीज़ हमारे लिये पैसा है।

और वह पैसा हम कहाँ से ला सकते हैं यह मैं अब भी नहीं जानता। लेकिन इससे हमें निराश नहीं होना चाहिए। निराशा का कारण तो अब मर चुका है और ग़ायब हो चुका है। अब तो एक उज्ज्वल नया भविष्य हमारे सामने है, उज्ज्वल नया भविष्य उदय हो रहा है।"

यहाँ किसी प्रकार की जल्दी नहीं थी और न वह समय का अभाव था जो गिडियन ने चार्ल्सटन में अनुभव किया था। सूर्यास्त होता और उदय हो जाता। उसने अपने उम्दा कपड़े उतार कर रख दिये और पुराने कपड़े पहन लिये। एक रोगी सुअरिया बच्चा देने वाली थी और इसी कारण उसे रात भर खलिहान में रहना पड़ा। विभेद अब उतने भयानक और घबड़ा देने वाले नहीं थे; और गुलामों की झोंपड़ियाँ जो उसकी वापसी के समय बहुत डरावनी लग रही थीं धीरे-धीरे वैसी ही साधारण होती गईं जैसी पहले थीं। अब वह पुराना और जाना पहचाना दृश्य बन गया।

रातों को वह बत्ती की रोशनी में बैठकर ज़ोर-ज़ोर से पढ़ा करता था। मार्कस, जेफ़, जैनी और रैचल उसे पढ़ते हुए सुनते थे। बहुधा ऐसा होता था कि एलेन्बी एलेन जोन्स को लिए आ जाते, कभी भाई पीटर चले आते और कभी कोई और लोग आ जाते। वह उन्हें ह्विटमैन और इमरसन की कविताएँ पढ़कर सुनाता, बूढ़े जॉन ब्राउन के झंकारते हुए अंतिम शब्द पढ़ता, और जॉन ग्रीनलीफ़ ह्विटियर की कविताएँ पढ़कर सुनाता। कविता उनकी कल्पना-शक्ति को छू लेती और उन्हें कल्पना के समुद्र में तैराती थी और फिर गिडियन भी उन्हें अच्छे ढंग से पढ़कर सुनाता था। वे लय और सुर के साथ झूमने लगते थे और तालियाँ बजाते थे। जब वह पढ़ता तो जेफ़ उसी की ओर देखता रहता और गिडियन सोचता कि वह किसी दिन उससे पूछेगा कि उन काली आँखों और उन मूर्खतापूर्ण चेहरों में क्या था। मार्कस बड़ा लापरवाह था और उसने एलेन्बी पर अपनी बुद्धिमत्ता और चंचलता की धाक क़ायम कर दी थी। यह सब एक विराम था, एक विश्रांतिकाल। यह वह समय था जब गिडियन की व्याकुलता उसके काम में बाधक सिद्ध हुई थी। भाई पीटर ने उससे कहा, "वह वक्त याद करो गिडियन, जब मैंने कहा था अपने आपको पूरी तर भर लो, उसी प्रकार जैसे बाल्टी अपने को कुएँ के ठण्डे निर्मल जल से भर लेती है।"

"हाँ मुझे वह याद है," गिडियन ने सिर हिलाते हुए कहा।

"तुम चार्ल्सटन गये, वहाँ खुदा ने शक्ति दी और तुम सफल हुये,— और अब वापस लौटने पर क्या तुम जनता के प्रति अपना कोई कर्त्तव्य नहीं

समझते ?"

"यह सच नहीं है," गिडियन ने कहा।

"खुदा से मुँह मोड़ो तो खुदा भी तुमसे मुँह मोड़ लेता है गिडियन !" भाई पीटर ने बड़े सोच-विचार और दुखी भाव से कहा, "हाँ तुमने यही किया है गिडियन—"

"नहीं—नहीं, यही सब कुछ नहीं है। इससे अधिक भी कुछ है। भाई पीटर ! मैं चीज़ों को उसी ढंग से देखता रहा हूँ जिस ढंग से मैं उन्हें देख सकूँ और उन्हें समझ सकूँ। मैंने लोगों को जंजीरों में जकड़ा हुआ देखा है और वे जंजीरें उन्हीं आदमियों ने तोड़ी हैं न कि खुदा ने। मैंने बुरे लोगों को देखा है और मैंने उदासीन लोगों को अच्छे उद्देश्य के लिए बंदूक उठाते भी देखा है क्योंकि अच्छे आदमियों ने अपना मार्ग अपनाया था और खून और कष्ट से कुछ-न-कुछ हुआ ही।"

"और मुक्ति, गिडियन ?"

" हो सकता है मुक्ति को भी अपने ही ढंग से देखता हूँ और वह है हर चीज़ में सत्य जो स्कूलों में, अच्छे क़ानूनों में, अच्छे मकानों के निर्माण में, झोंपड़ों में नहीं जहाँ हम रहते हैं, बल्कि हर जगह मौजूद है।"

और रात को रैचल बड़ी व्याकुल हो उसके कान में कहती, "गिडियन ?"

"क्या है ?"

"बताओ तुम मुझ से प्रेम करते हो न, गिडियन ?"

"और मैं किससे प्रेम कर सकता हूँ ?"

"यह हो क्या गया है गिडियन, यह तबदीली तुममें कहाँ से आ गई ? बातचीत भी अजीब ढंग से करते हो और काम भी,—हमारा तुम्हारा क्या होने वाला है ?

"कुछ नहीं प्यारी, कुछ नहीं।"

"जल्द ही तुम फिर चले जाओगे, तुम चले जाओगे, गिडियन !"

"नहीं।"

"मुँह से कुछ और दिल में कुछ और।"

"नहीं, नहीं," गिडियन ने उसे फिर विश्वास दिलाया और कैप होल्टीन कार्डोज़ो के यहाँ से एक खत लाया जिसमें लिखा था, "क्या तुमने उस बात पर ग़ौर किया, गिडियन ? जबकि सारी पृथ्वी हिल रही है, तुम वहाँ बैठकर सब्ज़ी नहीं उगा सकते।"

एक दिन तीसरे पहर वे सब-के-सब बंडे की दीवार के सहारे टेका लिए, टाँग फैलाए उसी तरह बैठे जैसे पहले बैठा करते थे। गिडियन, भाई पीटर, हैनिबाल, वाशिंगटन, एलेन्बी, ऐंड्रयू और फर्डिनेण्ड जिन्होंने लिन्कन का नाम लिया था, घास के तिनके चबाये धूल में पैर मार रहे थे—

"लगता है बारिश होगी।"

"शायद हो जाए, जरा थोड़ी देर ठहरो।"

"पुरानी गर्द के लिए थोड़ी बारिश ही काफी होगी!"

"हाँ।"

"पश्चिम की दिशा से आ रही है।"

"और बड़े वेग से आ रही है।"

गिडियन ने कहा, "मेरी तो यही अभिलाषा है कि तुम लोग कुछ एकड़ जमीन में कपास बो दो।"

"अगर कपास बिल्कुल ही न चटके तो मुझे खुशी हो।"

"बड़ी मनहूस फसल है।"

"यह तो इस जमीन की फसल है," गिडियन ने कहा। "यह नकद फसल है और हमें नकद पैसा ही चाहिए।"

"तुम तो यही कहोगे," एलेन्बी ने कहा।

"जी हाँ, हमारा कुछ नहीं है। न जमीन है और न ये झोपड़ियाँ हैं जिनमें हम रहते हैं,—कुछ भी नहीं। अब तक तो सभी कुछ उलझा हुआ है, किसी ने दफ्तर में रेकार्ड्स नहीं खोले, किसी ने न पूछा कि यहाँ हब्शी क्या कर रहे हैं ! पहला चुनाव हुआ है। अब हमारे यहाँ नई सरकार स्थापित होगी और तब एक-एक एकड़ जमीन का हिसाब किया जायगा।"

"हम से जमीन कौन छीनेगा, गिडियन ?"

"जो कोई इसे खरीद लेगा।"

"क्या गोरा आदमी अकेला ही खेत जोत लेगा? उसे हब्शियों की तो जरूरत पड़ेगी ही।"

"हाँ उसे हब्शियों की जरूरत पड़ेगी, तुम्हें उसका भागीदार होकर काम करना पड़ेगा, उसी तरह जैसे कि युद्ध से पहले होता था। हर एकड़ में कपास बो देते और फिर हब्शी बेचारा अपने बच्चों का पेट भरने के लिए भीख माँगता फिरता। जैसे कि भाई पीटर ने कहा कि यह जमीन अब दूध और शहद की जमीन है। लेकिन क्यों? क्योंकि हम इस जमीन से अन्न उत्पन्न करते हैं, खाना उगाते हैं; क्योंकि हम बगैर नकद पैसा लिए काम करते हैं। किताब पढ़ने के लिए एक बत्ती लेना हो, नक़द चाहिए, बच्चों के लिए स्कूल की किताब लो, तो पैसा चाहिए।"

"गिडियन! क्या सरकार हब्शियों को जमीन नहीं खरीद देगी?" हैनिबाल वाशिंगटन ने पूछा।

"शायद,—लेकिन मान लीजिए सरकार ने ऐसा न किया। सरकार में हजारों आदमी हैं जो बड़े सुस्त हैं। हो सकता है उसे साल भर लग जाय, दो साल लग जायें या कुछ भी न लगे। सरकार कहेगी, यह लो जार्जिया में एक जमीन का टुकड़ा है, इस पर काम करो। लेकिन वह तो लाभदायक नहीं है। हम यहाँ रहे हैं, यही हमारी मातृभूमि है। हमें यहीं जमीन मिलनी चाहिए।"

"वह कैसे?"

"खरीद कर," गिडियन ने कहा। "काम करो, पैसा कमाओ और जमीन खरीद लो।"

एलेन्बी ने कहा, "उसमें तो बहुत पैसे लग जायेंगे, गिडियन!"

"बिल्कुल, लेकिन काम तो शुरू हो जाय। बैंक कर्ज़ देते हैं, — हाँ और हब्शियों को भी उधार पैसे देते हैं बशर्ते कि वे कुछ प्रामाणिकता देखें, हमारे इरादे उन्हें नेक लगें और हमारे पास कुछ अपना नकद पैसा भी देखें। दलदल के बीच से रेल निकाली जा रही है, वहाँ सड़क बनाने के लिए १ डॉलर रोज पर मजदूर रखे जा रहे हैं, हब्शी भी और गोरे भी। फ़र्ज करो हम वहाँ जायें और ६—७

हफ्ते तक पटरी बनाने का काम करें।"

"और फसलें?"

"वापस लौटकर फसलें काट लें।"

बड़ी देर की खामोशी तोड़ते हुए भाई पीटर ने कहा, "मर्दों को औरतों से दूर ले जाना बड़ी दुखप्रद बात है गिडियन!"

लेकिन हैनिबाल वाशिंगटन ने कहा, "गिडियन ठीक कहता है।"

"हम इस विषय में एक सभा करेंगे," गिडियन ने उनसे कहा।

लेकिन स्त्रियों के लिए तो बड़ी दुखदाई चीज थी। सोते में नहाते हुए उन्होंने रैचल की ओर देखा जो चुपचाप कपड़ों को मल-मल कर कूट रही थी। परिवर्तन कष्टदायक बात थी और अब तो परिवर्तन होते ही रहेंगे। यद्यपि परिवर्तन भी मुक्ति का एक भाग है लेकिन यह तकलीफ-दे होता है। बच्चों के लिए यह सब ठीक है, जो नंगे हो पानी में नहाते हैं, चिल्लाते हैं, हंसते हैं और रोते हैं, शर्म का तो उन्हें कभी ख्याल ही नहीं आता, लेकिन वे स्त्रियाँ तो बच्चे नहीं थीं। दलदल में मलेरिया फैल रहा था, लोग बीमार पड़-पड़ कर मर रहे थे, वहाँ एक प्रकार का जादू हो गया था। रैचल ने खामोशी से कपड़े कूटे, उन्हें निचोड़ा और जब उसने जेनी को गिरते हुए देखा तो चिल्लाई, "जेनी, जेनी, बाहर निकल आ, निकल आ।" और फिर जब दूसरी स्त्री ने अजीब ढंग से उसकी ओर देखा तो वह कुछ न बोली......

और एलेन्बी ने गिडियन से पूछा, "तो क्या तुम जेफ को भी अपने साथ ले जा रहे हो?"

"हाँ, वह भी तो अब जवान पट्ठा है।"

"मैं नहीं जाऊँगा, गिडियन!"

"क्यों?"

वे खलिहान के एक कोने में थे, जिसे एलेन्बी ने स्कूल बना रखा था। एक बड़े संदूक को उसने मेज बना लिया था, और प्रकाश छत के छीकों से अन्दर आता था। सस्ते कागजों का वहाँ एक ढेर लगा था। चारकोल की नुकीली तीलियाँ रखी थीं। सब कुछ बालकों का ही था, जिसे गिडियन न समझ सका। बच्चे अब

तक जा चुके थे लेकिन हवा में उनकी भूख और इच्छाएँ अब भी मौजूद थीं। गिडियन भी एक बार पाठ पढ़ाते समय वहाँ बैठ गया और उस बूढ़े का अकथनीय सब्र व संतोष देखा। "ये तो छोटे-छोटे जानवरों के समान हैं," उसने उस समय कहा था। "हाँ बिल्कुल, और तुम क्या समझे थे? लेकिन ये सब सीखते हैं।" उनकी उत्सुकता स्पष्ट झलकती थी और एलेन्बी एक अच्छा शांत स्वभाव का शिक्षक था।

"क्यों?" गिडियन ने यह सोचते हुए उससे पूछा कि वह अब तक जेफ़ से वह बात क्यों न कर सका।

"यह बताना कठिन है। शायद इसलिए कि वह ज्वाला की भाँति प्रज्वलित है। गिडियन जानते हो, वह अपने दिल में क्या सोचता रहता है?"

गिडियन उलझन में पड़ गया, उत्तर न दे सका।

"वह लिख-पढ़ तो सकता ही है। वह सोखते जैसा है चीजें सोख लेता है। वह तो सारी दुनिया को सोखने की ताक में है और वह भी इतनी फ़ुर्ती से कि मुझे डर लगता है। वह जानता है उसे क्या बनना चाहिए गिडियन; वह डाक्टर बनना चाहता है।"

"तुम्हें कैसे मालूम?"

"उसने मुझ से कहा था।"

"उसने मुझे तो कभी नहीं बताया," गिडियन ने कहा।

"तुमने कभी उससे पूछा था?"

गिडियन ने सिर हिला दिया और एलेन्बी ने कहना जारी रखा, "क्या तुमने कभी अपने आपको देखकर भी सवाल किये हैं गिडियन? क्या तुम उस आदमी को जानते हो जो सड़क पर पैदल चलकर चार्ल्स्टन गया था? उस बात को तो अभी बहुत दिन भी नहीं हुए, पर तुम वह नहीं हो। कभी तुम अपने आप से यह भी पूछते हो कि तुम्हें क्या हो रहा है, हम सबको और इस दुनिया को जहाँ हम रहते हैं क्या हो रहा है? जब सभा में बैठ कर तुमने परिवर्तनों की योजना बनाई तो कभी तुम्हें यह भी ख्याल आया कि परिवर्तन प्रसूति जैसी ही पीड़ा देता है?"

"जेफ़ का क्या हाल है?" गिडियन ने धीरे से पूछा।

"उसका क्या हाल होता, वह तुम्हारा लड़का है। उसे दलदल में ले जाओ वह रोज एक डॉलर कमाएगा और मैं नहीं कहता यह कोई गलत बात है। लेकिन हमें शुरूवात तो करना ही है, यहाँ तो अभी तक कोई स्कूल है नहीं। पर हाँ, वह उत्तरी प्रदेश के किसी स्कूल में जा सकता है, वहाँ मैसेचुसेट्स में स्कूल हैं वे काले लड़के को ले लेंगे, उन्हें पढ़ायेंगे और ट्रेण्ड कर देंगे—"

"मैं नहीं जानता," गिडियन ने अचम्भे से कहा।

"तुम्हारे चार्ल्सटन में कुछ दोस्त होंगे। वह कार्डोजो तुम्हें बता देगा।"

"तो उसे भेज दूँ?" गिडियन ने पूछा।

जेफ उसे देवदार के जंगलों में ले गया; उसने उसे कई चीजों के बारे में बताया जो बड़ी और छोटी थीं और उसके आस-पास थीं। "तुम्हारे पैरों के सामने से एक मेण्ढक उचकता हुआ जा रहा है।" सूर्यास्त के बारे में उसने उसे बताया, "वह देखो गुलाब की तरह वह शाखाओं में से नजर आ रहा है।" हवा तो वह स्वयं भी महसूस करती थी, "यह तो किसी के हाथ की तरह छूती हुई लगती है," उसने जेफ से कहा। पहले तो वह जैसे अपने संदेहों में लिपटी हुई थी और बाद में न जाने क्या चमत्कार हो गया। और उसे मालूम हुआ कि जेम्स जैसे व्यक्ति ने सहसा उसके जीवन में प्रवेश कर लिया; तब तक वह एक गहरी, अन्धकारमय गुफ़ा में रहती थी जहाँ न कोई रंग था न कोई प्रकाश। जेफ़ ने न कभी कोई ऐसी बात कही और न ही कोई ऐसा काम किया जिससे कि यह अंधी लड़की, जो उससे प्रेम करती थी और उसके लिए एक अति सुन्दर प्राणी थी, भयभीत हो जाती। वह उसे घास के मैदान में ले गया और वहाँ घास के फूलों का उसे अनुभव कराया। मैदान की घास उसे बताई और एक बार उसने एलेन के हाथ में जंगली बेरी को छोड़ दिया। एलेन्बी उसी झोंपड़ी में रहा करता था जो लोगों ने उसे दे रखी थी। जेफ़ वहाँ अक्सर आया करता था और जब एलेन घर का काम करती होती थी तो वह अपनी किताबें पढ़कर उसे सुनाता था, लेकिन एलेन्बी ने कभी इस पर कोई आपत्ति नहीं की। बूढ़े चाचा सेम्सन के, जो दो साल पहले मर गये थे, जेफ़ को कुछ दलदली प्रदेश के क़िस्से याद थे, वे क़िस्से चिड़ियों, जंगली पशुओं और समुद्री जंतुओं के थे जो एक-दूसरे से

बातें करते थे, बड़ी खूबसूरत जिन्दगी बिताते थे, उसने वे सभी क़िस्से एलेन जोन्स को सुना दिये। रैचल जानती थी कि जेफ़ उससे प्रेम करता है और वह उसकी भद्दी विनम्रता को भी समझती थी और यही हाल गिडियन का था। जब कभी मार्कस जेफ़ को देखकर हँस देता वह उसके एक धप्प रसीद करती थी। फिर भी उसे दुःख इस बात का था कि लड़की अंधी थी, अंधों की बहुत फिक्र रखना पड़ती है और चाहे उसे किसी तरह भी क्यों न समझो आखिर अंधी लड़की तो मर्द के लिए एक प्रकार का बोझ ही होती है; और दूसरी ओर जेफ़ अब उसी उम्र का हो गया था जिस उम्र में गिडियन ने विवाह किया था। पुरुष को स्त्री की और स्त्री को पुरुष की आवश्यकता होती है; पर उनमें एक प्रकार की समानता भी होना जरूरी है, ठीक उसी प्रकार जैसे कि संतुलन के लिए दोनों पलड़ों को बराबर और समान वज़न का रखना ज़रूरी होता है।

एलेन्बी ने रैचल से कहा, "यह जोड़ा ठीक रहेगा रैचल; मुझ पर विश्वास रखो।"

खेतों से आधे मील के अंतर पर जंगल में एक एकड़ चटियल जमीन बेकार पड़ी थी और उसमें ठूंठ खड़े हुए थे। शकरे वहाँ आकर खड़े हुए ठूंठों पर बैठते और एक दूसरे की ओर देखकर सिर हिलाते थे। काले साँप वहाँ आकर कुण्डलियाँ लपेट कर बैठे धूप खाते थे। जेफ़ एलेन को वहीं ले गया और वे गर्म रेत पर एक टूटे हुए पेड़ से टेका लगाकर बैठ गये। वहाँ वे एकांत का आश्चर्य-जनक अनुभव करने लगे। जेफ़ वहाँ घण्टों बैठा रहा और संसार को शब्दों में बाँध कर उस लड़की के सामने रखता रहा जो आँखों से नहीं देख सकती थी, आकाश में घनराशि लौट रही थी, मानो नीलकण्ठ पक्षी उड़ रहा हो,—और सहसा उसके अपने के स्वप्न एलेन के लिए चित्रों का रूप धारण करने लगे।

रफ़्ता-रफ़्ता और असाधारण रूप से उसे कुछ हो गया और इसका एक भाग यह था कि वह मित्र और जाने पहचाने लोगों के बीच रहने लगी थी। लोगों की आवाज़ें, बच्चों की हँसी, लोगों के एक-दूसरे को पुकारने की दूर से आती हुई ध्वनि उसे सुनाई पड़ती थीं। दूसरा भाग था जेफ जिसने एक बार उससे कहा, "मैं तुमसे हार्दिक प्रेम करता हूँ, एलेन।" दूसरी बार जब उसने एलेन-

अपने बाहुपाश में दबा लिया तो एलेन ने कहा, "मुझे तंग न करो जेफ़, खुदा के लिए।" और वह समझने लगा कि इस लड़की की जिंदगी में कितना परिवर्तन आ गया है। वह क्या थी और अब क्या हो गई है। यह सब उसके लिए बिल्कुल विचित्र और विशेषता लिप्त था, वह इसका कारण जानना चाहता था पर कोई ऐसा न था जिससे वह पूछ सकता, उसकी उम्र के दूसरे लड़के झाड़ियों में छिपकर नंगी लड़कियों को नहाते देखा करते थे, उनके पीछे भागा करते थे और उन्हें खींच कर घास पर डाल देते थे।

"तुम क्या करोगे?" उसने एक दम पूछा।

"जो कुछ मैं महसूस करता हूँ वही करना चाहता हूँ।"

"लेकिन क्या?"

"वही जो तुम्हारा बाप करता था।" उसने कहा, आज पहली बार उस लड़के ने उसके बाप के बारे में उससे बात की।

"क्या डॉक्टर बनना चाहते हो?" उसने पूछा। "हाँ वही," उसने जवाब दिया। उसके विचारों ने चित्रों का रूप धारण कर लिया; गाँव का डॉक्टर एक भ्रष्ट दूषित चरित्र का शराबी था, जिसकी दाढ़ी तम्बाकू से सनी रहती थी; एक बार जब एक स्त्री मर रही थी तो उसने सुना कि लोग बड़े क्रोधित हो डॉक्टरों के बारे में अनाब-शनाब बक रहे थे। उसने गिडियन से बातचीत करने का विचार किया; उसका बाप उसे इस बारे में सलाह दे सकता था, पर वह गिडियन से इस विषय में कुछ बात न कर सका, क्योंकि वह उसका बहुत आदर-सत्कार करता था। उसमें बातचीत करने का साहस न हुआ, उसने एलेन्बी से पूछा :

"यह डॉक्टर क्या होता है?"

"डाक्टर बीमारों का इलाज करता है।"

"वास्तव में क्या यही डाक्टर होता है?" कुछ मील दूर एक ग़रीब बुढ़िया रहती थी। वह जादू-टोने करके रोगियों की चिकित्सा करती थी, वह कुछ मंत्रादि पढ़ती थी और लोगों से पैसा लेकर उन्हें अच्छा कर देती थी। "क्या डॉक्टर भी वैसा ही होता है?" वह मालूम करना चाहता था।

"नहीं, नहीं वैसा नहीं, डॉक्टर तो विज्ञान जानता है, फिर रोग का कारण

जानकर उसकी चिकित्सा करता है।"

"लोगों को रोग क्यों लग जाता है?"

इस प्रकार बातचीत शुरू हुई और अब जबकि वह एलेन का हाथ पकड़े उसे जंगलों में ले जा रहा था उसने उससे कहा, वे "मुझे बाहर भेजने वाले हैं।"

"बाहर भेजने वाले हैं? कहाँ?"

"शायद उत्तरी प्रदेश में, वहाँ मैं अध्ययन करूँगा और डाक्टर बन जाऊँगा।"

इस पर उसे विश्वास न हुआ और उसने उससे नम्रतापूर्वक पूछा, जब वह चला जायगा तो यहाँ कौन रहेगा और उसने भी अनुमान लगाया कि किस प्रकार उसके जाने के बाद अंधकार फिर उसके आसपास छा जायगा। उसे ऐसा महसूस हुआ मानो यह विचार उसके दिमाग़ में पहले कभी आया ही नहीं। "मैं तुम से प्रेम करता हूँ," उसने कहा, "केवल तुमसे, तुमसे ही मुझे प्रेम है।"

"पर तुम तो जाना चाहते हो न?"

"हाँ, मैं जाना तो चाहता हूँ," उसने दयनीय भाव से कहा। "लेकिन मैं एक दिन वापस भी तो आ जाऊँगा, ज़रूर वापस आऊँगा, मैं शपथ लेता हूँ अवश्य एक दिन लौटूँगा।"

गिडियन ने इसके बारे में रैचल से तभी कहा जब कार्डोजो का जवाब उसे मिल गया। कार्डोजो ने लिखा कि जेफ़ की पढ़ाई का प्रबन्ध हो सकता है। जेफ़ को चार्ल्सटन भेज दो तो मैं अपने मित्र फ्रेडरिक डगलास को पत्र लिख दूँगा और अपने दूसरे मित्रों को भी जो उत्तरी प्रदेश में हैं पत्र लिखूँगा। फिलहाल सिर्फ २५ डॉलरों से काम चल जायगा और जब जेफ़ जहाज़ से बोस्टन जायगा तो उसके खर्चे का प्रबन्ध कार्डोजो खुद कर देगा। तब गिडियन ने ख़त रैचल को सुनाया।

"यह बोस्टन यहाँ से कितनी दूर है?"

"यही कोई शायद एक हज़ार मील होगा," गिडियन ने कहा। "लेकिन तुम यह भी समझती हो रैचल कि इसका मतलब क्या होगा? हमारा लड़का जो गुलामी के काल में पैदा हुआ अब डॉक्टरी पढ़ने बोस्टन जा रहा है।"

रैचल ने सिर हिला दिया।

"तुम यह नहीं जानतीं क्या कि मैं उसे अपने साथ रखना चाहता हूँ ?"

रैचल ने सिर हिला दिया। गिडियन ने उसे अपनी बाहों में दबा लिया और कहा, "देख रैचल, मेरी प्यारी रैचल, तुझे तो इस लड़के पर गर्व करना चाहिए। देख वह एक बड़ा आदमी बनने जा रहा है, उस पर तुझे नाज करना चाहिए, तू तो बिल्कुल बच्ची जैसी बात करती है।"

"मैं जानती हूँ," रैचल ने कहा।

× × × ×

रेल्वे का अफ़सर एक यैंकी था, लम्बा, दाढ़ीवाला, चमड़े के बूट पहने जो कीचड़ से लथपथ थे और अपने गीले वस्त्रों में था, अभी-अभी ही मलेरिया के रोगों से अच्छा हुआ था, गिडियन से कहने लगा, "तुम इन्हीं लोगों की बात करते हो न ?" "जी हाँ।" "कितने हैं ये ?" "बाईस," गिडियन ने जवाब दिया। "फावड़ा, कुल्हाड़ी और रेती। एक डालर रोजना। सात दिन का एक सप्ताह सूर्योदय से सूर्यास्त तक का दिन। पगार मंगल को मिलती है।" "यह ठीक है," गिडियन ने सिर हिला दिया। अफ़सर ने उस झोंपड़ी की ओर जहाँ पगार दी जाती थी संकेत करते हुए कहा, "वहाँ जाओ और उनके दस्तखत करवालो या अंगूठा लगवालो।"

गिडियन, ट्रूपर और फर्डिनैण्ड लिंकन लकड़ी काटने वालों के गिरोह में थे। उन्हें दलदल में छः और आठ इंच तक की गहराई में घुटनों तक कीचड़ और पानी में खड़ा होना पड़ा था और दिन भर वे अपनी दुहेरी फालों वाली कुल्हाड़ियों से लकड़ी पर प्रहार करते थे, और उसे काटते थे। बहुत से काले आदमियों के लिए, जो इन गिरोहों में शामिल थे, यह मजदूरी अपनी किस्म की पहली आजाद मजदूरी थी, जिसे करने का उन्हें अवसर प्राप्त हुआ था। जब यैंकियों की कम्पनी ने मजदूरों को काम पर लगाने का देहात के क़रीब ही दफ्तर खोला और निर्माण-कार्य के लिए काले आदमियों को भर्ती करने लगे तो स्थानीय व्यापारियों ने सिर हिला-हिला कर उसकी बुराई की और यह निष्कर्ष निकाल लिया, कि "यह तो समय नष्ट करना है। हब्शी की पीठ पर जब तक उसके मालिक के लात-जूते न पड़ें वह काम कर ही नहीं सकता।" उन्होंने कहा, "हब्शियों को एक डॉलर रोज़ाना

मजदूरी देना बड़ी निन्दनीय बात है, उन्हें इतनी मजदूरी देकर उनके दिमाग़ खराब किये जा रहे हैं, उन्हें तबाह किया जा रहा है। कभी किसी ने हब्शियों को इतनी मजूरी देते न देखा, न सुना। यैंकी अफसरों के गिरोह और इंजीनियर लोग यह सब सुनते और अपने कंधे सिकोड़ कर इसे अनसुनी कर देते, मज़दूरों को काम पर रखना जारी था। "कुछ भी हो," स्थानीय लोगों ने अपने विचार प्रकट किये, "तुम दलदल के आरपार पुल तो बाँध ही नहीं पाओगे और न उन साले यैंकियों की सेवा ही कर पाओगे।" परन्तु बड़ी विचित्र बात है कि पुल बन रहा था और काम में तरक्की हो रही थी। जब झाड़, शाखाएँ और लट्ठे सब का सफाया कर दिया गया तो इंजीनियरों ने वहाँ पत्थरों की भराई शुरू की और सड़क बनना शुरू हो गया। जब बारिश हुई और दलदल काले तारकोल, कीचड़ और सरेस के समुद्र की भाँति दिखाई देने लगी तो लोग कीचड़ में कमर-कमर तक की गहराई में खड़े रहते और टटोल-टटोल कर लट्ठे डुबाते। जब दलदल में मच्छर पैदा हो गये और मलेरिया फैला तो मज़दूरों को बुखार आने लगा और उन्हें दवाखाने भेज दिया गया। फिर मज़दूरों की कमी महसूस हुई, अधिक मज़दूरों की आवश्यकता पड़ी। वह साधारण सन्देह जो देहात के सभी लोगों के दिल में शुरू-शुरू में समा गया था कि रेल की सड़क दक्षिणी प्रदेश को बर्बाद कर देगी, अब धीरे-धीरे मिट गया था। पुराने खेत-मालिक, ओवरसियर और ग़ुलाम रखनेवालों ने समझा कि यह कोई अपशकुन है, कुछ विदेशी चीज़ हम पर थोपी जा रही है और शायद अब इस न्यू इंगलैंड का बनना अवश्यंभावी हो गया है। न्यू इंग्लैण्ड की कम्पनी ठीक उसी तरह नासमझी और बुद्धिहीनता से वहाँ रेल की सड़क बना रही थी जिस तरह कि शेरमन ने समुद्र पार करने का प्रयत्न किया था।

लेकिन काले आदमियों के लिए तो इसका अर्थ ही कुछ और था। पहली बार गिडियन ने अनुभव किया कि श्रम का जीवन और संस्कृति से क्या संबंध होता है। गुलामों की हैसियत से उसने और उसके साथी लोगों ने बरसों बिना कुछ पाये जी जान से परिश्रम किया था, उसी तरह जैसे कि एक बार खच्चर या बैल काम करता है। अब रेलवालों ने यह विज्ञापन निकाला था कि वे कुछ

पैदावार खरीदना चाहते हैं गिडियन और उसके दूसरे साथियों ने आकर अपना श्रम एक डॉलर रोज़ाना पर बेच दिया और उस श्रम से उन्हें एक कल्पना, एक स्वप्न नज़र आ रहा था, पुल, रेल की चमकती हुई फौलादी पटरियाँ और रोशनी में धड़-धड़ करती हुई रेलगाड़ी।

जब वे यहाँ से लौटेंगे तो आज़ाद मजदूरों की हैसियत से लौटेंगे, उनके पास पैसे होंगे और वे भी पैसों से कुछ खरीदेंगे और अपने पीछे वे वह शानदार चीज़ छोड़ जायेंगे जिसका उन्होंने अपने खून-पसीने से निर्माण किया था।

गिडियन यह न जानता था कि इस तरह की सड़क गुलामों से नहीं बनवाई जा सकती थी; यह जानता था कि गुलामों ने इस तरह कभी काम नही किया था चाहे उनकी पीठ पर दुर्रे ही क्यों न पड़े हों। उसके गिरोह ने लट्ठों को काट-छाँटकर रेल की पटरियों के लिए तैयार किया। दो आदमी एक-दूसरे के सामने खड़े होकर पेड़ पर कुल्हाड़ी के वार करते और आठ प्रहारों के बाद पेड़ कड़-कड़ाता हुआ धम्म से ज़मीन पर गिर जाता था। 'कड़ड़-कड़ड़' की आवाज उससे निकलती थी। वे उन लट्ठों को काटते, उन्हें तराशते, उनपर बार-बार कुल्हाड़ी चलाते और जब वह कट कर गिर पड़ता तो आठ आदमी मिलकर उसे उठाते और खच्चर गाड़ी में रख देते। मज़दूर अधनंगे बदन काम करते थे, उनका काला शरीर और मांसपेशियाँ धूप में चमकती थीं। पहले तो वे वही पुराना गुलामों का गीत गाते थे, लेकिन वह अच्छा नहीं था; उसकी ताल-लय भी अब नहीं बैठती थी, रफ़्तार बदल जाती थी, लेकिन अब इस पर किसे शोक हो सकता था। इस लिए पहले उन्होंने बिना शब्दों के ही गीत गाये, पहले शब्द बड़े सीधे और साधारण थे—"भाती नहीं है पुराने जंगल को यह कुल्हाड़ी, भाती नहीं है पुराने जंगल को यह कुल्हाड़ी—" फिर शब्द-रचना हुई और इसमें संगीत भी मिला दिया गया।

अब गिडियन के शरीर में कुछ कोमलता आ गई थी। रात को उसके सारे शरीर में पीड़ा होती थी और अब न उसे कोई इच्छा होती और न ही कोई विचार उठता था। वह अपनी झोंपड़ी की सरल खाट पर जा पड़ता और सो जाता। सोना—काम—खाना बस यही उसका काम था। अब वह अपने आप से पूछता,

"पढ़ाई कहाँ गई, आराम, किताबें, सब कुछ गायब हो गया ? तो फिर क्या इसी तरह जीवन में काम करना होगा ?" गुलामी को छोड़ कर जब वे आगे बढ़े तो सभ्यता के काल में उन्होंने प्रवेश किया; लेकिन क्या आदमी वहीं रुक गये थे ?

दिन में तीन बार खाना मिलता था, गोश्त, आलू, चावल सब अच्छा खासा था। हाँ इसमें किसी प्रकार की तबदीली नहीं होती थी। मजदूर टीन की रकाबियाँ लेकर कतार में खड़े हो जाते थे और उन रकाबियों में कफ़गीर से खाना उतार दिया जाता था। चौदह घण्टे के काम में सिर्फ़ खाने की ही छुट्टी मिलती थी। सोने के लिए लकड़ी की लम्बी-लम्बी बैरकें और फ़ौजी तम्बू थे, जिन्हें जल्दी में किसी तरह तैयार किया गया था। गिरोह नं० ४ क अफ़सर कैली ने मुख्य इंजीनियर ह्वीड से कहा, "जैसा मेरा गिरोह है ऐसे दस गिरोह मुझे और मिल जायें तो मैं नरक तक सड़क बनवा दूँ।" और ह्वीड ने, जो युद्ध के दौरान में दूसरे इंजीनियरों के साथ रहा था, जवाब दिया, "पानी जरा रोक लो तो नरक यहीं दिखाई दे जायगा।" मलेरिया एक बार फिर फैला; ह्वीड के शब्द सच्चे सिद्ध हो गये। सारा दलदली प्रदेश बीमारी और तबाही का चूल्हा बन गया। रात दिन मच्छरों के झुण्ड-के-झुण्ड हर तरफ भिनभिनाने लगे। गिडियन के साथी जार्ज राइडर को बुखार आ गया और वह चार दिन में ही खत्म हो गया। हैनिबाल वाशिंगटन और भाई पीटर उसकी लाश लेकर घर गये ताकि औरतें उसे वहीं गड़ते देख रोयें और सब्र करलें। परिस्थितियाँ चाहे कैसी ही क्यों न हों, उन्हें कीमत तो चुकानी ही पड़ी। गिडियन पत्थर भरनेवालों के गिरोह में बदल दिया गया और इसके बाद उससे बल्लियाँ बनाने का काम लिया जाने लगा। और एक रात को ज्योंही रेलगाड़ी आगे बढ़ी तो उनके कानों में उसकी सीटी की आवाज सुनाई पड़ी। दलदल का पानी सूख गया, कीचड़ भी सूख गई और तड़ख गई। गर्मी बढ़ गई लेकिन फिर भी काम करने योग्य परिस्थिति निकल आई। लकड़ी के शहतीरों पर टूटे हुए पत्थरों और कंकरों की एक तय बिछादी गई और उस पर रेल की फौलादी पटरी बिछी। इसे समझने की जब गिडियन ने कोशिश की तो उसका सिर दर्द करने लगा। हैनिबाल वाशिंगटन ने उससे एक बार पूछा, "गिडियन क्या उत्तरी प्रदेश में गोरे भी इसी तरह काम करते हैं ?"

"शायद कुछ ऐसे ही करते हों।"

"न आराम, न खेल-कूद, न पत्नी से मिलने का समय?"

'हाँ शायद।"

"क्या तुम इसे ठीक समझते हो गिडियन?"

"मैं नहीं जानता,—पर मैं मालूम करूँगा।"

यह घटना कार्वेल में उस समय घटी जब मर्द मजदूरी पर जा चुके थे। टूपर की एक चौदह वर्षीय लड़की थी और यह घटना उसी के साथ घटी थी। वह किस्सा ठीक से बयान भी न कर सकी, तोड़-तोड़कर बिना किसी क्रम के उसने बताया कि वह पुरानी तंबाकू की सड़क पर योंही घूमती हुई निकल गई,—बस घूमती हुई अपने विचारों में लीन वह जा रही थी कि दो गोरे खच्चर-गाड़ी हाँकते हुए वहाँ आ पहुँचे। उन्होंने चीखकर कहा, "ऐ, छोकरी,—इधर आ।" वह खेतों की तरफ़ दौड़ी और उन्होंने भी उसका पीछा किया। भागते-भागते वह एक झाड़ी से उलझ कर गिर पड़ी, उन्होंने उसे वहाँ से खींचकर निकाला, उसके कपड़े फाड़ डाले और उसे नंगा कर दिया और उसके साथ बलात्कार किया। उन्होंने उसे मारने की भी बातचीत की, फिर कुछ दुविधा के बाद उन्होंने उसे जिन्दा छोड़ दिया और वह नंगी, डर के मारे पागल घर की ओर दौड़ी आई।

जब टूपर ने यह किस्सा सुना तो वह खुद आपे में न रहा, उसकी पहली प्रतिक्रिया तो हिंसा व प्रतिफल की हुई। वह गोरे को मार डालना चाहता था। उसनें निश्चय किया कि वह गोरे आदमी को जरूर मारेगा। गिडियन और भाई पीटर ने उससे बहस की और उससे कहा :

"अगर तुमने ऐसा किया तो तुम्हें निसंदेह फाँसी हो जायगी।"

"तब मैं जरूर फाँसी लगवालूँगा।"

"पर उससे क्या फायदा होगा तुम्हें?"

"कुछ फायदा तो होगा ही।"

अन्त में गिडियन ने किंचित क्रोधित होकर कहा, "तुम तो मूर्खों जैसी बातें करते हो,—तुम ऐसा नहीं करोगे। सात हफ्तों से हम इस दलदल में काम करते आ रहे हैं,—किस लिए? तुम खुद अपने से पूछो टूपर—किस लिए?

एक आदमी मलेरिया के बुखार से मर गया वे उसे ले गये और लेजाकर उसे गाड़ दिया। हम कभी न रुके, न आराम किया न कभी साँस ली, स्त्री से भी न मिले। आखिर यह सब हमने किस लिए किया, तुम खुद ही सोचो?"

"किस लिए?" टूपर ने हताश हो कर पूछा।

"नई जिंदगी के लिए कमबख्त, और किस लिए। जरा समझने की कोशिश करो।"

"वास्तव में तुम बड़ी-बड़ी बातें करते हो गिडियन! बहुत बड़ी-बड़ी बातें करते हो। जाओ, चार्ल्सटन जाओ। बड़े आदमी बनते फिरो। जमीन की चर्बी खाओ। बड़े-बड़े हब्शियों और गोरों के साथ बैठो—"

"क्या मूर्खता की बातें करते हो! मैं चार्ल्सटन इस लिए गया था कि तुम लोगों ने जबरदस्ती मुझे वहाँ भेजा था—और जब मैं गया तो मैं भयभीत था, अपने को बड़ा छोटा आदमी समझता था क्योंकि वहाँ बहुत सी ऐसी चीज़ें थीं जिनसे मुझे भय लगता था और हाँ वे अब भी बाकी हैं।" उसने टूपर के गले में बाँहें डालते हुए कहा, "देखो, मेरी तरफ देखो, घटना वास्तव में बड़ी भयानक और हृदय-विदारक है, शोकप्रद और भयानक है। जरा सी बच्ची और इतना बड़ा गहरा घाव! लेकिन यह घाव भी भर जायगा टूपर, घाव लगते हैं और भर जाते हैं। वह भी इस घटना को भूल जायगी। अब लकीर पीटने से क्या फायदा? तुम अपनी चिंता करो, तुम्हारी पत्नी है; बच्चे हैं, उनकी फिक्र करो। हम यहाँ से जब काम करके लौटेंगे तो हमारे पास लगभग १००० डॉलर होंगे—सुना टूपर करीब एक हजार डॉलर हमारे पास होंगे। इतना पैसा आज तक दुनिया के सब हब्शियों के पास कुल मिलाकर भी न रहा होगा। शराबखोरी, भोग-विलास, पापपूर्ण कृत्यों आदि के लिए यह पैसा काफी है। कालिको वस्त्र, मीठी मिश्री और खुदा जाने क्या-क्या चीजें इन पैसों से खरीद सकते हैं टूपर! यह तो केवल लुभाव की बातें हैं पर मैंने अपने लोगों से बातचीत करके यह तय कर लिया है कि हम इन पैसों को अलग रखेंगे और इससे जमीन खरीदेंगे। भला सोचो तो ये अज्ञान बूढ़े हब्शी ऐसा क्यों कर रहे हैं? उन्हें भविष्य में ऐसी आशा, ऐसा विश्वास क्यों आगया?"

ट्रैपर ने तुच्छता दर्शाते हुए सिर हिला दिया।

"मैं तुम्हें बताता हूँ वे ऐसा क्यों कर रहे हैं, क्यों उन्हें भविष्य में आशा और विश्वास हो गया है। भविष्य हमारे सामने धीरे-धीरे साकार होता जा रहा है, उसी तरह जैसे कि रात धीरे-धीरे गुजरती है और सुबह हो जाती है। जैसे कि सूर्य अस्त होता है और आदमी सो नहीं सकता, तब वह अपने आप से कहता है कि 'कल' कभी न हो, हमेशा रात ही बनी रहे, अब सूर्योदय न हो और इस प्रकार वह करवटें बदलता रहता है और सारा समय एकांतवास में नींद लाने में ही बिता देता है। लेकिन अब वह समय बीत गया है—अब तो कल का होना अवश्यम्भावी है, वह जल्द ही होगा और उसका हमें पूरा विश्वास है।

"सब पुरानी बुरी, गंदी चीजें धीरे-धीरे खत्म हो रही हैं। आज हब्शी को पीटा जाता है, बेचारी हब्शी बच्ची के साथ दुर्व्यवहार होता है लेकिन ये सब चीज़ें अब ग़ायब हो रही हैं।"

गिडियन ने जेफ़ का पत्र पढ़कर रैचल को सुनाया और उसे उस स्कूल के बारे में बताया जिसमें जेफ़ पढ़ रहा था। उसे आश्चर्य हो रहा था कि उसका खुद का लड़का इतना अच्छा पत्र लिख सकता है और उसका इतना सुन्दर हस्त-लेखन है। उसने पहले खत को खुद समझा और बाद में रैचल, जेनी और मार्कस को समझाया। जब जेनी और मार्कस ने उससे पूछा कि मैसेच्युसेट्स ठीक किस जगह है तो वह उसका उचित उत्तर न दे सका सिर्फ यही कह सका कि वह स्थान यहाँ से दूर है—बहुत दूर! वहाँ यैंकी रहते हैं।

"सिर्फ यैंकी ही?"

"हाँ, मेरे ख्याल से सिर्फ यैंकी ही रहते हैं।" गिडियन ने कहा।

"यह देखो उसने उस शहर के बारे में भी लिखा है, सुनो! "वोर्सेस्टर बड़ा सुन्दर स्थान है और यहाँ अनेक लोग रहते हैं, इस जगह को यहाँ शहर कहते हैं। पहले-पहले तो यह बड़ी भयावनी लगती है, पर बाद में लोग रहते-रहते इस शहर के आदी हो जाते हैं।"

"आपको चार्ल्सटन पसन्द है?" मार्कस ने पूछा। यद्यपि उसके मस्तिष्क में चार्ल्सटन का केवल एक धुँधला-सा नक़्शा था।

"हाँ, शायद मुझे चार्ल्सटन पसन्द है," गिडियन ने अनिश्चित के भाव से कहा और फिर पढ़ने लगा :

"यहाँ प्रिसबिटेरियन फ्री एकेडमी में मेरे साथ १४ विद्यार्थी और पढ़ते हैं। सभी मेरे-जैसे काले लड़के हैं। पर उनमें से अधिकतर अनाथ हैं, जिनके माँ-बाप का कोई पता नहीं है। माननीय चार्ल्स स्मिथ और क्लाड साउथविक जो प्रिसबिटेरियन नहीं; बल्कि अद्वैतवादी हैं हमें पढ़ना-लिखना, गणित, लैटिन, इतिहास व भूगोल पढ़ाते हैं।"

"अद्वैतवादी किसे कहते हैं?"

यह गिडियन भी न जानता था। हाँ वह इतना जरूर जानता था कि भूगोल क्या है और लैटिन एक भाषा है जो सदियों पहले उन लोगों द्वारा बोली जाती थी जो किसी और देश में रहते थे। "क्या वे अब भी इस भाषा का प्रयोग करते हैं?" गिडियन निश्चयपूर्वक न बता सकता, और न ही यह बता सकता कि वे लोग जेफ़ को कहीं उसी देश में तो नहीं भेजेंगे जहाँ यह भाषा बोली जाती है। वह फिर पढ़ने लगा :

"हम लोग एक कमरे में ही पढ़ते हैं और वहीं सो जाते हैं। हमारा कमरा पादरियों के घर के पीछे है और इसे कोठरी कहा जाता है। स्त्रियों की एक समिति है जो हमारे भोजन व वस्त्रादि का प्रबन्ध करती है। हमें जो कपड़े पहनने को मिलते हैं वे बड़े साफ-सुथरे और अच्छे होते हैं, हालाँकि वे कुछ समय तक पहने गये हैं। इन कपड़ों के बदले हमें काम करना पड़ता है। हम घास काटते हैं। गिरजे की खिड़कियाँ साफ करना, झाड़ू लगाना आदि हमारा काम है और इसका १० सेंट साप्ताहिक हमें पारिश्रमिक मिलता है। मुझे आप लोगों की बहुत याद आती है; लेकिन मैं सुखी हूँ। एलेन से कहना मुझे उसकी भी बहुत याद आती है ...."

रैचल ने आंसू पोंछे; परन्तु मार्कस और जेनी तो अपने विचारों में लीन थे। उन्हें अनुभव हो रहा था मानो वे उत्तरी प्रदेश में हों और जेफ़ के साथ रह रहे हों, और उन आकर्षक बातों के बारे में जिनका उसने पत्र में उल्लेख किया था, वे तर्क-वितर्क करने लगे। "तुम समझे?" गिडियन ने कहा, "यह सब उसके

लिए कितना लाभदायक है ?"

गिडियन भी जेफ़ की भाँति सपने देख सकता था। पत्रों के द्वारा उसकी जेफ़ से अधिक घनिष्ठता हो गई। इतनी घनिष्ठता शायद उसे अपने जीवन में उससे कभी न हुई थी; एक पत्र में उसने गिडियन को लिखा, "ज़रा चार्ल्स डिकन्स की पुस्तकें पढ़िए। उन्हें पढ़ने के बाद आप में भाईचारे की भावना जाग्रत होगी और आप भले और बुरे मनुष्यों को जानने लगेंगे।"

ज़मीन के बारे में अपनी बातचीत शुरू करने के पहले गिडियन एब्नेर लेट से मिलने गया। सुबह ही सारे रास्ते पैदल चलकर जब वह एब्नेर के मकान पर पहुँचा तो बहुत देर तक फाटक पर खड़ा उस गोरे की प्रतीक्षा करता रहा। श्रीमती लेट मकान के दरवाज़े तक आईं, गिडियन पर नज़र डाली और फिर अन्दर लौट गईं। जिमी इतने में उछलता-कूदता आया और उसने गिडियन को बताया कि एब्नेर सूअरों को चारा खिला रहे हैं।

"हब्शी तुम्हारा नाम क्या है ?" लड़के ने पूछा।

"गिडियन जैक्सन।"

"मैंने तुम्हें पहले कहीं देखा है।"

"हाँ, जरूर देखा होगा," गिडियन ने सिर हिलाया। "मेरे ख्याल से तुम्हें वह दिन याद होगा जब मैं गत वर्ष पतझड़ के दिनों में यहाँ आया था।"

"हाँ, हाँ।"

"तुम्हारी क्या उम्र है लड़के ?" गिडियन ने पूछा।

"दस वर्ष।"

"पढ़ना-लिखना भी जानते हो ?"

लड़के ने दाँत पीसते हुए सिर हिला दिया, "मैं पढ़ना-वढ़ना नहीं चाहता।"

एब्नेर सुअरों के सायबान में से निकल कर आया और सिर हिलाकर गिडियन से बोला, "गुड मॉर्निंग।"

"मॉर्निंग, मि० एब्नेर," गिडियन ने कहा, "अबके तो फ़सल बड़ी अच्छी है। मैंने सुना है, कुछ एकड़ ज़मीन में आपने कपास भी बोया है। यह बड़ी अच्छी और लाभदायक फसल है। मैं कहता हूँ, बड़ी ठोस है और नक़द पैसे मिलेंगे

इसके।"

"कटाई हो जाय तब देखना है।" एब्नेर ने कहा।

"वह तो होगी ही।"

"तुम्हारी इस आशावादिता को देखकर मुझे बड़ी खुशी हुई।" एब्नेर ने कहा, "अगर तुम मुझे इस काम में कुछ मदद दे सको तो बड़ा ही अच्छा हो।"

"शायद मैं तुम्हारी कुछ मदद कर सकूँ।"

एब्नेर ने अपना पतलून ऊपर खिसकाया, थूका और हाथ पतलून के पीछे पोंछ दिये। "यहाँ तुम रेल की सड़क बनाने का काम कर रहे हो गिडियन?" उसने पूछा। पीटर अब वहाँ आ पहुँचा और एब्नेर की छैवर्षीय बालिका अपने बाप के पट्टे से लटकती हुई गिडियन को अपने सुनहरी बालों में से झाँकने लगी।

"हाँ, मैं वहीं काम करता हूँ।"

"यह तो एक आत्म सम्मानी हब्शी का अपमान है—उसकी हतक है कि वह सभा का प्रतिनिधि होने पर भी इस प्रकार मज़दूरी करे।"

"हो सकता है हतक हो और न भी हो, यह तो आपकी समझ पर निर्भर है।" गिडियन ने मुस्कराते हुए कहा।

"यहाँ तो ऐसा लगता है कि अब हब्शी ही राज्य का शासन चलायेंगे।"

"मैं यह नहीं कहता, मि० एब्नेर!"

"तुम ऐसा नहीं कहते?"

गिडियन ने कहा, "क्या मैं अन्दर आ सकता हूँ मि० एब्नेर? मुझे बड़ी प्यास लगी है, गला बिल्कुल सूख गया है। अगर एक ग्लास पानी मिल जाय तो बड़ा अच्छा हो।"

"मैं लाता हूँ पानी," पीटर ने जोर से कहा और कुएँ की ओर दौड़ा।

"अन्दर आजाओ," एब्नेर ने जल्दी से कहा और वह उसे एक पेड़ की छाया में लेगया। वह ऊँकड़ूँ बैठ गया और गिडियन भी उसी के पास लेट गया। पीटर एक टीन के मग में पानी भर लाया। गिडियन ने उसे पीकर बड़ी कृतज्ञता प्रकट की। "आपका कुआँ बड़ा अच्छा है।" उसने सिर हिलाकर कहा। एब्नेर ने कहा, "पानी इसमें ठण्डा रहता है। मैंने इसे ढँक कर रखा है।"

"ठण्डे पानी के क्या कहने साहब !"

एब्नेर की पत्नी फिर दरवाजे पर आई, उसने एक क्षण के लिए उनको देखा और फिर अंदर चली गई। गिडियन ने कहा, "अच्छे दिन बार-बार नहीं आते; तुम्हें इससे फायदा उठाना चाहिए।"

"ज़रा समझाओ तो इसका क्या मतलब हुआ ?"

"मेरा ख्याल है, ये दिन युद्ध के पहले के दिनों से भी बेहतर होंगे" गिडियन ने धीरे से जवाब दिया। "हो सकता है कि बड़े-बड़े खेतवालों के लिए इससे कुछ कठिनाई हो लेकिन छोटे-छोटे खेतिहरों के लिए यह बड़ा अच्छा अवसर है। ऐसा मौका उन्हें आज तक कभी नहीं मिला।"

"हाँ-हाँ।"

"फिर भी इस सबके बावजूद," गिडियन ने घास का एक तिनका तोड़कर उसे चबाते हुए कहा, "अच्छे दिन एक बात है और मूर्खों का स्वर्ग दूसरी।" एब्नेर खामोश रहा; उसने सूर्य की ओर देखा, मानो अनुमान लगा रहा हो कि गिडियन को वहाँ आये कितनी देर हो चुकी थी। उसका शिकारी कुत्ता आ गया और गिडियन को सूँघने लगा, फिर लौट गया। बच्चे भी वहाँ से चले गये। एब्नेर की पत्नी ने घर में से पुकारते हुए कहा, "पीटर,—तुम इधर आओ, सुनते हो ?"

"इसको इस प्रकार देखो," गिडियन ने कहा। "बीती बातों को छोड़ो, लेकिन ऐसा कोई आदमी न होगा जिस पर युद्ध के कारण विपत्तियाँ न आई हों और जिसे इससे दुःख न हुआ हो। घर पर स्त्रियाँ काम करती रहीं, मुसीबतें सहती रहीं और आशा लगाये रहीं। हम-तुम वापस लौट आये, अपनी आस्तीनें हमने चढ़ालीं और निश्चय किया कि इस दुख को भूलें और अपनी जीविका के लिए कुछ करें।हमें कुछ बीज मिल गये, दो-एक जानवर भी मिल गये। खेत में कुछ अनाज बोया, कुछ सब्ज़ी बोदी। तुम ने अकेले जो कुछ किया वह बहुत ही अच्छा काम है, तुमने अनाज भी बोया है, कपास भी। शायद तुमने बहुत कठिन परिश्रम किया होगा, मैं समझता हूँ। अच्छा है भाई, तुमने फसल बोदी और फसल एक ऐसी चीज है जिस पर इन्सान को गर्व करना चाहिए। लेकिन मि० एब्नेर

जिस जमीन को तुम जोत रहे हो वह है किसकी ?"

"किसकी है यह ?" एब्नेर ने गिडियन को घूरा। "होगी किसी साले की; मुझे क्या परवाह, – मैं जानूँ या न जानूँ। एक ज़माने में तो यह डडले कार्वेल की थी, लेकिन सुना है अब वह उसके हाथ से जा चुकी है। फ़र्ग्युसन ह्वाइट उसका मालिक है। सुना है ह्वाइट ने भी लगान के डर से उसे छोड़ दिया है।"

"ठीक कहा तुमने, अब जो ज़मीन पहले कार्वेल की थी उसका एक-एक फुट और एक-एक एकड़ अब लगान के कारण छिन चुका है।"

"अच्छा जाती है तो जाने दो। ख़ुदा जानता है, मेरे पास तो लगान देने के लिए पैसे हैं नहीं।"

"यही तो बात है," गिडियन ने धीरे से कहा, "कार्वेल की ज़मीन शायद अक्तूबर मास में कोलंबिया में नीलाम होने वाली है। मुझे फ़ैडरल कमिश्नर से पता चला है और इसका नीलाम छोटे-छोटे टुकड़ों में नहीं, बल्कि हज़ार एकड़ के हिसाब से होगा। जब यह नीलाम हो जायगी तो हम कहाँ जायेंगे मि० एब्नेर ? और आप कहाँ जायेंगे ?"

"मैं यहीं रहूँगा जहाँ हूँ," एब्नेर ने जंगलीपन से कहा, "मुझे कोई साला यैंकी यहाँ से नहीं निकाल सकता और न कोई साला हब्शी ही कुछ कह सकता है। मैं युद्ध में लड़ा—और मुझे क्या मिला ? मैं तो यहीं डटा रहूँगा, कोई साला मुझे यहाँ से नहीं हटा सकता।"

"मैं आप से क्षमा माँगता हूँ मि० एब्नेर। पर ज़रा सोचिए तो सही कि आप कह क्या रहे हैं। कोई आपको यहाँ से अगर न हटाये तब तो बड़ी अच्छी बात है, लेकिन ऐसा होना संभव नहीं है। उनके साथ जब शेरिफ आयेगा तो आप क्या करेंगे ? कानून का विरोध करेंगे ? क्या आप खेतिहरों से उस समय लड़ सकेंगे जब कि क़ानून भी उसी का समर्थन करेगा ? यह आपके लिए कैसे संभव हो सकता है ?"

"मैं किसी हब्शी से नहीं पूछने जाऊँगा कि कैसे क्या करूँ ?"

"ठीक है, लेकिन जरा ठहरिए तो मि० एब्नेर ! आपका हब्शियों के बारे में क्या विचार है, वह तो आपका अपना मामला है; मैं इसमें आपसे बहस न करूँगा; पर एक बात जरूर कहूँगा कि कुछ भी हो ये हब्शी आपके शत्रु नहीं हैं।"

"ठण्डे पानी के क्या कहने साहब !"

एब्नेर की पत्नी फिर दरवाजे पर आई, उसने एक क्षण के लिए उनको देखा और फिर अंदर चली गई। गिडियन ने कहा, "अच्छे दिन बार-बार नहीं आते; तुम्हें इससे फायदा उठाना चाहिए।"

"ज़रा समझाओ तो इसका क्या मतलब हुआ ?"

"मेरा ख्याल है, ये दिन युद्ध के पहले के दिनों से भी बेहतर होंगे" गिडियन ने धीरे से जवाब दिया। "हो सकता है कि बड़े-बड़े खेतवालों के लिए इससे कुछ कठिनाई हो लेकिन छोटे-छोटे खेतिहरों के लिए यह बड़ा अच्छा अवसर है। ऐसा मौका उन्हें आज तक कभी नहीं मिला।"

"हाँ-हाँ।"

"फिर भी इस सबके बावजूद," गिडियन ने घास का एक तिनका तोड़कर उसे चबाते हुए कहा, "अच्छे दिन एक बात है और मूर्खों का स्वर्ग दूसरी।" एब्नेर खामोश रहा; उसने सूर्य की ओर देखा, मानो अनुमान लगा रहा हो कि गिडियन को वहाँ आये कितनी देर हो चुकी थी। उसका शिकारी कुत्ता आ गया और गिडियन को सूँघने लगा, फिर लौट गया। बच्चे भी वहाँ से चले गये। एब्नेर की पत्नी ने घर में से पुकारते हुए कहा, "पीटर,—तुम इधर आओ, सुनते हो ?"

"इसको इस प्रकार देखो," गिडियन ने कहा। "बीती बातों को छोड़ो, लेकिन ऐसा कोई आदमी न होगा जिस पर युद्ध के कारण विपत्तियाँ न आई हों और जिसे इससे दुःख न हुआ हो। घर पर स्त्रियाँ काम करती रहीं, मुसीबतें सहती रहीं और आशा लगाये रहीं। हम-तुम वापस लौट आये, अपनी आस्तीनें हमने चढ़ालीं और निश्चय किया कि इस दुख को भूलें और अपनी जीविका के लिए कुछ करें। हमें कुछ बीज मिल गये, दो-एक जानवर भी मिल गये। खेत में कुछ अनाज बोया, कुछ सब्जी बोदी। तुम ने अकेले जो कुछ किया वह बहुत ही अच्छा काम है, तुमने अनाज भी बोया है, कपास भी। शायद तुमने बहुत कठिन परिश्रम किया होगा, मैं समझता हूँ। अच्छा है भाई, तुमने फसल बोदी और फसल एक ऐसी चीज है जिस पर इन्सान को गर्व करना चाहिए। लेकिन मि० एब्नेर

जिस ज़मीन को तुम जोत रहे हो वह है किसकी ?"

"किसकी है यह ?" एब्नेर ने गिडियन को घूरा। "होगी किसी साले की; मुझे क्या परवाह, — मैं जानूँ या न जानूँ। एक ज़माने में तो यह डडले कार्वेल की थी, लेकिन सुना है अब वह उसके हाथ से जा चुकी है। फ़र्ग्युसन ह्वाइट उसका मालिक है। सुना है ह्वाइट ने भी लगान के डर से उसे छोड़ दिया है।"

"ठीक कहा तुमने, अब जो ज़मीन पहले कार्वेल की थी उसका एक-एक फुट और एक-एक एकड़ अब लगान के कारण छिन चुका है।"

"अच्छा जाती है तो जाने दो। ख़ुदा जानता है, मेरे पास तो लगान देने के लिए पैसे हैं नहीं।"

"यही तो बात है," गिडियन ने धीरे से कहा, "कार्वेल की ज़मीन शायद अक्तूबर मास में कोलंबिया में नीलाम होने वाली है। मुझे फ़ैडरल कमिश्नर से पता चला है और इसका नीलाम छोटे-छोटे टुकड़ों में नहीं, बल्कि हज़ार एकड़ के हिसाब से होगा। जब यह नीलाम हो जायगी तो हम कहाँ जायेंगे मि० एब्नेर ? और आप कहाँ जायेंगे ?"

"मैं यहीं रहूँगा जहाँ हूँ," एब्नेर ने जंगलीपन से कहा, "मुझे कोई साला यैंकी यहाँ से नहीं निकाल सकता और न कोई साला हब्शी ही कुछ कह सकता है। मैं युद्ध में लड़ा—और मुझे क्या मिला ? मैं तो यहीं डटा रहूँगा, कोई साला मुझे यहाँ से नहीं हटा सकता।"

"मैं आप से क्षमा माँगता हूँ मि० एब्नेर। पर ज़रा सोचिए तो सही कि आप कह क्या रहे हैं। कोई आपको यहाँ से अगर न हटाये तब तो बड़ी अच्छी बात है, लेकिन ऐसा होना संभव नहीं है। उनके साथ जब शेरिफ आयेगा तो आप क्या करेंगे ? कानून का विरोध करेंगे ? क्या आप खेतिहरों से उस समय लड़ सकेंगे जब कि क़ानून भी उसी का समर्थन करेगा ? यह आपके लिए कैसे संभव हो सकता है ?"

"मैं किसी हब्शी से नहीं पूछने जाऊँगा कि कैसे क्या करूँ ?"

"ठीक है, लेकिन ज़रा ठहरिए तो मि० एब्नेर ! आपका हब्शियों के बारे में क्या विचार है, वह तो आपका अपना मामला है; मैं इसमें आपसे बहस न करूँगा: पर एक बात ज़रूर कहूँगा कि कुछ भी हो ये हब्शी आपके शत्रु नहीं हैं।"

एब्नेर ने बड़ी रुखाई से कहा, "तुम यहाँ से बाहर निकल जाओ, मैं कहता हूँ। हरामज़ादे कहीं के।"

"ठीक है, मैं चला जाऊँगा," गिडियन ने होंठ भींचते हुए कहा, "मैं यहाँ से जा सकता हूँ। कार्वेल की जमीन जल्द ही नीलाम हो जायगी और तब आप सारी दुनिया से घृणा करेंगे, लेकिन करेंगे क्या? चाहे आप सुनें या न सुनें मैं आपसे एक बात जरूर कहूँगा। मैं और मेरे लोग उस दलदल में इसीलिए काम करने गये थे ताकि वहाँ से जो पैसे मिलें उनसे हम जमीन खरीद सकें। यहाँ जिस आदमी के पास ज़मीन न हो वह गुलाम सरीखा ही है। उसमें और गुलाम में कोई खास फ़र्क नहीं है, चाहे वह हब्शी हो या गोरा हो मि० एब्नेर! हमारे पास अब लगभग एक हजार डॉलर मौजूद हैं, और अगर हमें कोई महाजन गिरवीं रखकर कुछ कर्ज़ा दिलवादे तो कुछ हजार एकड़ जमीन के टुकड़ो पर हम भी बोली लगा सकते हैं। वहाँ जाकर अपनी खुद की जमीन के लिए बोली लगाना बड़ा ही अच्छा मालूम होगा।"

एब्नेर लेट जमीन पर लेटे-लेटे हिलने लगा, उसने जमीन की ओर देखा और धूल में कुछ कुतूहलपूर्ण आकृतियाँ उंगलियों से बनाईं। कई मिनट यों ही बीत गये; पर गोरा कुछ न बोला। वह अपने बड़े-बड़े गोल हाथों की ओर देखता रहा, चमड़े पर खड़े नारंगी रंग के बालों को देखता रहा जो सख्त तार की भाँति घूमे हुए थे और अपनी कलाई के उस दाग़ को देखता रहा जो यैंकियों की संगीन से बन गया था।

उसे देखते हुए गिडियन ने उन अन्तर्विरोधों को समझने का प्रयत्न किया जिनसे वह खुद संघर्ष कर रहा था। वे ही उसके जीवन के हृदयविदारक विरोध थे। आखिर यह किससे घृणा करता है? किसके लिये यह युद्ध में लड़ा था? क्यों बरसों की मारकाट, मार्चिंग और अपनी रक्षा के बाद मनुष्य वही नहीं रहता जहाँ वह था? चाहे वह मनुष्य वापस लौटकर फिर हल क्यों न चलाले सूअर क्यों न पाल ले पर वह पहले जैसा हरगिज़ नहीं रहता।"

"मेरे पास पैसे बिल्कुल नहीं हैं" एब्नेर ने अंत में थकावट और आवाज में एक प्रकार का भारीपन लाकर कहा, "घर में अगर कुछ है तो केवल ४ डॉलर

६० सेण्ट हैं—गिडियन! बस इससे ज़्यादा कुछ नहीं।"

"तुम्हें पैसों की जरूरत नहीं है," गिडियन ने उससे कहा। "मुझे तो जमीन ख़रीदनेवाले परिवार चाहियें। पैसे तो हमारे पास इतने हैं कि काम चल जायेगा और अगर नहीं चला तो फिर कभी भी नहीं चलेगा. यहीं कार्वेल की जमीन पर कोई २७ काले लोगों के परिवार हैं और ७ परिवार गोरों के हैं—वे सब के सब पुराने खेतों पर रहते हैं—उनमें से सबों को या तो निकलना पड़ेगा या फिर जबकि जमीन बिक चुकेगी तो उन्हें भागीदार खेतिहर की हैसियत से रहना पड़ेगा। हमारा विचार है कि हम हर परिवार को ८० या ६० एकड़ जमीन देंगे, जैसा भी होगा उनकी आवश्यकता पर निर्भर होगा। और इसमें मकान, चरागाह व बुआई की जमीन वगैरह सब आ जायेगी। हमें ३००० एकड़ जमीन मिलेगी और उसमें से हरेक को अपना-अपना हिस्सा बाँट देंगे।"

"तुम मुझे उसमें क्यों मिलाना चाहते हो?" एब्नेर ने पूछा। "मैंने तुम्हारे लिए आज तक कभी कुछ किया है? न तो मैं हब्शियों का मित्र ही हूँ और न ही कोई स्कालावाग हूँ, जो तुम यहाँ आकर मेरे तलुवे चाट रहे हो।"

"यह आप ठीक कहते हैं," गिडियन ने उसका अनुमोदन किया।

"तो फिर मेरे पास क्यों आये हो?"

"अच्छा खैर," गिडियन ने कहा। "इस तरह से देखो इसे,—हमारे इस दक्षिणी प्रदेश में ४० लाख हब्शियों की आबादी है और ८० लाख गोरे यहाँ आबाद हैं। यहाँ दक्षिणी केरोलिना में ही काले लोग जन-संख्या का एक छोटा अंश हैं। अब सब कुछ उसी पुराने ढंग पर नहीं होगा जैसा कि होता था; युद्ध के साथ-साथ वह पुराना ढर्रा भी समाप्त हो गया है। चुनाव और विधान-सभा के फलस्वरूप इस दक्षिणी प्रदेश में एक नये जीवन का प्रारंभ हो रहा है। मि० एब्नेर वह जीवन कैसा होगा, जानते हो? उस जीवन में न तो ये पुरानी सड़ी-गली, भग्न झोंपड़ियाँ रहेंगी जिनमें लोग युद्ध के पहले से रहते आये हैं, न यह घृणा की भावना; न ये विचार और न ही यह अज्ञान का अन्धकार बाक़ी रहेगा। वह नया जीवन कैसा होगा? परन्तु यह सब अपने आप नहीं हो सकता, न ऐसा कभी होता ही है। हर चीज़ बनाई जाती है। हमारे दलदली प्रदेश

में पुल बँध गया, रेल की पटरियाँ लग गईं, कैसे ? क्योंकि हमने वहाँ जाकर काम किया,—बातचीत से कुछ नहीं बनता। और वही बात यहाँ भी लागू होती है। यह बड़ी अच्छी भूमि है, बड़ी सुन्दर भूमि, और अगर तुम इस पर ठीक से काम करो तो यहाँ दूध और शहद की नदियाँ बहाई जा सकती हैं। यहाँ यैंकी-देशों की भांति अधिक ठंड भी नहीं पड़ती और न ही यह नदी के उस पार के प्रदेशों की भांति रोग का शिकार होती है, यहाँ उतनी बीमारियाँ भी नहीं होतीं। यहाँ लोग भी अच्छे हैं, काले और गोरे दोनों ही अच्छे हैं।"

"तभी तो, यदि इन दुष्ट यैंकियों ने इसे नष्ट न किया," एब्नेर ने कहा।

"क्या अब भी वे इसे नष्ट करेंगे ? युद्ध बड़ा ही दुःखप्रद और व्यर्थ होता है। आपने भी बंदूक उठाई थी और मैंने भी। और एक तरह से यों कहना चाहिए कि हम दोनों एक-दूसरे के खिलाफ़ लड़े। किस लिए ? हो सकता है यैंकी यहाँ आयें, हब्शियों को मुक्त कर दें और यह भी संभव है कि अधिकतर जमींदारों का नाश हो जाय। लेकिन ऐसी ज़मीनें हैं कितनी ? आप खुद ही देखिये जिधर नजर जाती है कार्वेल की ही जमीन दिखाई देती है। मैं, मैं तो अब ग़ुलाम हब्शी नहीं हूँ; बल्कि आजाद हूँ। तुम्हें तो वही सब मिला जो युद्ध के पहले मिला था; शायद उससे कुछ अधिक मिला हो।

अच्छी ज़मीन का हर इंच कार्वेल की जमीन का हिस्सा था,—ग़रीब गोरों के लिए कुछ दलदली प्रदेश की या देवदार की ज़मीन मिल जाती तो वे कुछ उगा लेते। यैंकियों ने हमें ज़मीन दे दी और पहले से कहीं अधिक आशा भी बँधा दी।"

एब्नेर धूल में उँगलियाँ चलाने लगा। "कहे जाओ," उसने कहा।

"अच्छा ! यह भविष्य कैसा होगा ? वैसा ही न जैसा कि हम इसे बनायेंगे ? और यह तब तक संभव नहीं है जब तक कि हम गोरे-कालों का भेद मिटादें। जब तक भविष्य हमारा आपका दोनों का न हो, तब तक यह घृणा और कुरीति भी नहीं मिटाई जा सकती। यदि आप, मैक्स ब्रामले, कार्सन और फ्रेड मैक्हफ हमारे साथ मिल जायें तो हम काफ़ी शक्तिशाली हो जायेंगे और ज़मीन खरीद सकेंगे।"

"लेकिन वे आयेंगे नहीं।"

"नहीं; शायद वे आ भी जायें मि० एब्नेर। यह संसार परिवर्तनशील है। अब तो हम लोगों के लिए स्कूल भी बन गया है। कोई कारण नहीं क्यों तुम्हारे बच्चे वहाँ आकर न पढ़ें। एक दिन वह भी आयगा जब सरकार यहीं कहीं एक सुन्दर स्कूल बना देगी। तुम्हारे बच्चों और मेरे बच्चों में कोई फर्क नहीं है, वे साथ-साथ पढ़ सकते हैं, फ़र्क सिर्फ इतना ही है कि एक काला है और दूसरा गोरा।

एब्नेर ने सिर हिला दिया।

"इस पर ग़ौर करना चाहिए मि० एब्नेर! मैं मानता हूँ इसमें आपको समय तो लगेगा। पर कोई वजह नहीं कि आप इस ज़मीन के मामले में हमारे साथ न आयें।"

"मुझे किसी मरदूद हब्शी का दान नहीं चाहिए," एब्नेर ने बड़ी ज़िद के साथ कहा।

"लेकिन मेरे हाथ मज़बूत करना तो कोई दान नहीं है। अगर मैं महाजन के पास जाऊँ और कहूँ कि गोरे लोग भी हमारे साथ हैं तो मेरा हाथ और ज्यादा मज़बूत हो जायगा।"

"हो सकता है," एक क्षण बाद एब्नेर ने कहा, "तुम्हें कैसे मालूम है कि वे लोग ज़मीन हमें ही बेच देंगे?"

"मैंने यैंकी दलाल से बातचीत की थी। उसने कहा था कि यह एक निष्पक्ष नीलाम होगा। जहाँ जो भी सबसे ऊँची बोली लगायेगा, उसे ज़मीन दे दी जायगी।"

"और मान लो कि तुम झूठ ही बोल रहे हो तो?"

"अच्छा यही समझ लीजिए," गिडियन ने कहा और फिर वे एक-दूसरे की ओर देखने लगे। एब्नेर के होठों पर मुस्कराहट नाच गई।

"खरीदेगा कौन?"

"मेरे लोग कहते हैं मैं उनका प्रतिनिधित्व करूँ। पर यह कोई आखरी बात नहीं है हम इस पर बहस कर सकते हैं और निर्णय बदल भी सकते हैं।"

"मैं तो तुम पर विश्वास कर सकता हूँ।"

"तो फिर आप हमारे साथ आयेंगे ना?" गिडियन ने पूछा।

"हाँ मैं आऊँगा।"

"मुझे बड़ी खुशी और गर्व होगा। मिस्टर एब्नेर!" गिडियन ने कहा, "आओ इस बात पर हाथ मिलाओ।"

एब्नेर लेट ने अपनी जिन्दगी में पहली बार एक हब्शी से हाथ मिलाया।

कार्सन भाइयों से दो घण्टे तक बातचीत करने के बाद उन्होंने. गिडियन को ६५ डॉलर लाकर दिये और कहा उन्हें अपने फंड में मिला लो। मैक्स ब्रामले ने गिडियन की हर दलील पर सिर हिला दिया; वह हब्शियों से कोई सम्बन्ध ही न रखना चाहता था और बात वहीं खत्म हो जाती थी। फ्रेड मैक्हफ़ और उसका जेक बहनोई सटर भी आये। गिडियन को लोगों से बातचीत करने में कोई तीन दिन लग गये।

"हमें गोरों को अपने साथ मिलाने की क्या ज़रूरत है?" उन्होंने पूछा पैसे तो उनके थे। उन गोरों में से तो किसी ने दलदल में काम नहीं किया था, न वहाँ जान ही दी थी।

गिडियन ने उन्हें समझाया। शुरुआत में केवल आधे लोग उसके साथ थे, परन्तु बाद में सब उसके विचारों से सहमत हो गये। आज महीनों के बाद गिडियन को विजय प्राप्त हुई—एक महान् विजय। अब रैचल को बाहुपाश में लेना भी पुरानी याद दिलाता था; जैसे कि उसका यौवन लौट आया हो।

और चार दिन बाद जब गिडियन उससे मिलने गया तो एब्नेर लेट अपने दोनों बच्चों को लिए पहाड़ी पर आ गया। उसने गिडियन से कहा, "मैंने इसके बारे में हेलेन से बातचीत की थी और वह कहती है कि इन्हें थोड़ी-बहुत शिक्षा तो मिलनी ही चाहिए।"

लड़के एक-दूसरे से गुँथ रहे थे। लातें मार रहे थे और एब्नेर उन्हें डाँट रहा था। उसने कहा, "ये लड़के इस पर आपत्ति उठायेंगे, लेकिन इनसे उनका कारण पूछूँगा। वह जिस तरह हब्शियों की बस्ती में आया था, वह बात भी उसे बुरी लग रही थी। गिडियन ने यह भाँप लिया और उसे बहलाते हुए कहा, "धन्यवाद मि० एब्नेर, यह तो सिर्फ़ शुरुआत ही है।"

एब्नेर ने सिर हिला दिया। कुछ देर तक वहीं खामोश खड़ा रहा और फिर घूम कर चल दिया।

: ७ :

कार्ल रॉबिन्स कोलम्बिया के पहले राष्ट्रीय बैंक के उपाध्यक्ष थे। उन्होंने सिर हिलाकर इन्कार करते हुए कहा कि उन्हें इस मामले में कोई दिलचस्पी नहीं है। और मुश्किल से ही उन्हें ऐसे मामलों में दिलचस्पी होती। उन्होंने किंचित मुस्कराहट के साथ इस मामले में अपनी राय प्रकट करते हुए कहा कि उन्हें बिल्कुल दिलचस्पी नहीं है। उनका बड़ा और गंजा सिर था, कहीं-कहीं बालों की झालर थी। छोटी-छोटी नीली आँखें थीं और गर्दन काफ़ी मोटी थी, जिस पर उनका सिर रखा था। उन्होंने गिडियन से बड़े ठण्डे दिल से कहा :

"तुम समझे नहीं गिडियन, चीजें इतना आसानी से नहीं हो जाया करतीं, अगर ऐसा होता तब तो यहाँ अराजकता फैली होती। तुम एक हजार डालर लेकर मेरे पास आये हो और कहते हो कि तुम कई तरह के हब्शी और ग़रीब गोरों के प्रतिनिधि हो, जो कार्वेल की जमीन पर अनाधिकृत रूप से रहते हैं और कहते हो कि मैं तुम्हें इस बैंक के नाम एक हुण्डी दे दूँ; ताकि सार्वजनिक नीलाम में जाकर तुम उस ज़मीन को खरीद सको। यह तो बिल्कुल ही मूर्खतापूर्ण सुझाव है।"

"केवल हुण्डी ही नहीं," गिडियन ने तर्क किया, "जो रक़म आप हमें पेशगी देंगे उसी के मूल्य की ज़मीन हम धरोहर रखेंगे।"

"समझने का प्रयत्न करो, जैक्सन!" रॉबिन्स ने उसे टोका। "ज़रा समझदारी से काम लो। आजकल ज़माना खराब है; लोग धरोहर रखने में सकुचाते हैं, और विशेष तौर से ज़मीन की धरोहर, जबकि उस ज़मीन का अस्तित्व ही कुछ नहीं है। इ से कुछ आवारा हब्शियों की भला कोई ज़मानत होती है?"

"देखिए रॉबिन्स साहब!" गिडियन ने कहा, "आप ऐसा न कहिए, हम आवारा नहीं हैं। हम इस जमीन पर पुश्तों से रहते आये हैं, इसी ज़मीन पर उनमें से अधिकतर हब्शियों ने काम किया और अपने ही बलबूते पर तीन फ़सलें

उगाई हैं। यदि आप स्वयं कार्वेल की ज़मीन पर चलें और देखें तो मुझे विश्वास है आपके विचार बदल जायेंगे।"

"मुझे हब्शियों से विचारने आदि की शिक्षा लेने की आदत नहीं है," राबिन्स ने कहा।

"मि० रॉबिन्स! यह मतलब नहीं था। मैं एक विश्वासपात्र प्रतिनिधि की हैसियत से सच बोल रहा हूँ। आप मुझ पर विश्वास कीजिए। हमारी एक मात्र अभिलाषा है कि हमारी भी कुछ एकड़ अपनी ज़मीन होती!"

"मैं नहीं समझता कि तुम ठीक कहते हो," मि० राबिन्स ने अपनी घड़ी देखते हुए असन्तोष के भाव से कहा और उस सन्तरी को संकेत किया जो कुछ दूर बरामदे के बाहर खड़ा था।

"अगर तुम ईमानदार हो और काम करना चाहते हो तो चाहे कोई भी ज़मीन क्यों न खरीदें, तुम्हें काम पर लगा लेगा। सच पूछो तो मैं इस बात के खिलाफ़ हूँ कि हब्शियों की अपनी ज़मीन हो; इससे वे बिगड़ जायेंगे। मुझे खेद है गिडियन, किन्तु मैं कार्य में व्यस्त हूँ,—"और उसी क्षण संतरी आया, उसने गिडियन की बाँह पकड़ी और उसे खींचकर बाहर ले गया।

रैचल ने उससे कहा, "सब ठीक हो जायगा गिडियन, मुझ पर विश्वास करो—मुझे आशा है कि यह सब ठीक हो जायगा" और गिडियन उसे पूरी तरह से सुन भी न सका क्योंकि वह इसी विचार में लीन था कि उसके कितने लोग उसी प्रकार सोचते थे। आज की उन्हें चिंता थी कल की नहीं। गुलामी की अस्थियाँ जंजीरों के समान नहीं होती जो रात भर में टूट जाती हैं। वह परास्त और निरुत्साह हो घर लौटा था, पर रैचेल इसी पर प्रसन्न थी कि वह वापस लौट आया। उसने क्रोधातुर हो कहना शुरू किया, "क्या तुम समझती नहीं हो,—" लेकिन रैचल बीच में बोल पड़ी और वह चुप हो गया, "इसका परिणाम अच्छा ही होगा, तुम व्यर्थ क्यों अपना दिमाग़ खपाते हो, गिडियन प्यारे?"

और वह मुस्कराने लगा। उसने रैचल की ओर देखा उसकी गोलाई, उसका स्त्रीत्व, चपटे गाल, छोटी और ऊपर को उठी हुई नाक, चमड़ी पर इतनी चमक कि आग की ज्वाला का प्रतिबिंब भी दिखाई दे जाय, और उसकी आवाज़

मै वह मिठास जब उसने पूछा, "तुम मेरी ओर देखकर हँस क्यों रहे हो, गिडियन ?"

"मैं हँस नहीं रहा हूँ! मेरी गुड़िया" और वह फिर विचारों में डूब गया। एक-दूसरे के सम्बन्ध कितने विचित्र होते हैं, और जीवन का साधारण ढंग कितना असाधारण तौर से पेचीदा होता जाता है। इस स्त्री को ही ले लें, वह उसकी पत्नी है जिससे वह इस क्षण बहुत अधिक प्रेम कर रहा है, परन्तु इस स्त्री के अस्तित्व का उस ग़रीब काले आदमी से क्या नाता है, जिसे सदियों पूर्व अफ्रीका के समुद्रतट से लाकर यहाँ गुलाम बनाया गया था,—उसके अस्तित्व का उससे और जेफ़ से क्या रिश्ता है और उसका जीवन के इस निरंतर बहनेवाले और धड़कने वाले उस सोते से क्या संबंध है जिसने मानवता को जन्म दिया, जो निरंतर बढ़ता जाता है, ऊपर उठता है और ठाठें मारता है, कभी "आनन्दित और उल्लसित दिखाई देता है तो कभी थका-माँदा और शिथिल · !

"तुम क्या सोचने लगे, गिडियन ?" उसने पूछा। जेनी उसकी गोद में चढ़ गई। मार्कस आग के सामने लेटा था। रैचल ने कहा, "अब तुम्हारे सोने का समय हो गया जेनी, जाओ सो जाओ।"

गिडियन ने जेनी से पूछा, "अब क्या है, कबूतरी ?"

"बहन लोमड़ी!" "बुढ़िया लोमड़ी,—तो मैंने तुझे सुना तो दिया जो कुछ मुझे याद था। मैं अपनी क़सम खाकर कहता हूँ," गिडियन ने कहा। जेनी पूछना चाहती थी कि, "आख़िर लोमड़ी का भाई कछुए से कोई सम्बन्ध क्यों नहीं हुआ।"

"अब तू माने तब ना, कह तो दिया हुआ था," गिडियनने कहा। "चूंकि बहन लोमड़ी बड़ी चतुर थी और देवदार के जंगल में सभी से ज़्यादा चालाक, इसलिए उसने कभी भाई कछुए को कुछ समझा ही नहीं। और भाई कछुए की खाल इतनी मोटी थी कि वह चालाक हो ही नहीं सकते थे—" रैचल ने गिडियन की ओर देखा। वह कहानी आधे मन से सुन रही थी और वैसे ही मार्कस भी एक कान से ही सुन रहा था, चूंकि कहानी बहुत पुरानी थी, इसलिए उसे ज़्यादा गौर से सुनने की जरूरत न थी; लेकिन चूँकि उसमें कुछ अच्छी बातें भी

थीं इसलिए उसे पसंद किया जाता था। दरवाजे पर दस्तक हुई और रैचल जेम्स एलेन्बी को अन्दर लाई। वह आकर बैठ गया और जब तक गिडियन कहानी खत्म न कर चुका, खामोश बैठा रहा। गिडियन ने भी देखा कि जेनी सो नहीं रही, तो उसने भी उसे खींचकर लम्बा कर दिया। जेनी उसकी गर्दन से लिपट कर सो गई और उसने उसे उतार कर बिस्तर पर सुला दिया। मार्कस अँगीठी के सामने लेटा ऊँघ रहा था, जो सुविधापूर्ण और आधे जानवर जैसा लगता था। एलेन्बी ने पहले तो बाहर के वातावरण का जिक्र किया और फिर रैचल की सूरत की कुछ प्रशंसा करते हुए बोला :

"कोलम्बिया में वही हुआ न जिसकी आशा थी गिडियन !"

"हाँ, मैं भी यही समझता हूँ ?"

अब क्या करेंगे, कुछ सोचा है ?"

वाल्सटन जाऊँगा और क्या ?"

"वे भी कोई ध्यान न देंगे।"

गिडियन ने कहा, "फिर बोस्टन है, न्यूयार्क है, फिलाडेल्फिया है ?"

"दूसरी ओर न जाने क्या होगा," रैचल ने सोचा, और एलेन्बी ने कहा, "तुम यह ज़मीन तो लेकर ही रहोगे गिडियन ?"

"कोशिश तो ऐसी ही करूँगा।"

"मेरा ख्याल है तुम ज़रूर ले सकोगे, गिडियन," बूढ़े व्यक्ति ने कहा, "जैसा कि साधारणतः होता है, जबसे तुम उस रात मेरे यहाँ ठहरे थे मैंने समझ लिया था कि तुम जिस काम को हाथ में लोगे उसे पूरा ही करके छोड़ोगे। आखिर तुम्हारे काम में बाधा कौन देगा, गिडियन ? मैं समझता हूँ कोई चीज़ तुम्हें बाधक नहीं सिद्ध होगी, बस यह ख्याल रखो कि सिर्फ करने के लिए मत करो, शक्ति वैसे स्वतः कोई अच्छी चीज़ नहीं। घर आते रहना।"

"इससे तुम्हारा क्या मतलब है ?"

एलेन्बी ने अपने कंधे सिकोड़े और मुस्करा दिया। "मैं बूढ़े आदमी की तरह बातें कर रहा हूँ गिडियन ! और हो सकता है मैं बहुत ज़्यादा बोल रहा हूँ। यदि तुम उत्तरी प्रदेश में जाओ और वहाँ यैंकियों से मिलो, तो यह न समझ बैठना

कि वे सब दूध के धोये हैं। उनमें कुछ गोरे तो ऐसे होंगे जो हमसे इतनी घृणा करते हैं कि क्या कोई दक्षिणी गोरा करेगा ! और उनके लिए तो हम विचित्र और अजनबी हैं, वे हमें काली चमड़ी के अजीब प्राणी समझते हैं। यहाँ तक कि दक्षिणी गोरे जो हमसे घृणा करते हैं वे भी हमें विदेशी नहीं समझते; वे हमें भी उसी तरह इसी भूमि के प्राणी समझते हैं जैसे कि देवदार के वृक्ष, कपास और तम्बाकू को यहाँ की उपज समझते हैं। तुम्हें कुछ यैंकी ऐसे भी मिलेंगे जिन्होंने अपने आपको कुछ और ही विचित्र रंग में रँग लिया है। वे तुमसे हाथ मिलायेंगे, तुम्हारे साथ एक ही मेज़ पर बैठेंगे और तुम्हारे रंग का उन पर कोई प्रभाव न पड़ेगा। न वे तुम से कोई भेद-भाव का व्यवहार करेंगे।

"तुम उन पर विश्वास करना गिडियन और वे जैसे भी हों उनका सम्मान करना। दो पीढ़ियों तक उन्होंने हमें मुक्त कराने के लिए संघर्ष किया है क्योंकि वे मनुष्य के भाईचारे में विश्वास रखते थे; उनके बारे में जो कुछ झूठी अफ़वाहें तुम सुनो, उन पर कान न देना।"

गिडियन ने सिर हिलाया; बूढ़ा झुका और उसने अपना हाथ गिडियन के घुटने पर रखते हुए कहा, "सफलता पर घमण्ड न करने लगना, गिडियन! अगर दुनिया में परस्पर मैत्री-संबंध न हो और परस्पर विश्वास की भावना न हो तो हममें और जंगलियों में फ़र्क ही क्या हुआ? तुम तो खैर बहुत महत्त्वपूर्ण कार्य के लिए जा रहे हो पर यदि रास्ते में तुम्हें किताबें, कागज़, स्लेट, चाक आदि दीखें तो उन्हें भी ले लेना, हमें उनकी बहुत ज़रूरत है गिडियन!"

"मैं इसे भी याद रखूँगा" गिडियन ने कहा।

गिडियन ने अपना पढ़ना जारी रखा। कोलम्बिया में उसे ब्लैकस्टन की 'इंग्लैंड के कानूनों पर आलोचना' नामक पुस्तक की एक प्रति नज़र आई। पुरानी और फटी हुई थी; पर उसने उसे ६० सेंट में खरीद लिया। एण्डरसन क्ले ने उसे पेन की एक पुस्तक 'मनुष्य के अधिकार' भेजी जो बड़ी अस्पष्ट थी और जिससे गिडियन के ज्ञान और अनुभव का कोई मेल नहीं बैठता था; लेकिन इसके बावजूद गिडियन के लिए वह बड़ी अचरजपूर्ण पुस्तक सिद्ध हुई! और विस्मय का एक ऐसा सोता बनकर रह गई जो कभी सूखा ही नहीं। एलेन्बी के पास पो की

कुछ कविताएँ थीं, जो उसने गिडियन को देदीं; लेकिन उन्हें पढ़ने के बाद गिडियन दुःखी हुआ और उलझन में पड़ गया। "कोई जीवित नहीं है," उसने कहा। वह इमरसन को पढ़कर ही खुश हुआ था और एलेन्बी ने कहा, "अगर तुम उससे मिल लिए गिडियन तो।"

वर्षा के आरम्भ होते ही गिडियन चार्ल्सटन लौट आया। वह कार्टर के यहाँ गया, जहाँ उन्होंने उसका सहर्ष स्वागत किया। फिर वह फ्रांसिस कार्डोजो के घर भी गया। कार्डोजो ने उससे हाथ मिलाया, और कुछ विचित्र मुस्कराहट के साथ कहा, "तो गिडियन तुम वापस लौट आये!"

"हाँ साहब, लौट तो आया।"

"पहले से अधिक वयस्क और चतुर होकर लौटे हो न?"

"हाँ, कुछ अंश में दोनों गुण लेकर लौटा हूँ।" गिडियन ने स्वीकार किया। कार्डोजो के दीवानखाने में गिडियन घुटनों में हाथ दबाये सिकुड़कर बैठा रहा। उसके सामने कुछ केक और शराब का एक ग्लास रखा था। कमरा उसे पहले से छोटा मालूम हुआ, और कार्डोजो भी पहले की अपेक्षा छोटा लगा। गिडियन ने बड़ी सावधानी से और धीरे-धीरे किस्से सुनाने शुरू किये और कार्डोजो खामोशी से उसे सुनता रहा। गिडियन ने जब कोलम्बिया के महाजन की घटना का वर्णन किया तो कार्डोजो भी बोल पड़ा :

"तो क्या तुम्हें उस पर कोई अचम्भा हुआ, गिडियन?"

"नहीं, ऐसा कोई विशेष अचंभा भी नहीं हुआ। दरअसल मुझे उसकी पूरी आशा न थी।"

"और शायद," कार्डोजो ने कहा, "वही बात यहाँ भी होगी। तुम जानते हो गिडियन, जैसे उसके विचार और भावनाएँ हैं उनके अनुसार उसने तुम से बहुत ज़्यादा दुर्व्यवहार नहीं किया। आखिर तुम उसे क्या भेंट दे सकते हो? यही न कि कुछ नक़द डॉलर? तुम्हारा अपना वचन, कुछ काले और गोरे परिवारों का समर्थन और बड़ा ही अस्पष्ट और स्वप्न के समान भविष्य।"

"भविष्य सारा ही स्वप्न होता है" गिडियन ने कहा।

"हाँ, किसी-न-किसी मात्रा में, यह मैं मानता हूँ। लेकिन गिडियन, क्या

तुम इतना नहीं समझते कि वहीं जमीन की समस्या सारे दक्षिण में मौजूद है और यही एक मात्र ऐसी समस्या है, जिस पर हमारा पूरा भविष्य निर्भर है। यह तय कैसे होगी? कोई एक वर्ष पहले गये मार्च के महीने में थैड्यूस स्टीवेन्स ने अपना भूमि-वितरण बिल सभा में पेश किया था। उसका सुझाव क्या था? यही कि विद्रोही किसानों से उनकी जमीनें छीन ली जायँ, उनको विभाजित किया जाय और हर उन्मुक्त-व्यक्ति को चालीस एकड़ जमीन और ४० डॉलर उसके मकान के निर्माण के लिए दे दिये जायें। ज़रा एक मिनट ठहरो, मैं तुम्हें ठीक वही कानून पढ़कर सुनाता हूँ, जो स्टीवेन्स ने पेश किया था—" कार्डोज़ो अपनी मेज तक गया; कुछ काग़ज टटोले और फिर लौटकर गिडियन के पास आ बैठा तथा पढ़ने लगा :

"इसमें कोई संदेह नहीं है कि इस योजना के द्वारा दक्षिणी प्रदेश की संस्थाओं में उनके स्वभावों और प्रथाओं में भारी परिवर्तन आ जायेगा। इसका उद्देश्य है कि उनके सिद्धान्तों और विचारों में क्रांति पैदा करदी जाय। यह भी आशंका है कि इससे निर्बल और कमजोर व्यक्ति कहीं घबड़ा न जायें और काँपने न लगें। पर राजनीतिक और नैतिक संसार में जो भी महान् सुधार किये जाते हैं उनका परिणाम ऐसा भी होता है। दक्षिणी प्रदेश की सरकारें निरंकुश थीं वहाँ जनता का कोई राज्य नहीं था। ऐसे स्थान पर जहाँ कुछ हजार लोग भूमि-स्वामित्व के इजारेदार हों वहाँ अधिकारों की व्यावहारिक समानता का होना असंभव है। भला सोचिये तो, जनतांत्रिक संस्थाएँ, मुफ्त पाठशालाएँ, सार्वजनिक जे, स्वतंत्र संयोग, वैसे संप्रदाय में कैसे रह सकते हैं जहाँ नवाब और दासों का मिश्रण हो; जहाँ एक ओर तो २० हजार एकड़ जमीन के स्वामी जमींदार राजभवनों में रहते हों और दूसरी ओर छोटी-छोटी तंग झोंपड़ियों में मज़दूर रहते हों?"

कार्डोज़ो गिडियन के पीछे से घूमकर सामने आया और हाथ फैला कर कहने लगा, "ठीक है, यह तो सारी बात। जैसा कि स्टीवेन्स ने कहा है हमने अपनी सभा और नये विधान से एक विरोध पैदा कर दिया है क्योंकि जब तक हमारे बढ़िया प्रस्तावों के लिए समान आधार न हो उन से लाभ ही क्या है? और उस आधार

का मतलब है। बेगारियों के स्थान पर भूमिहीन गुलामों और मुक्त भूमि-स्वामी किसान हों।"

"तो फिर तुम्हारा क्या प्रस्ताव है?" गिडियन ने पूछा, "मेरे पास तो कम-से-कम इन कुछ लोगों के लिए एक कार्यक्रम है और वह भी ऐसा जो व्यावहारिक है और सरलता से कार्यान्वित हो सकता है।"

"और मेरे पास १ करोड़ २० लाख लोगों के लिए एक कार्यक्रम है," कार्डोज़ो ने मुस्कराकर कहा और उसके पीछे हाथ रखकर अपनी कुर्सी पर पीछे टिक गया। "जब थैड्यूस स्टीवेंस गये महीने मर गया तो हमें बड़ा दुःख हुआ, क्योंकि एक महान् योद्धा और मित्र हमारे हाथों से जाता रहा। लेकिन वह हमें मार्ग बता गया है,—लोगों को समझाओ, उनके वोट के अधिकार का उपयोग करो, उन्हें शिक्षित बनाओ; उन्हें ईमानदार प्रतिनिधि दो और राज्य की विधान-सभा में और देश की कांग्रेस में कानूनी तौर से कानूनी सार्वभौमिक भूमि-वितरण के लिए संघर्ष करो।"

"और तब तक लोग विपदायें सहते रहें," गिडियन ने कहा।

"तब तक वे विपदायें सहते रहें, हाँ ठीक है। जहाँ तक हमसे हो सकता है हम उनकी विपदाओं को कम करेंगे, लेकिन यदि संपूर्ण विस्तृत चित्र को देखा जाय तो हम अधिक कुछ नहीं कर सकते।"

"इस सबके बावजूद," गिडियन ने कहा, "मैं ज़मीन खरीदना चाहता हूँ। यदि मुझे पैसे यहाँ नहीं मिलते तो मैं बोस्टन जाऊँगा, न्यूयार्क जाऊँगा, कहीं तो मिलेंगे!"

कुछ क्षण कार्डोज़ो कुर्सी के सहारे टिकेटिके गिडियन की ओर देखता रहा; फिर बैठकर उसने कहा, "आओ मैं तुमसे एक सौदा करूँ गिडियन! बोस्टन के एक महाजन आइज़क बेन्ट को मैं जानता हूँ। वह पुराने बर्दाफरोशों के विरोधियों में से था और वह एक ऐसा व्यक्ति है जो हर डॉलर को जाते देख उस पर रेशमी धागा नहीं डालता। मैं तुम्हें उसके नाम एक पत्र लिख दूँगा और वह पत्र काफी उपयोगी सिद्ध होगा। मैं फ्रेडरिक डगलस के नाम भी एक खत देदूँगा और अगर तुम्हारे दूसरे प्रयत्न असफल हुए तो शायद यह तुम्हारी सहायता कर सके।

और इसके बदले में तुमसे वचन चाहता हूँ कि अगले चुनाव में तुम प्रांतीय धारा-सभा के लिए खड़े होओ।"

"अच्छा, अगर मैं कल इसका जवाब दूँ तो?" गिडियन ने कहा।

"ठीक है तो फिर कल शाम को खाना यहीं खाओ।"

अगले दिन गिडियन चार्ल्सटन के दो महाजनों से मिला। उनमें से एक कर्नल फेएटन था, जिससे गिडियन पहले स्टीफेन होम्स के यहाँ खाने पर मिल चुका था। और जब गिडियन अगली बार कार्डोज़ो से मिला तो उसे इस प्रश्न की आशा थी ही।

"क्या हुआ?"

"वही जो तुमने सोचा था," गिडियन ने किंचित् मुस्कराते हुए कहा।

"हब्शियों में यह विशेषता होती है कि वे हमेशा हँसते रहते हैं। चाहे हब्शी ग़रीब हो या धनवान्, रहेगा हमेशा खुश? और एक तुम हो कि :

"मैं भी तो वही कर रहा हूँ," गिडियन ने स्वर ऊँचा करते हुए कहा, "मैं कोई दुखी तो नहीं दिखता।"

"और धारा-सभा के बारे में तुमने क्या सोचा?"

"अगर लोग चाहते हैं कि मैं जाऊँ," गिडियन ने स्वीकृति दी, "तो मैं चुनाव में खड़ा होऊँगा। मैं यह कोशिश करूँगा कि यह महसूस न करूँ कि मैं साल भर पहले या पाँच साल पहले क्या था।" और फिर कहा, "जहाँ तक कानूनों और कानून बनाने के बारे में मेरे ज्ञान का संबंध है और जो कुछ मैंने पढ़ा है उससे तो मैं कोई बिल्कुल बेकार साबित नहीं हूँगा।"

"मुझे बड़ी खुशी हुई गिडियन," कार्डोज़ो ने कहा।

"और मुझे नहीं हुई ऐं,—क्यों मैं तो शायद अब तक उसी दलदल के हब्शी जैसी बातें कर रहा हूँ। अगर यह संभव हो सके तो मैं जल्दी ही उत्तरी प्रदेश जाना चाहता हूँ,—अगर कल हो जाय तो कल ही चला जाऊँ?"

"मेरे ख्याल से तुम कल जा सकते हो।"

जिस रेलगाड़ी में बैठकर गिडियन जैक्सन रात को जा रहा था वह वाशिंगटन से उत्तर की ओर जा रही थी और उसने एक नये संसार में प्रवेश किया था।

यह शब्द का बिल्कुल नपा-तुला अर्थ था। अपनी ३६ वर्ष की जिंदगी में उस पर जो कुछ गुज़रा, तूफान और विस्फोट जो उसके सामने आये, वे सब उसी स्थान में थे जहाँ वह रहता था। दक्षिणी प्रदेश जहाँ वह जन्मा, जहाँ पला-बढ़ा, पिटा और कोड़े खाये और घायल हुआ फिर भी वह भूमि उसी की थी। उसे उससे लगाव था, वह उससे परिचित था, वहाँ की तबाही, अंधकार और अज्ञान सब उससे परिचित थे। वहाँ की बर्बाद जमीन और जिंदगी, गोरे ग़रीब चपरासियों और काले गुलामों की अस्थियों पर खड़े बड़े-बड़े जमींदारों के मकान ये सब उसने देखे थे। और यही अपनापन और लगाव था जिसके कारण वह दक्षिण में जहाँ भी गया उसे कुछ सभ्यता, दयालुता और अच्छाई नज़र आई। लेकिन इस नये संसार में उसे सभी कुछ विचित्र और अटपटा-सा लगा। वाशिंगटन, जो बड़े विशालकाय मकानों, राजप्रसादों और कीचड़ से भरी सड़कों का नगर था, वहाँ उसे अपनी देखी-भाली, जानी पहचानी चीजें कहीं नज़र न आईं। और अब वह रेलगाड़ी में बैठा चला जा रहा था, उसके आस-पास गोरे लोग बैठे हुए अखबार पढ़ रहे थे, आपस में बातचीत कर रहे थे; लेकिन किसी ने न तो यह देखा और न ही किसी प्रकार का अनुभव किया कि उनके बीच एक काला आदमी भी बैठा हुआ है। बारिश शुरू हो चुकी थी, वहाँ सर्दी पड़ रही थी। बारिश शुरू हुई तो बड़े प्रकोप व वेग से, मूसलाधार पानी गिरने लगा। जो लोग वहाँ बातें करते थे तो बड़े सख्त और कठोर स्वर में और जल्दी-जल्दी बोलते थे।

"ग्रांट, जनरल है, राजनीतिज्ञ नहीं।"

"और साहब अगर कोई जनरल अध्यक्ष भी हो तो क्या बुराई है?"

"मुझे यह पसंद नहीं है।"

"नहीं, आपको तो तब प्रसन्नता होगी जब जॉन्सन एक साल और अध्यक्ष बना रहे।"

"आप मुझे सिखाने की कोशिश न करें साहब, मैं खुद अपनी बातें समझ लेता हूँ।"

"लेकिन ज़्यादा नहीं समझते।"

"गेहूँ,—गेहूँ का भाव ६२ डॉलर है।"

"यह 'हेराल्ड' आपका है क्या साहब ? अगर आप बुरा न मानें तो मैं इसे पढ़लूँ ?"

"विश्वास कीजिये, मेरे दो बेटे शिकागो में हैं और उनका काम बहुत अच्छा चल रहा है।"

उन आवाजों को सुनकर गिडियन की आँखें झपकने लगीं। बाद में जब कण्डक्टर टिमटिमाते हुए लैम्पों को बुझाने आया तो उसकी आँख खुली। गद्देदार सीटें बड़ी सख्त और असुविधाजनक थीं, कुछ मील चलने के बाद रेल झटके के साथ रुक जाती और फिर चलने लगती। लोग आकर उसके पास बैठ जाते और फिर खड़े होकर बाहर चले जाते; कभी कोई गोरी नवयुवती, कभी कोई गोरा मनुष्य और कभी गोरी स्त्री और अगले दिन उसे जर्सी के पठार और सिकुड़ा हुआ कुरूप नेवार्क नगर दिखाई पड़ा, और अन्त में जर्सी नगर और नदी के पार स्थित न्यूयार्क नगर दिखाई पड़ा। नदी पार करते समय गिडियन ने बाहर की ओर झाँक कर देखा, नदी में नौकाएँ तैर रही थीं; मानो तालाब में सूखी लकड़ियाँ बह रही हों, फेरी और स्टीमर नदी में धुआँ फैलाते हुए चल रहे थे; मानो सफेद चमकदार काग़ज़ पर कोयले के निशान बना दिये गये हों, हर प्रकार के जहाज़ व नावें चल रही थीं, खींचने वाले क्रोधित दिखाई दे रहे थे, बोझ ले जाने वाली नावों की पंक्तियाँ नजर आ रही थीं और नदी के दूसरे छोर पर मकानों के झुण्ड-के-झुण्ड खड़े थे, जिनमें से कुछ को यदि अलग कर दें तो चार्लस्टन शहर बन जाता और यदि कुछ और उनमें से चुनलें तो कोलम्बिया बन जाता; यह आबादी दूसरे शहरों की महारानी नहीं, बल्कि एक महान माता मालूम होती थी, जो उन दूसरे शहरों का पालन-पोषण करती और यही ह्विटमैन ने भी कहा था; यही शहर अनगिनत लोगों की जान था।

इन्हें देखते-देखते गिडियन को उन यैंकी सेनाओं का स्मरण हो आया जो धुनी, वेग से चलने वाली निरुत्साह सेनाएँ थीं, जिन्होंने सवेग दक्षिण में प्रवेश किया था, जो सैंकड़ों बार टुकड़े-टुकड़े हो गई थीं और हर बार अपनी कतारें बंद कर देती थीं, भोंडेपन से, मूर्खता से और बड़े कष्ट से वे युद्ध-कला सीखती थीं और अन्त में सारे दक्षिणी प्रदेश को अपने मुक्ति-गीतों द्वारा गुँजा देती थीं;

कँपा देती थीं। ये ही थे वे लोग वे नाटे, वर्गहीन लोग जो नावों में सवार थे; जिनके सड़कों पर झुण्ड-के-झुण्ड चले जा रहे थे, तेजी और फुर्ती उनकी चाल से झलक रही थी। वे अपने ही कामों में व्यस्त दिखाई दे रहे थे। वहाँ सड़कों पर भीड़ भड़ाका, गड़बड़, भगदड़, शोर-गुल, धड़धड़ हो रही थी। नदी के किनारों पर माल के ढेर लगे थे। सड़कें बड़ी गंदी थीं। रिक्शा, बग्घी, छकड़े, वैगन व वैनों और दूसरे वाहनों की पंक्तियाँ लगी हुई थीं जो एक-दूसरे के सामने जल्दी-जल्दी से गुजरते जा रहे थे। ईंटों की लाल इमारत धुंआधार थी और हर जगह बक-बक व झक-झक सुनाई पड़ रही थी। इस नगर में कई राष्ट्र बसते थे; परन्तु किसी को इस काले आदमी की परवाह न थी। गिडियन को ढाई घण्टे रेल बदलने में लगने वाले थे। वह नदी के एक छोर से जिले के खजाने की तरफ पैदल गया और रास्ते में अनेक इमारतों और झोपड़ियों को पार करता हुआ वह वहाँ पहुँचा। दिन उसी तरह तमतमाहट से गर्म था जितना कि परसों अस्वाभाविक रूप से ठण्डा। यहाँ इस शहर की यही जलवायु थी और लोगों को इसे सहना पड़ता था। कोलाहलपूर्ण, गंदी, तुच्छ राजधानी, जिसे अपने आप पर विश्वास था और जो संसार के आश्चर्यों में एक गिनी जाने लगी थी। बारिश हुई और रुक गई। सड़क की पक्की पगडंडियों पर से पानी और धूल सब बह गई और जहाँ पगडंडी पक्की नहीं थी वहाँ कीचड़ की नहरें बन गई। ज़ैतूनी रंग के चमड़े वाले बच्चे नालियों में लकड़ी के टुकड़े बहा रहे थे, दूसरे बच्चे चिल्ला-चिल्ला कर अखबार बेच रहे थे, और पगडंडियों पर दौड़ रहे थे। गिडियन यह सब समझने का प्रयत्न कर रहा था, यही वह शहर था जहाँ सैकड़ों हब्शी दंगों में मारे गये थे। यही वह शहर था जहाँ के हजारों मेहनतकशों ने औजार रखकर हड़तालें की थीं; अपने पैसे, वर्दी और बंदूकें खरीदने के लिये दे दिए थे और यद्यपि वे युद्ध के बारे में कुछ न जानते थे, मौत और हत्याओं से अनजान थे; फिर भी सैकड़ों मील चलकर वे दक्षिण प्रदेश में गये थे ताकि काले लोगों को मुक्त करा सकें। यही वह शहर था जिसने हर साल युद्ध में लड़ने के लिए फौज पर फौज तैयार करके भेजी थी,—लेकिन इसी शहर में बड़े भयंकर दंगे भी हुए थे; युद्धविरोधी दंगे तो इस देश में बेमिसाल थे। गिडियन ने बहुत कुछ देखा, उस पर विस्मित हुआ, और देखता

ही रहा......

बोस्टन और शहरों की अपेक्षा अधिक साधारण था। खाड़ी के निकट स्थित शांत सड़क जहाँ आइज़क वेण्ट रहता था, चार्ल्सटन की सड़कों की याद दिलाती थी। सारी सड़क हरे वृक्षों से आच्छादित थी। मकान बहुत पुराने हो चुके थे और अब भयानक न दिखाई देते थे। उन सब पर साफ सफेद चूना पुता हुआ था, लकड़ियाँ तड़ख गई थीं और उन्हें दीमक लग गई थी। गिडियन ने वहाँ जाकर झिझकते हुए खटखटाया, और दस्तक सुनते ही एक नौकरानी दरवाजे पर आई और बड़ी विनम्रता से बोली, "आप किससे मिलना चाहते हैं?"

"यदि आज्ञा हो, तो मि० आइज़क वेण्ट से मिलना चाहता हूँ।"

"फिर कृपया अंदर आ जाइये।" नौकरानी ने कहा। उसकी नीली आँखें थीं, गेहुँआँ रंग के बाल और आवाज में एक प्रकार की लचक थी।

गिडियन ने अपना हैट उतार कर हाथ में ले लिया और मकान में प्रविष्ट हुआ। दरवाजे के कुछ ही आगे एक छोटा सा दालान था, और वहीं सामने दो महोगनी की फ्रेम में लगे दो आईने लगे हुए थे। चार सुन्दर महोगनी की कुर्सियाँ और दो छोटी-छोटी मेज़ें रखी थीं, जिन पर चीनी ढंग के सुनहरे रंग के मेजपोश बिछे हुए थे। नौकरानी ने अखरोट की लकड़ी का बना हुआ दरवाजा खोला जिसके सामने ही एक बढ़िया सा ज़ीना नजर आया जो दीवानखाने और भोजन के कमरे को विभाजित करता था। कमरे बड़े-बड़े थे, पर दक्षिणी प्रदेश के मकानों की तुलना में उनकी छतें बड़ी नीची थीं। यहाँ गिडियन ने वही संपत्ति और वैभव बिखरा पाया जो उसने स्टीफेन होम्स के मकान में देखा था, लेकिन उन दोनों स्थानों में बहुत बड़ा भेद था और वह यह कि वहाँ यह निमंत्रित अतिथि की हैसियत से गया था, जबकि यहाँ वह क्यों आया था इसका किसी को कुछ ज्ञान न था। नौकरानी ने उससे कहा :

"आप कृपया बैठ जाइए साहब! मैं अभी मि० वेण्ट को सूचना देती हूँ कि आप यहाँ पधारे हैं,—आपने अपना नाम क्या बतलाया?"

"गिडियन जैक्सन।"

"बस, मि० गिडियन जैक्सन ही?"

कँपा देती थीं। ये ही थे वे लोग वे नाटे, वर्गहीन लोग जो नावों में सवार थे; जिनके सड़कों पर झुण्ड-के-झुण्ड चले जा रहे थे, तेजी और फुर्ती उनकी चाल से झलक रही थी। वे अपने ही कामों में व्यस्त दिखाई दे रहे थे। वहाँ सड़कों पर भीड़ भड़ाका, गड़बड़, भगदड़, शोर-गुल, धड़धड़ हो रही थी। नदी के किनारों पर माल के ढेर लगे थे। सड़कें बड़ी गंदी थीं। रिक्शा, बग्घी, छकड़े, वैगन व वैनों और दूसरे वाहनों की पंक्तियाँ लगी हुई थीं जो एक-दूसरे के सामने जल्दी-जल्दी से गुजरते जा रहे थे। ईंटों की लाल इमारत धुंआधार थी और हर जगह बक-बक व झक-झक सुनाई पड़ रही थी। इस नगर में कई राष्ट्र बसते थे; परन्तु किसी को इस काले आदमी की परवाह न थी। गिडियन को ढाई घण्टे रेल बदलने में लगने वाले थे। वह नदी के एक छोर से जिले के खजाने की तरफ पैदल गया और रास्ते में अनेक इमारतों और झोंपड़ियों को पार करता हुआ वह वहाँ पहुँचा। दिन उसी तरह तमतमाहट से गर्म था जितना कि परसों अस्वाभाविक रूप से ठण्डा। यहाँ इस शहर की यही जलवायु थी और लोगों को इसे सहना पड़ता था। कोलाहलपूर्ण, गंदी, तुच्छ राजधानी, जिसे अपने आप पर विश्वास था और जो संसार के आश्चर्यों में एक गिनी जाने लगी थी। बारिश हुई और रुक गई। सड़क की पक्की पगडंडियों पर से पानी और धूल सब बह गई और जहाँ पगडंडी पक्की नहीं थी वहाँ कीचड़ की नहरें बन गईं। ज़ैतूनी रंग के चमड़े वाले बच्चे नालियों में लकड़ी के टुकड़े बहा रहे थे, दूसरे बच्चे चिल्ला-चिल्ला कर अखबार बेच रहे थे, और पगडंडियों पर दौड़ रहे थे। गिडियन यह सब समझने का प्रयत्न कर रहा था, यही वह शहर था जहाँ सैकड़ों हब्शी दंगों में मारे गये थे। यही वह शहर था जहाँ के हजारों मेहनतकशों ने औजार रखकर हड़तालें की थीं; अपने पैसे, वर्दी और बंदूकें खरीदने के लिये दे दिए थे और यद्यपि वे युद्ध के बारे में कुछ न जानते थे, मौत और हत्याओं से अनजान थे; फिर भी सैकड़ों मील चलकर वे दक्षिण प्रदेश में गये थे ताकि काले लोगों को मुक्त करा सकें। यही वह शहर था जिसने हर साल युद्ध में लड़ने के लिए फौज पर फौज तैयार करके भेजी थी,—लेकिन इसी शहर में बड़े भयंकर दंगे भी हुए थे; युद्धविरोधी दंगे तो इस देश में बे मिसाल थे। गिडियन ने बहुत कुछ देखा, उस पर विस्मित हुआ, और देखता

ही रहा......

बोस्टन और शहरों की अपेक्षा अधिक साधारण था। खाड़ी के निकट स्थित शांत सड़क जहाँ आइज़क वेण्ट रहता था, चार्ल्सटन की सड़कों की याद दिलाती थी। सारी सड़क हरे वृक्षों से आच्छादित थी। मकान बहुत पुराने हो चुके थे और अब भयानक न दिखाई देते थे। उन सब पर साफ सफेद चूना पुता हुआ था, लकड़ियाँ तड़ख गईं थीं और उन्हें दीमक लग गई थी। गिडियन ने वहाँ जाकर झिझकते हुए खटखटाया, और दस्तक सुनते ही एक नौकरानी दरवाजे पर आई और बड़ी विनम्रता से बोली, "आप किससे मिलना चाहते हैं?"

"यदि आज्ञा हो, तो मि० आइज़क वेण्ट से मिलना चाहता हूँ।"

"फिर कृपया अंदर आ जाइये।" नौकरानी ने कहा। उसकी नीली आँखें थीं, गेहुँआँ रंग के बाल और आवाज़ में एक प्रकार की लचक थी।

गिडियन ने अपना हैट उतार कर हाथ में ले लिया और मकान में प्रविष्ट हुआ। दरवाजे के कुछ ही आगे एक छोटा सा दालान था, और वहीं सामने दो महोगनी की फ्रेम में लगे दो आईने लगे हुए थे। चार सुन्दर महोगनी की कुर्सियाँ और दो छोटी-छोटी मेज़ें रखी थीं, जिन पर चीनी ढंग के सुनहरे रंग के मेज़पोश बिछे हुए थे। नौकरानी ने अखरोट की लकड़ी का बना हुआ दरवाजा खोला जिसके सामने ही एक बढ़िया सा ज़ीना नजर आया जो दीवानखाने और भोजन के कमरे को विभाजित करता था। कमरे बड़े-बड़े थे, पर दक्षिणी प्रदेश के मकानों की तुलना में उनकी छतें बड़ी नीची थीं। यहाँ गिडियन ने वही संपत्ति और वैभव बिखरा पाया जो उसने स्टीफेन होम्स के मकान में देखा था, लेकिन उन दोनों स्थानों में बहुत बड़ा भेद था और वह यह कि वहाँ यह निमंत्रित अतिथि की हैसियत से गया था, जबकि यहाँ वह क्यों आया था इसका किसी को कुछ ज्ञान न था। नौकरानी ने उससे कहा :

"आप कृपया बैठ जाइए साहब! मैं अभी मि० वेण्ट को सूचना देती हूँ कि आप यहाँ पधारे हैं,—आपने अपना नाम क्या बतलाया?"

"गिडियन जैक्सन।"

"बस, मि० गिडियन जैक्सन ही?"

"नहीं, कहिए मैं मि० फ्रांसिस कार्डोजो का पत्र अपने साथ लाया हूँ, उन्होंने ही मुझे यहाँ भेजा है।"

"हाँ," नौकरानी ने कहा। "बैठ जाइए, जरा प्रतीक्षा करनी होगी।" वह उसकी हैसियत पहचान गई, उसकी नम्रता में कुछ रूखापन था। उसने उसे आराम से बैठने के लिए भी नहीं कहा। फिर भी वह ऐसे आराम से बैठा था कि पहले कभी किसी गोरे के मकान में ऐसे न बैठा होगा। उसने कमरे में नजरें दौड़ाईं, उसे दो बड़ी-बड़ी आराम कुर्सियाँ दीख पड़ीं, जो अँगीठी के सामने रखी थीं, उसे वे न जँची। वह आगे बढ़ा तो एक कोच दीवार के सहारे रखा था, वह उसी पर बैठ गया, फिर एक चौड़ी गद्दीवाली चिपेन्डेल कुर्सी पर बैठकर उसने देखा कि भला कैसी लगती है; लेकिन जैसे ही उसने किसी के आने की आहट सुनी कि घबराकर खड़ा हो गया। उस समय शाम के ५ बजे थे और वह सोच रहा था कि क्या वह उचित समय पर वहाँ गया था या नहीं। जैसे ही आइजक वेण्ट ने कमरे में प्रवेश किया, वह सहमा हुआ और बड़े भद्देपन से खड़ा हो गया।

आइजक वेण्ट बहुत छोटे कद का आदमी था। गिडियन के सामने जब वह खड़ा हुआ तो उसका सिर गिडियन की टाई तक ही पहुँची। उसकी मूँछें छोटी, होंठ पतले और ठुड्डी नुकीली थी। इस समय वह काला पतलून, मटमैले रंग की जाकेट, रेशमी स्लीपर और बड़े सख्त कालरों में काली टाई बाँधे था। वह स्वयं घबड़ाया हुआ-सा चलता था, पक्षियों की भाँति। गिडियन की ओर देखकर उसने अपना हाथ बढ़ाया और कहा :

"आपका शुभ नाम ? गिडियन जैक्सन ? नौकरानी कह रही थी आप अपने साथ किसी का पत्र लेकर आये हैं। नाम तो वह भूल गई कि किसका है।"

"पत्र मि० फ्रांसिस कार्डोजो का है साहब !" गिडियन ने कहा।

"कार्डोजो का है ? ओह, तो आप दक्षिणी प्रदेश से आये हैं ?"

"जी हाँ, मैं दक्षिणी केरोलिना का निवासी हूँ।" गिडियन ने कहा।

"अच्छा कार्डोजो कर क्या रहे हैं आजकल ? राजनीति में पड़कर अपने

जौहर दिखा रहे होंगे ? पत्र कहाँ है ?"

गिडियन ने पत्र उसे दे दिया। उसे जल्दी से फाड़कर उसने फुर्ती से पढ़ा और फिर गिडियन की ओर देखा। "कार्डोजो ने आपकी बहुत प्रशंसा की है," उसने कहा "आप बैठिए ना ? कुछ पीजियेगा ?" उसने आराम कुर्सियों की ओर संकेत करते हुए कहा और तब तक मदिरा की एक बोतल और ग्लास निकाल लिए। गिडियन बैठ गया। "यहशेरी है," वेएट ने कहा, "आपको शेरी पसन्द है ?"

गिडियन ने सिर हिला दिया।

"हाँ या नहीं" वेएट ने कंधे सिकोड़ते हुए हुए कहा, "अधिकतर काले लोग तो शराब की कौड़ी भर भी पर्वाह नहीं करते। उनको तो कभी इसके स्वाद का अवसर भी न मिला होगा और यह बस स्वाद ही के लिए तो होती है; पहले मैं विस्की पीता था, अब शेरी पीता हूँ। विस्की मुझे अब भी पसन्द है, लेकिन आजकल मेरा स्वास्थ्य कुछ ठीक नहीं है। आप सिगार पियेंगे ?"

गिडियन ने अपना सिर हिला दिया।

"अच्छा, तो मैं तो पी सकता हूँ न ? नहीं,— अगर आप बुरा मानें तो मैं भी नहीं पिऊँगा। जब मेरी पत्नी जीवित थी, तो इन चीजों को भोजन के बाद पीने के लिए बचा लिया करता था।" उसने एक लम्बी काली चुरुट निकाली और उसे सुलगा लिया, आराम-कुर्सी पर लेट गया और लेंप के ढकने पर धुँआ छोड़ने लगा।

"इसमें लिखा है,—"उसने पत्र बताते हुए कहा, "कि आपने सभा में भी भाग लिया था। आप मुझे उसके बारे में कुछ बताइये न ! मैंने वैसे अखबारों में पढ़ा था, लेकिन कुछ ठीक से समझ नहीं पाया। पहले तो आप मुझे इस भूमि-योजना के बारे में कुछ बताइए—अच्छा नहीं रहने दीजिए; वह आप भोजन के बाद बताइएगा। मैं चाहता हूँ कि डॉक एमरी भी उसे सुने, वह अभी आनेवाला है, बड़ा ढुलमुल-सा आदमी है। हाँ, तो अब आप बताइए सभा में क्या हुआ,—"

गिडियन ने उसे सभा का सारा क़िस्सा सुना दिया। उस नाटे व्यक्ति के साथ

गिडियन सपाट फ़र्श पर बैठा हुआ था। वेएट थूक देता; दलील करता, विरोध करता, क्रोधित हो जाता और गिडियन की ओर चीखता,—लेकिन उसके व्यवहार में कोई भेद-भाव न था। वह एक इन्सान की हैसियत से दूसरे इन्सान से जैसा व्यवहार किया जाना चाहिए वैसा ही कर रहा था। अब गिडियन काला आदमी न था, आज जीवन में पहली बार चाहे वह काले या गोरे के साथ बैठा हो, वह अपने रंग को भूल गया। आज जिन्दगी में पहली बार वह एक ऐसे व्यक्ति से बातचीत कर रहा था, जिसने एक लम्बी और अध्ययनपूर्ण मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया की सहायता से, शायद यह प्रक्रिया उसकी बाल्यावस्था से ही चल रही होगी, यह निश्चय कर लिया था कि वह जातीय-जनवाद में विश्वास करेगा और इसमें वह बहुत स्पष्ट और सुलझे हुए विचार रखता था। मनोगत रूप से वेएट के लिए गिडियन एक मनुष्य था, इसके विरुद्ध वह कुछ सोच ही न सकता था, चाहे वह इच्छा से हो या अनिच्छा से, क्योंकि ऐसा करना उसके लिए सम्भव न था और वह वैसा ही लगता भी था, जैसे कि एक औसत दर्जे का अमरीकी लैटिन भाषा में सोचने-विचारने लगे, जिसका उसे कोई ज्ञान ही नहीं है।

जब गिडियन ने सभा में भूमि-समस्या पर हुई बहस का उल्लेख किया तो वह फिर उस पर गरज पड़ा :

"तुमने उस समय मूर्खता की, जैक्सन! तुम सब उस समय बुद्धू हो गये! स्टीवेन्स उस समय जीवित था, क्या तुमने उससे कोई सलाह ली थी? क्या तुमने वाशिंगटन से किसी प्रकार का समर्थन माँगा था? नहीं,—तुम अपने आप सभ्यता का पुनःनिर्माण करने में लगे थे! इस कार्डोज़ो को देखो, वह भी यों ही ताकता रहा! यही तो तुम्हारे तंग नज़र वाले सभ्य मूर्ख हैं! मैं कहता हूँ यार तुमने एक बड़ा अच्छा ऐतिहासिक मौका गँवा दिया! तुम उसी समय वहीं बड़ी-बड़ी खेतियों का नाश कर सकते थे,—पर तुमने ऐसा नहीं किया। अब भुगतो इसका परिणाम,—"

जब वह उस प्रकार गिडियन पर गरजा तो मालूम हुआ मानों वह अपनी ही श्रेणी के किसी आदमी को डाँट रहा है। उस समय गोरे या काले के भेद-भाव का कोई प्रश्न ही न था, वह उस समय किसी के साथ भी नम्रता न बरतता, न कोई

लिहाज़ ही करता। बाद में उसने गिडियन को संकेत से बताया कि इन सब बातों की पृष्ठ-भूमि क्या है, उसने कहा, "मैं बर्दाफरोशी के विरोधियों में से एक था, मि० जैक्सन! हो सकता है मैं उनमें से सबसे अच्छा और ऊँचा व्यक्ति न हूँ, क्योंकि जब दूसरे लोग संघर्ष कर रहे थे और जान की बाज़ियाँ लगा रहे थे, तो मैं अपने हाथ-पर-हाथ धरे बैठा था। लेकिन मैंने उसमें कुछ काम ज़रूर किया था। मैंने उन्हें आर्थिक सहायता दी थी। क्या तुम जानते थे कि बूढ़ा ओसावा टॉमी ब्राउन भी ठीक-ठीक उसी जगह आकर बैठा था जहाँ तुम बैठे हो, और उसने बंदूकों, बारूद और सैनिकों के लिए मुझसे रुपये माँगे थे, क्योंकि वह दक्षिण में दैवीय प्रकोप के साथ घुसकर वहाँ से गुलामी का नामोनिशान मिटाना चाहता था और उस प्रदेश को मुक्ति के प्रकाश से भर देना चाहता था। और मैंने उसे पैसे और बंदूकों की सहायता दी। लेकिन आज यह बात हज़ारों वर्ष पुरानी जान पड़ती है, है न, जबकि लोग इस सड़ी-गली बीमारी का नाश करने की बड़ी-बड़ी डींगे मारते थे? और इसके बाद हम निरन्तर चार वर्षों तक खून में नहाते रहे। ठीक इसी जगह पर बूढ़ा ब्राउन अपनी दाढ़ी लटकाये, आँखों में विद्रोह की ज्वाला लिए बैठा था, तुम सुनोगे उसने क्या कहा था मुझ से? मुझे अब तक उसके शब्द याद हैं,— 'अभी तक खुदा ने हमारा साथ नहीं छोड़ा है मि० वेएट,' उसने कहा, 'लेकिन वेएट हमने—हम दयापूर्ण, तुच्छ, भयभीत और निर्बल प्राणियों ने उस खुदा को भुला दिया है जो हमारा ही खुदा नहीं, बल्कि हज़ारों, लाखों, करोड़ों प्राणियों का है, हमारे उन पूर्वजों का है जिन्होंने इज़राईल के बच्चों को मिस्र से बाहर निकाल कर उनकी रक्षा की थी।' जहाँ तक मुझे याद है ये ही उसके शब्द थे जैक्सन! वह तो तुम्हारी जगह बैठा था, इमरसन यहाँ बैठा था, और मैं खड़ा हुआ था। वाल्डो की और मेरी आँखें चार हुईं। तुम जानते हो जैक्सन वह बूढ़ा जॉन ब्राउन महान आदमी था, इतनो महान् कि लोग उसे गलत समझते थे। वह बूढ़ा आदमी लोगों को बता सकता था कि ईश्वर में विश्वास करने से कितनी शक्ति उनमें आ सकती थी। मैं तो नास्तिक हूँ, और मुझे अपनी नास्तिकता पर डॉक एमरी से भी अधिक गर्व है। लेकिन उस समय बूढ़े ओसावा टॉमी से बातचीत करते समय मैं भी क्षण भर के लिए आस्तिक बन

गया था। खुदा मेरी दाहिनी ओर था, मेरे परदादा का खुदा, वह खुदा का बंदा भयानक व्यक्ति जो कई यात्रियों के साथ यहाँ तक आया था मेरे पास बैठा हुआ था। कहीं मैंने आपकी भावनाओं को तो ठेस नहीं पहुँचाई मि० जैक्सन ? पता नहीं आप आस्तिक हैं या नास्तिक ? बहुत से काले आदमी तो आस्तिक ही होते हैं।"

"जी नहीं, मेरी भावनाओं को कोई आघात नहीं पहुँचाया आपने।" गिडियन ने शांत भाव से कहा।

वे और कई घण्टे बातचीत करते रहे। तब वेण्ट ने सुझाया कि वे दोनों भोजन बनने तक कुछ देर आराम कर लें। "मुझे तो इसकी आदत पड़ गई है; क्योंकि मैं बूढ़ा होता जा रहा हूँ। तुम ? तुम तो खैर अभी जवान पट्ठे हो, पर यदि कुछ देर सो गये तो मज़ा आ जायगा तुम्हें।" गिडियन ने बताया कि उसके लिए बोस्टन में ठहरने की कोई जगह नहीं है। "अगर आप काले लोगों के लिए कोई होटल बतायें तो अच्छा हो।" "क्या कहा, वाह तुम यहीं ठहरोगे, होटल वोटल कोई नहीं है यहाँ।" वेण्ट ने कहा। गिडियन ने आपत्ति तो की लेकिन वेण्ट ने उसके सब एतराज़ रद्द कर दिये। "डगलास भी मेरे साथ ही रहता है," उसने कहा। "मैं समझता हूँ तुम्हारे लिए भी यहाँ ठहरना कोई बुरी बात तो है नहीं।" इसके बाद नौकरानी आई और गिडियन को ऊपर के कमरे में ले गई।

"युद्ध के बाद दो वर्षों का जो हम पर प्रभाव पड़ा है उससे हममें काफ़ी चेतना आई है। वे निन्दनीय काले क़ानून इसीलिए बनाये गये थे ताकि हमें फिर से दासता के गढ़े में धकेला जा सके। खेतिहरों का विचार था कि वे यूनियन की विजय को धूल में मिला देंगे, और उनका विचार बहुत कुछ सही भी था। लेकिन वह बात अब न दुहराई जायगी। हमने ग़रीब गोरों से एक अच्छा और ईमानदारी का समझौता किया है; हम दोनों अब एक हैं और हमारी आँखें अब खुली हुई हैं। अब हमारे पास शक्ति है और हम इसे बरक़रार रखना चाहते है।"

खाने की मेज़ पर तीन व्यक्ति थे, आइज़क वेण्ट—महाजन, डॉ० नॉर्मन एमरी, जिन्होंने उदर-सम्बन्धी चिकित्सा में कुछ अन्वेषण किये थे और अपने लिए तथा बोस्टन के लिए यश प्राप्त किया था; और गिडियन। एमरी का क़द लम्बा, आँखें

काली, और दुबला-पतला शरीर था। उसके एक नुकीली दाढ़ी थी और काले फ्रेम का एक चश्मा लगा था। उसके चेहरे से मालूम होता था कि वह बिल्कुल अलग-थलग सा आदमी है, जिसे किसी में भी कोई दिलचस्पी नहीं है। पर वह भीतर से ऐसा नहीं था। लॉवेल, इमरसन और लॉवेल और लॉज उसके सगे-संबंधियों में से थे। उसकी बुद्धि बड़ी तीव्र और मज़ाक़ चाकू की भाँति तीखा और पैना था, जिसका वह वेएट पर बार-बार प्रयोग कर रहा था। गिडियन ने जल्द ही भाँप लिया कि वह एक इंसान दोस्त आदमी है हालाँकि वह अपनी मानवता का बड़ी सावधानी व मितव्ययिता से प्रयोग करता था। वेएट और एमरी दोनों विधुर थे, लेकिन उनमें बड़ी गहरी दोस्ती थी, गो कि वे कभी कभी-झगड़ भी लेते थे। अब एमरी ने गिडियन से पूछा :

"लेकिन आप उस शक्ति को रोकेंगे किन तरीक़ों से मि० जैक्सन ?"

"तीन तरीक़ो से," गिडियन ने कहा। "पहले तो वोटिंग के ज़रिये। वहाँ हम हर दृष्टि से ज़मींदारों को हरा सकते हैं। उन्हें बीस आदमियों में सिर्फ़ एक वोट ही मिलेगा। दूसरे हम अब लोगों को शिक्षित बनाने वाले हैं। हमें सिर्फ़ १० वर्ष लगेंगे और इस अर्से में हम शिक्षित बालकों की एक पीढ़ी तैयार कर लेंगे। और डॉ० एमरी यही हमारे लिए बहुत बड़ी बंदूक सिद्ध होगी। जब ज़मीदारों ने काले ग़ुलामों के लिए शिक्षा पर प्रतिबंध लगाते हुए क़ानून बनाये थे, और पढ़ना हमारे लिए एक प्रकार का अपराध बना दिया था, उस समय उन्होंने हमें यही सिखाया था। और तीसरा तरीक़ा है भूमि-वितरण का जैसा कि मैंने आपको बताया; हम सभी लोग, जो दक्षिणी प्रदेश में रहते हैं, खेती करते हैं, हमारे यहाँ-आपके यहाँ जैसे मिल कारखाने नहीं हैं। वहाँ तो लोग खेती पर ही अपना निर्वाह करते हैं। हल चलाकर और खेत जोत कर लोग कम-से-कम अपना पेट भरते हैं और उसी पर संतोष करते हैं। जब हमें ज़मीन मिल जायगी, हम इसका वितरण कर देंगे, हम वहाँ आज़ाद खेतिहरों का एक राष्ट्र तैयार कर लेंगे, जैसा कि आपके यहाँ है, तब हम भी अपने पैरों पर खड़े हो जायेंगे और निश्चय तथा ज़ोर के साथ अपनी सफलता की बातें करेंगे। एक बार हमें ज़मीन मिल जाय, तो फिर हम उसे कभी नहीं छोड़ेंगे।"

"अच्छा ठीक है," वेएट ने कहा, "तुम्हारी नया दक्षिण बनाने की यह काल्पनिक धारणा हमने स्वीकार कर ली, तुम्हारे स्कूल बनाने के सुन्दर सपने भी मंजूर कर लिए। तुम्हें ब्राण्डी चाहिए एमरी ?"

"मैंने तुमसे कितनी बार कहा है कि यह तुम्हारे दिल के लिए हानिकारक है ? मैं तो कहते-कहते ऊब गया तुम से।"

"अच्छा, मेरे पास अभी काफ़ी बड़ा दिल है। जो कुछ तुमने कहा जैक्सन, वह भी मान लिया, इससे भविष्य के निर्माण-कार्य में तुम्हें सहायता मिलेगी। व्यापार इससे बिल्कुल अलग चीज़ है। अगर तुम मेरे पास दान माँगने आते तो शायद मैं तुम्हें दे देता या न भी देता, क्योंकि वह कई बातों पर निर्भर करता है। समझे ? मैं कोई नरम दिल का आदमी नहीं हूँ, न ही ऐसा भावुक।"

एमरी ने कहा, "मेरे ख्याल से वह खुद इस बात को समझते हैं, आइज़क।"

"लेकिन तुम्हारी योजना बड़ी अव्यांवहारिक और हास्यजनक है, तुम्हारे लोगों ने थोड़ा-सा पैदा कमा लिया और अब उससे तुम एक इतना बड़ा और जोखम का कार्य करना चाहते हो। इस काम के लिए तुम्हें हर डालर के लिए जो तुम लोगे कम से कम १५ डॉलर के मूल्य का धरोहर रखना पड़ेगा। और फिर मैं किसका विश्वास करूँ, किस बुनियाद पर पैसे दे दूँ। पुराने कुछ गुलाम, कुछ ग़रीब गोरे, और वे लोग हाल ही में जो विद्रोही-सेना के सहायक थे और कुछ अच्छे विचार, के थे, इसी सब को आधार मान कर मैं पैसे दे दूँ ? तुम कहते हो कि मैं तुम्हें अनगिनत रुपये दे हूँ। क्या यह बुद्धिमानी होगी, जैक्सन ? मैं तुम्हीं पर यह बात छोडता हूँ।" उसने चुरट सुलगाया; एमरी ने आरामकुर्सी पर लेटते हुए गिडियन की ओर एक हल्की मुस्कराहट के साथ देखा। निराशा भार बनकर उस पर छा गई और वह व्याकुल हो गया। वह यहाँ तक आया था और उसके कुछ पैसे खर्च हो चुके थे। डॉलर ऐसी चीज थी जो दिल तोड़ देती थी। लोग डॉलर के पीछे जान दे देते थे। रेल के टिकट के दाम भी कई डॉलर थे। वह कितनी दूर तक आ चुका था,—और कितनी दूर वह और जा सकता था ? क्या कार्डोज़ो बिल्कुल ठीक कह रहा था ? क्या हमेशा हमेशा के लिए विपत्तियाँ, असंख्य विपत्तियाँ, और भारी बोझ

-सहने के बाद ही ग़रीब लोग प्रगति कर सकते हैं ?

"शायद यह बुद्धिमत्तापूर्ण सुझाव नहीं है" गिडियन ने कहा, "व्यापार के बारे में मैं बहुत कम जानता हूँ, या यों कहिए कुछ भी नहीं जानता । लेकिन मैं कपास और चावल के बारे में ज़रूर जनता हूँ। सारी ज़िन्दगी मैं कपास के पौधे ही बढ़ते हुए देखता आया हूँ, कपास के डोढ़े फूलते देखता आया हूँ, काले आदमी को खेत में फसल काटते देखता आया हूँ। आप मुझे कपास का एक बीज दे दीजिये और मैं आपको उसकी क़िस्म बता दूँगा ? चावल का दाना बताइए और मैं आपको बताऊँगा कि वहाँ कहाँ उगा है,—ऊँची ज़मीन में या नीची ज़मीन में। मैं इन चीज़ों को भली भाँति जानता हूँ, आप मुझ पर विश्वास कीजिए। इसके अलावा मैं कुछ और भी जानता हूँ। यहाँ तुम यैंकियों ने सूती कपड़ा बनाने का कोई नया तरीक़ा निकाला है। न्यू इंग्लैण्ड में, मिलें बन रही हैं। अगर कोई कपास ही न बोये तो तुम यह कपड़ा कैसे बुनोगे ? क्या तुम ज़मींदारों से बुआओगे ? इसमें बहुत समय लगेगा; उन्हे पुराने ढंग से कपास बोने के पहले हमें ख़त्म करना होगा। और भला सोचिए तो जब कपास का उत्पादन कुछ ज़मीदारों के हाथों में नियंत्रित होगा तो वे उसकी क़ीमतें क्या रखेंगे ? आप पूछते हैं मेरे लोगों की क्या ज़मानत है,—यह है मेरे लोगों की ज़मानत। यह भूमि कपास की भूखी है, यह सारा संसार कपास चाहता है। आज चार साल से कपास की कोई अच्छी फसल ही नहीं बोई गई। यह तो बनियों का बाज़ार है। इसलिए, मेरे लोगों को ज़मीन दो, उन्हें एक नमूना पेश करने दो, वे केरोलिना को बता देंगे कि इस ढंग से काले आदमी क्या कर सकते हैं। वे उसी तरह से अपना काम करेंगें जैसे कि काले आदमियों ने उस समय किया था जब समुद्री द्वीपों में उन्होंने चावल बोये थे और बाद में सरकार ने उनसे ज़मीन छीन ली थी, और वही ज़मीन उन्होंने विद्रोहियों के खिलाफ जो यूनियन को नष्ट करना चाहते थे, युद्ध करते समय दुबारा हासिल की थी। यदि आप ऐसा करें और आपको कोई भय नहीं तो फिर दूसरों को भी कोई भय नहीं होगा। हमें आप सिर्फ ५ साल के लिए ज़मीन दे दीजिए और हम जान तोड़कर मेहनत करेंगे कपास उगायेंगे, आपकी एक-एक पाई मय सूद व मुनाफे को लौटा

देंगे। कभी आपने हब्शियों को काम करते देखा है ? यदि आप पुराने ज़माने में दक्षिण-प्रदेश में होते तो आप देखते कि हब्शी लोग किस तरह काम करते थे; जबकि उनकी पीठ पर कोड़े लगाये जाते थे। मैं आपसे अब कहता हूँ कि यदि उन्हें भूमि दे दी जाय तो वे अपनी ज़मीन पर दुगुना काम करके दिखा सकते हैं। मैं यह जानता हूँ। आप विश्वास कीजिए, मि० वेस्ट ! मैं आपसे दान माँगने नहीं आया हूँ। मुझे अपने आप पर घमण्ड बिल्कुल नहीं है। हमारे बूढ़े शिक्षक ने जो बस्ती में हमें पढ़ाता है हम से कहा था, गिडियन, घमण्ड कभी न करना। बच्चों को पुस्तकों, काग़ज़ों की आवश्यकता होती है, और यदि वे तुम्हें ये चीजें दें तो उन्हें ले लेना, घमण्ड न दिखलाना। लेकिन यह बात उससे भिन्न है, यह कोई दान नहीं है। मैं आपको वचन देता हूँ, इसे दान नहीं समझा जायगा।''

गिडियन ने बोलना खत्म किया, गोरों के सामने इस प्रकार गर्मागर्मी की बातें उसने कभी न की थीं और न ही इतनी बातें की थीं; वह घबड़ाया, बैठ गया और मेज़पोश की ओर देखने लगा। डॉ० एमरी ने उसकी उँगलियों के नाखूनों को ग़ौर से देखा। और इसके बाद कुछ क्षण के लिए स्तब्धता छा गई। कोने में लगी हुई लम्बी घड़ी की टिकटिक ने वह खामोशी दूर की। वेस्ट ने सिगार की राख झाड़ते हुए कहा, ''यह कार्वेल की ज़मीन है कितनी बड़ी, मि० जैक्सन ?''

''बाइस हज़ार एकड़ और कुछ और।''

एमरी ने सीटी बजाई। वेस्ट ने धीरे से सिर हिलाया। ''तुम नहीं जानते'' उसने कहा, '' अगर तुम जानते भी होंगे तो अब भूल गये हो। यह सारा युद्ध अब भुलाया जा चुका है।''

''पुराने ज़माने में तो'' एमरी ने व्यंग से कहा, ''इतनी बड़ी ज़मीन अच्छी खासी जागीर कहलाती थी।''

''ज़मीन किस किस्म की है ?''

''कम-से-कम आधी तो खेती के योग्य है'' गिडियन ने जवाब दिया, ''और बाकी झाड़ियाँ, देवदार के जंगल, चारागाह और कुछ भाग दलदल का है।

''वहाँ कोई मकान भी है या नहीं ?''

"हाँ, एक बहुत बड़ी कोठी है। कार्वेल तो वहाँ कभी-कभी ही रहे हैं, क्योंकि वे अधिकतर चार्ल्सटन में ही रहते थे।"

"क्या आपका ख्याल है कि उस कोठी को कोई खरीद लेगा? मेरा मतलब है इस दृष्टि से कि क्या वह खेती के लिये उपयोगी कोठी समझकर ख़रीदी जा सकेगी?"

गिडियन ने अपना सिर हिला दिया। "वह तो बड़ी कोठी है फिलहाल खेतिहर लोग जिनके पास ज़मीन है उसे ही वे मुश्किल से चला रहे हैं। मैं नहीं समझता कि राज्य में किसी के पास इतना फ़ालतू पैसा है कि वह उसे कोठी खरीदने में लगा दे।"

"क्या तुम्हें ज़मीन, कोठी वगैरह की क़ीमत का तख्मीना मालूम है?"

"फेडरल एजेण्ट ने युद्ध के पहले जो तख़्मीना लगाया था जिसमें गुलाम नहीं शामिल किये गये थे, वह था ४ लाख ५० हज़ार डॉलर। नीलाम पर जब वे ज़मीन बेचेंगे तो शायद ५ डॉलर प्रति एकड़ के हिसाब से बेचेंगे। उनका विचार है कि उस पूरी ज़मीन को २२ हज़ार एकड़ के टुकड़ों में बाँट दें फिर कुछ ज़्यादा-कम भी हो सकते हैं।"

"तुमने क्या कहा था कि तुम्हारे यहाँ तीस से ज़्यादा परिवारों की वस्ती है। तीन हज़ार एकड का सौदा बुरा नहीं है। मैंने मैसेच्यूसेट्स के लोगों को देखा है कि वे बीस या तीस एकड़ ज़मीन में भी अच्छी-खासी खेती कर लेते थे और बैंक में मुनाफ़ा कमाने के लिए पैसे जमा कर देते थे। और फिर वहाँ की ज़मीन कोई ऐसी बहुत बढ़िया या उपजाऊ ज़मीन भी नहीं समझी जाती।"

"आप ठीक कहते हैं साहब," गिडियन ने उनकी बात स्वीकार करते हुए कहा, "हमारे यहाँ की ज़मीन बहुत अच्छी है। लेकिन जो टुकड़े हमें मिलेंगे उनमें आधा ही भाग खेती के योग्य होगा। उसे भी लोग ठीक-ठाक कर लेंगे और खेती के योग्य बना लेंगे पर उसमें समय लगेगा; क्योंकि वह काम ज़रा धीरे-धीरे होगा। और एक बात यह भी है कि हम आपकी तरह नहीं बल्कि भिन्न प्रकार की खेती करते हैं। आपको तो यहाँ चरागाहें मिल जाती हैं पर हमें अन्न, घासादि उगाने, एक दो सूअर पालने के अलावा हमें नक़द पैसों के लिये भी

फसलें बोनी पड़ती हैं। जब तक पन्द्रह-बीस एकड़ ज़मीन न हो आप कपास तो उगा ही नहीं सकते।"

"उसे बेचोगे कैसे ?"

"दलालों के हाथ, यहाँ बहुत से ऐसे दलाल मिल जाते हैं। अब वहाँ रेल भी चलनेवाली है और हम दस मील तक गाड़ियों में माल लाकर रेल में भर दिया करेंगे।"

"खच्चर भी हैं तुहारे पास ?"

"अभी तो थोड़े ही हैं, हाँ और खरीदे जा सकते हैं।"

वेस्ट ने एमरी को सम्बोधित करते हुये कहा, "तुम्हारा क्या विचार है डॉक ?"

"मेरा क्या विचार होता, तुम इससे भी बदतर चीजों में अपना पैसा गँवाते आये हो।"

"तुम एक-तिहाई की शिरकत करोगे ?"

"मैं कोई बैंकर तो हूँ नहीं," एमरी ने मुस्कराते हुए कहा।

"तुम्हारे पास मुझसे तो ज़्यादा ही पैसा है, और मरते दम कोई क़ब्र में तो लेकर जाओगे नहीं उसे।"

"लेकिन इस समय रखना तो अच्छा है।"

"यदि मैं गारंटी दूँ तो साझीदार बनोगे ?"

"जब तुम मुझे गारंटी दे सकते हो तो फिर खुद ही क्यों नहीं दे देते, मेरी साझादारी का क्या सवाल है ?"

"मैं तो किसी का साथ चाहता हूँ," वेस्ट ने तंग आकर कहा, "यह सबसे अधिक मूर्खतापूर्ण काम है जिसमें मैं फँस गया हूँ।"

"पर पैसे तो तुम भी ले के नहीं मरोगे ?" एमरी ने कहा।

"वह तो ठीक है। देखो जैक्सन, तुम मुझसे बूढ़े ओस्वा टॉमी की तुलना में दुगुनी रक़म माँग रहे हो और शायद तुम्हारा महत्त्व उससे आधा भी न हो। ठीक है, मैं पन्द्रर हजार डॉलर के लिए तुम्हें एक हुण्डी दिये देता हूँ। अब मेरा आभार-वाभार मत मानो। यह बात तो खत्म हो गई अब कोई अपनी बातें

सुनाओ।"

एमरी में आदमी होने के अलावा और कई विशेषताएँ थीं। एमरी के जाने के बाद वह बैठा हुआ गिडियन से रात भर बातें करता रहा; रात भर वह अपने काले लम्बे चुरुट और ब्राण्डी पीता रहा; अपने गाउन में ढका यह नाट्य व्यक्ति गिडियन से कहने लगा :

"मैं ६७ वर्ष का हूँ बेटे, और अकेला हूँ। इसलिए मैं अक्सर बीती बातें याद करता हूँ। जब मैं तुम्हारी उम्र का था गिडियन, तो क्रांति के सैनिक तब तक जीवित थे। उस समय न्यू इंग्लैण्ड में हमारा वंश बड़ा शक्तिशाली था। ज़रा याद तो करो उस ज़माने को। हम भाग्य के मारे यहाँ आ गये, हमारे हाथों में डण्डे थे और चेहरे पर कोई मुस्कराहट न थी, और फिर इसी बंजर, पहाड़ी ज़मीन में हमने काम किया और जीविका कमाई। और हमने कई बड़े-बड़े काम किये। गिडियन! जनवाद तो हमारे सभा-गृहों का एक अभिन्न अंग बन गया था। वहाँ के बूढ़े फरिश्ते उस समय हमारे साथ थे, क्रांति के लिये हमारे यहाँ के किसान और मछुओं ने युद्ध किया और सिर्फ खुदा का ही उन पर उस समय साया था। लेकिन यह सब तो हम लोग अब भूल चुके हैं, है न? मैं जल्द ही मर जाऊँगा, एमरी भी अधिक दिन न जियेगा। वाल्डो काफी बूढ़ा हो चुका है, थोरियो वैरागी हो गया है, विटियर कहीं अदृश्य हो गया है, लाँगफेलो निस्सारता में लीन है, हमारा यह वैभव है कहाँ? यह ब्रुकलिन आदमी ह्विटमैन असभ्यों की भाँति गरजता है लेकिन उसकी आवाज़ बुलन्द और साफ होती है। और अगर हम बैठकर सोचें तो ऐसे कई दूसरे भी हैं। हममें तो बस एक चिनगारी बाकी रही है गिडियन, बूढ़े थैड स्टीवेन्स ने ठीक ही किया जो न्यू-इंग्लैण्ड छोड़कर पेन्सिलवानिया चला गया। लेकिन यह मत भूल जाना कि हमने कुछ न किया, हमने भी अपने जीवन-काल में बड़े महान् कृत्य किये हैं। ये हमारा ही तो गीत था, 'ईसा के अवतरण को देखा है मैंने अपनी आँखों से।' आओ यार ऊपर चलें—"

गिडियन उसके साथ ऊपर चला गया; वेण्ट बड़े धीरे-धीरे थकावट भरे अन्दाज़ से चढ़ रहा था और हर सीढ़ी पर चढ़ते समय उसका दम फूल जाता था, वह रुक कर साँस लेता और फिर चढ़ता था। वे दोनों एक लड़के के कमरे में

गये और गिडियन ने देखा कि वह कमरा वर्षों से खाली पड़ा था, उसका किसी ने उपयोग नहीं किया था। वहाँ पुस्तकों, कॉपियों और धातु के टुकड़ों का ढेर लगा था, दो भुस-भरे उल्लू रखे थे, एक नवयुवती का पेंसिल से बनाया हुआ चित्र रखा था; लैक्रोस लकड़ियाँ रखी थीं, हिन्दुस्तानी जूतियाँ पड़ी हुई थीं, छोटे जहाज़ का बड़े कौशलपूर्ण ढंग से बनाया हुआ मॉडल रखा था। ब्रेएट ने कहा :

"वह युद्ध के दूसरे हीं दिन लड़ते-लड़ते वीर गति को प्राप्त हो गया, गिडियन। बाद में मैंने उसके सेनापति से बातचीत की तो उसने मुझे सारा क़िस्सा बताया। वह लड़का तीन बार घायल हुआ, दो बार तो बाँह में घाव लगे, और एक बार सिर पर लेकिन व लड़ता रहा। गिडियन, शायद मैं कोई ५०० बार नीचे अंगीठी के सामने बैठा हूँगा, और मैंने यही समझने का प्रयत्न किया होगा, उस लड़के के पास तक पहुँचने की कोशिश की होगी ताकि मैं अपने को उसमें प्रविष्ट करके यह पूछूँ कि जब वह टुकड़े-टुकड़े हो गया था, रक्त-रंजित था, और मृत्यु का ग्रास बन चुका था तो उसे युद्ध क्षेत्र में खड़े रहने का क्या कारण था? गिडियन तुम नवजवान हो, लेकिन तुम्हारे पहलू में भी दिल है। तुम अपनी जनता के नेता हो जाओगे, गिडियन! हमें समझने का प्रयत्न करो, कुछ भी क्यों न हो जाय हमें अपने से जुदा न करो।"

"चाहे कुछ भी क्यों न हो जाय," गिडियन ने सिर हिलाया।

"ठीक है। अब मैं उसकी किताबों और सब चीज़ों को सन्दूक में बंद करवाये देता हूँ। उसके खिलौने और बचपन की किताबें ऊपर के कमरे में हैं तुम ये सब ले जाओ—"

"नहीं, मैं इस तरह से ले जाना ठीक नहीं समझता," गिडियन कहने लगा।

"मूर्ख न बनो। साल भर से मैंने यहाँ आकर झाँका भी नहीं है। मेरे बच्चे की मूर्ति मेरे हृदय में अंकित है यह कचरा मुझे नहीं चाहिये। तुम इसका कुछ उपयोग कर सकते हो और इसीलिए यह है भी। जब मैं तुम्हें पन्द्रह डॉलर दे सकता हूँ तो बीस स्लेटें और कुछ चाक भी खरीद कर दे सकता हूँ। तुम मुझे ज़रा पता लिख दो उन्हें कहाँ भिजवा दूँ, बस बाक़ी सब मैं कर लूँगा।"

गिडियन ने उसका आभार मानने का प्रयत्न किया, पर वह इतना सरल न जान पड़ा। वह पुरानी मसहरी पर लेट गया, उसके सिराहने की खिड़की से जो चाँदनी अन्दर आ रही थी, उसे खिड़की का सायबान दो भागों में विभाजित कर रहा था। गिडियन लेटे-लेटे न जाने किन-किन घटनाओं को याद रहा था, मनुष्य के अनगिनत चेहरे चाहें उनकी चमड़ी का रंग कैसा ही क्यों न हो, और उनके आने-जाने की अनगिनत दिशाएँ इन सब बातों पर वह निश्चय से विचार कर रहा था। 'हालेलुजाह' गीत कोई अचानक ही उसके कानों में नही गूँज उठा बल्कि धीमी रफ्तार से और ख़ामोशी से उसे याद आया। तार्किक व वैज्ञानिक ढंग से विश्लेषण किया जाय तो एक बात को छोड़कर सभी का जवाब दिया जा सकता है और वह यह कि ऐसे कुछ ही लोग क्यों मौजूद हैं जो भ्रातृत्व के स्वप्न में अपना सुख और अपनी समृद्धि देख पाते हैं।

अगले दिन जेफ़ से मिलने वोर्सेस्ट जाने के पहले गिडियन डॉ० एमरी के दवाखाने में गया। वहाँ वह विनम्र और सुसंस्कृत सज्जन नहीं थे, सफेद गाउन में सुशोभित एक सुयोग्य वैज्ञानिक अपने दो तरुण सहायकों के साथ कमरे और गैलरी में भरे मरीज़ों की सुश्रूषा कर रहे थे। यह बोस्टन का ही एक हिस्सा था जो गिडियन को न्यूयार्क की याद दिला रहा था, वहाँ की झोपड़ियाँ, जर्जर मकान, गंदी सड़कें, दरिद्रता, ग़रीब आइरिश, ग़रीब पोल्स और ग़रीब इटालियनों से भरा हुआ वह शहर। एमरी का दवाखाना एक पुराने मकान में था, जिसकी कई बार मरम्मत हो चुकी थी, और जिसे सब तरफ से सफेद रंग से पोता गया था। गिडियन परीक्षणालय में बैठ गया और डॉक्टर को देखने लगा। सामने एक धँसे हुई सीने वाला और हड्डियों का ढाँचा लड़का खड़ा था—:

"तुमने उस लड़के को देखा, जैक्सन ? वह नंगा ८ वर्षीय लड़का जो हाथ बग़लों में दबाये काँप रहा है। मैं नहीं जानता वह क्या है, मेरे यहाँ हर हफ्ते दसियों ऐसे रोगी आते हैं लेकिन वे सब ग़रीब वर्ग के ही होते हैं। मैंने इस बीमारी का नाम खुद रखा है—'दरिद्रता का रोग' जो काफ़ी स्पष्ट है।"

उसने लड़के की चमड़ी पर हाथ फेरा। "अच्छा बेटे अपने कपड़े पहन लो। तुम जानते हो गिडियन, समाज की कुरीतियाँ और दुष्कर्म भी कई चेहरों वाले

होते हैं। हम तुम्हारे लोगों को मुक्त कराने के लिए लड़े और अपनी जानें दे दी, जबकि हमारे यहाँ हमारे नासूर हम अच्छे न कर सके। क्या यह अच्छा लगता है कि हम लोग जो अपने को सभ्य कहते हैं मुफ़्त दवा न बाँटें, या काफ़ी अन्वेषण न करें? ताकि हम इस काली बला—दवा को समझ लें। यहाँ इस सोना उगलने वाली ज़मीन में लोग बीमार पड़ते हैं और भूख के मारे मर जाते हैं। धूप और ताज़ी हवा से भी वे वंचित रहते हैं। मैं दान करता हूँ और दान एक घृणाजनक चीज़ है, यह बिल्कुल अनावश्यक है और कभी-कभी मैं तो सोचता हूँ कि हमारे सुप्रसिद्ध पड़ौसी जो अपनी जेबों को सिये हुए रखते हैं, बड़ा अच्छा करते हैं।"

बाद में एमरी ने गिडियन से जेफ़ के बारे में पूछा, "तुम्हें विश्वास है कि वह डॉक्टर ही बनना चाहता है?"

"सोलह वर्ष के बच्चे का विश्वास किया जा सकता है?" गिडियन ने कहा। "वह बड़ा बुद्धिमान और मेहनती लड़का है, मैं उसकी प्रशंसा नहीं कर रहा हूँ बल्कि यह सच है।"

"भाई, इस देश में शिक्षा प्राप्त करना तो बिल्कुल असम्भव जैसा ही है। हमारे यहाँ के मेडिकल स्कूल यह बात ही नहीं मानते कि काला आदमी कभी बीमार भी पड़ सकता है या बीमारों का इलाज भी कर सकता है। कुछ समय बाद जब तुम केरोलिना में अपनी कल्पना को अमली जामा पहना दोगे तो मुझे आशा है तुम इसका कुछ प्रबन्ध ज़रूर करोगे। लेकिन यह तो भविष्य की बात है। अगर वह परीक्षा पास कर लेता है तो फिर उसे स्कॉटलैण्ड की एडिनबरा यूनीवर्सिटी में दाखला मिल सकता है।"

"स्कॉटलैण्ड?" गिडियन ने अनिश्चित भाव से सिर हिलाया, "वह तो बहुत दूर है, है ना?"

"हाँ, बहुत दूर है; दरअसल हमारे सौभाग्य की बात है कि इन पुराने देशों में वे लोग कालों को गिरा हुआ मनुष्य नहीं समझते।"

"मैं नहीं जानता," गिडियन ने कहा। "वह तो अभी बच्चा है—उसे इतनी दूर अकेला कैसे भेज दूँ? हो सकता है एक साल—"

"नहीं, उसे कम से कम तीन साल लगेंगे," एमरी ने सिर हिलाते हुए कह और हब्शी के चेहरे पर व्याकुलता के भाव देखने लगा। गिडियन ने हीनता के साथ वहाँ से जाने की आज्ञा लेते हुए कहा, "मैं उसके बारे में कुछ नहीं कह सकता कि उसके लिए क्या अच्छा है। हाँ उसकी माँ रैचल से मालूम करूँगा–"

"तो फिर मैं तुम्हें सलाह दूँगा," एमरी ने कंधे सिकोड़ते हुए कहा, "तुम उसे डॉक्टर बनाने का विचार छोड़ दो।"

"लेकिन वह तो डाक्टर ही बनना चाहता है," गिडियन ने कहा।

"इस पर तुम्हारे पैसे खर्च होंगे।"

गिडियन ने कहा, "मैं दक्षिण से वापस आने पर धारा सभा के लिए चुनाव लड़ने वाला हूँ," वह सकुचाया। "जब मैं सभा में बैठूँगा तो मुझे तीन डॉलर रोज़ाना मिलेंगे शायद मैं उनमें से डेढ़ डॉलर बचा पाऊँ—क्या वह काफी होंगे?"

एमरी ने मुँह फेर लिया और धीरे से कहा, "हाँ, वे काफी होंगे।" वह खिड़की तक गया और बाहर झाँकने लगा। फिर गिडियन को बोधित करके बोला, "सुनो जैक्सन, तुम्हारा लड़का है कहाँ?"

"वोर्सेस्टर के प्रिसबिटेरियन स्कूल में पढ़ता है।"

"मैं उस स्कूल से परिचित हूँ—वहाँ वह पढ़ना-लिखना सीखने के सिवाय और कुछ नहीं कर सकता। वह वहाँ है कितने दिनों से?"

"चार महीने से।"

"वहाँ उसे छः महीने तक रहने दो। तुम कहते हो वह १६ वर्ष का है, दो महीने के बाद उसे यहाँ भेज दो। मैं उसे एक ही साल में इतना पढ़ा दूँगा कि वे १० साल में भी न पढ़ा सकेंगे। लेकिन यह याद रखो कि उसे यहाँ अपनी जीविका भी खुद ही कमानी पड़ेगी। मैं उसे अपने यहाँ नौकर रख सकता हूँ, उसे झाड़ू देना होगा, यंत्रालय साफ करना होगा और औजार वगैरह धोने पड़ेंगे। मैं वेएट की तरह बर्दाफरोशी का अधपन्था विरोधी नहीं हूँ। अगर लड़का बुद्धिमान है, उसे इस विषय में रुचि है और अगर वह काम करने का इच्छुक है तो मैं उसे दो वर्ष में ही इतनी शिक्षा दे दूँगा और ईस

योग्य बना दूँगा कि वह एडिनबरा की परीक्षाएँ पास कर सके। और यदि वह ऐसा नहीं है तो—"

वोर्सेस्टर में माननीय चार्ल्स स्मिथ के अध्ययनागार में बैठे हुए गिडियन ने डॉ० एमरी के शब्द दोहराये। स्मिथ ने जो भीरु, विनम्र और अस्थिर स्वभाव का था, कहा, "हाँ, जेफ़ अच्छा लड़का है, बहुत अच्छा—बड़ा ही उद्यमी, बदमाशी तो वह कभी करता ही नहीं था; लेकिन तुम्हें यह समझ लेना चाहिये कि शिक्षा धीरे-धीरे ही आती है और बड़ी कठिनाई के बाद आती है। तुम्हें यह भी याद होगा कि कुछ दिन पहले लड़का पढ़ना-लिखना भी नहीं जानता था। यह सच है कि उसमें समझने और उसकी नकल करने की बहुत योग्यता है, वह चीजें जल्द ही याद कर लेता है, लेकिन डॉक्टरी के धन्धे में बड़ी ऊँची श्रेणी का अध्ययन जरूरी होता है। क्या यह केवल काल्पनिक बात नहीं है जो एमरी साहब कहते हैं कि वह लड़के को दो साल में एडिनबरा की परीक्षाएँ पास करा देंगे?" गिडियन यह कुछ न जानता था। "तो क्या इससे यह निष्कर्ष निकाल लिया जाय कि डॉक्टर बनना ही एक ऐसा तरीका है जिससे कि एक नौजवान अपनी जनता की सेवा कर सके? वह उपदेशक क्यों नहीं बन जाता? आखिर बच्चे में आध्यात्मिक पहलू भी होता है जिससे उसके भविष्य का पता चल सकता है।"

"आपने जो कुछ किया है मैं उसके लिये आपके प्रति कृतघ्नता प्रकट नहीं कर रहा हूँ।" गिडियन ने कहा, क्या उसमें इतनी शक्ति थी, कि वह स्मिथ से यह कह देता कि रैचल और उसके लिये जेफ़ को ५ साल तक अलग रखना संभव नहीं है? क्या गोरे लोग यह समझते थे कि काले आदमी के लिये लड़के का क्या महत्त्व है? "लेकिन मैं चाहता हूँ लड़का अपनी इच्छानुसार जो काम उसे दिया जाय वह काम करे।"

"स्वाभाविक ही है जब लड़का समझदार है तो वह ऐसा ही करेगा।"

"मैं भी उससे बातचीत करूँगा।" गिडियन ने कहा।

जेफ़ अब क़द में गिडियन से भी ज़्यादा ऊँचा हो गया था और गिडियन जैसा ही लगता था। और कुछ क्षण के लिये वे एक दूसरे को पहचान न सके, हाँ, एक दूसरे के चेहरे की समानता देखते रहे। अब गिडियन जेफ़ से बातचीत

कर सकता था, पहले उसने कभी जेफ़ से बात न की थी। आज शाम को वे साथ-साथ घूमने गये। जेफ़ शहर के कई लोगों से परिचित था और उसने बड़े गर्व से गिडियन का उन लोगों से परिचय कराया। "आप से मिलिये, आप मेरे पिता हैं।" गिडियन लोगों में परिवर्तन देखने का आदी था; वह स्वयं परिवर्तनों के संसार में रहता था और यही कारण था कि बिना किसी उलझन में फँसे उसने जेफ़ में आये परिवर्तन को भी भाँप लिया।

वे चलते-चलते शहर छोड़ आये और देहात को जानेवाली सड़क पर चलने लगे। छायादार वृक्ष लाल रंग के थे। खेतों से फसलें बड़ी सावधानी और सफाई से काट ली गई थीं। जमीन बूढ़ी और विचारमग्न प्रतीत होती थी। लाल खलिहान थे, साफ सफेद मकान थे और चरागाहें चाटियल दीख पड़ती थीं।

"तुम्हें यह जगह पसंद है?" गिडियन ने पूछा।

जेफ ने कहा, "हाँ, मुझे यह जगह पसन्द है।" न सिर्फ इसलिए कि लोग उससे नम्र व्यवहार करते थे; बल्कि उसके और भी कई कारण थे। यहाँ के लोग भी बड़े साधु-सज्जन नहीं थे; कुछ तो उसे गंदा हब्शी कहा करते थे। शहर के अधिकतर लोग हमेशा काले आदमियों से घृणा करते थे और अब भी करते हैं। लेकिन इन सबके बावजूद यहाँ के लोगों की भावनाएँ दक्षिण के लोगों से भिन्न थीं।

गिडियन ने सिर हिलाया। वह सब चीजें समझता था, पर उसके लिए यहाँ रहना एक प्रकार का देश-निकाला-सा महसूस होता। दूसरे शब्दों में यों कहिये वह अपने को व्यक्त न कर सका—यहाँ बड़ी सख्त सर्दी पड़ती थी।

"मैं बहुत मेहनत से पढ़ता हूँ।" जेफ़ ने कहा।

"बहुत अच्छे।" और फिर थोड़ी देर बाद गिडियन ने उससे पूछा, "तुमने अपने भविष्य के बारे में काफी ग़ौर से सोच लिया है ना?"

"मैं तो अब भी डॉक्टर ही बनना चाहता हूँ।" जेफ़ ने कहा।

वे चलते-चलते एक पहाड़ी की चोटी तक आ पहुँचे। सूर्य अस्त हो रहा था। एक किसान चरागाह से अपनी गायें हाँकता हुआ ले जा रहा था और उसका कुत्ता जोर-जोर से भूँक रहा था।

"आओ, अब लौट चलें।" गिडियन ने कहा।

वे धीरे-धीरे चल रहे थे और जेफ़ अपने विचार शब्दों में ढालने का प्रयत्न, कर रहा था। गिडियन खामोश हो सुन रहा था। "हम नये लोग हैं," जेफ़ ने कहा, "आप समझते हैं न मेरा मतलब?" गिडियन ने सिर हिलाकर 'नहीं' कह दिया। "मेरा मतलब है गोरा लड़का जो चाहता है वह कर सकता है, उसे अपनी नौकरी की ज़्यादा परवाह नहीं रहती—"

फिर गिडियन ने सिर हिलाकर 'ना' कह दिया।

"मैं सोचने लगता हूँ," जेफ़ कहता गया, "यहाँ उत्तरी प्रदेश में मैं कैसे आ गया? मार्कस, कैरीलिंकन और दूसरे कोई भी यहाँ नहीं आते। एक तरह से यह सौभाग्य है। इसलिए मैं इस पर मेहनत करता हूँ; ताकि मैं इसमें से कुछ लेकर वापस लौटूँ और लोगों को बताऊँ ये देखो मैं यह सब लाया हूँ। और यदि कोई आदमी बीमार पड़ जाय तो शायद मैं उसे अच्छा भी करदूँ।"

"गिडियन ने कहा, "पूजनीय स्मिथ साहब चाहते हैं तुम धर्मोपदेशक बनो। वह भी जनता की सेवा करने का एक ज़रिया है।"

"हो सकता है वह सही कहते हों," जेफ़ ने स्वीकार किया, "लेकिन मैं समझता हूँ भाई पीटर तो खुद एक बहुत बड़े धर्मोपदेशक हैं। धर्मोपदेश विज्ञान नहीं है। पूजनीय स्मिथ बड़े अच्छे आदमी हैं—बड़े विनम्र; लेकिन मेरे लिए वे किसी मसरफ़ के नहीं हैं।"

गिडियन ने उसे एमरी के बारे में बताया, उनके दवाखाने, उनके नियंत्रणादि के बारे में कहा और बताया कि एमरी कहते थे वह काला आदमी भी एडिनबरा से डिग्री हासिल करके डॉक्टर बन सकता है। जेफ़ उसकी बातों को बड़ी तल्लीनता, उत्सुकता और व्याकुलता के साथ सुनता रहा। गिडियन ने चित्र के दोनों रुख उसके सामने रख दिये। एमरी अपना विचार बदल भ. सकता है। दो साल तो वह क्या पढ़ाते जेफ़ को। संभव है, कुछ ही दिनों में वह इस सारी चीज से थक जाय।

"दो साल काफी हैं," जेफ़ ने कहा, "मैं क़सम खाता हूँ यह काम हो जायगा, मैं उनका कोई भी काम कर दूँगा। मैं अपने को उनके काम में पूरी तरह

खपा दूँगा। मैं उनके दवाखाने का फर्श ऐसा साफ करूँगा कि सोने जैसा चमकेगा। 'बिल्कुल, आप मुझ पर विश्वास कीजिये पिताजी! मैं अवश्य उनका काम करूँगा। इससे मुझे कोई तकलीफ नहीं होगी। लोग कहते हैं मैं इस सारे शहर के लड़कों में सबसे ज़्यादा बलवान हूँ। बूढ़े मि० जर्वी का छकड़ा खड्डे में गिर पड़ा था मैंने अकेले ही ने उसे बाहर निकाला था, आप भरोसा कीजिये। मुझे उस गोरे डॉक्टर के काम मे थकावट महसूस नहीं होगी, मैं दिन भर उन्हीं का काम करता रहूँगा बस एक बार वह मुझे वहाँ रखलें। फिर मैं वहाँ सीख भी लूँगा।''

वे चलते रहे; गिडियन अभी से आश्चर्य में पड़ा हुआ था कि वह रैन्डल मे यह सब कैसे कहेगा। वह चाहता था अपने हाथ जेफ़ के गले में डाले उसे गले से लगाले पर वह ऐसा न कर सका। उसे ऐसा करते समय एक महान् और मूर्खतापूर्ण अभिमान का अनुभव हुआ। उसे महसूस हुआ कि वह जेफ़ के साथ बैठ जाय और जो भी बातें करना हों उससे करे और जो कुछ वह उससे कहना चाहे, कहे। पर जेफ़ अचानक बोल उठा :

''आप मुझे यह काम करने देंगे, है ना ?''

''हाँ बेटा, तुम जरूर यह काम करना,'' गिडियन ने अपनी मंज़ूरी देते हुए कहा।

अब अँधेरा हो रहा था और वे जल्दी से घर की ओर लौटे। जेफ़ की खुशी का ठिकाना न था, वह दौड़ रहा था, गिडियन को उसके साथ लंबे डग भरना पड़ रहे थे।

गिडियन ने जाने से पहले अपने बेटे से कहा, ''जेफ़ बेटे, हम दोनों अब पुराने अँधियारे ज़माने से निकलकर बाहर आ रहे हैं और याद करते-करते हमें एक यह ख्याल आया था कि यह फासला हम अकेले ही तय करेंगे, और हमने अनुमान भी लगा लिया कि दिन में आदमी कितने मील चल सकता है। लेकिन यह सब गलत है। कुछ दिन और ठहरो और तब या तो तुम यहाँ पढ़ोगे या फिर केरोलिना में। अगर कभी तुम मुझे बुलाना चाहो, बुला लेना मैं आजाऊँगा। अगर तुम घर जाना चाहो तो झिझकना मत, मुझे लिख देना मैं तुम्हारे लिये

किराये के पैसे भेज दूँगा।''

उसने जेफ़ को कुछ चीज़ें दीं। उन्होंने हाथ मिलाया—और फिर गिडियन ने वर्षों के बाद अपने बेटे का चुम्बन लिया।

जब गिडियन कार्वेल को लौटा तो एक सफल व्यक्ति के रूप में जिसने असंभव चीजों को भी संभव कर लिया हो। यही बात हर एक व्यक्ति की जबान पर थी और इसका जिक्र उन्होंने उस समय भी किया जब वह उनसे मिला! उसने जेनी को गोद में उठा लिया और फिर यकायक उसकी नजर खलिहान की काली लकड़ियों पर पड़ीं। वह ठिठक गया और जब उसने चारों ओर नजरें डालीं तो देखा कि दो झोपड़ियाँ जलकर राख हो गई हैं सिर्फ़ उनकी चिमनियाँ बची हुई हैं। वे लोग खामोश थे, उनके होठों पर मुस्कराहट न थी। रैचल उससे लिपट गई।

''मार्कस कहाँ है?'' वह चीखी; लेकिन मार्कस साबित-सालिम था भीड़ में से निकल कर उसके पास पहुँच कर उसने पूछा, ''क्या बात है? यह कब हुआ? कैसे हुआ?'' उसके दिल में वही विचित्र रहस्यमय मृत्यु की सनसनी और भय समा गया और यह जानने के लिए कि कहीं कोई मर तो नहीं गया उसने सबकी ओर देखा। मैरियन जैफर्सन की बाँह पर पट्टी बँधी हुई थी। हैनिबाल वाशिंगटन की पत्नी की गोद में अभी-अभी जन्मी बच्ची थी। मृत्यु और जीवन दोनों साथ-साथ चल रहे थे।

''क्या हुआ था?'' उसने पूछा।

और तब एण्ड्रयू शेरमन की पत्नी लुसी रो पड़ी। एण्ड्रयू ने उसे चुप करना चाहा, उसे पुचकारा, ''देखो तो लुसी, अब—'' और गिडियन समझ गया कि उसका नौ वर्षीय पुत्र जैकी, जो हल्के भूरे रंग का था और जिस पर उसे गर्व था, उसकी अलौकिक सुन्दरता जो दक्षिणी कैरोलिना के दो 'उत्तम परिवारों' के रक्त की उपज थी, समाप्त हो चुका है। उसने भाई पीटर की ओर देखा जिसने धीरे से कहा, ''खुदा की चीज थी, वही देता है, वही वापस ले लेता है।''

''लेकिन यह सब हो कैसे गया?'' गिडियन ने पूछा।

भाई पीटर ने उसे सारा किस्सा सुनाया; बीच-बीच में दूसरे लोग भी बोल

उठते थे। किसी ने एक चीज देखी थी तो किसी ने दूसरी। यह सब कुछ उसके जाने के चार दिन बाद हुआ था—यह एक ऐसी घटना थी जिसके बारे में उन्होंने केवल सुना था पर कार्वेल के आस-पास कभी अपनी आँखों से होते नहीं देखा था। करीब ९ बजे रात को वे नमाज़ पढ़कर लौट रहे थे जो भाई पीटर ने खलिहान में पढ़ाई थी; क्योंकि बाहर बड़ी ठंडी हवा चल रही थी। उस रात को भाई पीटर १०० वाँ भजन पढ़ रहे थे जिसे वह भूल न सकते थे, "लहलहाती खेतियों से कहो गीत गायें खुशीके, और ये ही गीत खुदा की इबादत हैं।" नमाज़ खत्म होते ही वे एकदम घर नहीं लौट गये, बल्कि कुछ देर के लिए छोटे-छोटे संप्रदायों में खड़े होगये जैसा कि प्रायः लोग नमाज़ के बाद किया करते हैं। और तब सहसा उन्होंने देखा कि पश्चिमी चरागाहों के उस पार एक टीले पर एक क्रास जल रहा था और एक ही क्षण में ज्वालाएँ धधक उठी थीं, वहाँ एक स्त्री ने जोर से चीख मारी और लोगों की उस ओर निगाहें दौड़ गईं।

दूसरी औरतें भी चीख पड़ीं और बच्चे भय से सहम गये। हाँ, अब गिडियन सारी बात समझ गया कि पहले तो वहाँ सूर्यास्त की झलक दीख पड़ी होगी और फिर सहसा क्रास जलते दीख पड़ा। फिर भी लोगों ने स्त्रियों और बचों को शीघ्र ही चुप कर दिया। भाई पीटर ने कहा, "क्रास चिह्न चाहे खून में लथपथ हो या आग में जल जाय उससे किसी को कोई नुक्सान न होगा।" कुछ लोगों को भाई पीटर की बात से सान्त्वना मिली पर दूसरे ऐसा न कर सके। उन्होंने **क्लुक्स क्लान** का नाम सुन रखा था। वे भय से काँप उठे और उन्होंने होंठ भींच लिये; पर यह बात उन्होंने किसी और को न बताई। जब तक क्रास चिन्ह पूर्ण रूप से जल कर राख न होगया लोग वहीं खड़े रहे और फिर बड़ी घबराहट और व्याकुलता लिये घर लौटे।

हैनिबाल वाशिंगटन ने गिडियन से कहा, "तब मैंने सोचा कि इसका पता लगाऊँ, क्रॉस चिह्न अपने आप हवा में नहीं जल उठते, जब तक उन्हें कोई जलाये नहीं। मालूम होता है इसके पीछे कुछ-न-कुछ साजिश जरूर छिपी है, मैंने ट्रूपर से भी कहा कि हम दोनों जाकर पहाड़ी पर देखें कि क्या मामला है।"

अपनी-अपनी बंदूकें लिये वह और ट्रूपर खलिहान का चक्कर काटते हु

पहाड़ी पर पीछे से चढ़ गये। वहाँ उस समय कोई नहीं था, लेकिन जैसी कि उन्हें आशा थी उन्होंने देवदार की काली लकड़ी के बने हुए क्रास को जला हुआ पाया।

मिट्टी के तेल की दुर्गंध से सारा वातावरण दूषित था और जमीन पर घास फूँस के ढेर पड़े हुए थे। अब उन्हें मामले को समझने में कठिनाई नहीं हुई। किसी ने क्रॉस खड़ा करके उसे घास से पूरी तरह लपेट दिया था, फिर घासलेट डालकर उसमें आग लगा दी थी। इस प्रकार की नादानी की, भयपूर्ण और मूर्खतापूर्ण बातों के बारे में वे अफ़वाहें सुन चुके थे और यही कारण था कि वे इस बात में इतना उलझ गये थे कि शायद कोई और 'वास्तविक' भयानक खतरा भी उन्हें इतना व्याकुल न कर सकता।

जब वे लौटे तो लोग उनकी प्रतीक्षा कर रहे थे। हैनिबाल वाशिंगटन ने जो कुछ वहाँ देखा उसके बारे में आकर अपनी रिपोर्ट दी। एलेन्बी ने कहा, "इन गोरे बदमाशों के अत्याचारों का हिस्सा हमें यहाँ कार्वेल में तो मिला ही नहीं था।" उसी समय ऐब्नेर लैट कार्सन भाइयों, लैस्ली और फ्रेंक को साथ ले सशस्त्र वहाँ आ पहुँचा और दूर ही से, "हल्लो, हल्लो" कहने लगा उन्होंने भी अपने मकानों से क्रास को जलते हुए देखा था और वहाँ इसके बारे में मालूम करने आये थे।

"नहीं, कोई विशेष बात नहीं।" हैनिबाल वाशिंगटन ने कहा!

"पर संभव है वह **क्लान** ही हो, या फिर पड़ोस के कुछ मूर्ख लोग होंगे।"

"मैं नहीं समझता कि हममें से या हमारे पड़ोसियों में से कोई भी ऐसा मूर्खतापूर्ण काम करेगा।" एब्नेर लैट ने कहा। बाद में क्या होना चाहिये इस पर बहुत देर तक बातचीत और बहसें होती रहीं। वास्तव में कुछ भी करने की आवश्यकता नहीं थी। वे गिडियन को यह सारा किस्सा इसीलिए सुना रहे थे ताकि वह कुछ समझ सके। इस प्रकार की मूर्खता के सामने क्या किया जा सकता था? किसी ने सुझाव रखा कि एक पहरेदार रखा जाय, किसी दूसरे ने बड़ी सही चीज कही कि हम कानून के मातहत चलने वाले लोग हैं जो यहाँ इस

सभ्य देश में रहते हैं। हम हर रात यहाँ पहरेदार नहीं रख सकते।

"क्या तुम समझ गये गिडियन ?" भाई पीटर ने अनिश्चय के भाव से कहा।

"आपने ठीक कहा था।" गिडियन ने सिर हिलाकर कहा।

"उसके बाद क्या हुआ ?"

उसके बाद वे बड़ी रात गये सोने गये और अन्त में उन्हें नींद भी आगई। जब यह चीज हुई तो शायद आधी रात से भी ज़्यादा समय बीत चुका था और अब हरेक की जबान पर यही किस्सा था, घोड़ों की टापों की आवाज से वे जाग पड़े। कुछ स्त्रियाँ मानो भयानक स्वप्न से चौंक पड़ी हों, चीख पड़ीं। कुछ लोग डरे हुए बिस्तर में ही पड़े रहे। हैनिबाल वाशिंगटन, एएडयू शेरमन, फर्डिनैण्ड लिंकन, और ट्रूपर सबके सिरहाने भरी हुई बंदूकें रखी थीं और जब उन्होंने टापों की आवाजें सुनीं तो उहोंने बंदूकें उठाई और बाहर की ओर भागे। इसी प्रकार भाई पीटर, एलेन्बी और दसियों और लोग भी भागे पर थे वेनिहत्थे। सभी ने एक ही प्रकार की घटनाएँ अपने-अपने ढंग से सुनाना शुरू किया। सफेद चादरें ओढ़े हुए, घोड़ों पर सवार बारह आदमी सशस्त्र वहाँ आये, पहले तो वे उन्हें ठीक से न देख सके। उनमें से कम-से-कम आधे लोग बड़ी-बड़ी मशालें लिये हुए थे, और लोगों के बाहर आने तक तो पुराना, सूखा खलिहान आग की लपटों में था, घास के जलने की सो-सी आवाज़ आ रही थी और लपटें आकाश से बातें कर रही थीं। गाय और खच्चर डर के मारे हिनहिना रहे थे। ट्रूपर ने स्वीकार किया कि पहले उसी ने गोली चलाई थी। उसने कहा कि जब उसे खच्चरों के हिनहिनाने की आवाज़ सुनाई पड़ी तो उसने बग़ैर सोचे-समझे एक सफेद वस्त्रधारी पर गोली दाग़ी, लेकिन बाद में उसे और दूसरों को विश्वास होगया कि उसकी गोली किसी को नहीं लगी, उसने यों ही क्रोधातुर हो गोली चलाटी थी। और उस समय, शायद गोली की आवाज़ सुनकर सफेद वस्त्रधारियों ने अपने घोड़ों को घुमाया, मशालें झोंपड़ियों पर फेंक दीं और लोगों पर कुछ गोलियाँ चलाईं और भाग गये।

"तुम अब सब समझ गये होंगे, गिडियन," एलेन्बी ने कहा, "कि वे किस तरह के कायर लोग थे। एक ही गोली की आवाज़ सुनकर वे भाग लिये।

सफेद कमीज़ों, रात के उनके धावे, क्रासों का जलाना आदि इसके बावजूद जब उन्हें पता चला कि हम भी सशस्त्र हैं तो भाग गये। वे अपनी जानें बचाने के लिए खरगोशों की तरह भागे। बाद मे हमने देखा कि अँधेरे में जैकी शेरमन को लाश पड़ी हुई थी और उसकी आँखों में बंदूक की गोली थी। उन्होंने बड़ी भयानक गोली दाग़ी थी, हम लोग अपना अनाज बचाने के लिए आग बुझाने में लगे थे, और बच्चे के गोली लग गई बेचारा चीख़ तक न मार सका।"

लुसी शेरमन फिर सिसकियाँ भरने लगी। जो कुछ कहने को बचा था वह भी भाई पीटर ने गिडियन से कह दिया। बच्चे की मृत्यु ने उनके दिल निकाल लिये थे। उन्होंने अनाज का ढेर तो बचा लिया लेकिन खलिहान और दो झोंपड़ियाँ आग की भेंट हो गईं। आग लगी हुई देखकर एब्नेर लेट, फ्रेड-मैक्हफ़, उसका बेटा, जैक सटर और कार्सन भाई भी वहाँ आ गये। हैनिबाल ने बताया कि जब एब्नेर लेट ने मरे हुए बच्चे को देखा तो उन हत्यारों को ऐसी गालियाँ दीं कि उन्होंने कभी ऐसी गालियाँ देते न सुनी थीं। "तुम समझे गिडियन," उसने समझाया, "उससे हमारा शक दूर हो गया, हम समझ रहे थे कि उनमें गोरे भी शामिल हैं। और जब वे खुद वहाँ आये तो हम समझ गये कि यह उन्होंने नही किया है। लेकिन उनकी सहायता के बावजूद हम बच्चे को तो ज़िन्दा नहीं कर सकते।"

"और तुमने इसके बारे में किया क्या है?" गिडियन ने पूछा, उसकी आवाज़ इतनी भर्राई हुई और कड़वी थी कि ऐसा मालूम हुआ कोई और बोल रहा है।

एलेन्बी ने कहा, "आखिर करने को रह ही क्या गया था, गिडियन? अगले दिन एब्नेर लेट अपने खच्चर पर सवार हो शहर को गया। हमें बाद में पता चला कि उसने शेरिफ से इस बात पर छानबीन करने को कहा पर उसने इसे हँस कर टाल दिया। तुम उस आदमी को तो जानते ही होंगे, जेसन ह्यूगर जो पुराने ज़माने में गुलाम रखता था?"

"हाँ, मैं उसे जानता हूँ।"

"एब्नेर ने सुना है कि वह स्थानीय क्लान का नेता है। एब्नेर ने उसी पर

इसका अपराध लगाया पर उसने एब्नेर से कहा, "तू गंदे हब्शियों का प्रेमी है न!" उन दोनों में झगड़ा होगया और कहते हैं एब्नेर ने उसे मारकर अधमरा कर दिया। वहाँ भीड़ हो गई और एब्नेर ने बंदूक निकालकर कहा, "आजाओ किसको मरना है?" चार्ली केस्ट एब्नेर के साथ था और उसके साथ ही लड़ा भी बाद में वे दोनों खच्चर पर सवार हो लौट आये। अगले दिन हैनिबाल ने गाड़ी जोती और हम मेजर शेल्टन से मिलने कोलम्बिया गये।"

"और शेल्टन ने क्या कहा?"

"उसने कहा कि उसके खिलाफ़ कार्यवाही की जायगी। यह तो टाल-मटोल, का एक तरीका है,—कार्यवाही की जायगी।"

और कोलम्बिया में मेजर शेल्टन ने यही बात गिडियन से भी कही, "आप विश्वास रखिए, हम उचित कार्यवाही कर रहे हैं। शेल्टन लम्बे क़द का हृष्ट-पुष्ट चुंधी आँखों वाला आदमी था, उसे अपने निवास स्थान वेस्ट प्वाइंट से बाहर निकले नौ वर्ष गुज़र चुके थे। वह नौजवान था और अपने दुर्भाग्य पर घृणा करने का उसे पूरा अधिकार था, जिसने उसे यहाँ दक्षिण केरोलिना में हर जगह से दूर ला फेंका था, पुलिस में रह कर उससे वे लोग घृणा करते, जिन्हें वह आदर से देखता था और उन लोगों की उसे सहानुभूति मिलती थी जिनसे उसे सख्त घृणा थी।

"वे उचित कार्यवाहियाँ कौन सी?" गिडियन ने पूछा।

"वे सैनिक कार्यवाहियाँ हैं जिन पर मैं न तुम से बहस करना चाहता हूँ और न ही तुम्हें उसका हक़ है। तुम्हारी शिकायत यहाँ नोट कर ली गई थी और कार्यवाही चालू है।"

"और तब तक मुर्दा बच्चा वहीं पड़ा रहेगा और खत्म हो जायगा?"

"नहीं, वह वहीं हरगिज़ खत्म नहीं होगा।" शेल्टन ने बेचैनी से कहा, "तुम मुझे सिखाने की कोशिश न करो मि० जैक्सन। जहाँ तक मैंने मामले को समझा है, वह सिर्फ आकस्मिक घटना थी, और बच्चा उसमें फँसकर मर गया था। फिर भी जो कुछ हम कर सकते हैं, वह हम कर ही रहे हैं। हम अपराधियों की खोज कर रहे हैं।"

"आकस्मिक !" गिडियन ने कहा, "जी हाँ, ये सब आकस्मिक बातें ही तो थीं कि सफेद वस्त्र पहने वे लोग आये, उन्होंने क्रास चिह्न जलाये, हमारे गाँव पर धावा मारा, खलिहानों में आग लगा दीं, उन खलिहानों में जो हमारे नहीं थे मि० स्टेशन ! वे संयुक्त राज्य अमरीका की सरकार की मिल्कियत थे। बताइए वह किस प्रकार की आकस्मिक घटना थी ?"

"मुझे अफ़सोस है—"

"नहीं, आपको बहुत दुःख होगा, मैं समझता हूँ। आपने क्लान-संगठन के बारे में भी कुछ छानबीन की है ? क्या जेसन ह्यूगर जैसे लोगों की खोज करके उनसे सवालात पूछे हैं ? क्या यह सब किया है आपने ?"

"मुझ पर चिल्लाने की ज़रूरत नहीं है, जैक्सन ! मैं कोई हर हब्शी की फरियाद सुनकर इधर-उधर चक्कर काटता नहीं फिरूँगा।"

गिडियन ने भारी आवाज़ से कहा, "देखिये साहब, मैं आप पर गुस्सा नहीं कर रहा हूँ, न करूँगा। मैं आप से कुछ माँग भी नहीं रहा हूँ। इस देश की कांग्रेस ने सरकार क़ायम होने तक के समय के लिए यहाँ हमारे गाँव पर सैनिक नियंत्रण रखा है। या तो आप हमारी रक्षा कीजिए या फिर हम खुद अपनी रक्षा कर लेंगे। मैं युद्ध में भी लड़ चुका हूँ। मैं मैसेच्युसेट्स की चौवनवीं काले लोगों की सेना का मास्टर सर्जेण्ट था,—नहीं, हम कोई खड्डे खोदने वाले, या कुँए खोदने वालों की सेना में नहीं थे। हम आज़ाद हब्शी थे और इस राज्य के भागे हुए गुलाम थे। हम अलग-अलग नौ लड़ाइयाँ लड़े थे और हमारे हर दस आदमियों में से आठ घायल हो गये थे। क्या आपको याद है हमने वैग्नैर के किले पर किस प्रकार आक्रमण किया था ? हमारी फौज के चार सौ सिपाही खेत रहे थे और उनमें हमारा कर्नल शॉ भी शामिल था। विद्रोहियों ने उसकी लाश के टुकड़े-टुकड़े करके उन टुकड़ों को हब्शियों की कब्रों में फेंक दिया था,—क्योंकि वह एक गोरा आदमी था, एक साधु-सज्जन गोरा आदमी, जिसने हब्शियों की सेना का नेतृत्व किया था ? और यदि आपने इस राज्य में हमारी ओर से युद्ध किया है तो आपने यह गीत भी ज़रूर सुना होगा, 'फिरदौस के दर भी बाज़ हुए हैं, अब तो कर्नल शॉ के लिए।' मैं भूतकाल की उन बीती हुई बातों को जो उसी काल में विलीन हो चुकी हैं यहाँ

दोहराना नहीं चाहता। लेकिन यह मैं ज़रूर कहूँगा कि अगर आप हमारी सुरक्षा का कोई प्रबंध नहीं करते तो हम खुद अपनी सुरक्षा कर लेंगे।"

मेजर शेल्टन ने भर्राई हुई आवाज में कहा, "मैं किसी भी विद्रोही को कुचल दूँगा, चाहे वह कालों का हो या गोरों का।"

"और हम अपनी रक्षा खुद कर लेंगे।" गिडियन ने कहा। बाद में जब गिडियन कार्वेल लौट आया तो उसने गोरों-कालों, सब की एक सभा बुलाई और उसने कहा, "आप जानते हैं, मैं जो उत्तरी प्रदेश में गया था उसका क्या परिणाम हुआ? आइज़क वेएट ने, जो बोस्टन का एक बैंकर है, मुझे पंद्रह हज़ार डॉलरों की एक हुंडी देदी। अब हम ज़मीन खरीदेंगे और उसे अपने पास रखेंगे। यह जो शैतान उठ रहे हैं ज़रूरी तौर पर हमारा विरोध करेंगे। ईसलिए मैं यह प्रस्ताव रखता हूँ कि हम अपने अधिकारों की रक्षा करें। अपने लिये फौज का एक संगठन क़ायम करें और हर हफ्ते उसकी एक बार तब तक परेड करायें जब तक कि उसकी ज़रूरत खतम न हो जाय।"

इस पर काफी बहस हुई। फ्रैंक कैर्सन ने कहा, "वास्तव में मुझे यह बात पसन्द नहीं है कि एक हब्शी के मातहत परेड करूँ। मैं स्टुअर्ट के साथ युद्ध में लड़ता रहा हूँ और मुझे यह तो सारा मामला ही कुछ अजीब-सा लगता है।" तब गिडियन ने फ्रेड मैक्हफ़ का नाम ड्रिल-मास्टर के लिए सुझाया, जो युद्ध में नॉन कमीशण्ड अफ़सर रह चुका था। इस पर वोट लिए गए और वह ड्रिल-मास्टर बना दिया गया। उसने हैनिबाल वाशिंगटन और एब्नेर लैट को अपन सहा-यक चुन लिया। ब्लैन्बी ने इस पर क़ानूनी तौर से आपत्ति की; लेकिन गिडियन ने बताया कि हथियार रखना उनका वैधानिक अधिकार है, वे युद्ध के बाद से अब तक हथियार रखते आये हैं, और अब इस प्रकार का संगठन उन रात को घूमनेवाले गिरोहों के लिए एक चेतावनी होगी जिससे वे यह न समझें कि हम यहाँ हाथ पर हाथ धरे बैठे हैं। कुछ हद तक वह सही कह रहा था, क्योंकि उस संगठन के निर्माण के बाद एक लम्बे समय तक *क्लान* के गिरोहों ने कार्वेल के आसपास कभी कदम न रखा।

अन्धी लड़की एलेन जोन्स ने गिडियन से जेफ़ के बारे में पूछा, और गिडियन

ने बताया कि वह किस तरह डॉक्टर एमरी के यहाँ काम करेगा और उसके बाद उसे एडिबनरा जाने का अवसर मिलेगा। एडिबनरा समुद्र के उस पार दुनिया के दूसरे सिरे पर स्थित है। अब गिडियन की समझ में यह बात आगई कि लड़की जेफ़ से प्रेम करती थी। आखिर वह इन सब बातों से क्यों अनभिज्ञ रहता। लड़की ने कहा, "वहाँ तो शायद उसे पाँच साल भी लग जाएँ।" और उसके स्वर से यह प्रतीत हुआ मानों उसके लिए सब कुछ समाप्त हो गया।

"हाँ, शायद पाँच साल भी लग जाएँ।" गिडियन ने कहा और फिर बात विनम्र और साधारण बनाने का वह प्रयत्न करने लगा। पर साथ ही वह सोचता रहा कि आखिर जेफ़ ने यह बात बढ़ने क्यों दी? और जब वह दूसरे लड़कों को लड़कियों के साथ खेलते देखता तो उसे जेफ़ की बहुत याद आती। वह देखता कि मार्कस घोड़े की तरह दौड़ता हुआ जारहा है तो एकदम उसी जेफ़ की याद आ जाती।

एलेन रैचल के पास आकर बैठ जाती और घण्टों बातें करती रहती। रैचल ने गिडियन से जेफ़ के बारे में थोड़ा कुछ ही बताया था। "यह उसके लिए सबसे अच्छी चीज़ थी, इसमें कोई सन्देह नहीं।" गिडियन ने कहा था और रैचल ने उसे मंजूर कर लिया था। कभी-कभी गिडियन अपने आप पर खीज उठता और सोचता कि जिस प्रवाह में वह बहा जा रहा है वह उसे रैचल से कहीं दूर ले जायगा और इसलिए वह उससे असाधारण विनम्रता, असाधारण मिठास और स्नेह दर्शाने की कोशिश करता, उसकी कई छोटी-छोटी बातों पर ध्यान देने लगता। वह कहती, "गिडियन, गिडियन, तुम मेरी ओर से व्याकुल न होओ।"

"मैं तुझ से प्रेम करता हूँ रैचल, प्यारी!"

लेकिन अब इन शब्दों में वह प्रामाणिकता और भक्ति नहीं थी। उसके शब्दों में, उसके कार्यों में, उसके विचारों में, सभी में एक परिवर्तन आया जान पड़ता था। जब रैचल ने महसूस किया कि बहुत-सी स्त्रियाँ उसके और गिडियन के बारे में बातें करती हैं तो वह अपने पति की सफलताओं पर फूली न समाती; और उसे गिडियन और भी महान् लगने लगा। वह दूसरी स्त्रियों से यह कहकर कि गिडियन जैसा और कोई आदमी संसार में नहीं है, उनकी प्रशंसा, ईर्ष्या या डाह

को बढ़ा सकती थी, पर वे ही शब्द वह अपने आप से न कह सकती थी। वह रात को जाग पड़ती और घण्टों गिडियन के पास शान्त और स्थिर लेटी रहती। एक बार वह स्वप्न देखते-देखते चौंक पड़ी। और गिडियन ने पूछा, "क्या हुआ, मेरी गुड़िया ?"

"कुछ नहीं।"

"तो फिर सो जाओ।"

कुछ देर के बाद उसने कहा, "जेफ़ तो चला गया। ऐ ख़ुदा मुझे कोई और बच्चा दे दे।"

"हमारे दो बच्चे और एक बच्ची है, कितने अच्छे हैं ये सब," गिडियन ने कहा।

"मुझे बच्ची चाहिए। मेरे पेट में कुछ नहीं है।"

"यह तो खुदा की मर्ज़ी है—बच्चा दे या न दे।" गिडियन ने धीरे से कहा, "बच्चा हो या न हो, यह कोई तुम्हारे बस की बात थोड़े ही है!"

"तुम खुदा पर भरोसा नहीं करते ?" रैचल ने कहा।

"प्यारी, मेरी गुड़िया!"

"बच्चा उन्हीं के होता है जिन्हें प्रेम होता है।"

गिडियन ने कहा, "मैं तुझसे हृदय से प्रेम करता हूँ नन्हीं, तू मुझ पर विश्वास कर।"

"जेफ़ चला गया," रैचल ने दीन भाव से कहा, "वह तो चला गया, बस।"

यह निर्णय किया गया कि एब्नेर लेट, गिडियन और जेम्स एलेन्बी तीनों नीलाम में जाकर ज़मीन खरीदेंगे। लोगों ने गिडियन को अपना प्रतिनिधि चुना, और डानियल ग्रोन ने जो एक यैंकी वकील था और हाल ही में कोलम्बिया में रहने लगा था, गिडियन को ज़मीन का एक भाग दिला दिया। जो कुछ समय उसके पास था उसमें वे ज़मीन के टुकड़े विभाजित करते रहे। उन्हें इस बात का कोई ज्ञान न था कि सरकार उस ज़मीन को हज़ार एकड़ के टुकड़ों में किस तरह बाँटेगी। लेकिन उन्होंने हर संभवनीय वितरण का विचार कर लिया था। एक सप्ताह तक गिडियन, एब्नेर लेट और फ्रैंक कैर्सन के साथ कार्वेल की हज़ार

एकड़ भूमि का लेखा-जोखा करते रहे। उन्होंने इसी दौरान में ज़मीन के वे टुकड़े भी देखे जिनका उन्हें कोई ज्ञान न था। फ्रैंक कैर्सन ने बताया कि एक जगह ऐसी है जहाँ पर एक सात फीट ऊँचाई से गिरने वाला जल-प्रपात है, वहाँ पर हम सस्ते दामों में एक पनचक्की लगा सकते हैं और अपने आप अनाज की पिसाई कर सकते हैं। उन्होंने एक ऊँचा और पत्तों से भरा हुआ चटियल स्थान भी देखा जहाँ अच्छा मकान बनाया जा सकता था। जब एब्नेर लेट ने एक सात सौ एकड़ के दलदली भाग की ओर संकेत किया और कहा कि इसको यों ही छोड़ दिया जाय तो गिडियन ने उसके बारे में और जानकारी हासिल करना चाहा। दलदली प्रदेश के पेड़ मध्य ऊँचाई के थे और उन्हें काटकर साफ़ कर देना आसान था। ज़मीन जो काली और खाद से भरी थी, बड़ी उपजाऊ थी। "यहाँ तो हर साल चावलों की दो उम्दा फसलें उगाई जा सकती हैं" गिडियन ने कहा, "अगर इन्सान को चावलों की फसल उगाने को मिल जाय तो वह कभी भूखा नहीं मरेगा।" गिडियन अब हवाई क़िले बनाने लगा। उसने बताया कि दलदल में बना पुल उन्हें रेल से सिर्फ चार मील के फासले पर ला देगा। फ्रैंक कैर्सन ने खाद को उँगलियों में मसलते हुए हँसकर कहा, "मैं तो यहीं इस पहाड़ी पर अपना बढ़िया-सा मकान बनवाऊँगा। चावल बोऊँगा और नक़द कमाऊँगा, मैं अब वह कपास की खेती तो करूँगा नहीं। खुदा की लानत है इस कपास की खेती पर। मैंने तो आज तक किसी को देखा नहीं, जिसने रूई की खेती की हो और सुखी रहा हो" "लेकिन मैं तो कपास ही बोऊँगा," गिडियन ने कहा। "रूई के लिए तो यह सारा-का-सारा देश भूखा है। कपास की फलियों को फूटते मैं देखूँगा और कहूँगा, "ये मेरी अपनी है।

"लेकिन इस निचले प्रदेश में मलेरिया तो हमेशा फैलता ही रहता है।" एब्नेर ने कहा।

मीलों देवदार के जंगलों में वे पैदल चलते रहे। और जब वह पहाड़ियों पर चढ़े तो नीचे उन्हें ज़मीन एक अथाह व असीम सागर की भाँति बहती हुई दीख पड़ी। फ्रैंक कैर्सन ने इस दृश्य से प्रभावित हो धीमी आवाज़ में कहा, "यही ज़मीन मैंने पहले भी देखी है, पर ऐसी सुन्दर कभी न दिखाई दी थी। आज मैं इसे उसी तरह देख रहा हूँ जैसे कि कभी मेरे दादा ने इसे देखा होगा,

जब वह यहाँ धीरे-धीरे आराम से चलते हुए जा रहे होंगे और उनके एक कंधे पर बंदूक और दूसरे पर खाना होगा।''

इस प्रकार उन्हें जितना भी समय मिला उन्होंने जितनी जमीन देखी जा सकती थीं देख ली। फसलें कट रही थीं, १८६८ की आखिरी फ़सलें बड़ी अच्छी थीं। अनाज की पीली फलियाँ फिलहाल खलिहानों में भर दी गई थीं और उन पर एक साधारण सा सायबान भी लगा दिया गया था। गोरों ने अब वहाँ बाज़ार बना दिये थे और एक रात को लोगों ने रेलगाड़ी की सीटी की आवाज़ सुनी।

अक्तूबर मास की २७ तारीख को गिडियन, एब्नेरलैट और जेम्स एलेन्बी ने कोलंबिया में अपनी गाड़ी ठहराई और सार्वजनिक नीलाम के लिए लगी बड़ी भारी भीड़ में जाकर शामिल होगये। डानियल ग्रीन जिसे लोगों ने बोली लगाने के लिए रखा था, भीड़ में घुसता और बाहर आजाता। और फिर संकेत कर उसने गिडियन को अलग बुलाया। वह एक चारखानेदार कपड़े की कमीज पहने था, सफेद ऊँचा हैट ओढ़े था और उसके मुँह में एक मोटी काली चुरुट लगी हुई थी।

''तुम समझते हो न जैक्सन, समझे!'' उसकी जेबें खाकों और नक्शों से भरी हुई थीं।

सारे राज्य से लोग इस नीलाम में भाग लेने आये थे। कुछ ही देर पहले वहाँ बारिश हुई थी और राजधानी की सारी सड़कें छकड़ों, बग्गियों, घोड़ों आदि से ठसाठस भरी थीं। नीलाम चढ़ाने वाले का मंच कैपीटॉल की सीढ़ियों के ऊपर था। वहाँ पहाड़ी पर पत्थरों का एक बहुत बड़ा अपूर्ण ढेर लगा था, जहाँ से दूर-दूर के देहाती इलाके हर दिशा में नजर आते थे। तख्तों पर जब्त हुई जमीनों के नक्शे चिपके थे; टुकड़ों की रेखाएँ चमकदार चाक से बनादी गई थीं। उनके पास लगी भीड़ में हर तरह के लोग मौजूद थे,—चार्ल्सटन के निवासी, हब्शी खेतिहर, यैंकी सटोरिये, उत्तरी प्रदेश के किसान, न्यूऑर्लिन्स और टैक्साज जैसी जगहों के ज़मीदार, मॉर्गन और यूनिटैरियन चर्च के प्रतिनिधि और दो अंग्रेजी कम्पनियों के प्रतिनिधि, ये सब वहाँ मौजूद थे। १ लाख सोलह हज़ार एकड़ ज़मीन बिकने वाली थी।

गिडियन की आस्तीनें चढ़ी हुई थीं। उसने घूमकर देखा तो स्टीफेन होम्स की मुस्कराती हुई आँखें उसे दिखाई पड़ीं। जब गिडियन ने एब्नेर लैट और जेम्स एलेन्बी का होम्स से परिचय कराया तो होम्स ने बड़ी विनम्रता, सौम्य और सज्जनता प्रकट की।

"यहाँ क्या ज़मीन खरीदने आये हो, गिडियन?" होम्स ने पूछा।

"हाँ, इसीलिए आया हूँ।"

"तब तो हम दोनों एक ही काम के लिए आये हैं। मैं डडले कार्वेल, कर्नल-फेएटन और अपने लिए ज़मीन खरीदने आया हूँ।"

"क्या तुम्हें भी कार्वेल की ज़मीन से दिलचस्पी है?" गिडियन ने योंही अचानक पूछ लिया।

"हाँ, या फिर दूसरी कोई अच्छी ज़मीन का टुकड़ा होगा तो वह खरीद लूँगा। डडले को मकान तो चाहिए नहीं वह तो उसके लिए सफेद हाथी बना हुआ है। मैंने सुना था कि तुम चार्ल्सटन में कुछ कर्ज़े के लिए बात-चीत कर रहे थे?"

"हाँ मैंने बोस्टन में कुछ कर्ज़ा लिया।" गिडियन ने कहा।

"वास्तव में? तो आओ फिर ऐसा करें कि हम एक दूसरे के खिलाफ़ बोली न लगायें, ऐसा और लोगों को ही करने दें। क्या तुम्हारे लोगों पर ही अभी कुछ विपत्ति आई थी न, गिडियन?"

"जी हाँ, क्लान ने आक्रमण किया था।" गिडियन ने कहा।

"वे साले बड़े मरदूद हैं, ग़रीब गोरे" होम्स ने कहा, "बड़ी खुशी हुई तुम मिल गये गिडियन, और आप से, आपसे भी मिलकर बड़ी खुशी हुई साहब।"

जब वह वहाँ से चला गया तो लैट ने कहा, "ऐसे लोगों को मैं खूब अच्छी तरह से जानता हूँ, गिडियन! क्या वह कोई अफ़सर था?"

"हाँ, मेरे ख्याल से।"

"वह तो बड़ा अच्छा आदमी मालूम होता है। पुराने ज़माने में कितने हब्शी उसने रखे थे? मैं तो कहता हूँ कि वह शख्स अपनी माँ की पीठ में भी छुरा भोंकने से न हिचकिचाये।"

इसके कुछ ही देर बाद नीलाम शुरू हुआ और उसी समय से गिडियन, उसके दो साथी और कई दूसरों के लिए जो उस भीड़ में शामिल थे बड़ी उलझन और गड़बड़ी हुई। उनकी समझ में कुछ न आया। दो नीलाम की बोली लगाने वाले एक दूसरे पर मानो जादू कर रहे हों, वे चीख कर कहते :

"बलॉक के चार, चिपडन के बाईस उत्तर और दक्षिण सरकार के कम-से-कम दो डालर, ८ सौ, दो डॉलर, दो डॉलर, दो डॉलर एक, दो डालर दो, तीन डॉलर तक, तीन डॉलर दस सेंट, मेरे पास पन्द्रह सेण्ट हैं, पंद्रह सेण्ट,—" ग्रीन के हवास फ़ाख्ता हो गये थे। उसकी चुरट मानो निर्जीव हो लटक रही थी, उसने गिडियन को ढूँढा और कहा, "इस नक्शे को देखो ! मैंने एक टुकड़े का वितरण मालूम कर लिया है, वहाँ २३ टुकड़े हैं शायद हर टुकड़ा एक हज़ार एकड़ का होगा। मकान के दो सौ एकड़ अलग हैं। सरकार को हर एकड़ के लिए एक डॉलर देना होगा।"

गिडियन और एब्नेर लेंट भीड़ से निकल कर आये और नक्शे को देखने लगे।

"तीन चुनलो," ग्रीन ने कहा। "और बाकी में से एक-एक को छोड़ कर दूसरा लेते जाओ।"

"क्या मतलब है तुम्हारा ?"

"मेरा मतलब है बढ़िया ज़मीन पहले लेलो। मैं इस पर A1 का चिह्न बनाये देता हूँ," उन्होंने तीन टुकड़े अपनी मर्ज़ी के बता दिये। "अब इनमें से बताओ, अगर हम पहले में हार जायँ तो—" गिडियन और एब्नेर ने जल्दी से अच्छे बुरे टुकड़े छाँट दिये और अपने बीस टुकड़ों पर नंबर डाल दिये।

"सबसे ऊँची कीमत पाँच डॉलर ?"

"पाँच डॉलर," गिडियन ने सिर हिलाया। "लेकिन अगर हो सके तो सस्ते में ही लेने की कोशिश करना।

"हाँ कोशिश यही करूँगा" ग्रीन ने सिर हिलाया और फिर भीड़ में घुस गया। नीलाम करने वाले की आवाज़ मंद पड़ने लगी। सब तरफ से लोग अपनी-अपनी बोलियाँ लगा रहे थे। नीलाम सुबह ९ बजे शुरू हुआ था, दोपहर तक

चलता रहा और कार्वेल की ज़मीन का अब तक नाम न आया। फिर दो बजे कार्वेल की ज़मीन का पहला भाग नीलाम पर चढ़ा। गिडियन ने देखा कि ग्रीन मंच के क़रीब खड़ा अपनी बोलियाँ लगा रहा था लेकिन गिडियन उस विषय में कुछ समझ न पाया। ५ बजे तक सब कुछ खतम हो गया, वकील थक गया, सिकुड़ के रह गया लेकिन विजयोल्लास से उसका चेहरा जगमगा रहा था, भीड़ को हटाता हुआ वह बाहर निकला, "मिल गई!"

"कौन सी?"

"AI वाली दो।" वकील ने मुड़े हुए नक्शे को तख्ते पर फैलाया, उस पर झुक गया और एब्नेर और एलेन्बी भी उसके साथ बैठ गये। "ये दो तो सीधे चार डॉलरों में मिलीं।" लेट खुशी से फूल उठा, चिल्ला पड़ा, ऊपर नीचे कूदने लगा अपनी रानें फटकारने लगा। "खुदा की क़सम, देख तो गिडियन; देख तो! ये वह पेड़ों वाली पहाड़ी है। ये तो बिल्कुल मैदान है, लौंडिया के चूतड़ों की तरह चिकना, नरम और गुदगुदा!" गिडियन भी ग्रीन के पास झुक कर बैठ गया और इस विजय पर हँसने लगा।

"तीसरी कहाँ है?"

"तुम्हारा आँकड़ा तो हर चार टुकड़ों के बाद था,—अजीब बात हो गई, बोली पाँच डॉलर तक बढ़ गई। तुमने ये सब स्थान देखे हैं न, अच्छी तरह से?"

"हाँ, हाँ, भई हम सब देख चुके हैं!" एब्नेर ने कहा। "अच्छा,—यह बड़ा अच्छा टुकड़ा है,—बहुत बढ़िया टुकड़ा।"

"पहले दो टुकड़ों के लिए ७ हज़ार तीन सौ डॉलर,—यह बड़ा अच्छा सौदा है गिडियन! बहुत बढ़िया सौदा, पानी के मोल बिक गई यह ज़मीन! तीसरे टुकड़े के ४ हज़ार ७५० डॉलर। यहाँ तो काफ़ी ज़मीन है कोई ३ हज़ार एकड़ होगी—"

वे तीनों विजयी हो घर लौटे, बूढ़ा जेम्स एलेन्बी गाड़ी हाँक रहा था, गिडियन और एब्नेर नशे में मस्त होकर गा रहे थे :

फूल खिले हैं, फूल खिले हैं,
शबनम के मोती भी पड़े हैं,

मैं हूँ अकेला, मैं हूँ अकेला,
मेरी प्यारी, मेरी प्यारी,
अब तो आजा, अब तो आजा,
फूल खिले हैं, फूल खिले हैं।

एब्नेर ने २ डॉलर में देसी शराब का एक जग खरीदा था और कोलंबिया से लौटते समय रास्ते में उसे साफ़ कर दिया था। गिडियन अच्छा शराबी नहीं था। वह बहुत कम पीता था और वह भी कभी-कभी। जग की तीन चौथाई शराब एब्नेर ने पी और बाकी गिडियन के हिस्से में पड़ी थी और उसी मात्रा में दोनों को एक ही जैसा नशा आ गया। गिडियन लोगों को देखकर गरजता; "कल हमारा है, भविष्य यकीनी तौर पर हमारा है!" एलेन्बी ने सारा किस्सा सुना दिया। रैचल गिडियन पर हँस रही थी और उसने उसे जल्दी सुला दिया; उसने उसे अपने साथ खींचा पर रैचल ने विरोध किया, "गिडियन, ज़रा कुछ तो शर्म करो," लेकिन गिडियन को पुराना ज़माना याद हो आया। वह हँसता रहा और अपनी गहरी आवाज़ में गाता रहा और अन्त में सो गया।

अगले दिन भाई पीटर ने एक विशेष सभा बुलाई और गिडियन को संबोधित करके कहा, "भाई मेरे, अगर तुम खुदा को भूल गये और तुमने उसके सामने धृष्टता की या उसकी बेअदबी की तो विश्वास रखो कि वह भी तुम्हें भूल जायगा।" फिर और विनम्र स्वर में कहा, "गिडियन! तुम जनता के नेता बनने वाले हो और फिर तुम्हारे कुछ कर्त्तव्य भी होंगे, जिन्हें तुम्हें याद रखना चाहिए और विनम्र होना चाहिए। जब तुम किसी की भलाई करोगे तो लोग भी तुम पर विश्वास करेंगे। मैं तो तुम पर बहुत पहले से विश्वास करता आया हूँ। मुझे निराश न कर देना। गिडियन! अब तुम सब कुछ जानते हो और सीढ़ी की सबसे ऊँची पट्टी पर खड़े हो, नीचे देखना गिडियन! हमेशा नीचे देखना।"

"मुझे अफसोस है," गिडियन ने कहा, "मुझ पर विश्वास रखिए भाई पीटर, मुझे वास्तव में बड़ा दुःख हो रहा है।"

"हाँ गिडियन, तुम्हें ज़रूर दुःख हो रहा होगा, तुम्हारा हृदय बड़ा है लेकिन देखो गिडियन, मेरी भी सुनो, अपने दिल को खोलो और तुम्हें खुदा का

नूर दिखाई देगा। खुदा को पहचानो और उस पर विश्वास रखो।

"आपका अपना तरीका है," गिडियन ने नम्रता से कहा, "मेरा अपना तरीका है। भाई पीटर, मुझ पर भरोसा कीजिए, इस संसार में मैं आपसे ज़्यादा किसी का आदर नहीं करता।"

"मुझे तुम पर बहुत विश्वास है, गिडियन!" भाई पीटर ने नरमी से कहा। सभा में उन्होंने कहा, "मेरा असल मतलब 'नंबरों' से है, हम तेरे बन्दे हैं और तू जहाँ भी भेज देता है वहाँ चले जाते हैं, और हमें विश्वास है कि इस ज़मीन पर दूध और शहद की नदियाँ बहेंगी और यह हमारी भक्ति का ही परिणाम है।" उन्होंने अपने उपदेश धीरे-धीरे और बड़े पैने अंदाज़ में पढ़े। उस जगह जहाँ किसी के पास ज़मीन नहीं थी, अब सबके सब उसके मालिक हो गये थे। वे खुदा से दुआ कर रहे थे क्योंकि जब कभी कोई काला आदमी ज़मीन का कोई टुकड़ा खरीदता था तो हज़ारों की नज़रें उस पर उठ जाती थीं। "इसका अच्छी तरह उपयोग करो," भाई पीटर ने कहा।

सभा के समाप्त होने के बाद भूमि-वितरण का कार्य शुरू होगया। यदि वे वहाँ से हटना चाहते थे, अपने अपने टुकड़े लेना चाहते थे और सर्दी के लिए कुछ आश्रय चाहते थे तो यह वितरण का होना बहुत आवश्यक था और जल्दी हो जाना चाहिए था। गिडियन ने समझा था यह काम कठिन न होगा पर यह तो बहुत ही कठिन निकला। लोग लड़ रहे थे, बहसें कर रहे थे, विरोध कर रहे थे, एक दूसरे के टुकड़े नाप-तौल रहे थे, कोई किसी से ईर्ष्या कर रहा था, तो कोई गालियाँ बक रहा था, गोरे एक होकर कालों पर टूटते और काले स्वाभाविक तौर पर इकट्ठे हो गोरों से भिड़ जाते, आखिरकार गिडियन ने गरज कर कहा :

"बन्द करो! यह क्या लगा रखा है, तुम लोग तो बिल्कुल बेवकूफ हो गये हो! हम एकता की इस मंज़िल तक आगये हैं और अब तुम एक दूसरे के गले काटने पर उतारू हो। हम एक आदमी का नाम लेंगे, तुम उसे वोट दो और उसे ज़मीन छाँटने दो। अब बताओ किसे चुनते हो तुम?"

वे चाहते थे गिडियन वितरण करे; पर उसने इन्कार कर दिया। उन्होंने एलेन्बी और भाई पीटर के नाम सुझाये और भाई पीटर तीन वोट से जीत गये।

ट्रूपर ने उनसे पूछा, "आपकी ज़मीन कौन चुनेगा ?" और भाई पीटर ने जवाब दिया। "जो कुछ बचेगी वह मैं ले लूँगा, उसकी फिक्र तुम न करो।" और तब वे एक-दूसरे की ओर बेशर्मी से देखने लगे और हँसने लगे और इसके बाद सारा मामला ठीक हो गया।

समय गुज़रता गया और अब दूसरा चुनाव भी आगया। यह उनके लिए अब एक सरल, साधारण और स्वाभाविक बात हो गई थी; इसलिए उन्हें बैठ कर अपने परिवर्तनों पर विचार करने की ज़रूरत अब न थी। एक वर्ष पहले वे बँदूकें लिए चुनाव में गये थे, पर अब समय बदल चुका था। भूमि परिवर्तित हो चुकी थी; लोग बदल चुके थे; भविष्य अब उनके साथ था और वे इसका एक हिस्सा बन गये थे। नवम्बर मास के पहले मंगलवार को काले और गोरे दोनों सुबह जल्दी ही शहर के लिए चल दिये। हवा में सर्दी की शुरूआत हो चुकी थी। सूखे पत्ते धूल भरी सड़क पर उड़ रहे थे। काले आदमी प्रजातांत्रिक पार्टी को वोट देने वाले थे, लेकिन एब्नेर लेट ने कहा कि सब कुछ सोच समझने के बाद उसने निश्चय किया है कि वह जनवादी पार्टी को वोट देगा। उसके दादा, परदादा सबने जनवादी पार्टी को वोट दिये थे और अब वह इस तरह कोई अपवाद नहीं बनना चाहता था। फिर भी वोट देने के लिए वे सब साथ मिलकर ही शहर गये।

युद्ध

: ८ :

गिडियिन ने अपनी घड़ी निकाल कर समय देखा। उस समय तीन बजने में बीस मिनट बाकी थे और वह दो बजे से प्रतीक्षा कर रहा था। उसे आशा थी कि उसकी मुलाकात सवा पाँच बजे के पहले खत्म हो जायगी और वह जेफ़ को लेने, जो न्यूयार्क से उसी दिन आनेवाला था समय पर ही स्टेशन पहुँच जायगा। वैसे वह अब भी स्टेशन ठीक समय पर पहुँच सकता था; क्योंकि उस मुलाकात में उसे अधिक कुछ न कहना था और जो कुछ थोड़ा-बहुत कहना था उसे विश्वास था कि उसका कोई अधिक अच्छा परिणाम न निकलेगा।

फरवरी का महीना था। बाहर बर्फ गिर रहा था। यह वाशिंगटन का बर्फ था। बर्फ की परतें-की-परतें खिड़की के शीशों पर जम रही थीं और फिर धीरे-धीरे घुल-घुल कर शीशे के नीचे गिरती जाती थीं। गिडियन चमड़े की कुर्सी पर आराम से लेटा था, उसके हाथ बँधे हुए थे। उस समय उसे ऐसा महसूस हुआ मानो उसे नींद आ रही थी। और वह एक लम्बे समय के लिए सो जाना चाहता था। एक ऐसी लम्बी व गहरी नींद में वह गुम हो जाना चाहता था जो पिछले कई महीनों से उसे नसीब न हुई थी। वह इसीलिए सोना चाहता था, ताकि कुछ समय के लिए वह चिंतन से मुक्त हो जाय और फिर ताज़गी व उत्सुकता में लीन, कुछ देर के बाद उठ बैठे। लेकिन ४५ वर्ष की अवस्था में मनुष्य कितना उत्सुक हो सकता था? गिडियन ने सिर हिलाया और एक हल्की मुस्कराहट उसके चेहरे पर नाच गई। वह जेफ़ के बारे में सोचने लगा, उस समय जेफ़ के बारे में सोचना, दूसरी बातों के बारे में सोचने से कहीं बेहतर था; क्योंकि जेफ़ एक वास्तविकता था। जेफ़ रेल में से कूदेगा और दौड़ता हुआ उसके पास आ जायगा। या नहीं

आयगा ? शायद ऐसा हो जाय कि वह रेल से उतरे और अनजाने से गिडियन की ओर देखने लगे। कहीं ऐसा न हो कि वह बिल्कुल भूल ही जाय मानो उन दोनों में कोई सम्बन्ध ही नहीं। नहीं, यह नहीं हो सकता था। ७ वर्ष तक मुझसे अलग रहने से उसमें इतना अंतर हरगिज नहीं आ सकता। लेकिन वह सात वर्ष तक एडिनबरा में रहा है। ये वे सात वर्ष हैं जिनके दौरान में एक भयभीत काला लड़का डॉक्टर बन गया है, इसलिए इन सात वर्षों के बारे में सोचना आवश्यक था।

गिडियन को वह दिन याद हो आया जब डॉ० एमरी ने उसके सामने वह प्रस्ताव रखा था, और वह वक्रता से मुस्करा दिया था। एमरी उस समय क्या सोच रहा था ? आखिर उसने डॉ० एमरी से कहा क्या था ? शायद कुछ पैसों की बात थी,—क्या उसमें बहुत अधिक पैसे खर्च होने वाले थे ? लेकिन इस बात को बहुत समय बीत गया,—आठ वर्ष ? या नौ वर्ष ? उसे अनुभव हुआ कि यदि वह एमरी और वेन्ट को ज्यादा अच्छी तरह समझ लेता तो बेहतर था; अब तो वे दोनों इस संसार में नहीं हैं। उसने अपने अतीत की स्मृतियाँ ताजा कर अपना मनोविनोद करना चाहा, वह स्मरण करने लगा वह दिन जब वह डॉ० एमरी के औषधालय में खड़ा हुआ उनसे बातें कर रहा था, सूखिया के रोगी उस नंगे, लरजते हुए बच्चे को देख रहा था और इस प्रकार वे सब स्मृतियाँ एक के बाद दूसरी उसके मस्तिष्क में आने लगीं और यह ताँता सहसा टूट गया तो मानो उसका स्वप्न भंग हो गया। सामने कोने में लगे घंटे ने टन-टन करके तीन बजा दिये। उसे ऐसा अनुभव हुआ मानो वह सो रहा था। उसका सेक्रेटरी सामने खड़ा था। उसने कहा, "अध्यक्ष साहब अब आपसे मिलेंगे, मि० जैक्सन !"

गिडियन उठ खड़ा हुआ, उसने आंखें मलीं और सेक्रेटरी के साथ दफ्तर को चल दिया। ग्रांट अपनी मेज के पीछे झुका हुआ, थकावट से चूर, आँखें सुर्ख किये बैठा था। ऐसा मालूम हो रहा था मानो यह व्यक्ति पराजित हो चुका हो और भविष्य में आने वाले लम्बे, निराशापूर्ण और सुखहीन वर्षों के शून्य में गुम हो गया हो; उसने सिर हिलाया और कहा :

"बैठ जाओ, गिडियन," और फिर सेक्रेटरी से कहा, "बातचीत के समय

कोई आकर मदाखलत न करे।"

"यदि सिनेटर गॉर्डन आयें तो,—"

"कहना कि जाओ जहन्नुम में! मैं उससे बात नहीं करूँगा, समझे? मैं नहीं चाहता कोई आकर मेरी बातों में विघ्न डाले।" सेक्रेटरी बाहर आ गया और दरवाजा बंद हो गया। अध्यक्ष ने गिडियन से कहा, "सिगार पियेंगे आप? नहीं, मैं भूल गया, आप तो नहीं पीते ना? और यदि मैं पिऊँ तो कोई आपत्ति तो नहीं?" उसने चुरट का कोना तोड़ा, माचिस जलाई और एक लम्बा जोर का कश खींचा। गिडियन ने उस ओर देखा, पर अध्यक्ष ने उससे जान-बूझ कर आँखें नहीं मिलाईं। अकस्मात ही यूलिसिस सिम्पसन ग्रांट पर बुढ़ापा छा गया, आँखें अंदर धँस गईं और दाढ़ी सफेद हो गई। यहां तक कि वह चुरट पीते समय भी उसे घबराहट और व्याकुलता हो रही थी, और जब वह बोला तो मानो भौंक रहा हो:

"मैं जानता हूँ तुम क्या कहनेवाले हो।"

"तो फिर आपने यह सब कहलवाने के लिए मुझे यहाँ क्यों बुलाया?" गिडियन ने विनम्रता से कहा।

"क्यों?" ग्रांट ने उसकी ओर व्याकुल हो कर देखा, और गिडियन ने महसूस किया। उसे इस पराजित व विवश व्यक्ति पर दया आगई। यह व्यक्ति जिसे बहुत कम लोग समझते थे, बहुत कम लोग स्नेह से देखते थे, जिसका बहुत से लोग दुरुपयोग करते थे, बहुत से घृणा करते थे, बहुत से निकृष्ट समझते थे, यह व्यक्ति जिसे दुर्भाग्य और परिस्थितियों ने एक सुदूर निराशापूर्ण वैभव के सागर में धकेल दिया था।

"तो फिर यहाँ आये क्यों हो?" ग्रांट ने कहा।

"क्योंकि आप अब तक संयुक्त राज्य के अध्यक्ष हैं," गिडियन ने सावधानी पूर्वक कहा, "क्ययोंकि आप मेरे मित्र हैं और मैं आपका,—"

"अच्छा तो मेरे मित्र भी हैं?"

"और क्योंकि," गिडियन ने कहना जारी रखा, "सब कुछ हो जाने के बाद भी यह आपका देश है और मैं जानता हूँ कि आप उन कुछ लोगों में से हैं जिन्हें इस

देश से प्रेम है। आप इससे जिस तरह प्रेम करते हैं वह मैं समझता हूँ। आपका इसके प्रति प्रेम छलछिद्र और झूठोफ़रेब से रहित है; और ऐसे बहुत से निकृष्ट मनुष्य हैं जिन्होंने इसे तोड़ने का भरसक प्रयत्न किया। क्या आप को एवरेट हैल की वह कहानी, 'देशहीन मनुष्य' याद है? क्या आपको याद है कि फिलिप नोलन ने किस प्रकार अपनी मातृभूमि को समझा और उससे प्रेम किया?"

ग्रांट ने पश्चातापपूर्ण मुस्कराहट से कहा, "क्या मुझे कोई धर्मोपदेश देने आये हो, गिडियन?"

"जी नहीं,—मैं आपसे इस देश के बारे में बातचीत करने आया हूँ। क्योंकि संयुक्त-राज्य के अध्यक्ष से बातें करने का शायद यही अंतिम अवसर होगा। मैं दो सप्ताह से आपसे मिलने का प्रयत्न कर रहा हूँ,—"

"मैं अब तक व्यस्त था, गिडियन!"

"जी हाँ, अध्यक्ष महोदय! आप अब तक व्यस्त थे," गिडियन ने कहा। "बस आप व्यस्त ही थे न? खुदा हमारी रक्षा करे, हमें कई मुहावरे प्रयोग करने की आदत पड़ गई है,—व्यस्त, तल्लीन और हजारों दूसरी चीजें करना हैं आदि, आदि। हमारे दुश्मन क्यों व्यस्त नहीं है? क्यों?"

"मैं वह सब कुछ सुन चुका हूँ," ग्रांट ने रुखाई से कहा।

"और आप इसे दोबारा सुनना नहीं चाहते। आप चाहते हैं मैं अब चला जाऊँ। शायद मैं इसे दूसरे शब्दों में कह सकता हूँ। आपकी आठ वर्षीय अध्यक्षता पर अखबारों ने जो लिखा है और इतिहासकार जो लिखेंगे उसे इस समय छोड़िए, यह बताइए कि सच्चाई क्या है?"

"यही न कि मुझे कठपुतली बना कर मेरा उपयोग किया गया?" ग्रांट ने बड़बड़ा कर कहा।

"मैं वह नहीं कहूँगा। अध्यक्ष साहब, यह हमारा देश है। हम बच्चों की भाषा का प्रयोग करें, और कोई चीज काम नहीं आयेगी। यह हमारी मातृभूमि है। इसकी रक्षा के लिए हम लड़े हैं। हम इसी के लिए जीवित रहे और इसी के लिए गेटिज़बर्ग में अनेक आदमी मर गये। हम इससे अलग होकर

जीवित नहीं रह सकते। हम सब एक ही सूत्र में बँधे हुए हैं। देश किसे कहते हैं ?" गिडियन कुछ झिझका और फिर कहने लगा; "संयुक्त राज्य अमरीका क्या है ? क्या यह कोई स्वप्न है, आदर्श या कागज़ का टुकड़ा जिसे विधान कहते हैं या कोई संयुक्त मोर्चा है ? क्या यह देश योजना पेश करने वालों, घूस खाने वालों या लुटेरों और जागीरदारों का है ? क्या मॉर्गन या जेफ गोल्ड या सिनेटर गार्डन का यह देश है ? या अमरीका उस व्यक्ति का है जो बाहर सड़क पर खड़ा हुआ व्हाइट हाउस की ओर देख रहा है ?" अब गिडियन अधिक रुक-रुक कर बोल रहा था, "क्या अमरीका का अर्थ वह एपिस्कोपल चर्च या कॉन्ग्रेशनलचर्च है ? क्या इसका अर्थ चर्च की नमाज है, या मूर्ख की तरंग है या पाँच करोड़ अमरीकी हैं ? क्या इस देश का अर्थ सभा है ? इतने वर्षों से मैं सभा-भवन में बैठता रहा हूँ और यही सोचता रहा हूँ, छोटे और बड़े लोगों को देखता आरहा हूँ, पीटरसन जैसे मूर्खों और समर जैसे वीरों के भाषण सुनाता आया हूँ। और क्या अमरीका आपका या मेरा है, और हमारे लिए ही है, और हमसे अलग नहीं हो सकेगा—क्योंकि हम ही लोगों से तो अमरीका बना है। हमने जो कुछ किया है, हमारे पास जो कुछ है और जिस चीज का हमने स्वप्न देखा है वही अमरीका है !"

ग्रांट की सिगार बुझ चुकी थी। उसे वह अपनी उँगलियों के पोरुओं में दबाकर अपनी निगाह का केन्द्र बनाये था। धीरे से अपने आप ही उसका सिर हिल गया, "मैं समाप्त हो चुका हूँ, गिडियन !"

"आप हमारे अध्यक्ष हैं।"

"हाँ, पर चंद वर्षों के लिए और—"

"लेकिन उन पर प्रहार करने के लिए ये दिन काफी हैं।"

ग्रांट ने थकावट से भरे स्वर में कहा, "लेकिन मैं जानता नहीं हूँ, गिडियन ! मैं थक गया हूँ। ख़तम हो गया हूँ। मैं घसीट कर लाया गया हूँ। मैं अब घर जाकर यह सब भूल जाना चाहता हूँ।"

"आप यह सब नहीं भुला सकेंगे।" गिडियन ने कहा।

"शायद न भुला सकूँ, मैं सुलेमान तो हूँ नहीं, न ही मैं न्याय का खुदा हूँ।

मुझे इसकी इच्छा भी नहीं है । मैं युद्ध में इसीलिए विजयी हो सका क्योंकि मुझे परिणामों की चिंता न थी, मैं उन्हें भुगत सकता था । क्या उसी गुण ने मुझे अध्यक्ष-पद पर बिठलाया है ? क्या उसी ने मुझे इस गंदे, सड़े-गले राजनीतिक खेल खेलने के योग्य बनाया है ?"

"नहीं, अभी और भी कई युद्ध जीतने हैं ।" गिडियन ने कहा ।

"लेकिन किससे ? बिना शत्रु को पहचाने ? जबकि तुम्हें यह भी ज्ञान नहीं कि कौन तुम्हारा समर्थक है और कौन विरोधी ?"

"और जब हेज़ आकर आपकी कुर्सी पर बैठ जायगा और उसके घुटने खून में लथ-पथ होंगे तब क्या आप सुख की नींद सोयेंगे ?"

"खुदा इसे ग़ारत करे, गिडियन तुम्हारे तथ्य कहाँ हैं ? हेज़ रिपब्लिकन है और मैं भी रिपब्लिकन हूँ और वही तुम भी हो । हेज़ क़ानूनी तौर से अध्यक्ष चुना गया था । इन 'विपत्ति-विपत्ति' चिल्लाने वालों से तंग आ चुका हूँ । जिंदगी इसी तरह चलती रहेगी, और हमारा देश भी यों ही बना रहेगा,—"

"अच्छा ठीक है," कहते हुए गिडियन उठ गया ।

"क्या जा रहे हो ?"

"जी हाँ ।"

"तुम कहना क्या चाहते थे ?"

"अब आप क्यों चिंता करते हैं, कोई खास बात नहीं है ?"

"ऐसी की तैसी तुम्हारी, कहो ना !" ग्रांट बड़बड़ाया, "कहो क्या चाहते हो, और खतम करो इसे !"

"आप सुनना चाहते हैं ?"

"अब पहले कहो तो, बाद में देखा जायगा ।"

"अच्छा," गिडियन ने सिर हिलाया, "एक सौदा था ।"

तुम्हारे पास कोई प्रमाण है ?"

"जी हाँ, मेरे पास प्रमाण हैं," गिडियन ने आहिस्ता से कहा, "आप कुछ देर मेरी बात सुनेंगे ?"

"मैं सुन तो रहा हूँ ।" ग्रांट ने अपनी चुरट सुलगाली । गिडियन फिर बैठ

गया। ग्रांट की मेज पर रखी हुई घड़ी में पौने चार बज रहे थे। "थोड़ी देर बाद मैं चला जाऊँगा," गिडियन ने कहना शुरू किया। बाहर अब तक बर्फ गिर रहा था और उसके मोटे-मोटे परत खिड़की के शीशों पर पिघल रहे थे। अध्यक्ष के दफ्तर में अन्धकार बढ़ रहा था। उसको मेज पर रखे हुए चिराग़ से एक गोल पीली रोशनी निकल रही थी और जब अँधेरा बढ़ने लगा तो ग्रांट के चेहरे पर थकावट के गहरे चिह्न नजर आने लगे और उसे पहचानना और भी कठिन होता गया। उसकी चुरट का धुआँ चक्कर खाता हुआ, घूमता हुआ लैम्प की चिमनी के ऊपर जाकर प्रकाश में विलीन हो जाता था।

"आपको दक्षिण केरोलिना की सभा की याद है?" गिडियन ने कहा। "कोई ७ वर्ष पहले हुई थी ना वह।"

"हाँ, मुझे याद है।"

"यों कहना चाहिए कि उसके साथ ही पुनर्निर्माण का कार्य भी शुरु होगया। उसके दो वर्ष बाद मैं राज्य के सिनेट में प्रतिनिधि रहा और पाँच वर्ष पूर्व मैं सभा का प्रतिनिधि बना। उसकी रोशनी में जो कुछ हुआ उसका वर्णन आप से करूँगा। दक्षिणी प्रदेश में १८६८ से जो कुछ भी अब तक किया गया है उसे पुनर्निर्माण की संज्ञा देना उचित नहीं। यह सब निरर्थक है। वास्तव में यह कोई आवश्यक समस्या नहीं थी कि पुनर्निर्माण किया जाय अथवा विद्रोही राज्यों को फिर से यूनियन में सम्मिलित कर लिया जाय; और यह सब मैं सभा में कह चुका हूँ, और इन पाँच वर्षों में बार-बार दुहरा चुका हूँ। और अब मैं इसे इसलिए कह रहा हूँ ताकि इसका यहाँ रेकार्ड रहे: क्योंकि मैं समझता हूँ कि यह अन्तिम अवसर है, जबकि हब्शियों के प्रतिनिधि को संयुक्त राज्य के अध्यक्ष के दफ्तर में बैठने का मौक़ा मिला है, शायद यह मौक़ा अब आने वाले कई वर्षों तक न मिले।"

ग्रांट ने चुरट की राख झाड़ी। अब उसका चेहरा छाया में गुम हो चुका था।

"पुनर्निर्माण क्या है? क्या रहा है? और इसका क्या परिणाम निकला है? इसे क्यों नष्ट किया गया है? मैं आपसे पूछ रहा हूँ क्योंकि मैं जानता हूँ कि आप ही इस देश में एक ऐसे व्यक्ति हैं जो इसे पुनर्जीवित कर सकते हैं,—और यदि ऐसा होगया तो यह देश अन कहीं विपदाओं और दरिद्रता से बच जायगा।"

"कहे जाओ, गिडियन!" ग्रांट ने कहा,

"पुनर्निर्माण ने नये जीवन का प्रारम्भ और पुराने जीवन का अन्त कर दिया था। बड़े-बड़े कृषकों की गुलामी-व्यवस्था, जमींदारी आदि जो इस देश की प्रकृति के विरुद्ध थे, और कुछ वर्ष पहले पूरे राष्ट्र पर विजय प्राप्त कर इसका शासन करना चाहते थे, या तो उसका नाश करना चाहिए था या फिर वह जनवाद का नाश कर देता। वह व्यस्था नष्ट करदी गई और उसी नाश के दौरान में हमारी जनता भी मुक्त हो गई। क्या मैं कहना जारी रखूँ?"

"हाँ, कहे जाओ," ग्रांट ने कहा।

"बहुत अच्छा। उस भयंकर युद्ध ने पुनर्निर्माण को जन्म दिया,—जो आवश्यक रूप से जनवाद की परीक्षा था। एक ऐसी परीक्षा जिससे मालूम हो कि आज़ाद हब्शी और आज़ाद गोरे,—क्योंकि गोरे भी युद्ध के पहले कालों की ही भांति गुलाम थे,—साथ-साथ रह सकते हैं, काम कर सकते हैं और निर्माण-कार्य कर सकते हैं, या नहीं। और मैं कहता हूँ,—अपनी सारी खामियों, ग़लतियों, फिजूलखर्चियों, मूर्खताओं और बड़ी-बड़ी डींगों के बावजूद दक्षिण प्रदेश में जनवाद सफल रहा। इस राष्ट्र के पूरे इतिहास में पहली बार काले और गोरे दोनों आदमियों ने मिल कर दक्षिण में जनवाद की स्थापना की और आपके पास इसका प्रमाण भी है। ये पाठशालाएँ, खेत, न्यायालय और पूरी-की-पूरी शिक्षित और उत्सुक पीढ़ी। लेकिन यह सरलता से न हो सका और अधूरा रह गया। ज़मींदारों ने हज़ारों की संख्या में सफेद पोश गुण्डों की सेना संगठित की। और वह अब तक चली आ रही है। अध्यक्ष साहब आप ही ने तो कहा था कि यूनियन की फौजों के दस्ते ही दक्षिण में शान्ति कायम रखते हैं। मैं आपसे आज कहता हूँ कि जिस दिन रूथफोर्ड बी० हेज ने कुर्सी संभाली, वहाँ से फौजें वापस बुलाली जायेंगी और क्लान फिर आक्रमण करेगा। और किसी-न-किसी रूप में वह हर स्थान पर हमला करेगा और सारे प्रदेश में एक ऐसा भय और आतंक फैला देगा जिसका आज तक किसी को अनुभव नहीं। हत्याएँ, संहार, आगज़नी, लूट का बोलबाला होगा और जनवाद के एक-एक अवशेष का नामो-निशान मिट जायगा। हम फिर उसी स्थिति में होंगे जैसे सैकड़ों वर्ष पहले थे और अनेक पीढ़ियों तक इन्सान विपदायें

सहता रहेगा और मौत का सामना करता रहेगा।"

ग्रांट की आवाज़ में थकावट बढ़ गई और जब वह बोला तो ऐसा महसूस हुआ मानो दूर से किसी की आवाज़ आ रही हो, "अगर जो कुछ तुम कहते हो वह मैं मान भी लूँ, जो कि मैं मानता हूँ, तो भी और मार्ग ही क्या है ? क्या फौजें दक्षिण में रहतीं रहें ?"

"जी नहीं, हमेशा के लिए नहीं, लेकिन १० वर्ष के लिए और,—ताकि हम गोरे और कालों की इस पूरी पीढ़ी को जिन्होंने साथ-साथ पढ़ना और जीवित रहना सीखा है, मानवता की मंजिल तक पहुँचा दें; और तब संसार की कोई भी शक्ति हमसे हमारी बनाई हुई चीज़ें नहीं छीन सकेगी।"

"मैं यह स्वीकार नहीं करता, गिडियन ! तुमने हेज़ पर जो अपराध लगाया है उससे भी मैं सहमत नहीं हूँ। क्लान की मूर्खतापूर्ण शक्ति जिसका तुमने ज़िक्र किया है, उसे भी मैं नहीं मानता। यह सन् १८७७ है समझे ?"

"आप प्रमाण चाहते थे," गिडियन ने कहा। "मेरे पास प्रमाण हैं।" उसने जेब से कुछ काग़ज़ात निकाले और लैम्प के उस धुंधले प्रकाश में उन्हें मेज़ पर फैला दिया। चुनाव के आँकड़े ये हैं। लोगों ने टिल्डन को जो वोट दिये हैं उनकी संख्या ४३ लाख है और हेज़ के वोटों की संख्या चालीस लाख छत्तीस हजार है। पहले तो यही झूठी बात है मैं कहता हूँ कि दक्षिण के पाँच लाख हब्शी और गोरे जिन्होंने रिपब्लिकन उम्मीदवार को वोट दिये थे उनके वोट नष्ट कर दिये गये, ग़लत गिने गये और उनका उलटफेर कर दिया गया था। नहीं, यह तो मैं प्रमाणित नहीं कर सकता लेकिन दूसरी चीज मैं बाद में साबित करूँगा। वास्तव में इन दोनों में से एक का होना या दूसरे का होना कोई विशेष महत्त्व की बात नहीं, ये दोनों टिल्डन और हेज़ बेईमान हैं और हमारे राष्ट्रपति-पद के पतन की पराकाष्ठा के सजीव प्रतीक हैं। वे दोनों साँपनाथ और नागनाथ ही हैं, जो एक ही पिटारी से निकले हैं।

"अब तक," ग्रांट ने कहा," तुम निराधार अपराध लोगों पर लगा रहे हो। मैं अब और ज़्यादा इस पर समय नष्ट नहीं करना चाहता गिडियन।"

"आपने ही कहा था आप सब कुछ सुनेंगे। मैं आप को प्रमाण दूँगा,

पहले मुझे अपने तथ्य तो कहने दीजिये। कांग्रेस भी, जो कि जनता से और जनवाद से आती है बज मैं बोलने के लिये खड़ा हूँगा तो मुझे तथ्य पेश करने की आज्ञा देगी। मैं जल्द ही इन्हें कह डालूँगा। मेरा बेटा, जिससे मैं वर्षों से नहीं मिला हूँ, आज हो ५--१६ की गाड़ी से न्यूयार्क से आ रहा है। मैं आश्वासन देता हूँ उसके पहले ही मैं अपनी बात कह लूँगा।

पीली रोशनी के चक्र के अलावा कमरे में पूरी तरह अंधकार छागया था। "कहो," ग्रांट ने कहा।

"आइए हम चुनाव में डाले गये वोटों का लेखा-जोखा करें। डेमोक्रेट टिल्डन को १८४ वोट मिले हैं, और रिपब्लिकन हैज़ को निर्विरोध रूप से १६६ वोट मिले हैं। अगर टिल्डन को एक वोट भी अधिक मिल जाता तो वह अध्यक्ष बन जाता। लेकिन हेज़ ने दावा किया था कि दक्षिणी केरोलिना, लुइसाना, और फ्लोरिदा से उसे १८५ वोट मिल जायेंगे और वह अध्यक्ष बन जायगा। हेज़ का दावा सही साबित हुआ, क्योंकि जैसा मैं कह चुका हूँ, वोटों में उलटफेर किया गया है और कुछ वोट नष्ट कर दिये गये। स्थिति क्या थी? एक ओर प्रजातंत्रवादी गृह था और दूसरी ओर रिपब्लिकन सिनेट एक की ओर से टिल्डन खड़ा हुआ था और दूसरे की ओर से हेज़ उम्मीदवार था और सारा देश एक द्वितीय गृह-युद्ध के भय से चीख रहा था और डर रहा था कि कहीं दक्षिण के लोग वाशिंगटन पर आक्रमण न कर दें। अध्यक्ष साहब, क्या आपको इस पर विश्वास आ गया था? क्या आपको विश्वास था कि इन दो बेईमानों में कोई भी अन्तर था?"

ग्रांट ने कहा, "लानत हो तुम पर खुदा की! गिडियन मैं बहुत सुन चुका!"

"अब मैं आपको प्रमाण देता हूँ। मुझे सबूत देने दीजिये और मैं चला जाऊँगा। मेरा ख्याल है, हम दोनों ही ऊब चुके हैं। आपने कहा था, आप कुछ ही दिन और अध्यक्ष हैं और मुझे भी अधिक समय नहीं है।"

"कहे जाओ।" ग्रांट ने कहा।

"जी हाँ,—हमारे दक्षिण के जनतंत्रवादी स्पष्ट रूप से यह जानते थे कि ये दोनों व्यक्ति एक ही थैली के चट्टे-बट्टे हैं। उन्होंने टिल्डन को अलग कर दिया,

क्योंकि शायद वह अधिक कष्ट देता। एक बार उन्होंने गृह-युद्ध छेड़ा था और असफलता हुई थी; अब वही खतरा मोल लेने को वे तैयार न थे। उन्होंने हेज़ के साथ सौदेबाज़ी की। उन्होंने कहा, 'वह दक्षिण केरोलिना, फ्लोरिडा और लुइ-सानिया अपने चुनाव क्षेत्रों में शामिल कर सकता है—और उसे निश्चित बनाने के लिए उन्होंने औरेगॉन भी उसे दे दिया; और इसके बदले में हेज़ ने उनसे उन्हें एक बहुत छोटी और बेकार चीज देने का वादा किया और कहा कि वह दक्षिणी केरोनिया और लुइसियाना का नियंत्रण उन्हें सौंप देगा और दक्षिण से यूनियन की फौजें हटा लेगा। इस प्रकार तुच्छ प्रश्न राष्ट्रपति-पद और एक साधारण व्यक्ति के बीच खड़ा था, लिकन की रिपब्लिकन पार्टी और शक्ति के बीच खड़ा था ! यह प्रमाण हेज़ के दो मित्र मि० स्टैनले मैथ्यूज़ और चार्ल्स फोस्टर ने मुझे दिया है। इससे आपको उनकी उन बातचीत का पता चलेगा जो उन्होंने जार्जिया के सिनेटर जॉन बी० गोर्डन और केण्टुकी कांग्रेसमेन मि० जे०यंग बॉऊन की थी। यह उसी की सही व शुद्ध नकल है जो मि० फोस्टर ने अपने काले नौकर के हाथ मुझे भेजी थी; मैं इसके लिए शपथ ले सकता हूँ। मैं आपको भी पढ़कर सुनाता हूँ।

*"कल आपके साथ कुछ दक्षिणी राज्यों के भविष्य की स्थिति के बारे में गवर्नर हेज़ की नीति पर जो वाद-विवाद हमने किया था उसी सिलसिले में हम पूरे जोर से यह कहना चाहते हैं कि उन्हें ऐसी नीति अपनाने की हमारी ओर से इजाजत है, जिससे कि दक्षिणी केरोलिना और लुइसाना के राज्यों को अपनी इच्छानुसार अपनी समस्याओं का हल करने का अधिकार मिले, बशर्ते कि वह नीति संयुक्त राज्य के विधान और कानूनों के अन्तर्गत हो; और हमारे गवर्नर हेज़ से परिचय और ज्ञान की बिना पर हम यह कह सकते हैं कि हमें पूरा विश्वास है कि उनकी शासन की नीति ऐसी ही होगी।"

"यह है प्रमाण, अध्यक्ष महोदय !"

इसके समाप्त होते ही कमरे में कुछ देर तक स्तब्धता छा गई और फिर ग्रांट ने फीके स्वर में कहा, "तो तुम इसे सभा के सामने क्यों पेश नहीं करते ?"

---

* यह दस्तावेज़ विलियम लिखित 'रूथर फोर्ड बी० हेज़ की जीवनी' में भा० १ पृष्ठ ५३३ पर अंकित है

"इसलिये कि मेरे पास नक़ल है, मौलिक पत्र नहीं है; क्योंकि इसके पहले कि मैं बाइबिल के पुलन्दे लेकर शपथ ग्रहण करूँ और यह सिद्ध करूँ कि यह सब सच है मैं गवाही नहीं पेश कर सकता, एक ग़रीब काले नौकर के शब्द मैं संयुक्त राज्य के निर्वाचित अध्यक्ष के सामने नहीं रख सकता। यदि मैं सभा में खड़ा होकर यही कहता जो कि मैंने आपसे कहा है तो हमारे यहाँ के १० सभ्य बोर्बोन सदस्य खड़े होकर चीखते और कहते, "इस मरदूद झूठे और ढीठ हब्शी को कोड़े लगाये जाने चाहिएँ।"

"मैं तुम पर विश्वास क्यों करूँ ?"

"क्योंकि इस देश का सारा भविष्य संकट में है। क्योंकि जब हमने क्रांति के लिए संघर्ष किया, गृह-युद्ध लड़ा, उस समय हम एक गौरवशाली मार्ग पर पदार्पण कर रहे थे। वह मार्ग जिसे हमारी जनता 'हालै लुजा मार्ग' कहती है। हमारे साथ सभी भले आदमी थे और हम ईश्वर की ओर मुँह किये चले जा रहे थे। आपने सुना अध्यक्ष महोदय! मैंने क्या कहा? और अब से हम उस मार्ग को त्याग रहे हैं और अन्धकार की ओर अग्रसर हैं। लेकिन ऐसा कब तक? इस सरकार के जनवादी बनने तक कितने और लोगों को मृत्यु का ग्रास बनना होगा ?"

"चीजें उतनी बुरी नहीं हैं जितनी कि तुम समझते हो,—" ग्रांट ने कहना शुरू किया।

"लेकिन वे इतनी ही बुरी हैं!"

ग्रांट खड़ा हो गया। वह दोनों हाथों से जोर लगाकर कुर्सी पर से उठ गया। लैम्प की रोशनी में झुका, गिडियन को देखा और फिर मेज को अलग कर कमरे में तेज़ी से घूमने लगा।

"बस ?" गिडियन ने पूछा।

"मैं क्या कर सकता हूँ ?" ग्रांट ने उसकी ओर घूमकर पूछा। "अगर तुम्हारी यह पागलपन से भरी, परियों की कहानी सच भी होती तो मैं क्या कर सकता था ?"

"आप सब कुछ कर सकते हैं। अब तक आप अध्यक्ष हैं। इस अध्यक्षता को जनता के हाथों में दे दीजिए। कल ही एक प्रेस-कान्फ्रेंस बुलाइये। ऐसे कई

साहसी अख़बार हैं जो इसे प्रकाशित करेंगे। हेज़ को यह अपराध झूठा साबित करने दीजिये। इस सारी गंदी चीज़ को जनता के सामने खोलकर रख दीजिए और इसका निर्णय उन्हीं पर छोड़ दीजिए। वे जानते हैं, इसके लिए क्या किया जाय। अमरीका के हम लोग बुरे या अज्ञान नहीं हैं। हमने पहले भी संसार को हिला दिया है और बुरी बातें की हैं; पर हमने अच्छी बातें ज्यादा की हैं। कांग्रेस के सामने जाइए और सत्य की माँग कीजिए।"

ग्रांट ने सिर हिलाते हुये कहा, "गिडियन।"

"क्या आप डरते हैं?" गिडियन ने चीखकर कहा, "आपका इसमें क्या नुकसान है? वे लोग जिन्हें वह दिन याद है जब आपने उन्हें विजयी करवाया था, वे आपका समर्थन करेंगे। और दूसरे—" गिडियन की आवाज़ लड़खड़ाने लगी।

उसने काग़जों को एकत्र किया और जेब में रख लिया, "अच्छा अब मैं जाता हूँ।"

गिडियन के जाने के बहुत देर बाद ग्रांट अपनी कुहनियाँ मेज़पर रखे अपना चेहरा हाथों से ढके बैठा रहा और बन्द दरवाजे की ओर देखता रहा।

गिडियन को स्टेशन पहुँचने में देर हो गई। रेल पहले ही आचुकी थी। स्टेशन के प्लेटफार्म पर उसने देखा कि जेफ होटाट के थैलों के बीच पतलून की जेबों में हाथ डाले खड़ा था। वह अब तक लम्बा नौजवान, चौड़े सीनेवाला, मानो उसी का अक्स दिखाई देता था। अब स्मृति या परिवर्तन का कोई प्रश्न नहीं था। दोनों ने एक-दूसरे की ओर देखा और पहचान गये और यद्यपि दोनों पहले से काफी अधिक अवस्था को पहुँच चुके थे; फिर भी दोनों एक-दूसरे से और अधिक मिलते-जुलते थे। वे मिले और उन्होंने हाथ मिलाये। गिडियन आँसू पी गया, जेफ़ मुस्करा दिया और दूसरे हाथ से बाप की बाँह पकड़ ली।

"आप तो पहले से बहुत बड़े हो गये!" उसने कहा।

"और तू भी तो।" गिडियन ने सिर हिलाया।

"आप मुझे पहचान गये?"

"हाँ, मुझे बड़ी खुशी है, तू वापस आ गया, जेफ़!"

"मुझे भी अपनी वापसी पर प्रसन्नता है।" जेफ़ ने कहा। गिडियन थैले उठाने झुका। "नहीं, इन्हें मैं ले चलूँगा।" जेफ ने कहा।

"एक तुम ले लो, एक मैं ले चलता हूँ।"

"अच्छा!" जेफ़ मुस्करा दिया, और फिर साधारणतया वह गिडियन को ऊपर से नीचे तक इस प्रकार घूरने लगा मानो उससे कह रहा हो आपकी प्रशंसा नहीं की जा सकती। वे दोनों अब कद में बराबर थे। दो बड़े शरीरवाले व्यक्ति धीरे-धीरे चले जा रहे थे, अनिश्चित कदमों से एक-दूसरे से इतने लम्बे समय के बाद मिलने पर वे एक दूसरे के क़दम, विचार और इच्छाएँ मिलाने का प्रयास कर रहे थे। पूरे प्लेटफ़ार्म पर से गुज़र जाने के बाद जेफ़ ने एक प्रकार के अपराध और कमज़ोरी का अनुभव करते हुए कहा, "माँ कैसी हैं?" "अच्छी हैं," गिडियन ने कहा। "हम सब बूढ़े होते जा रहे हैं।" "आप बूढ़े नहीं दिखाई देते।" जेफ़ ने कहा। गिडियन ने एक टैक्सी ले रखी थी, वे दोनों उस पर सवार हो गये और सीट की जगह दोनों के विशाल शरीर से भर गई। आसपास बर्फ यों गिर रहा था मानो गोरे मछुए का जाल फैला हो। "वाशिंगटन मुझे बड़ी अच्छी जगह लगी।" जेफ़ ने कहा। "मैं यहाँ पहले कभी नहीं आया—" "नहीं, तुम नहीं आये।" गिडियन ने सोचा कि इन वर्षों में पोटोमाक पर स्थित यह लेटा हुआ शहर उसके जीवन का एक अंग बन चुका था। घोड़ा धीरे-धीरे टप-टप करता हुआ चला। "गत दो वर्षों से यहाँ मेरे पास एक छोटा-सा घर भी है।" गिडियन ने कहा।

"माँ—"

"गये साल वह भी यहाँ आकर रही थी।" गिडियन ने कहा, "पर वह कार्वेल में अधिक सुखी है।"

"आप अब तक उसे कार्वेल ही कहते हैं?"

"कार्वेल?" गिडियन कुछ उलझन में पड़ गया, "हाँ, हमने उसे कोई और नाम देने का अब तक विचार ही नहीं किया। तू ठीक तो बैठा है न?" थैले उनके घुटनों से बुरी तरह सटे हुए रखे थे।

"मैं बिल्कुल ठीक बैठा हूँ, जेफ़ ने कहा।"

"तुझे भूख लगी होगी?"

"हाँ, कुछ कुछ भूखा हूँ।"

"घर चल कर हम दोनों खाना खायेंगे। किसी और को मैंने नहीं बुलाया है।"

जेफ़ को आश्चर्य हो रहा था कि उसके पिता ने उससे यह बात क्यों कही कि उसने किसी और को नहीं बुलाया।

गिडियन का मकान छोटा-सा था जिसमें पाँच कमरे थे और सफेद रोग़न लगा हुआ था। एक निर्बल सूखी-सी हब्शी बुढ़िया ने उसे साफ़ किया था और उनके लिए खाना तैयार कर रखा था। गिडियन उसे बूढ़ी माँ जोन कहा करता था। "माँ जोन!" उसने कहा, "यह मेरा बेटा जेफ़ है।" "ओह यह तो अच्छा खासा लम्बा-चौड़ा नौजवान लड़का है मि० जैक्सन! आप बड़े सौभाग्यवान हैं।"

"जी हाँ, बहुत भाग्यवान हूँ," गिडियन ने कहा। उसके बाद उन्होंने मामूली सा खाना खाया। सेम-फलियों का गरम शोरवा, चाय और मक्खन लगे हुए पसंदे। "आज कितने दिनों बाद पसंदे खाने को मिले हैं—!" जेफ ने मुस्कराते हुए कहा।

"तुम्हें स्कॉटलैंड में तो ये मिलते ही नहीं होंगे?" गिडियन ने याद करके कहा।

स्वाभाविक ही था कि गिडियन ने उन सब बातों की आशा एक बार भी नहीं की थी। वह जानता था कि धीरे-धीरे जैसे-जैसे दोनों की मुलाकात होगी, निकट आते जायेंगे और तभी एक-एक करके सब बातें होंगी। सात वर्ष का समय काफी लम्बा समय था। उन दोनों की वाणी में भी अन्तर पड़ गया था। जेफ़ की आवाज़ गिडियन से भी ज्यादा भारी और सख्त हो गई थी और उसके उच्चारणों में भी कुछ विदेशी अंश आगया था।

जेफ़ ने कहा, "साल भर तक मैं डॉक्टर केण्ड्रिक के साथ काम करता रहा। खदानों के इलाके में उनका एक बहुत बड़ा दवाखाना था। वहाँ जो रोगी या घायल लोग आये उनसे मुझे काफी अनुभव प्राप्त हुआ। कुछ लोग दुर्घटना के शिकार, कुचली हुई बाहें या टाँगें, घरेलू रोगों से पीड़ित व्यक्ति वहाँ आते और उनका इलाज किया जाता था। हलक की बीमारी, कुष्ठ रोगादि जैसे छोटे-छोटे रोग भी थे जिनका इलाज बहुत ही मुश्किल होता था।

"वे सब रोगी गोरे होते थे?"

"जी हाँ, हब्शी तो सारे जिले भर में सिर्फ मैं ही था। और यही एक फ़र्क था मुझमें और उनमें।"

"वहाँ के लोग तुमसे घृणा करते थे?"

"करते थे; लेकिन वैसे नहीं जैसे यहाँ करते हैं। मैं तो उनके लिए कौतुहल की वस्तु था। वे लोग ऐसे घुन्ने और मक्कार नहीं हैं, उनके भय और शंकाएँ सब बुनियादी हैं और उन्हें आसानी से दूर किया जा सकता है।"

वे गिडियन के अध्ययनागार में गये। वह एक छोटा-सा कमरा था जो पुस्तकों से भरा था और जिसे वह दफ्तर के लिए भी इस्तेमाल करता था। अंगोठी के सामने टाँगें फैलाकर वे बैठ गये और वहाँ बैठकर उन्होंने बहुत-सी बातें कीं। अब उन दोनों की अजनबीयत दूर हो गई और वे ज्यादा बेतकल्लुफी से बातें कर सकते थे; अब ज़ेफ ने कहना शुरू किया :

"जानते हैं आप पर मैं कितना गर्व करता हूँ।"

"किस पर?"

"आप पर, क्योंकि आप कांग्रेस में हैं। मैं नहीं जानता इसे क्योंकर प्रगट करूँ; लेकिन यह बड़ी अच्छी बात है।"

गिडियन की आँखों से विचारशीलता टपकने लगी, "यह सब परिस्थितियों पर निर्भर होता है। लोग बनाये जाते हैं और परिस्थितियाँ उन्हें बनाती हैं। मुझे भी उधर या इधर लेजाने में या बनाने में परिस्थितियों का ही हाथ था।"

जेफ़ ने उससे चुनाव के बारे में पूछा और गिडियन ने पहले तो धीरे-धीरे और बाद में अधिक भावावेश के साथ उसे बताना शुरू किया। गत आठ वर्षों में घटी घटनाओं का ताँता बंध गया और अंत में उसने यह भी बताया कि आज वह किस प्रकार अध्यक्ष से मुलाक़ात करने गया। "और मैं अपने प्रयास में असफल रहा।" गिडियन ने कहा।

"क्या आप यह मानते हैं कि चीज़ें उस तरह यकायक खत्म हो जाती हैं जैसे कि बम फूट जाता है? कहीं वैसा भी होता है?"

"नहीं, यकायक ऐसा नहीं हुआ;" गिडियन ने कहा, "यह मामला तो बहुत पहले से चला आ रहा है। आठ से भी ज्यादा साल गुजर गये, जब कि क्लान ने

हमारी बस्ती कार्वेल पर आक्रमण किया था। वह हालाँकि एक भद्दी और भयानक घटना थी। उन्होंने हमारे खलियानों में आग लगायी और एक छोटे लड़के को मार डाला। लेकिन उस समय वे शुरूवात कर रहे थे। उन्होंने तो बहुत पहले से हमें नष्ट करने की ठानी थी। अभी युद्ध समाप्त भी न हो पाया था कि उन्हीं लोगों ने, जिन्होंने उसे छेड़ा था, अब अगले युद्ध की योजनाएँ बनाना शुरू करदीं। रात्रि को आक्रमण करनेवाली सेनाएँ तैयार की गईं, धमकियाँ, खौफ़, साजिशें और आतंक फैलाया जाने लगा और अब उनकी तैयारियाँ ख़त्म हो चुकी हैं। वे बिल्कुल तैयार हैं।"

"मुझे इन बातों पर विश्वास नहीं होता।"

"काश, मैं भी यह समझ सकता कि मैं ग़लती पर हूँ," गिडियन ने कहा। "लेकिन मैं ग़लत नहीं कह रहा—"

"तो फिर आप क्या करने वाले हैं?"

"अभी तक निश्चय नहीं है क्या करेंगे, मैं इस पर कुछ ग़ौर करना चाहता हूँ। एक चीज़ तो तय है कि मैं घर जा रहा हूँ। मैं उस घड़ी उनके साथ होना चाहता हूँ।" जेफ़ ने सिर हिला दिया। "और मेरे लिए भी यही उचित है," गिडियन ने समझाया। लेकिन जो कुछ मेरे लिए मुनासिब है वह ज़रूरी नहीं तुम्हारे लिए भी हो। समझे जेफ़?"

"आप करना क्या चाहते हैं?"

"मैं तीन चार रोज़ में यहाँ से चला जाऊँगा," गिडियन ने कहा, "मैं नहीं चाहता तू भी मेरे साथ घर चले। मेरे साथ आने की कोई ज़रूरत नहीं है। अगर बसंत तक हालात ठीक हुए तो—"

"आखिर आप यह कह क्या रहे हैं?" जेफ़ ने पूछा।

गिडियन ने अपना सिर हिला दिया। "सब्र से काम लो जेफ़! सुनो! एक वह समय भी था जब तुम मेरी बातें सुनते थे।" वह एक क्षण के लिए खड़ा हो गया, और अपने हाथों की लंबी उँगलियों को मलने लगा। बेटे के सामने झुका और फिर अचानक ही कुर्सी पर बैठ गया। वहाँ वह बिल्कुल शांत बैठा रहा और आगे की ओर टिकटिकी लगाकर देखता रहा। आग की ज्वालाओं का

प्रतिबिंब उसके खुरदरे चेहरे पर पड़ रहा था। जेफ़ ने उसकी ओर देखा और ग़ौर किया कि किस प्रकार उसका लंबा चौड़ा मुँह स्थिर था और धँसी हुई आँखें किस क़दर सुर्ख़ और थकावट से चूर नज़र आ रही थीं। वह व्यक्ति अब बूढ़ा हो चुका था। ४५ वर्ष से भी अधिक बूढ़ा तर्क व विवेक से भी ज़्यादा बूढ़ा। वे चौड़े काँधे जो जेफ़ ने बचपन में अक्सर देखे थे, जो धूप में जले थे, जो पसीने से नहाये थे, जो असाधारण रूप से शक्तिवान थे, जिन पर मांसपेशियों की तह पर तह जमी थी; आज वही कंधे ढीले पड़ गये थे और झुक गये थे।

वह छोटे घुंघराले बाल जो उसके सिर को यों ढके थे मानों तंग टोपी पहन रखी हो, अब सफेद हो चले थे। जेफ़ उसे नहीं जानता था और न ही उसने कभी उसे जाना था। १५ वर्षीय लड़का तो लोचदार मिट्टी की भाँति होता है। नौ साल की अवधि में जेफ़ काफ़ी बढ़ गया था। लेकिन उसे किसी ने डिगाया नहीं; उसने शिक्षा प्राप्त की थी, वह बढ़ा था, फैला था, उसे पीड़ा पहुँचाई थी, ज़ख्मों को भरा था, उसे विज्ञान में भगवान् मिल गया था और खुर्दबीन में मनुष्य का रंग नहीं दिखता बल्कि उसमें तो वे सुन्दर अणु दृष्टिगोचर होते हैं जो असाधारण-तया एक साथ ही गुंथे होते हैं। सारे विश्व का आधार विवेक पर है। डार्विन नामक व्यक्ति ने उस पर्दे को लोगों की आँखों के सामने से हटा दिया था जो सदियों से मनुष्य को अंधकार में रखे हुए था। टूटी हुई टाँग एक खास ढंग से जुड़ी हुई होती थी चाहे उसके ऊपर का रंग काला हो या सफेद। दलदली क्षेत्र में स्थित एक निर्जन झोंपड़ी में उसने एक गर्भवती गोरी स्त्री के बड़ी तीव्रता से बच्चा पैदा करवाया था और पैदायश के समय बच्चे का चिल्लाकर रोना और उससे जो आश्चर्यजनक पीड़ा होती है उसे देखा था।

समस्त विश्व एक समझ में आने वाला स्थान है, एक नक्षत्र है जो शून्य के इर्दगिर्द घूमता है और जो वातावरण द्वारा बड़े विनीत भाव से आच्छादित होता है। मनुष्य दुराभाव में पड़ जाता है क्योंकि वह अज्ञान है किन्तु जिस व्यक्ति ने वैज्ञानिक ढंग से विश्व को समझने-बूझने में ही अपना जीवन अर्पण कर दिया हो, उसे किसी प्रकार का भय नहीं होता। ये थे उसके विचार। किन्तु उसके पिता के विचार क्या थे? उसने अपनी स्मृति के पट खोले तो उसे याद आया वह खेतिहर

जो प्रतिनिधि बनकर पैदल चार्ल्सटन की ओर रवाना हुआ था, जिसके सिर पर एक बड़ा ऊँचा हैट था और जिसकी जेब से एक साफ़, चमकीला रूमाल लटक रहा था और जब वह वापस लौटा तो एक दूसरा ही व्यक्ति बनकर; किन्तु उसके बनने में किस प्रकार की पीड़ा का सामना करना पड़ा था उसे ? और जब गिडियन जैक्सन एक तीसरे और चौथे मनुष्य में परिणत हुआ तो कौन से सामाजिक विस्मय व परिवर्तन थे जिन्होंने उसे बदल दिया था जिसके बारे में डॉ० ऐमरी ने कहा था, "यह सच्चे मानों में एक महानतम व्यक्ति है जेफ़, याद रखना। ऐसी कोई वैज्ञानिक परिभाषाएँ नहीं हैं। जब तर्क तुम्हारा दामन छोड़ दे तो उसके बारे में विचार करो।" और अब जेफ़ उसी के बारे में सोच रहा था, उस व्यक्ति के बारे में जो दक्षिणी-केरोलिना का स्टेट-सिनेट का प्रतिनिधि था, वह व्यक्ति जिसने संयुक्त राष्ट्र की सभा में बैठकर जॉर्जिया के प्रतिनिधि को उत्तर देते हुये वह वक्तव्य दिया था जिसे देश का बच्चा-बच्चा जानता था।

"जी हाँ, जैसा कि जार्जिया के प्रतिनिधि महाशय ने फर्माया, मैं कुछ ही समय पहले एक दास था। और आज एक स्वतंत्र व्यक्ति की हैसियत से राष्ट्र की इस सभा में मैं उसे जवाब देता हूँ। महाशय, वह जवाब अमरीकी बाइबिल है, मेरी अमरीकी बाइबिल। मुझे देशभक्ति पूर्ण भावनाओं में नहीं बहजाना है। यह नग्न सत्य कि मैं यहाँ खड़ा हूँ स्वयँ इस बात का प्रतीक है कि मैं अपने देश की सेवा करता हूँ और इसके विश्लेषण के लिए किसी शब्द अथवा किसी परिभाषा की आवश्यकता नहीं है।"

जेफ़ ने यह वक्तव्य स्कॉटलैण्ड की पत्रिकाओं में देखा था; पार्लमेण्ट के एक सदस्य ने हाउस ऑफ कामन्स में इसका हवाला दिया था, उसी बयान पर फ्राँसीसी चेम्बर में तीन घण्टे तक एक जोरदार बहस छिड़ गई थी। और जर्मनी, हंगेरी और रूस के भूमिगत मजदूर क्रांतिकारी गिरोह ने उसका अनुवाद किया था और हजारों की संख्या में उसे छाप कर बाँटा था।

अब गिडियन की ओर देखकर जेफ़ को कुछ दया सी महसूस हुई, गर्व हुआ और आशा बंधी और उस व्यक्ति के, अपने पिता के, निकट आने की इच्छा जाग्रत हुई, इच्छा हुई कि उसे समझे, और समझाये, किन्तु फिर भी उसमें

व्यक्तिवाद और आत्म-सम्मान का भाव निहित था जो उसे यह समझने पर मजबूर कर रहा था कि वह गिडियन से कहीं बड़ा है और उससे कहीं आगे बढ़ चुका है।

"मैं आपकी बातें सुनूँगा," उसने कहा, "मैं चाहे कुछ भी करूँ लेकिन आपकी बातें तो सुन ही लूँगा।"

"मैं वापस जा रहा हूँ," गिडियन ने बड़े धीमे और विनम्र भाव से उसे समझाया, "क्योंकि वही मेरा स्थान है। जिस स्वभाव का मैं था और रहा हूँ वह उन्हीं मेरे अपने लोगों का स्वभाव है जेफ़ बेटा! मैं उन्हीं में का हूँ और शक्ति भी उन्हीं से प्राप्त करता हूँ। इसी बात को समझने में मुझे काफ़ी समय लगा, मुझ में एक विशेषता है और उसी की सहायता से मैं शिक्षा ग्रहण कर सका, बातचीत कर सका, चीज़ों को समझ सका और उन्हें अपने में समो सका; लेकिन उनमें से कोई भी चीज़ ऐसी न थी जिसमें उनका अंश न हो। मैं वापस जाना चाहता हूँ क्योंकि वहाँ जाने में मुझे सुख प्राप्त होगा और जेफ़, मनुष्य स्वभावतः सुख की तलाश करता है चाहे वह उसे अपने छोटे-छोटे कामों में ढूँढे अथवा बड़ों में।

"लेकिन तुम्हारा मामला तो भिन्न है। तुम्हें उनसे जुदा हुए कई वर्ष बीत गये। तुमने स्कूल में शिक्षा प्राप्त की, ट्रेनिंग हासिल की और अब तुम डॉक्टर बन गये हो। डॉक्टर की तुलना एक सुन्दर पुस्तक से की जा सकती है। उसका उपयोग उस श्रम व प्रयत्न से भिन्न होता है जिसने उसे जन्म दिया है। जिन चीज़ों ने मुझे जन्म दिया है उनका मेरे लिए कोई बाह्य रूप से लाभ नहीं है; किन्तु तुम्हारे लिए वह लाभदायक है। चाहे परिस्थितियाँ कितनी ही बुरी क्यों न हों लेकिन जब आवश्यकता पड़ेगी तो मेरे साथी और कई गिडियन जैक्सनों को तलाश लेंगे। लेकिन तुम्हारी बात और है। मैं तुमसे एक व्यक्ति की हैसियत से बातचीत कर सकता हूँ और इसी चीज़ पर मुझे गर्व और प्रसन्नता होती है। आज जब अध्यक्ष ग्रांट से मैंने बातचीत की तो मैंने यही ख्याल किया कि वह आखिरी मौक़ा था जब कि एक काला आदमी अध्यक्ष से बात कर रहा हो और मैंने जो कुछ कहा उस पर मुझे दृढ़ विश्वास था। मुझे यह भी विश्वास है कि आने वाले चंद बरसों

में और भी कई काले आदमी होंगे जो तुम्हारी ही तरह पढ़-लिखकर डॉक्टर बन जायेंगे। तुम यहीं रहो, इसी मकान में तुम ठहर सकते हो। ऐसे बहुत से रोगी और घायल होंगे जिनका तुम्हें इलाज करना होगा। और अगर तुम मेरे साथ चलोगे तो सिर्फ अपना समय नष्ट करने के और कुछ न होगा।"

जब गिडियन ने बात खत्म की तो कई मिनट तक वे शांत बैठे रहे। जेफ़ ने अपना पाइप साफ़ किया, उसे फिर भरा, आग में से कुछ कोयले निकाले और नरम-नरम, सुगंधित तंबाकू पर डाल दिये। गिडियन ने कुछ शराब उढेंली। कमरे की ओर अंतिम दृष्टि डालते हुए जेफ़ ने कहा, "यह बड़ा अच्छा कमरा है, यहाँ रहकर मैं कुछ किताबें पढ़ लूँगा।"

गिडियन ने सिर हिलाया।

"मैं भी हमेशा यही सोचता हूँ कि कल जब वक्त मिलेगा तो किताब पढ़ूँगा। क्योंकि कुछ ऐसा होता है कि फ़ुरसत मिलती ही नहीं।"

"वक्त तो मिलता है," गिडियन ने कहा।

"अच्छा, आप यह बताइये कि अगर चीज़ें वैसे ही हो जायें जैसे कि आप कहते हैं तो क्या फिर आप युद्ध करेंगे?"

"मैं नहीं जानता," गिडियन ने कहा।

"मार्कस ने मुझे लिखा था कि जब कोई बीमार पड़े तो आप बूढ़े डॉ० लीड को बुला लेना जो कभी आते हैं, कभी नहीं भी आते।"

"ज़्यादातर तो वह आ ही जाते हैं।"

"अब वह आइन्दा कभी नहीं आयेंगे," जेफ़ ने कहा, "अगर जो कुछ आपने मुझसे कहा वह सच है तो फिर अब वह कभी नहीं आयेंगे।" जेफ़ उठ खड़ा हुआ और खिड़की की ओर चल दिया। खिड़की के शीशों पर जो सीलन थी उसे पोंछने लगा। "बर्फ अभी तक गिर रही है," उसने कहा, "बड़े आश्चर्य की बात है कि मैं इतने दिनों तक बाहर क्या रहा कि किसी दूसरी जगह से अब कोई लगाव ही न रहा। क्या कभी एलन्बी ने आपको वे पत्र बताये थे जो मैंने एलैन को लिखे थे?"

गिडियन ने सिर हिला दिया। "बेचारा बूढ़ा गये महीने चल बसा। मैंने

सोचा तुम्हें मालूम हो गया होगा।"

"नहीं, मुझे तो मालूम नहीं था," जेफ़ ने कहा, "मैं आपके साथ चलूँगा पिता जी।"

वाशिंगटन में रहकर गिडियन ने जो आखिरी कुछ काम किये थे उनमें उसका एक द्विविधापूर्ण दृष्टिकोण था। उसका कुछ विचार था कि वह हमेशा ही के लिए वहाँ से चला जाय और कुछ अर्धेच्छा ऐसी भी थी जो कहती थी कि उसे वसंत ऋतु में होने वाली सभा में शामिल होने के लिये वापस आना चाहिये। उसने यह भी सोचा कि शायद जेफ़ ठीक ही कहता हो कि संसार बम के गोले की भाँति नहीं फट सकता। उसने माँ जोन से कहा कि वह चीज़ें व्यवस्थित रखें और फिर सब कुछ जैसा था वैसा ही छोड़कर वह वहाँ से चल दिया। उसने वहाँ जाकर जराये कमेटी की एक सभा में शिरकत की और वहाँ होने वाली उस बहस में खूब गर्मजोशी से हिस्सा लिया जो कि रेलरोड की जमीन की मंज़ूरी के क़ानून के बारे में थी। आदमी का स्वभाव ही कुछ ऐसा होता है कि वह अपनी आदतों के अनुसार कार्य करता चला जाता है। वह कपड़े बदलता है, दाढ़ी बनाता है और सोता है। और एक दिन जैसे ही जेफ़ घर लौटा उसके सैक्रेटरी ने कहा कि सिनेटर स्टीफेन होम्स उससे मिलना चाहते हैं।

"आप सिनेटर होम्स से जाकर कह दीजिये," गिडियन ने कहा, "कि मैं बहुत ज़्यादा व्यस्त हूँ। मुझे वाशिंगटन से जाने में कुछ ही दिन बचे हैं और मैं अब किसी से मुलाकात नहीं कर रहा हूँ।"

सेक्रेटरी ने वापस आकर कहा कि सिनेटर स्टीफेन-होम्स काफी आग्रह कर रहे हैं।

"अच्छा ठीक है," गिडियन ने सिर हिलाते हुए कहा। "उन्हें अन्दर बुलालो।" होम्स दाखिल हुआ; गिडियन ने खड़े होने की कोशिश न की और न ही उससे हाथ मिलाया। होम्स ने मुस्कराते हुए अपने हैट का रूवाँ साफ किया, सावधानी से कोट उतारा, बेग और दस्ताने गिडियन की डेस्क पर रखे और बैठ गया।

"क्या चाहते हो?" गिडियन ने पूछा।

"मैं तुमसे मिलना चाहता था गिडियन, क्योंकि हम दोनों सुसंस्कृत और

सुसभ्य मनुष्य हैं और इसी आधार पर हम बहस कर सकते हैं क्योंकि मूर्खों, बुद्धुओं और छोटे दिमाग़ों व ओछे आदमियों से भरे इस संसार में हम और आप ही ऐसे हैं जो सत्य पर बहस कर सकते हैं, उसे पहचान सकते हैं और इन पर बिना भावावेश के एक-दूसरे से सहमत हो सकते हैं।"

"जो कुछ तुम कहते हो उस पर तुम्हें विश्वास भी है या नहीं?" गिडियन ने उस दुबले-पतले, नाजुक व्यक्ति को देखते हुए पूछा जो इस तरह मज़े में बैठा हुआ था, जिसके कपड़े कितने साफ और बेदाग थे, जो अपने व्यवहार में कितना शांत और स्थिर था जिसकी नरम, चमकदार, हल्के पीले रंग की चमड़ी थी, जिस पर उम्र ने अपने चिन्ह न छोड़े थे, उसकी वैराग्यपूर्ण मुखाकृति एक गूढ़ पहेली भी थी और उसे हल करने का उत्साह भी देरही थी जो गिडियन के हर शब्द व भाव पर अपनी प्रतिक्रिया दे रहा था। निश्चय ही यह सभ्यता की उपज थी और एक दृष्टि से वह सत्यवादी पुरुष भी था। वह एक विचित्र रूप से सत्यवादी और स्पष्टभाषी था जो इस विचित्र मिथ्यापूर्ण और पाखंडी संसार में जन्मा था। फिर भी उस समय गिडियन के दिल में होम्स के प्रति एक प्रकार की ग्लानि पैदा हुई ऐसी ग्लानि, अरुचि और घृणा जो आज तक जानदार प्राणियों के प्रति उसमें न हुई थी। गिडियन जैक्सन जो गुलामी व आजादी के काल में सारी जिंदगी नफरत से दूर रहा था, जिसने यह समझने का प्रयत्न किया था कि एक व्यक्ति क्यों बुरा और दूसरा क्यों अच्छा बन जाता है, क्यों एक व्यक्ति विनम्र और दूसरा कठोर हो जाता है? और उसी व्यक्ति ने जबकि उसकी पीठ पर कोड़े मारे जाते थे सत्य विवेक और तर्क को समझने की कोशिश की थी।

जिसने युद्ध और हत्या से घृणा किये बिना युद्ध लड़े थे और लोगों की हत्याएँ की थीं, यही व्यक्ति गिडियन जैक्सन आज स्टीफेन होम्स को बड़ी शीघ्रता व निश्चय से मार डालता और उसके लिए उसे ज़रा भी अफसोस न होता। और अब गिडियन ने फिर अपना वाक्य दोहराया, "तुम्हें स्वयं इस पर विश्वास है या नहीं?"

"हाँ, मुझे इस पर विश्वास है गिडियन!" होम्स ने शांत-भाव से कहा। और पूर्ण यथार्थवादिता से कहने लगा, "मैं तुम्हें आश्वासन दिलाता हूँ

गिडियन कि मैं अपने वर्ग के उन कुछ लोगों में से एक अकेला व्यक्ति हूँ जो किसी मनुष्य के चमड़े के रंग से घबराकर पीछे नहीं हटता। तुम ता समझते ही हो कि मैं अनिवार्य रूप से एक विवेकशील और तर्कवादी मनुष्य हूँ और तुम भी ऐसे ही हो। हमें मालूम है कि कुछ रूढ़िवादी विचार लोगों ने हम पर लाद रखे हैं, मैं तो उन्हें हँसकर उड़ा सकता हूँ, उन बुद्धिहीन, खोखले मूर्खों, अपने मित्रों की बातों को हँसकर छोड़ सकता हूँ जोकि, मैं स्वीकार करता हूँ तुम्हारी जाति वालों और बहुत से मेरे वंशजों को ग्लानि की नजर से देखते हैं और उन्हें घटिया श्रेणी का मनुष्य समझते हैं। भगवान् साक्षी है, मैं इन चीजों से वाकिफ़ हूँ और उनके इन हठधर्मी-भरे दृष्टिकोण को समझता हूँ। लेकिन क्या करूँ गिडियन ! कुछ तो मेरे जन्म के कारण और कुछ मेरी मर्जी से मेरा भाग्य उन्हीं के हाथों में है। आओ हम तथ्यों को सामने रखें और जाँचें, देखें। युद्ध में मेरे लोगों की भी क्षति हुई है. उन्होंने न केवल अपनी शक्ति खोई है, जोकि स्वयं अपने आप में कोई छोटी चीज नहीं है.—बल्कि वे भौतिक क्षतियाँ भी उन्हें भुगतनी पड़ी हैं जो शक्ति के कारण ही प्राप्त होती हैं; यानी जीवन के रहन-सहन से भी हाथ धोना पड़ा है। मैं उन्हीं चीजों को दुबारा प्राप्त करना चाहता था और उसी प्राप्ति के लिए मैंने बुद्धिमत्तापूर्ण संघर्ष भी किया।"

"और अब वे तुम्हें मिल गई हैं।"

"कुछ हद तक," होम्स ने स्वीकार किया। "वैसे तो अभी भी चीजों की व्यवस्था होना बाकी है लेकिन कुछ हद तक हम उनमें सफल हो सके हैं। मैं बहानेबाजी नहीं करता, तुम्हें मालूम है रथफोर्ड हेज हमारा अगला अध्यक्ष क्यों बनने जा रहा है, और तुम यह भी जानते हो कि वह अगर और कुछ नहीं है तो कम से कम अपनी बात का धनी है। खैर रिपब्लिकन पार्टी ने हमसे संधि करली है और कुछ खास काम तो हो ही जायेंगे।"

"तुम सत्यवादी और विवेकशील व्यक्ति हो," गिडियन ने होम्स की ओर एक वास्तविक कौतूहल के साथ देखा। "और तुम्हें उस पर गर्व है, है ना ?"

"एक दृष्टि से हाँ।"

"और यहाँ तुम मुझे घृणा की दृष्टि से देखने नहीं आये हो, इस लिए

तुम बहुत सभ्य हो।"

"हाँ, बहुत सभ्य और सुसंस्कृत हूँ गिडियन ! और इतना सुसभ्य हूँ कि किसी काले आदमी का कटाक्ष मुझ पर कोई प्रभाव नहीं डाल सकता। और मेरा विचार है कि तुम भी इतने सुसभ्य तो हो ही कि मुझे बाहर निकालकर नहीं फेंकोगे।"

"मैं चाहता हूँ, तुम जो कुछ कहना चाहते हो उसे सुनूँ," गिडियन ने धीमे स्वर में उत्तर दिया।

"मेरा भी ऐसा ही ख्याल था कि तुम मेरी सभी बातें सुनोगे । तो फिर ऐसा करें वक्र भाषण छोड़ें। मैं तुम्हारी प्रशंसा करता हूँ गिडियन ! सभा के दौरान में मैंने तुम्हें देखा था, और उसके बाद भी देखता रहा। तुममें एक आश्चर्यजनक विकास मुझे दीख पड़ा। तुममें महान् योग्यता और बहुत गुण हैं। तुम्हारे पास बुद्धि है। यही नग्न सत्य है कि कल का गुलाम जिसकी वाणी देहातियों जैसी कर्कश और अर्थरहित थी, आज इतना संस्कृत हो गया कि मैं उससे वार्तालाप कर रहा हूँ; स्वयं अविश्वसनीय है। सभा में दिये गये तुम्हारे भाषणों को मैंने ग़ौर से सुना है और उनकी प्रशंसा की है। तुम्हारा भाषण करने का ढंग, जिसमें विवेक और भावना का एक अद्भुत् मिश्रण रहता है लोगों को प्रभावित करने में बड़ा उपयोगी सिद्ध हुआ है।"

"तुम मेरी चापलूसी कर रहे हो," गिडियन ने कहा, "ठीक है कहे जाओ।"

"मैं समझता हूँ कि उस नकली दस्तावेज़ की, जो तुमने अध्यक्ष ग्रांट को दिखाई थी, असली प्रति होती तो तुम उसे लेकर कांग्रेस में जाते और इतिहास बदल देते। या शायद ऐसा न भी होता। कांग्रेस में हमारी पार्टी का बहुमत है और यह शंकाजनक बात है कि एक आदमी एक क़ानून के ज़रिए इतिहास बदल सकता है।"

"तो तुम्हें उसके बारे में भी पता है। खैर कम से कम तुम इन सब चीज़ों का ज्ञान तो रखते हो।"

"हमें इन सब बातों का पता रखना ज़रूरी है गिडियन ! हम पराजित लोगों में से हैं। हमारा देश दूसरों के अधिपत्य में था।"

"तुम इसे अपना देश समझते हो ?"

"बिल्कुल ! यह उन चंद चुने हुए लोगों का देश है जो उस पर शासन करने योग्य हैं। और तुम्हें यह स्वीकार करना चाहिए गिडियन ! नहीं तो वे पतित सफेद ग़रीब गोरे इसके योग्य हैं जिन्हें हमने क्लान में इस्तेमाल किया था और न ही वे नीच, छिछोरे हब्शी किसान इस काबिल हैं। तुम उनमें एक अपवाद हो। और मैं भी एक अपवाद हूँ। यही कारण है कि मैं तर्कसंगत तरीक़े से तुमसे निवेदन कर रहा हूँ। वैसे तो इस कार्य के लिए और भी कई तरीके हैं लेकिन अगर तुम और तुम्हारे कुछ साथी हमारे साथ मिल जायें तो काम कितना सरल हो जाय। हब्शी तो पहले की भाँति तुम्हारा अनुसरण करेंगे ही। और अंत में तुम देखोगे कि हमारा यही तरीका सबसे अच्छा है। तुम विश्वास करो, मुझे दबाव व हिंसा से घृणा है, हाँ अगर बहुत जरूरी हुआ तो हम उसका प्रयोग करेंगे, लेकिन अगर अपना उद्देश्य पूरा करने के लिए उनका आम तौर पर इस्तेमाल न ही करें तो कितना अच्छा हो। हमारी जैसी भूमि पर जहाँ सभी के भले के लिए सुख-संपत्ति व व्यवस्था ज़रूरी है, वहाँ खेतिहर के लिए काफी खाने को होगा; वह कल के लिए खाने की बिना किसी चिंता के आनन्दपूर्वक रह सकेगा।"

"और तुम यह सब मुझे सुझा रहे हो ?" गिडियन ने अविश्वास से पूछा।

"क्या तुम इसे स्वीकार करोगे ?"

"यही कि मैं अपने लोगों को दासता की ओर ले जाऊँ ?"

"अगर तुम उसका वह अर्थ निकालो तो।"

"तुम बेएतबार शख्स हो," गिडियन ने नम्रता से कहा, "अच्छा होता यदि यह मैं उसी समय जान लेता जब मैं पहली बार तुम्हारे घर पर गया था। लेकिन मैं तुम्हें एक अच्छा आदमी समझता रहा, मैं सभी को भला आदमी समझता हूँ। मैं यह न समझ सका कि उसी भले आदमी को ऐसी बीमारी, एक लाइलाज बीमारी भी लग सकती है। मैं न जानता था कि कुछ लोग रोगी हैं और वे अपने रोग के कीटाणु सारी धरती पर फैला सकते हैं। हम सभी ग़लतियाँ करते हैं; हैं न ? मेरे ख्याल में हमारे साथियों ने वही सबसे बड़ी भूल की। जब युद्ध के

समय सारी धरती खून में नहाई तो उन्होंने सोचा कि दुर्घटनाएँ और कुरीतियाँ भी उसी के साथ बह गईं। लेकिन उन रोगियों का, उन मरीजों का उन पतित लोगों का जो बुद्धिहीन हैं, रक्त कभी न बहा। केवल उन्हीं का रक्त बहा जो अच्छे मनुष्य थे, जिन्हें बरगला दिया गया था और जिन्होंने तुम्हारा नेतृत्त्व स्वीकार किया। हमें अफ़सोस है कि हमने तुम जैसे लोगों को जिन्दा रहने दिया—"

गिडियन ने होम्स को क्रोधित होते पहले कभी न देखा था, उसके होंठ भिंच गये थे और वह दाँत चबा रहा था। उसकी चौड़ी, चिकनी पेशानी पर कुछ सीधी लकीरें घूम गईं। सिनेटर होम्स उठ खड़ा हुआ, उसने अपना हैट व कोट पहना, दस्ताने और बेग मेज़ पर से उठा लिए।

"मैं इसी को तुम्हारा उत्तर समझता हूँ," उसने कहा।

"तुम ऐसा ही समझ सकते हो," गिडियन ने सहमति प्रकट की।

अगले दिन गिडियन और जेफ़ तीन बजे की रेलगाड़ी में सवार दक्षिण की ओर चले। गिडियन ने अपने साथ अधिक कुछ न लिया केवल एक झोला; एक बस्ता जिसमें ह्विटमेन की कविताओं की एक पुरानी प्रति थी, चार्ल्स सटनर का हस्ताक्षर किया हुआ एक चित्र जो उसने अपनी मृत्यु के कुछ समय पूर्व ही उसे दिया था और एक नोट-बुक। उसका विचार हेज़-टिल्डन मामले की एक रिपोर्ट लिखने का था और उसने सोचा कि वह रेल में ही समय बिताने की ग़रज़ से उसे लिख लेगा।

जेफ़ के साथ वह प्लेटफार्म पर चक्कर लगाता रहा। इस डिब्बे से उस डिब्बे तक। "यही आख़िरी डिब्बा है," उसने कहा।

"क्यों?"

"तुम नहीं जानते, एँ?" गिडियन ने अपने बेटे की ओर देखते हुए महसूस किया। "आप को याद है मैंने कहा था कोई भी तबदीली बात की तरह अचानक नहीं हुआ करती। आप समझे यह भेदभाव अभी तक जारी है।"

वे आख़िरी डिब्बे तक पहुँच गये जो उस रेल की सड़क का बड़ा ही पुराना और पूजनीय वृद्ध था। खिड़कियाँ गंदी थीं, उनमें से दो को तख्तों से बन्द कर

दिया गया था। और दरवाजे पर सिर्फ इतना लिखा था, "काले लोगों के लिए" जेफ़ ने वह पढ़ा और अपने पिता की ओर घूमा।

"नहीं—नहीं, यह असंभव है। यह बेहूदा है, सुना आपने आप—सभा के सदस्य और यह—"

"अन्दर दाखिल हो जाओ जेफ़," गिडियन ने कहा। "यह कोई नई चीज नहीं है। यह काफी लोकप्रिय होता जारहा है और लोगों को इसकी आदत पड़ गई है।"

वे दोनों दाखिल हुए और एक पुरानी लकड़ी की बेंच पर बैठ गये। और भी काले रंग के लोग उसमें भर गये और कुछ ही देर में रेलगाड़ी चल पड़ी। गिडियन ने कहा :

"आखिर यह है भी तो कुछ ही दिनों के लिए। हम जल्द ही कार्डेल पहुँच जायेंगे।"

: ९ :

मार्कस स्टेशन पर खड़ा उनकी प्रतीक्षा कर रहा था। वह इतना बदल गया था कि जेफ़ को तो अजनबी जान पड़ा। प्रत्यक्ष रूप से और पूर्णरूप से यह दुबला-पतला सुन्दर हब्शी लड़का लगता था, रंग किसी भी रिश्तेदार से हल्का और क़द में गिडियन के कंधों तक पहुँचता था; किन्तु उसका शरीर सुडौल था। पुट्ठे छोटे थे, और कंधे चौड़े, बड़ी फुर्ती से चलता था और उसकी चाल में वह शिष्टता थी, जिससे जेफ़ ने पहले तो अनुमान लगाया कि वह कोई जंगली जानवर होगा जो निर्भय, आत्माभिमानी और पूर्णरूपेण चरित्रवान्। उसके शरीर पर नीला पतलून और कत्थई रंग की चमड़े की जाकेट थी और एक घोड़ागाड़ी के पास खड़ा हुआ था। गिडियन को देखते ही वह मुस्करा दिया और उसने अपना हाथ हिला कर इशारा किया। फिर बिना किसी अदब व लिहाज़ के अपने भाई को ऊपर से नीचे तक [illegible] दृष्टि से देखने लगा।

"कहो बेटे!" गिडियन ने कहा और थैले उठाकर घोड़ागाड़ी में पटकने लगा। उन बाप-बेटों के बीच बर्ताव का एक खास तरीक़ा था। जब उन दोनों ने बेतकल्लुफी से अचानक ही हाथ मिलाए तो जेफ़ ने देखा कि उनके इस अदब व लिहाज़ में कितनी गंभीरता है।

"आप भी बड़े अच्छे दिन आये," मार्कस ने कहा और फिर, "कहो भाई जेफ़! मुझे जानते हो या नहीं?"

"तू तो काफी बढ़ गया भाई," जेफ़ ने स्वीकृति प्रकट की। उसने अपने थैले भी गिडियन के थैलों में रख दिए। फिर उसने अपने भाई से हाथ मिलाए और वे दोनों एक-दूसरे को घूर कर देखते रहे। मार्कस कुछ-कुछ मुस्काराने लगा। गिडियन भी गाड़ी के समीप पहुँच गया और उन दोनों को देखने लगा। उसे अपनी इस आश्चर्यजनक सफलता का अनुभव हुआ कि वे

दोनों उसी के हैं जो अब साथ-साथ हैं। भारी-भरकम भोला-भाला व्यक्ति जेफ़ उस मुस्कराते हुए लड़के के सामने खड़ा था। "गाड़ी मैं हाँकूँगा," गिडियन ने कहा। "अन्दर बैठ जाओ, डॉ० जैक्सन !" मार्कस मुस्करा दिया। जेफ़ ने कहा, "यह भी ठीक है। अरे पर तेरी उम्र कितनी है ?"

"तुम यह भी भूल गये—बीस वर्ष।"

"बीस," जेफ़ ने शब्द दोहराया।

"बैठ जा भाई !" गिडियन ने कहा और मार्कस ने झुक कर और हाथ के इशारे से जेफ़ से कहा, "आप पहले डॉक्टर साहब !" "बस ठीक है," गिडियन ने उनसे कहा। तीनों एक ही सीट पर बैठ गये और जेफ ने मार्कस के गले में अपना हाथ डाल दिया। "स्कॉटलैण्ड कैसा देश है ?" "बड़ा सुनसान," जेफ़ ने जवाब दिया। मार्कस ने ज़रा दूर हटते हुए कहा, "तुम तो बिलकुल परदेसियों जैसी बातें कर रहे हो, अब तो रहने के लिए आये हो न ?" "हाँ, शायद।" लेकिन अब कार्वेल बदल गया है।" मार्कस ने कहा। "हम हाथ पर हाथ धरे थोड़े ही बैठे थे।"

गिडियन उन दोनों की बातें सुन रहा था, उसी पुरानी गाड़ी में अपने बेटों के साथ बैठते हुए उसे बहुत ख़ुशी हो रही थी और लगाम हाथ में लिए उस छोटी काली घोड़ी को हाँकते हुए उसे आनन्द आ रहा था। मार्च का महीना था और बड़ा ही सुहावना दिन था, न बहुत गर्मी थी न सर्दी, ठीक उसी तरह जैसा कि बसंत ऋतु के प्रारम्भ के पहले होता है, यह दिन जितना सुहावना दक्षिणी केरोलिना में होता है वैसा संसार भर में और कहीं नहीं होता। घोड़ी पाँच साल की थी जिसे उसने दो वर्ष पूर्व खरीदा था। वह छोटी-सी सचेत घोड़ी थी जो दुलकी चाल से चलती थी। उस समय उसे हाँकने में मजा आ रहा था। इतने दिन सर्दियों के जमाने में वाशिंगटन में रहते समय उसे अक्सर उसी की याद आती थी। और वह सोचता था कि एक-न-एक दिन उसके पीछे बैठकर उसे जरूर हाँकेगा और उसकी टापों की मन्द ध्वनि सुनेगा। जब चलते-चलते वह कच्ची सड़क पार करके दलदली इलाके की पक्की सड़क पर आये तो उसने बड़े गर्व के साथ जेफ़ से कहा :

"हमीं ने यह सड़क चार वर्ष पहले बनाई थी। इससे रेलगाड़ी की सड़क का फ़ासला आधा हो जाता है।"

"और हमने कई काम और भी कर लिए हैं।" मार्कस ने अपने चित्त में संतोष व आनन्द अनुभव करते हुए कहा। जेफ़ तो बाहर गया हुआ था और उसने भी वे काम कर लिए थे जो मार्कस भी करना चाहता था। गिडियन ने मुड़कर देखा। "जेफ़ अब रहने के लिए ही घर लौटा है," उसने कहा।

"ऐसा? पर यहाँ कार्वेल में तो उसे बड़ा सुनसान लगेगा।"

गिडियन ने जेफ़ को बताया कि उन्होंने उस सड़क का किस तरह निर्माण किया था। उनमें से बहुतों ने तो बड़े अच्छे ढंग से रेल की पटरी बनाने में काम किया था और वे इसकी यंत्र-रचनादि से भी वाकिफ़ थे। उन्होंने खुद ही रेल की पटरियाँ तीर की भाँति सीधी डाली थीं और बिना किसी इंजीनियर की सहायता के डेढ़ मील तक खुद ही यह काम किया था। "जब मैंने इन बातों का घर में जिक्र किया तो," गिडियन ने कहा, "साथियों में से सिर्फ एक ही साहब ने मुझसे कैफियत पूछी कि आखिर सरकारी जायदाद पर हमें यह सड़क बनाने का अधिकार कैसे मिला?"

मार्कस ने अपने पिता की ओर देखा। जेफ़ धीरे-धीरे गुनगुनाने लगा, मेरे पिताजी शिकार करने गये। ओ परमेश्वर! मेरे पिताजी शिकार करने गये ओ परमेश्वर······"

"तुम्हें याद है वह?"

"मुझे बहुत कुछ याद है," जेफ़ ने कहा।

जेनी अब बड़ी हो गई थी और स्त्री बन चुकी थी, उसका सीना पूरी तरह उभर आया था; जेफ़ ने उसे और अपनी माँ को बाँहों में दबा लिया। "तुम तो इतने बड़े हो गये। ऐं इतने बड़े।" "नहीं, मैं तो बिलकुल बढ़ा ही नहीं," जेफ़ ने मुस्कराते हुए कहा। रैचल खुशी के मारे रोने लगी। वह अब काफी बूढ़ी हो चुकी थी और हालाँकि गिडियन भी बूढ़ा था, पर वह नजर न आता था। वह जेफ़ के चेहरे को छूती रही और घुंघराले बालों पर हाथ फेरती रही।

गिडियन और मार्कस उनसे दूर ही अलग खड़े रहे। मार्कस ने अपने बाप

से कहा, "मैंने अखबारों में पढ़ा था कि—"

"हाँ!"

"कैसा था वह ? उसका क्या मतलब था ?"

"पता नहीं उसका मतलब क्या था," गिडियन ने कहा। "हम बाद में इस पर बातचीत करेंगे।"

मार्कस ने कहा, "अगर वे वहाँ वाशिंगटन में यह सोचते हैं कि वे अपनी कलम की हरकत से हमें धूल में मिला देंगे तो शायद वे हमें नहीं जानते हैं।"

"हम बाद में इस पर बातें करेंगे।"

"वे हमें जानते नहीं हैं," मार्कस ने कहा।

वे जेफ़ को अपने साथ ले गये और उन्हें उन्होंने चीजें बतलाईं। अचानक सभी कुछ फिर से नया बन गया था। उन्होंने उसे वह मामूली ५ कमरों का मकान दिखलाया जिस पर बाहर से सफ़ेदी हुई हुई थी। मकान की चिमनी लाल ईंटों से बनाई गई थी। "यह भट्टी की पकी हुई ईंट नहीं हैं," जेनी ने कहा। रैचल ने उसे रसोईघर दिखाया; उनके पास अब टिन की रकाबियाँ थीं चमकीली और भड़कीली। अपनी-अपनी साईज़ के मुताबिक वे दीवार पर लटका दी गईं थीं। वहीं लोहे की एक छलनी भी थी और सबसे सुन्दर चीज थी पानी खींचने का नल जो उनके घर में ही लगा हुआ था। रैचल ने कुएँ से ताज़ा ठण्डा पानी खींचा। "यह ले जरा पीकर भी देख, जे!" और उसे पीना पड़ा, पूरा गिलास पीने के बाद उसने बताया कि पानी कैसा मीठा था। जेफ़ ने कहा, "क्या दूसरे देश और वहाँ के निवासी भी ऐसे ही होते हैं ? मेरा मतलब है आप सभा के सदस्य हैं।"

"किसी भी मनुष्य का घर उसी के समान होता है। और हर आदमी एक दूसरे से भिन्न होता है। इसकी हमें शिकायत नहीं करना चाहिए। जो व्यक्ति इस ज़मीन से प्रेम करता है और इसे समझता है उसके लिए यही धरती अच्छी है।" जेफ़ मालूम करना चाहता था कि आखिर उन गुलामों के पुराने झोंपड़ों का क्या हुआ और गिडियन ने उसे बताया कि वे अब भी मौजूद हैं; लेकिन

कोई भी नहीं," गिडियन ने कहा। "न किसी ने कार्वेल के मकान को ही खरीदा, क्योंकि उसकी किसी को ज़रूरत ही न थी।" उसके स्वर में एक ऐसी विशेषता थी जिसके कारण जेफ़ उसकी ओर कौतूहल से देखने लगा। मार्कस ने कहा कि बाद में अगर डॉक्टर को समय हो तो बड़े मकान तक चलें।

रैन्चल किसी दुविधा में थी। एक ओर तो वह चाहती थी कि उसने जो गरम-गरम रोटियाँ और मुर्गी बनाई हैं, उन्हें खिलाये और दूसरी ओर अपना बड़ा मकान जेफ़ को बताये। पलंग जिनमें धातु की कमानी लगी थीं वह उसे नहीं बताना चाहती थी, वह तो उसे खुद ही देखना था, इसलिए वह उसे सोने के कमरों में ले गई।

"एलेन कहाँ रहती है?" उसने पूछा।

"भाई पीटर के यहाँ। एलन्बी के सब बच्चे भाई पीटर के यहाँ रहते हैं।"

"जब बूढ़ा मरा तो उसे बहुत रंज हुआ होगा ऐं?"

"वह यहाँ चली आई थी," मार्कस ने कहा। "और यहीं रहना भी चाहती थी।"

"और फिर वापस चली गई?"

"हाँ वापस चली गई।"

"क्या उसे मालूम था कि मैं आ रहा हूँ?"

"हाँ, उसे मालूम था। यह तो सभी को मालूम था। वे सभी कुछ देर के बाद यहाँ आयेंगे।"

रैन्चल ने अपने हाथ बिस्तर पर रखे और उन्हें दबाकर उछालने लगी। कितना नरम और सुन्दर है जैसा कि झूले में बच्चा पड़ा हो। "यह देख ज़ेफ़।" उसने गद्दे को दबाया। "इस पर बैठकर देख" और वह उसकी ओर देखकर मुस्कराता हुआ उस पर बैठ गया। "जरा उछल इस पर हाँ जरा कूद ना!" वह ऊपर नीचे उछला और फिर उठकर रैन्चल से लिपट गया, और अब रसोई छिपाना रैन्चल के लिए मुश्किल हो गया। वह उसे घुमाती हुई दूसरे कमरे में होती हुई और फिर दालान में ले गई जो छोटा था और विक्टोरिया के समय की तर्ज के फर्नीचर से भरा था जहाँ एक मेज़ थी और गिडियन की पुस्तकें रखी थीं।

फिर वे रसोई में पहुँचकर बैठ गये। रोटी खाते ही जेफ ने उसकी प्रशंसा करना शुरू कर दी। "स्कॉटलैंड में ऐसी रोटी नहीं मिलती? "नहीं! नहीं," जेफ ने उत्तर दिया "वहाँ तो कहीं इसका नाम भी नहीं।" रैचल को खुश करने की ग़रज़ से उसने जरूरत से ज्यादा खाना खालिया और बस खाता ही गया। और फिर उसकी ओर देखकर और उसके हाथ छूते हुए रैचल अचानक रो पड़ी। "सब ठीक है, माँ अब सब कुछ ठीक हो गया है।" लेकिन वह रोती ही रही।

गिडियन और मार्कस बाहर ड्योढ़ी पर आ गये। "उसे इस तरह नहीं रोना चाहिए," गिडियन ने व्याकुलता से कहा। अपने वात्सल्य और प्रेम की आवश्यकता व भूख रैचल में इतनी तीव्र और प्रत्यक्ष कभी न थी जितनी कि अब थी। "मैं जाकर घोड़ी खोल लाऊँ," मार्कस ने कहा।

"नहीं वह एलेन के पास जायगा।"

"क्या वास्तव में?

"हाँ, मेरा तो अनुमान ऐसा ही है।"

"लेकिन भई, वे तो सभी यहाँ आनेवाले हैं, हाँ! वे तो सब यहाँ आयेंगे। वह उसका यहाँ भी इंतजार कर सकता है। मैं तो घोड़ी खोल लेता हूँ।"

गिडियन ने सिर हिला दिया। मार्कस घोड़ी छुड़ाकर ले गया और गिडियन कुछ उदास और अकेलापन महसूस किये एक खम्भे के सहारे झुका हुआ ड्योढ़ी पर खड़ा रहा। यह तो प्रारम्भ होना चाहिए था परन्तु इसके बजाय यह अन्त था। उसने जंगलियों की भाँति सिर हिलाया; केवल मूर्ख ही उस प्रकार सोच सकता था। वाशिंगटन की बात ही और थी। वह एक अस्वस्थ, तुच्छ, भूखे और निराश व इच्छुक मनुष्यों से भरा शहर था; किन्तु यह तो बिल्कुल ही भिन्न था, यह उसका अपना घर था। वाशिंगटन अमरीका नहीं था; यह लाखों गुना बढ़ा हुआ स्थान था—यह छोटा-सा घर, यह घरेलू फर्नीचर, ये शाहबलूत के दरख्त जिन्होंने उन्हें ढक रखा था और सूर्य से उसे बचा रखा था, पर्वतों की लम्बी पंक्ति, खेत, जहाँ कपास और तंबाकू बहुत जल्द उत्पन्न होते हैं, वह हल जिसे मार्कस ने वहीं छोड़ दिया था—मकान से कुछ सौ गज दूर तिरछी, सख्त और गीली जमीन जो मार्च के महीने में ऐसी दिखाई देती है जैसे कि उसमें

हल की फाल धँसी हुई है—यह सब उसका खुद का स्थान था। और यही सब कुछ था जिसके लिए वह लड़ा, जिसके लिए वह दास बनाया गया, उसमें काम किया; योजनाएँ बनाईं और कुछ भी क्यों न हो जाय मनुष्य जिसके रक्त को एक बार धरती ने चख लिया, जिसके आजाद कदम इस पर चल चुके उन्हें उससे जुदा करना बड़ी मुश्किल की बात है। आदमी के पैर जमीन पर रहते हैं और वह वहीं खड़ा रहता है।

मार्कस घर के अन्दर गया और उसने ज़ेफ के कंधों पर सिर हिला कर सूचना दी, "वह अब यहाँ आ रही है।" जेफ अकेला ही बाहर चला गया। भाई पीटर एलेन की बाँह पकड़े लंबी छाया में होते हुए जेफ़ के मकान की ओर चले आ रहे थे। जब से जेफ ने कार्वेल छोड़ा भाई पीटर ने दाढ़ी बढ़ाली थी अब उसकी आयु ६० के लगभग थी और वह दुबले व लंबे क़द के थे और उनकी वृद्धावस्था की शान टपकती थी।

उनकी दाढ़ी सफेद थी और वह लँगड़ा कर चल रहे थे। गिडियन ने कहा कि वह बीमार हैं। जब एक गुलाम किसान ४५ से अधिक बढ़ जाता था तो किसी काम का नहीं रहता था, गठिया उसकी सभी हड्डियों को दबोच लेती थी; मलेरिया के बुखार से उसका शरीर टूट जाता था और उसका हृदय बढ़ जाता था जिससे उसकी बे हिसाब मेहनत व परिश्रम का पता चलता था। लेकिन भाई पीटर के साथ जो लड़की थी वह हमेशा की भाँति ही थी, वह वैसी ही थी जैसी कि ज़ेफ ने उसे देखा था किन्तु अब उसके शरीर का विकास हो चुका था उसमें अधिक परिपक्वता व गोलाई आगई थी। उसका जिस्म भरा हुआ था लेकिन ठीक वैसा ही जैसा कि जेफ ने सोचा था, उसका सिर ऊपर को था और उसके चमकीले काले बाल कंधों पर लटक गये थे।

ज़ेफ़ उनकी ओर बढ़ा और भाई पीटर व लड़की रुक गई। जेफ़ ने देखा कि बूढ़ा व्यक्ति लड़की की ओर झुककर उससे कुछ कह रहा था और फिर लड़की स्थिर खड़ी रह गई। भाई पीटर जेफ़ की ओर देखकर मुस्करा दिये और कहने लगे:

"तुम्हारा स्वागत है, जेफ़ बेटा!"

जेफ़ उनसे कुछ दूर ही रुक गया। एलेन का चेहरा उसकी ओर घूम गया। फिर वह उसके समीप गया और उसने उसका हाथ पकड़कर कहा, "कहो एलेन! मुझे पहचानती हो?" उसने धीरे से सिर हिला दिया।

"अच्छा, मैं ज़रा ऊपर जाकर भाई गिडियन को सलाम कर आऊँ," भाई पीटर ने कहा। "और तुम दोनों भी जब चाहो वहाँ चले आना।"

जेफ़ ने सिर हिला दिया। बूढ़ा व्यक्ति वहाँ से चला गया। जेफ़ उसका हाथ दबाता रहा और एलेन भी वहीं निश्चल, सीधी खड़ी रही। उसने एक हरी कैलिको की फ्रॉक पहन रखी थी, एक नीली टोपी कंधों पर पड़ी थी, काले मोजे और काले जूते पहन रखे थे। और अन्त में उसने कहा, "जेफ़, क्या मैं वैसी ही हूँ जैसी कि तुम मुझे देखना चाहते थे?"

"बिल्कुल वैसी ही।"

"बिल्कुल भी फर्क नहीं है जेफ़?"

"फर्क तो हमेशा होता ही है, पर तुम ठीक वैसी ही लगती हो जैसी कि मैं चाहता था।"

"अब मैं बड़ी हो गई हूँ जेफ़।"

"हाँ, हम दोनों अब बड़े हो गये हैं।"

जेफ़ ने उसकी बाँह पकड़ली और वे दोनों चलने लगे। जेफ़ उसे उसी ढलवाँ जगह पर होता हुआ उस खेत की ओर ले गया जहाँ मार्कस हल चला रहा था। पहले की ही भाँति उसने एलेन को बताया कि सूर्य किस प्रकार अस्त हो रहा है। कार्वेल का वातावरण उसकी नस-नस में समा गया था और उसमें युवावस्था की वे सब भावनाएँ जाग्रत हो उठीं। स्कॉटलैण्ड के धुआँधार कोहरे से आच्छादित और सीलन भरे आकाश अब एक धुँधली स्मृति बनकर रह गये थे। अब तो यहाँ आकाश चमकता हुआ था और नीलापन लिए था, जिस पर सूर्यास्त की गुलाबी सुनहली और नारंगी रंग की धारियाँ पड़ी हुई थीं। यहाँ की धरती गर्म और नरम व रसीली थी। वह और उस जैसे नवयुवकों के लिए पथरीली चटियल और वृक्षहीन धरती बेकार व नीरस थी। वह अब अन्तिम रूप से घर आगया था और गिडियन के कथनानुसार घर लौट आना स्वयं एक सुविधाजनक बात थी।

उसने एलेन को वहाँ के आकाश के बारे में बताया किन्तु यह न बताया कि स्कॉट-लैंण्ड में आकाश कैसा था।

वह हल के सहारे झुका और सोंधी खुशबू वाली मिट्टी को हाथ में लेकर चलने लगा और फिर वही एलेन को दे दी। "स्कॉटलैण्ड यहाँ से कितनी दूर है?" वह मालूम करना चाहती थी और जेफ़ ने उसे बताया कि वह कार्वेल से ४ हज़ार मील दूर है। लेकिन यह हज़ारों मील का फ़ासला उसकी कल्पना-शक्ति से परे था। फ़ासला-ही-फ़ासला जिसका शायद कोई अन्त ही न हो,—अनन्त दूरी। "कितना अच्छा हुआ तुम वापस आगये जेफ़, अब तो तुम बिल्कुल बदल गये हो, बड़े आदमी बन गये हो। डॉक्टर हो। मेरे पिता भी डॉक्टर थे। तुम्हें मालूम है जेफ़?"

"क्यों नहीं, मुझे बिल्कुल मालूम है।"

कार्वेल के मकान की ओर जाने के लिए वे पहाड़ी चढ़ते हुए उस स्थान पर रुके जहाँ मार्कस ने एक बेंच बना रखी थी। मकान उस संध्याकाल के धुँधले में ऐसा लग रहा था मानों छोटा-सा सफेद संदूक रखा हो। लोग आ जा रहे थे और उनकी आवाजें दूर से कानों में आ रही थीं। पहाड़ी की दूसरी ओर घर जाने वाली, छोटी सड़क पर घोड़ों की टापों की ध्वनि सुनाई पड़ रही थी। वहाँ से किसी ने पुकारा:

"जेफ़—ओ जेफ़, कहाँ हो?"

"वे हमें बुला रहे हैं," एलेन ने कहा।

"थोड़ी देर में चलेंगे।"

वे वहीं बैठे रहे और अन्धकार बढ़ता गया। दूर कहीं एक कुत्ता भौंकने लगा और भौंकता रहा। अन्त में जेफ़ ने कहा, "तुमने इस बात पर भी ग़ौर किया कि जब मैं वापस लौटूँगा तो तुम मुझसे शादी करोगी?"

"तुम मुझसे शादी करना चाहते हो?"

"हाँ, मैं चाहता हूँ," जेफ़ ने कहा।

"एक अन्धी लड़की से?"

"किसी दिन," जेफ़ ने कहा," मैं यह भी सीख लूँगा कि तुम्हें तुम्हारा

आँखें किस प्रकार लौटा दूँ !"

"वे हमें पुकार रहे हैं," उसने जेफ़ से कहा।

उसने एलेन की बाँह पकड़ी और उसे घर ले आया।

कार्वेल में अब सभी आ चुके थे। घोड़े और खच्चर खलियान भर में बाँध दिए गए थे। औरतें अपने बच्चे लेकर वहाँ आ गई थीं। उनमें कुछ ऐसे भी बच्चे थे जिन्हें जेफ़ ने पहले न देखा था। घर और सायबान भरा हुआ था। लोग उसके इर्द-गिर्द इकट्ठे हो गये थे और बूढ़े लोगों ने उस पर सवालों की बौछार शुरू कर दी थी, इतने सवाल पूछे जारहे थे कि जेफ़ के लिए जवाब देना कठिन हो रहा था। कुछ नवयुवक, जो जेफ़ के कार्वेल छोड़ने के समय बच्चे थे, दूर खड़े हुए थे। लड़कियाँ उसकी ओर घूर रही थीं। स्त्रियाँ रैचल के साथ रो रही थीं। वहाँ भारी संख्या मे गोरों को देखकर जेफ़ को अचम्भा हो रहा था और वे लोग बड़ी बेतकल्लुफी व सरलता से हब्शियों से मिल-जुल रहे थे। उनमें से बहुत लोगों को वह पहचानता था। लंबा और सुर्ख बालोंवाला एब्नेर लेट, चपटा मिच-मिची आँखों वाला फ्रैंक कैर्सन, बाकी दूसरों को वह न जानता था। कुछ उसी की अवस्था वाले नवयुवक भी थे जिनके बाल पटसन जैसे और चेहरे सूर्य की गर्मी से झुलसे हुए थे। उसे बिना डाह के परन्तु कौतूहलपूर्ण नेत्रों से देख रहें थे। नया स्कूल-मास्टर रोहड द्वीप का यैंकी बैंजामिन थ्रियोप भी वहाँ उपस्थित था। उसने कहा, "डॉक्टर जैक्सन, आपको अपने मध्य पानें में हमारे संप्रदाय को जो लाभ हुआ है उसका अनुमान, नहीं लगाया जा सकता। मेरा ख्याल है आप यहीं ठहरेंगे।" "उम्मीद तो है," जेफ़ ने सिर हिलाया।

एक और भी बूढ़ा, नाटे क़द का गोरा आदमी वहाँ मौजूद था, जिसका नाम फ्रेड मैक्हफ़ था उसने जेफ़ से कहा, "मेरी पत्नी बहुत सख्त बीमार है, क्या तुम उसे देखने नहीं चल सकते ?" "मैं ज़रूर चल सकता हूँ, पर कल।" जेफ़ सहमत हो गया। मैक्हफ़ ने कहा, "उसके पेट में इतने जोर का दर्द है मानो उसे साँप खा रहा हो।" "मैं चलूँगा," जेफ़ बोला।

मार्कस के पास एक बाजा था और वह सायबान के किनारे बैठा उसे बजा रहा था, "मेरी अम्मा ने मेरा पीछा किया अटलांटा तक, अटलांटा तक।" और

इर्द-गिर्द खड़े हुए नवयुवकों ने उसके साथ पैरों से और तालियों से ताल देना शुरू किया। गिडियन ने शराब के तीन जग खोले और हर आदमी ने शराब पी। रैचल और दूसरी स्त्रियाँ कड़ाइयाँ और दूसरे बर्तन लिए अँगीठी के पास खड़ी थीं। गीतों की ऊँची ध्वनियाँ अंधकार से छाये खेतों पर पहुँचने लगीं, "मेरी अम्मा ने मेरा पीछा किया अटलांटा तक—"

भाई पीटर ने गिडियन से कहा, "हमें अपने परिश्रम का फल मिल गया और हम अब सुख व आनन्द का मजा चख रहे हैं।" और पास ही खड़े कुछ लोगों ने सिर हिलाते हुए कहा, "आमीन।"

जेफ़ ने अगले दिन मार्कस से कहा, "आओ चलें।"

"कुछ ही मनुष्य तो खेल सकते हैं दूसरों को काम भी करना है।"

"काम का भी वक्त होता है।"

"जाओ, चले जाओ उसके साथ," गिडियन ने कहा। "मैं तुम्हारा हल ले जाऊँगा।" और उसने अपने वही पुराने कपड़े, वही भद्दे जूते और पतलून व कत्थई कमीज पहन ली। "जा तू उसके साथ चला जा," गिडियन ने कहा। मार्कस ने घोड़ागाड़ी जोत ली और वे स्कूल की ओर चल पड़े। इस इमारत में एक कमरा था जिस पर सफेदी पुती थी और आगे की ओर एक गिरजाघर-सा था, जिसके कारण यह दो काम दे सकता था स्कूल का भी और सभागृह का भी। गिरजे में भिन्न-भिन्न आयु वाले ३० लड़के व लड़कियाँ बैठते थे। विंथ्रोप को सभी आयुवाले लड़के-लड़कियों को सभी विषय पढ़ाने पड़ते थे और साथ ही वहाँ अनुशासन भी रखना पड़ता था, जो कि एक कठिन समस्या थी। इस पीड़ित व्यक्ति को जेफ़ की इस आमद पर बहुत प्रसन्नता हुई और उसने कुछ आनन्द अनुभव किया। उसके आने से बच्चों में अनुशासन न रह सका और विन्थ्रोप को वक्तव वक्त अनुशासन भी रखना पड़ा और जेफ़ को अपनी पद्धतियाँ भी समझानी पड़ीं। उसकी शिक्षणपद्धति कुछ यों थी कि जब वह एक उम्र वालों को मुखाग्र पढ़ाता था तो दूसरे लड़के अपना पाठ पढ़ते थे।

"लेकिन यह सब है बड़ा कठिन," उसने स्वीकार किया, "यदि दो कमरे हों और दो शिक्षक हों तो काम में ज़रा सुभीता हो जाय। मैंने देखा है कि कुछ

चीजें ठीक नहीं रह पातीं। यदि मैं सबसे बड़े विद्यार्थियों को साहित्य पर वक्तव्य देता हूँ तो उससे छोटों पर कोई बुरा असर नहीं पड़ता।"

"वह तो स्वाभाविक ही है।" जेफ़ ने स्वीकार किया।

"एक बात यह भी है कि मैं यहाँ नया हूँ। बूढ़े मि० एलेन्बी, जो मुझसे पहले यहाँ थे, उनकी शिक्षणपद्धति कुछ और थी। वे पद्धतियाँ आधुनिक नहीं थी, समझे आप?"

"फिर भी जब मैं पुराना ज़माना याद करता हूँ जबकि स्कूल मास्टर भी एक स्वप्न था······"

वे आगे बढ़ गये। जेफ़ ने कहा, "मैं मैक्हफ़ के मकान पर रुकना चाहता हूँ। तुझे मालूम है कहाँ है वह?"

"हाँ, मुझे पता है, उसकी पत्नी बीमार है।"

"वह चाहता है मैं उसे देख आऊँ।"

"तो अब तो हमारे यहाँ डॉक्टर भी है।"

"इससे भी बदतर चीजें हो सकती हैं समझे," जेफ़ बोला।

"हाँ, शायद।"

जेफ़ ने उसकी ओर देखा किन्तु मार्कस ने और कुछ न कहा। मैक्हफ़ का मकान पुराने कार्वेल-मकान के समीप ही था, थी छोटी इमारत किन्तु बड़ी सुन्दरता से बनाई गई थी। उसने मकान के आसपास एक वाटिका लगाई थी जो कि उस क्षेत्र में एक असाधारण व विशेष बात थी। वह वहाँ अपनी पत्नी के साथ रहा करता था, अधिकतर अकेला ही, उसके कोई संतान नहीं थी और वह लोगों से मिला-जुला भी नहीं करता था। जब जेफ़ अन्दर दाखिल हुआ और उसने रोगी को देखा तो उसने मैक्हफ़ से पूछाः

"कितने दिनों से यह बीमार है?"

"इसे तो बीमार रहते हुए साल भर होगया कुछ-न-कुछ लगा ही रहता है। और अब तो बिस्तर से लग गई है। रात तो वह सो भी न सकी, केवल कराहती रही। और फिर वह जेफ़ को उस सोने के कमरे में लेगया जहाँ एक ४० वर्ष की रंगहीन, वृद्ध, पतली-दुबली औरत पड़ी थी। "यह गिडियन का

लड़का जेफ़ है। यह डॉक्टर है और पुराने देश से डॉक्टरी पढ़कर आया है। बडा अच्छा लड़का है। सैली, यह तुम्हारा इलाज करने वाला है, सैली!"

वह कुछ न बोली, केवल वहीं लेटी रही और छत की ओर देखती रही। "क्या आप ज़रा बाहर जाएँगे?" जेफ़ ने मैक्हफ़ से पूछा। और उसके चले जाने के बाद स्त्री हिली तक नहीं। जेफ़ ने कहा, "माँ, देखो तो मैं डॉक्टर हूँ। शायद मैं तुम्हारा इलाज कर सकूँ।"

"अगर तुम कर सको तो।"

जेफ़ ने उसके पेट को स्पर्श किया और वह पीड़ा से चीख उठी और घूम गई। और जब वह वापस आया तो मैक्हफ़ उसकी प्रतीक्षा कर रहा था। "क्या तुमने शहर से डॉ० लीड को बुलाया था?"

"हाँ मैंने उन्हें भी बुलाया था।"

"क्या बोले वह?"

"वह कह रहे थे कि वह मर जायगी," मैक्हफ़ ने बड़बड़ाते हुए कहा।

"उसे बीमारी का भी पता चला?"

"डॉ० लीड से सवाल कौन पूछ सकता है?" मैक्हफ़ ने कहा, "वह कार्वेल वालों को तो पूछते ही नहीं। उन्होंने कहा यह नहीं बचेगी बस।"

मार्कस वहीं खड़ा था। उसने पूछा, "तुम्हें पता चला क्या बीमारी है जेफ़?"

"हाँ पता तो चला है। मेरे ख्याल से उसे आँतों की बीमारी है,—यानी आँत के किसी हिस्से पर वरम आ जाता है और उँगली की भाँति सूजन हो जाती है। अक्सर किसी-न-किसी कारण से जिसका हमें ज्ञान नहीं है ऐसा वरम आजाता है और यदि उसे रोका न जाय तो मांस के सड़ने का भय पैदा हो जाता है। एक ऐसी अवस्था होती है, जबकि यदि बर्फ का प्रयोग किया जाय तो उससे फायदा होता है; लेकिन इस समय तो वह बेकार सिद्ध होगा।

"तुम्हारा मतलब है अब वह नहीं बचेगी?" मैक्हफ़ ने पूछा।

जेफ़ ने सिर हिला दिया।

"तुम कुछ नहीं कर सकते ? ईसामसीह तुम भी कुछ नहीं कर सकते ?"

जेफ़ ने कहा, "मुझे याद है जब मैं डॉ० एमरी के साथ था तो मैंने देखा था कि एक सर्जन ने उस हिस्से को काटकर निकाल फेंका था। और रोगी अच्छा हो गया था। उस सर्जन के बाद फिर मैंने किसी और को ऐसा आपरेशन करते नहीं देखा। एडिनबरा में तो डॉक्टर इस रोग को लाइलाज समझते हैं।"

"तुम आपरेशन नहीं कर सकते ?" मैक्हफ़ ने पूछा।

"न मालूम कर भी सकूँगा या—"

"अच्छा तो तुम कोशिश तो करो, इसकी ऐसी की तैसी। जब वह मरने ही वाली है तो फिर कोशिश में क्या है ?"

"लेकिन मैं जानता नहीं किस तरह करूँ," जेफ़ ने कहा। "जब एक चीज़ को मैं जानता ही नहीं तो कोशिश कैसे करूँ।"

"क्यों नहीं ?"

जेफ ने मर्कस की ओर देखा। मैक्हफ़ का ऊपरी होंठ लरज रहा था और वह इन दोनों को देख रहा था। उसने कहा, "देख जेफ़! मैं गिडियन को जानता हूँ—बरसों से उसकी मेरी पहचान है। एक वह भी वक्त था जब लोग मुझसे कहते थे खुदा तुझे नाबूद करे मैक्हफ़, उस हब्शी से दूर रहा कर। तुम्हें मालूम है उन्होंने एक चिट्ठी मुझे भेजी थी जिस पर खून लगा था और उसमें लिखा था कि तुम उस हब्शी से अलग रहो। और फिर गिडियन मेरे पास आया, उसने ज़मीन खरीदने का प्रस्ताव रखा और मैं उसके साथ चल दिया। और हर बार मैं उसके साथ चला जाता था। मैं चुनाव में निगरों की हैसियत से अकन भी गया था और उसके बाद उन्होंने एक गोरे को इस अपराध के लिए क़तल कर दिया था क्योंकि उसने एक हब्शी को वोट दिया था। तुम गिडियन से पूछना। पूछना कि मैंने कभी भी आनाकानी की हो तो। जरा पूछना मैंने उस कुतिया के पिल्ले जैसन ह्यूगर को कैसे लताड़ा था।"

"ठीक है," जेफ़ ने सिर हिलाया। "अगर मैं उसे अकेला छोड़ दूँ तो वह कुछ ही दिन और जिंदा रहेगी और हर वक्त वह दर्द व पीड़ा में रोती रहेगी। मार्कस घर चले जाओ और मेरा छोटा थैला ले आओ, कुछ सफेद चादर व

तौलिये भी ले आना। और माँ से कहना कि तुम्हारे साथ आ जायें। "तुम्हारे पास शराब है ?" उसने मैक्हफ़ से पूछा। उसने सिर हिला दिया। "अच्छा तो तुम अन्दर जाओ, उसे दिलासा दो और ह्विस्की पिलाओ, थोड़ी-थोड़ी देना आधा कप! देखना कहीं ज्यादा मत देदेना कि वह नशे में बेहोश हो जाय। जरा ठहरो, पहले ऐसा करो अँगीठी में थोड़ा कोयला डाल दो और कुछ पानी उबलने को रख दो। औरतों में उसे किस पर अधिक विश्वास है ?"

मैक्हफ़ भयभीत हो पीला होगया, "हेलन लेंट पर।"

"मार्कस, उसे भी बुला लाना। क्या वह खड़ी रह सकती है ? तुम समझे मैक्हफ मैं क्या करने वाला हूँ ? मैं तुम्हारी पत्नी का पेट काटकर उसका वह विकृत भाग निकालना चाहता हूँ। उसे इससे काफी तकलीफ़ होगी और उसे देखना भी बुरा होगा, इसलिए मैं यह सब अकेले में ही करूँगा।"

मैक्हफ़ ने रज़ामंदी प्रकट की।

"मैं तुम्हारी इजाजत चाहता हूँ, तुम कहो कि तुम्हें कोई आपत्ति तो नहीं है ?"

"नहीं, तुम ऐसा कर सकते हो," मैक्हफ ने धीरे से कहा।

"समझ लो—मैंने यह काम पहले कभी नहीं किया है। मैं यह भी नहीं जानता कि इसे क्योंकर करूँ। यदि मुझसे ग़लती हो गई तो तुम्हारी पत्नी चल बसेगी। और अगर ग़लती ना भी हुई तो संभव है कि सड़ जाय और वह मर जाय। यह ख़तरा तो हर ऑपरेशन के समय होता है, जोखिम का काम है और फिर यहाँ तो वे आधुनिक औज़ार भी नहीं जो उसके लिए ज़रूरी हैं।"

"नहीं मैं सहमत हूँ, तुम कोशिश करो," मैक्हफ़ ने कहा।

जब जेफ़ घर लौटा तो गिडियन सायबान में खड़ा उसकी प्रतीक्षा कर रहा था। अब सूर्योदय होने ही वाला था। जेफ़ ने थकावट भरे स्वर में कहा, "क्या आप सोये नहीं ?"

"नहीं—मुझे बहुत कुछ सोचना था। क्या वह स्त्री अभी जिंदा है ?"

जेफ़ ने हाँ कह दिया। "वह अब शांत हो, सो रही है। मेरा ख्याल है अब वह ठीक है; ख्याल क्या मुझे विश्वास है अब वह बिल्कुल ठीक हो गई है।"

"अच्छा तो अब तू भी कुछ देर सो ले।"

जेफ़ ने अपना सिर हिलाकर नां कह दिया और मुस्करा पड़ा। वह गिडियन के पास ही सायबान के एक कोने पर में गया। अब प्रकाश बढ़ने लगा और सूर्य की पहली किरण ने झाँककर दर्शन दिये। कहीं पर एक मुर्ग ने बाँग दी। नम्रता से जेफ़ ने कहा, "अरे बापरे जब मैंने सोचा—सोचा कि दुनिया में सिर्फ दो ही व्यक्तियों ने पहले इसे किया है! और जब मैं जान गया तो मुझे वह कितना सरल व साधारण प्रतीत हुआ! और जब मैं सोचता हूँ कि ओहो मैंने यह सब यहाँ किया जबकि मेरे पास कुछ भी तो न था, समझे आप कुछ भी नहीं?"

"मैं भी यही सोच रहा हूँ," गिडियन ने कहा।

"क्या आप जानते हैं साल भर में कितने लोग इस रोग से पीड़ित होकर मर जाते हैं? शायद हजारों। देहाती डॉक्टर इसे बदहज़मी, या मेदे के ज़हरीले कीटाणु या फोड़ा कहते हैं। लेकिन यह है आँतों का रोग—"

गिडियन ने सिर हिलाकर हाँ कह दिया और अपना हाथ जेफ़ के कंधों पर रखा।

"आप तो चाहते ही न थे कि मैं यहाँ आऊँ।"

"हाँ, मैं यह नहीं चाहता था।" गिडियन ने कबूल किया। "और मेरे न चाहने का कारण था, जेफ़।"

"कारण-वारण कुछ नहीं हैं," जेफ़ ने कहा। "आप जानते हैं जब मैं बच्चा था तो आपसे ईर्ष्या किया करता था। आप में शक्ति थी और आप एक नव-संसार का निर्माण कर रहे थे। लेकिन अब मुझे आपसे कोई ईर्ष्या नहीं; क्योंकि अब मैं आपको पहचानता हूँ। और अब मैं यहीं वह निर्माण करूँगा और करता रहूँगा—निर्माण-कार्य करूँगा—"

"जा, कुछ देर सो भी ले।"

"नहीं, अब नहीं सो सकता," जेफ़ ने मुस्कराते हुए कहा। "अरे बापरे, अब कैसे सोऊँ?"

एक सप्ताह बाद जेफ़ और एलेन का विवाह हो गया। सारा कार्वेल स्कूल-वाली इमारत पर उमड़ पड़ा। भाई पीटर जो अपना काला कोट पहने थे बोले,

"जेफ़ जैक्सन क्या तुम इस स्त्री को स्वीकार करते हो—?" गिडियन यह सोचते हुए कि किस विचित्रता, निश्चय और मंद गति से समय व्यतीत होता है, इन सब चीज़ों पर गौर करता रहा। उसे अपनी वृद्धावस्था का एहसास हुआ, या यूँ कहिए उसे महसूस हुआ कि अब वह थक चुका है—शक्तिहीन हो गया है। वह रैचल की पीठ में बाँह डाले भाई पीटर की आवाज़ सुन रहा था—वह आवाज़ जो निश्चित, विश्वस्त और गूंजने वाली आवाज़ थी और सारी जिंदगी भर उसके साथ रही थी।

जेफ़ ने अपने मकान के लिए स्कूल के क़रीब की ज़मीन का एक टुकड़ा चुन लिया जो उसी सम्प्रदाय के लोगों का था। उन्होंने उसे स्कूल की इमारत व क़ब्रिस्तान के लिए छोड़ दिया था पर जेफ़ ने धीरे से कहा कि अगर दोनों चीज़ें उसके घर के पास हों तो अच्छा ही है। गिडियन ने उस मकान का प्रबंध कर दिया—अब तो ये इस काम में काफ़ी अनुभवी हो गये थे। इमारती लकड़ी तो उनके पास मौजूद ही थी। दो-चार, सुगंधित और देवदार की लकड़ी, $\frac{3}{4}$ इंच के तख्ते फ़र्श के और अंदरूनी भाग के लिए शाहबलूत की चूलें तैयार की गईं। यह सब चीज़ें कारखाने पर काटीं गईं और गाड़ी में भरवाकर लाई गईं। हैनिबाल वाशिंगटन ने जो स्वयं एक नामी और सुन्दर राज था चूल्हे व चिमनियाँ बनाईं। जेफ़ अपने नक़्शे बनाने में संलग्न रहा: सूर्य के प्रकाश से प्रदीप्त परीक्षालय दो बिस्तरों के लिए स्थान, एक बड़ा सा भाग जो शायद किसी दिन 'आपरेशन-रूम' के लिए इस्तेमाल हो। अन्त में उसने गिडियन से कहा, "कार्वेल भर में सबसे बड़ा मकान होगा यह!"

"और ठीक भी है," गिडियन सहमत हो गया।

"पर पैसे किधर से आयेंगे?"

"उसके लिए मेरे पास काफी पैसे हैं," गिडियन ने मुस्कराते हुए कहा।

"लेकिन मैं अब ज़्यादा कुछ आपसे नहीं लेना चाहता। इतने वर्षों से तो लेता आ रहा हूँ।"

"मुझे उसकी बिल्कुल चिंता नहीं है जेफ़। तुम्हें औज़ार, फर्नीचर, बिस्तरादि की तो आवश्यकता पड़ेगी ही—है न? दूसरी चीज़ें भी हैं ऐं?"

"लेकिन वे बहुत क़ीमती हैं।"

"हम सब कर लेंगे। मेरे ख्याल से बहुत सी चीज़ें तो तुम्हें कोलम्बिया में मिल जायेंगी लेकिन चार्ल्सटन बेहतर रहेगा। हम वहाँ जल्दी ही पहुँच भी जायेंगे।" चार्ल्सटन जाने के कुछ और भी उसके कारण थे, पर उसने सोचा यदि वे दोनों-जेफ़ और वह साथ ही चले जायें तो बहुत ही अच्छा हो। कुछ समय तक जेफ़ और एलेन गिडियन के यहाँ ही रहें। एलेन और रैचल में आपस में एक दृढ़विश्वास और निकटस्थ मैत्री थी। और यह एक ऐसी विशेषता रैचल की थी, जिससे गिडियन वंचित था। एक बार जेफ़ ने अपने पिता से कहा, "क्या आप मेरे और एलेन के विवाह के विरुद्ध हैं?"

"आदमी को उसी लड़की से विवाह करना चाहिए जिससे उसे प्रेम हो," गिडियन ने उत्तर दिया। और यही चीज़ उसने आपसे कही और कई अन्य बातों के साथ इस पर भी विश्वास करने का वह प्रयत्न करने लगा। क्योंकि बाद में उसने अनुभव किया कि मार्च १८७७ में जो ज़माना था वह मूर्खतापूर्ण था क्योंकि गिडियन जैक्सन को विश्वास न होता था कि सूर्य स्थिर है और समय भी क्योंकि यह विचित्र था और उस क्षणिक सुख से भी विचित्र जो उसे उस समय कुछ हफ़्तों में प्राप्त हुआ था, जो हालांकि कई बातों के कारण भंग होगया था फिर भी वास्तविक सुख था। गत १० वर्षों के दौरान में पहलीबार गिडियन ने अपनी पुस्तकों को अलग रख दिया और तय किया कि अब वह न पढ़ेगा, अध्ययन न करेगा और न सोचेगा। उसने अपनी बैठक जहाँ वह पढ़ता था जेफ़ को मरीज़ों की देखभाल के लिए देदी और अपना सारा दिन मार्कस के साथ काम करने में बिताने लगा।

यद्यपि वे दोनों विचारों में एक-दूसरे से भिन्न थे, और मूलभूत तत्त्वों में भी एक-दूसरे से विरोध था; परन्तु फिर भी जेफ़ और उसने एक-दूसरे को बेहतर ढंग से समझा। मार्कस में आगे बढ़ने की वह आतुरता न थी जो गिडियन और जेफ़ में पाई जाती थी। उन दोनों के लिए संसार एक पहेली था और मार्कस उसे एक स्थिर और समझने योग्य व संपूर्ण समझता था। मार्कस पापी था और भाई पीटर ने यद्यपि दुःख से, पर समझते हुए उसे स्वीकार किया था। मार्कस

औरतों का शरीर, उनकी छातियों और रानों से बिना किसी शर्म के प्रेम करता था पर उसमें किसी प्रकार का लोभ न था। पशुओं की भाँति जो स्वास्थ्य उसका था और जो स्वतंत्रता उसे मिली हुई थी, इन दो बातों ने उसमें जीवन और ऊपर तक ज़िंदगी का जोश भर दिया था। हालाँकि वह छोटा और पतला-दुबला था फिर भी काम में गिडियन को हरा देता था। वह गोरों के साथ शराब पीता था और ठीक उन्हीं की तरह और लैस्ली कैर्सन के लड़के जोय के लिए मुक़ाबले का आदमी था और उसके साथ इस कदर पीता कि ठर्रे की आधे गेलन की बोतल चढ़ा लेता। उसे नृत्य से भी प्रेम था, उसके बाजे पर पुराने गीत भी नये हो जाते थे। सभी पुराने दलदली प्रदेश के गीत जो थकाने वाले और दासता के गीत थे उसके बाजे पर बजकर सब नये हो जाते थे, क्योंकि उसने उन्हें नई धुनें और नवजीवन प्रदान किया था।

वह गिडियन की स्तुति करता था। वह कपास की खेती से परिचित था पर गिडियन अधिक जानता था, वह वहाँ की जमीन से वाक़िफ़ था और वहाँ पर गिडियन के सामने हार मान लेता था। उन्होंने खलिहान में बैठकर लोहे की भट्टी गरम की और गाड़ी के पहियों के लिए नये टायर बनाये। गिडियन कमर तक नंगा था और लोहार की तरह घन चला रहा था। पैंतालीस वर्षों ने अभी तक उसकी शक्ति उससे न छीनी थी और जैसे-जैसे घन लोहे पर पड़ता था सारा संसार गूँज उठता था। "निशाना साधो," लड़के ने लोहे का रुख़ पलटते हुए कहा, "साधो; साधो, साधो निशाना!" और गिडियन घन के प्रहार करता रहा, उसके चेहरे से पसीना काफ़ी टपक रहा था और बाद में सारा भूसा व घास उन्होंने एक दूसरी जगह मुंतक़िल कर दिया, वे साथ-साथ काम करते हुए गाते भी जारहे थे, "थका, हारा बूढ़ा हूँ मैं, मेरी पीठ में अब तो खम है।" खेती के लिए उन्होंने दलदली जमीन झाड़-झंकारों से साफ़ करली, उनकी दुधारी कुल्हाड़ियों से उन्होंने लगातार प्रहार किये और गंदी हालत में परन्तु बहुत ही उल्लसित, आनंद में डूबे हुए, हँसते हुए वे घर लौटे। जेफ़ ने गिडियन से कहा, "इस उम्र में यह सब करना बुद्धिमत्ता नहीं—"

"इस उम्र में," गिडियन मुस्करा दिया।

"यह काम आप हमेशा तो करते नहीं हैं, साल भर में अधिक समय तो आपको बैठकर ही काम करना पड़ता है—"

गिडियन और मार्कस एक दिन शिकार खेलने गये। गिडियन ने हिरन मारने की आशा में एक बंदूक लेली और मार्कस ने यह सोचते हुए कि चंद खरगोश ही काफ़ी होंगे एक छोटी बंदूक लेली। उन्होंने अपनी जेबें रोटियों से भरलीं और तड़के ही ठण्डे-ठण्डे निकल पड़े। उन्होंने अपना ही गीत नर्म व धीरे और आनन्दपूर्वक गाया। "मेरे पिता जी शिकार करने गये, ऐ परमात्मा, मेरे पिताजी शिकार करने गये।" कुत्ते खेतों में उनके आगे पीछे दौड़ रहे थे। दोनों ने आपस में कोई खास बातचीत नहीं की। और कभी इस बात का किसी को एहसास भी न हुआ कि मार्कस और गिडियन एक दूसरे से इतनी कम बातचीत करते हैं—बहर हाल उन दोनों में निबाह होता गया।

लौटते-लौटते अँधेरा हो गया था। गिडियन ने हिरनों की कमींगाह तो क्या हिरन का बाल तक न देखा पर मार्कस अपने झोले में मोटे-मोटे खरगोश लिये था। वह उन्हें साफ करने के लिए और खाल उधेड़ने के लिए खलिहान में ले गया और कुत्तों ने जो उसे तंग किया तो उसका उन्हें भी इनाम उसने देदिया, गिडियन मकान में चला गया। जेफ़ उसकी प्रतीक्षा ही कर रहा था, उसका चेहरा चट्टान की भांति कठोर, आंखें सख्त और सब कुछ ऐसा था जैसा कि उसने पहले कभी नहीं देखा था। वह अपने पिता को बैठक वाले कमरे में ले गया। एब्नेर लेट वहीं बैठा हुआ था और उसके लंबेलाल हाथ उसके घुटनों से सटे हुए थे।

"यह क्या है?" गिडियन ने पूछा।

एब्नेर लेट ने अजीब सी नजरों से गिडियन की ओर देखा और गिडियन ने कहा, "खुदा के लिए बताओ तो आखिर क्या हुआ?" जेफ़ उसे सोने के कमरे में ले गया। रैचल वहाँ बैठी हुई थी उसके चेहरे पर कोई भाव न था। बिस्तर पर पड़े हुए व्यक्ति ने करवट ली और कुछ कराहा। उसके सारे शरीर पर पट्टियाँ बँधी हुई थीं। "मैक्हफ़," गिडियन ने धीरे से कहा, "हाँ वही है।"

गिडियन बिस्तर की ओर गया और उसने कहा," फ्रेड, कहो फ्रेड।"

मैक्हफ़ पहले की भाँति स्थिर पड़ा रहा और कुछ कराहट के साथ करवट बदलने लगा। गिडियन ने उसका हाथ पकड़ लिया, "फ्रेड, देखो तो मैं हूँ गिडियन!"

जब वे बैठक में लौटे तो मार्कस भी आ चुका था, "क्या उसे कोड़े मारे गये थे?" गिडियन ने मालूम किया।

"हाँ, वैसे भी कह सकते हैं।"

"उसकी बीवी?

"वह मर गई,"एब्नेर लेट ने धीरे से कहा। "उन हरामी पिल्लों ने उसे मार डाला। उन हरामजादों ने उसे बिस्तर पर से हटाया और मार डाला।"

"किसने?" गिडियन ने धीरे से पूछा।

जेफ़ ने वह सब गिडियन को बता दिया जो वह उस अचेत व घायल व्यक्ति से मालूम कर सके थे क्लान के छः लोग सफेद पोशाक पहने रात को उसके घर में घुसे। उन्होंने उसे और उसकी पत्नी को बिस्तर पर से खींचा वह चीखता रहा कि उसकी बीवी बीमार है और वह मर जायगी; लेकिन उन्होंने एक न सुनी। उन्होंने खींचा और खलिहान में लेगये, हाथ कसकर एक खम्भे से बाँध दिये और उन्हें कोड़ों से पीटा।

"मैं नहीं समझता उसकी बीवी को ज्यादा तकलीफ हुई होगी," जेफ़ ने कहा। "मेरे ख्याल से तो वह फौरन ही अचेत हो गई थी। घाव खुल गया और कोई तीन बजे के लगभग हमें पता चला और हमने उन्हें देखा।"

"क्या वह बच जायगा?" गिडियन ने पूछा।

कुछ मुस्कराहट के साथ जेफ ने उत्तर दिया, "यह तो एक शास्त्रीय प्रश्न है। उसके मस्तिष्क का संतुलन बिगड़ गया है, और उसके बाजू भी बेकार हो गये हैं। और अब वह काम करने योग्य नहीं रहेगा।"

एब्ने रलैट ने कहा," तुम जानते हो मैं क्या करनेवाला हूँ गिडियन? और तुम भी बताओ तुम्हारा क्या इरादा है?"

"अब तुम बता ही क्यों नहीं देते?" जेफ ने कहा।

"मैंने सोचा उसके बताने से कोई लाभ न होगा।"

"नहीं-नहीं अब वह समय आगया है जबकि तुम यह सब बता दो," जेफ़ ने कहा।

"अच्छा तो फिर कल बता दूँगा," गिडियन ने सिर हिलाते हुए कहा। "कल हम एक सभा करेंगे।"

जेफ़ सायबान में खड़ा मार्कस की प्रतीक्षा कर रहा था। उसने उसकी बाँह पकड़ कर उसे रोक लिया। "मार्कस ?"

"हाँ।"

"तुम मेरे खिलाफ़ क्या सोच रहे हो ?"

"तुम्हारे खिलाफ ? मेरे दिल में तुम्हारे खिलाफ़ कुछ भी नहीं है।"

"तो क्या हम इसी तरह जिन्दगी बसर करते रहेंगे ?"

"हम अच्छी खासी ज़िंदगी बिता रहे हैं," मार्कस ने कहा।

"मैंने क्या किया है ?" जेफ़ ने पूछा।

"तुमने ? कुछ भी तो नहीं।"

"क्या इसीलिए क्योंकि मैं बाहर चला गया था और तुम यहीं रहे थे ?"

"नहीं तो।"

"फिर क्यों, किस लिए ?"

"कुछ भी नहीं," मार्कस ने कहा। "कितनी बार मैं तुम से कहूँ ? कुछ नहीं बस।"

"अच्छा—तो नाराज़ मत हो।"

"मैं तो नाराज़ बिल्कुल नहीं हूँ।"

"तुम्हें मालूम है जब हम बच्चे थे तब की बात और थी।"

"बच्चों की तो हर बात ही और होती है।"

"तुम समझते हो मैं—गिडियन के खिलाफ़ हूँ ?"

मार्कस शांत रहा।

"क्यों यही समझते हो न तुम, ऐं ?"

फिर भी मार्कस ख़ामोश रहा।

"जानते हो क्या होनेवाला है ? क्या उन्होंने तुम्हें बताया, क्या होने

वाला है ?"

"न मैंने उनसे यह पूछा और न उन्होंने बताया," मार्कस ने कहा।

"वह समझते हैं कि बस सब चीज़ों का यही अंत है—जानते हो ?"

मार्कस ने सिर हिला दिया।

"तुम क्या करनेवाले हो ?"

"वही जाने क्या करनेवाले हैं," मार्कस ने उत्तर दिया।

लोग स्कूल की इमारत पर उमड़ पड़े। काले और गोरे सभी अपने-अपने काम पर पहनने वाले कपड़ों में नीली पतलूनों और नीली कोटों और चमड़े के भारी जूतों में और कत्थई व लाल कमीज़ों में सब वहाँ पिल पड़े। गोरे आदमियों की गरदनें और कलाइयाँ खुली हुई थीं, उनकी चमड़ी धूप में झुलस गई थी। काले आदमियों का रंग भी हल्का और पक्का था। स्कूल-शिक्षक कॉउटिंग विन्थ्रोप ने १८ और १६ वर्ष के लड़कों को मिलाकर जो गिना तो पता चला कि वहाँ कुल पचास आदमी कमरे में थे। एक डॉक्टर, एक पादरी, एक शिक्षक और एक कांग्रेस का मेम्बर ये तो विशेष व्यक्ति थे और बाकी सब खेतिहर। विशेष रूप से वे कपास की खेती करते थे लेकिन तम्बाकू भी बो लेते थे, कभी चावल और कभी दूसरा अनाज भी बोते थे उनके पास मवेशी, सूअर और घोड़े भी थे। अब उन्होंने अपना एक सम्प्रदाय बना लिया था जो कार्वेल के नाम से प्रसिद्ध था। और जो कुछ ~~उन्होंने~~ निर्मित किया था उसका दस वर्ष पूर्व कहीं नाम-निशान तक न था। न ही उसकी तुलना का और कोई हिस्सा दक्षिण भर में था। युद्ध, संहार, मृत्यु, मुक्ति और दरिद्रता ने उन्हें सबको एकत्र कर लिया था। उन्होंने यह सब बिना किसी सामग्री के निर्मित किया था और वे आसपास की वस्तुओं को देखकर गर्व से कह सकते थे कि हर चीज़ उनके हाथों से बनाई गई है। उन्होंने अपनी आवश्यकतानुसार हर चीज वहाँ पैदा कर ली थी—पाठशालाएँ, मकान कारखाने, विचारादि; क्योंकि पहले वहाँ कुछ भी न था। सदियों का फासला—सामंतवाद से जनतंत्रवाद तक—उन्होंने एक ही लम्बे डग में तय कर लिया था।

जब गिडियन जैक्सन उनके सामने खड़ा हुआ उनकी ओर देख रहा था, उन की कृतियों का अनुमान लगा रहा था, चेहरों को याद कर रहा था और वहाँ के

हर व्यक्ति के जीवन को जो उसने बिताया था, याद कर रहा था, तभी उसने यह सब सोचा। जेफ़ भी निर्माण करना चाहता था,—और गिडियन को अचानक निराशापूर्ण विचार व भय ने आ घेरा कि मनुष्य निर्माण कैसे कर सकते हैं। उसने वहाँ एकत्र लोगों से कहा :

"आप सब मुझसे परिचित हैं। मैंने आपसे पहले भी बातें की हैं।"

वे उसे जानते थे, उन्होंने उसे वोट देकर अपना प्रतिनिधि चुना था। उन्होंने ही अपनी गाड़ियाँ लेकर हर दिशा में बीसों मील चक्कर लगाये थे और लोगों को बताया था कि गिडियन जैक्सन को वोट देने में क्या फ़ायदा है।

"आप जानते हैं, मैक्हफ़ पर क्या गुज़री है? आज सुबह ही हम उसकी पत्नी को दफना कर आये हैं,—यहाँ से दूर उसी अपने छोटे से क़ब्रिस्तान में जहाँ चार आदमी सोये हुए हैं, जिन्हें हिंसा द्वारा मारा गया है,—जिनकी गत आठ वर्षों में कार्वेल में हत्या की गई है। यह बड़ी भयानक बात है। किसी मनुष्य की किसी तरह भी जान ले लेना एक भयानक कृत्य है। लेकिन जब आदमी स्वतंत्र लोगों में आतंक फैलाने और हत्या करने पर उतरते हैं तो वे वहशी जानवर बन जाते हैं। आप जानते हैं क्यों मैक्हफ़ को कोड़ों से पीटा गया, क्यों उसकी पत्नी को मारा गया? सिर्फ एक कारण से और वह यह कि इन हत्याओं और अतंक द्वारा कार्वेल निवासी गोरे आदमियों को चेतावनी दी जाय कि वे अब काले आदमियों के साथ एक होकर नहीं रह सकते और न ही साथ-साथ काम कर सकते हैं।

"आखिर इसका इतना महत्व क्यों है? आखिर यहाँ यह क्यों जरूरी है कि गोरे आदमी हब्शियों से घृणा करना सीखें; उन्हें ग्लानि की दृष्टि से देखें और उन्हें तुच्छ समझें। हब्शी इसके बदले गोरों से डरें, उनसे दूर भागें और उन पर विश्वास न करें? क्या इसलिए कि ये दोनों गोरे और काले,—एक-दूसरे से बेमेल हैं और साथ-साथ नहीं रह सकते या काम नहीं कर सकते? परन्तु कार्वेल ने और दक्षिण के हजारों कार्वेलवासियों ने इसे ग़लत सिद्ध कर दिया है। तो फिर क्या इसका यह कारण है कि उन दोनों के मेल से खून में मिश्रण पैदा होगा और जैसा कि क्लान वाले दक्षिण भर में चीख़ते फिर रहे हैं इस मेल से काले गोरों को बद-चलन बना देंगे? लेकिन हम यहाँ लगभग दस वर्षों से एक साथ रहते आये हैं

और यह कभी नहीं हुआ। हमारे बच्चे यहाँ के स्कूल में साथ-साथ बैठे हैं और ऐसा कभी नहीं हुआ। फिर क्या कारण है? वह कौन-सा पाप हम कार्वेल वालों ने किया है और दक्षिण के सभी लोगों ने किया है अगर हम एक साथ कंधे-से-कंधा मिलाकर मेल-जोल से रहते हैं? और आज इस चीज़ को जानना और समझना हमारे लिए ज़रूरी है; न सिर्फ कालों के लिए, बल्कि गोरों के लिए भी।

"दोस्तो! मैं अपने भाषण से आपको भयभीत नहीं करना चाहता। खुदा जाने, क्या कारण था पर जब मैं वाशिंगटन में था तो भयभीत होना मेरे लिए स्वाभाविक था, परन्तु जब मैं यहाँ कार्वेल लौटा तो सब कुछ विभिन्न प्रतीत हुआ। मेरे आने ने मुझे आश्वासन दिलाया कि यह मेरा घर है; और ये लोग मेरे दोस्त हैं। जब मैं गुलाम था तो वे मुझे जानते थे कि मैं अपने मालिक डडले कार्वेल के यहाँ से भाग गया था पर फिर लौट आया और जब मैं आप ही की तरह इस स्वामीहीन भूमि पर वापस लौटा जहाँ न कारिन्दे रहे थे और न वे कोड़े, यातनाएँ और ज़बरदस्ती क्योंकि यहाँ का मालिक यहाँ से कूच कर चुका था और जब मैंने अपने इर्द-गिर्द देखा तो पाया कि यहाँ विवेक है, जीवन की वे सुन्दर वस्तुएँ हैं और मैंने अपने आप से कहा, वे तमाम बुरी बातें और कुरीतियाँ जिनका मैं स्वप्न देखा करता था वही पैदा नहीं हो सकतीं, जहाँ हम निर्माण कर रहे हैं। मैं कुछ समय तक मूर्खों के स्वर्ग में रहा।

"पर वह समय बीत गया है दोस्त! अब मैं आपसे सब बात कहना चाहता हूँ। मैं चाहता हूँ आप समझें कि फ्रेड मैम्हफ़ क्यों मेरे यहाँ पड़ा हुआ है,—उसकी बाँहें मुडी हुई हैं और अब काम के लायक़ नहीं रही हैं, उसकी बीवी मर चुकी है और उसका दिमाग़ खराब होगया है। अब मैं आप को बताना चाहता हूँ कि जब मैं और मेरा पुत्र वाशिंगटन से यहाँ आये तो हमें क्यों एक अलग डिब्बे में सफर करना पड़ा, जिस पर लिखा था "कालों के लिए"? मैं आपको बताना चाहता हूँ कि दक्षिण भर में टैक्सास से विर्जीनिया तक क्यों आकाश जनता की चीख पुकारों से गूँज रहा है और सबसे ज़्यादा महत्त्व की बात जो आपको समझाना चाहता हूँ वह यह कि अब से गोरा आदमी काले के पीछे कुत्ते की तरह क्यों छोड़ दिया जायगा? और अगर वे अपने इस कुकर्म में सफल हो गये तो क्यों

यह चीज़ एक स्वप्न बन कर रह जायगी कि एक जगह किसी ज़माने में थी जिसका नाम कार्वेल था।

"ऐसा क्यों है कि कार्वेल निवासियों में से कोई भी व्यक्ति, 'क्लान' में नहीं है? क्यों ऐसा है कि दक्षिण भर के सभी ईमानदार किसान अपनी ज़मीन जोतते हैं और उनमें से कोई भी 'क्लान' में नहीं है? तो फिर कौन लोग 'क्लान' में हैं? अगर जैसा कि हमारे अख़बार कहते हैं कि यह दक्षिण के क्रोधी व दुखी लोगों का ईमानदारीपूर्ण विरोध है? कहाँ से आया है यह? किसने इसका संगठन किया? अगर इसका उद्देश्य वहशी हब्शियों से दक्षिण की रक्षा करना है तो फिर यह हर काले आदमी के लिए दो गोरों का ख़ून क्यों करता है? वे क्यों यहाँ कार्वेल में आये और आकर फ्रेड मैक्हफ़ की बीमार पत्नी की हत्या कर दी!

"मुझे भी इस चीज़ पर सोच-विचार करने में काफ़ी समय लगा कि आख़िर 'क्लान' क्या है, किस तरह यह काम करता है और इसे क्यों संगठित किया गया है? अब मैं यह समझ गया हूँ और जान गया हूँ, जैसा कि आप भी जानते हैं, 'क्लान' का केवल एक ही उद्देश्य है,—दक्षिण में लोकशाही को नष्ट कर देना, स्वतंत्र किसान को मार डालना और इस काम से गोरों और कालों में फूट पैदा करना; ताकि काला आदमी चपरासी बन जाय—ठीक उसी तरह का ग़ुलाम जैसा कि युद्ध के पहले था। और चूँकि वह ग़ुलाम है, चाहे ज़ाहिरी तौर पर न सही, पर असलियत में तो ऐसा ही होगा और फिर गेहूँ के साथ घुन भी पिसेगा—ग़रीब गोरे भी उसी में पिस जायेंगे। जैसा कि युद्ध के पहले था, इनमें से कुछ लोग बड़े और शक्तिशाली हो जायेंगे पर होंगे कुछ ही लोग। और हम सबके हिस्से आयेंगी—ग़रीबी, भूख और नफ़रत, जो कि सारे राष्ट्र के लिए एक रोग बन जायगी।

"यही पाप तो मैक्हफ़ ने कार्वेल में किया है। उसे इसलिए इतनी यातनाएँ दी गईं ताकि एब्नेर लेट, जैक हन्टर, फ्रैंक कैर्सन, लैज़ली कैर्सन, विली बून और हर गोरा जो यहाँ रहता है इससे सबक़ सीखे और अपनी-अपनी सही भूमिका अदा करे। अब फ़ैसला आप पर निर्भर है। अब हमारे पास यदि कोई मार्ग है तो यही कि कोई मार्ग नहीं। 'क्लान' में भर्ती हो जाओ, बिना किसी

विरोध के उनसे सहयोग करो और अपने आप को नष्ट कर डालो। आप उन लोगों से तो परिचित ही होंगे—वे गंदे, रोगी, पतित, बदमाश जो गुलामों का व्यापार करते थे, कारिंदे, जल्लाद, उनके पिछलग्गू, सटोरिये, जुआरी, धोखेबाज़, जिले के अधिकारी जो हाथों में बन्दूक लेकर तो वीर हो गए थे किन्तु युद्ध के मोर्चे पर जाने की वीरता उनमें न थी, जो अपनी मातृभूमि से प्यार करते थे और उसके लिए प्राण न्यौछावर कर देते थे। मुझे उनका वर्णन करने की आवश्यकता नहीं। जब उन्होंने सैली मैक्हफ़ को बिस्तरे पर से खींचा, हाथ बाँधकर लटका दिया और कोड़ों से मार-मार कर उसकी जान लेली तो उन्होंने खुद अपने आप अपने चरित्र का वर्णन कर दिया। वे इस भूमि के मैल, यहाँ की तलछट हैं। पर हमारे दक्षिणी प्रदेश में उन एक-एक पर सौ-सौ अच्छे आदमी भी हैं, लेकिन यह तलछट आज संगठित है और उम्दा, सुभासी अच्छे व्यक्ति संगठित नहीं। उनके पास रुपया है, उनके पास भाड़े के टट्टू हैं, जिनसे वे वाशिंगटन में अपनी वकालत करवा सकते हैं, उनके साथ धनी किसान भी हैं जो उनका नेतृत्व करते हैं और उन्हें बढ़ावा देते हैं। लेकिन हमारे पास इनमें से एक भी चीज़ नहीं और मैं अपने तरफ़ से परमात्मा का आभारी हूँ।

"आख़िर हम करेंगे क्या? मुझे मालूम है हमारे दोस्त एब्नेर लेट क्या करने वाले थे। वह चाहते थे कि बंदूक उठाएँ और जैसन ह्यूगर को खत्म कर दें। लेकिन यह सही तरीक़ा नहीं। अपने होश-हवास खो बैठना और जैसे वे हमारी हत्या करते हैं उसी प्रकार उनकी हत्या कर देना—यह कोई तरीक़ा नहीं।"

"तो फिर तरीक़ा क्या है, गिडियन?" एब्नेर लेट ने चिल्लाकर कहा! "तुम हमें यह क्यों नहीं बताते वाशिंगटन में क्या हुआ?"

"मैं बताऊँगा। वाशिंगटन में हमें बेच दिया गया। हमें रिपब्लिकन पार्टी द्वारा,—अपनी पार्टी, एब लिंकन की पार्टी द्वारा—हमें बेच दिया गया और उसकी क़ीमत थी अध्यक्षता। किसानों ने वह क़ीमत अदा की। और अब उसके बदले में हमें क्या मिलेगा? जब हेज़ अपनी कुर्सी सँभालेगा तो कोलंबिया से चार्लिस्टन और हर जगह से फौजें वापस बुला ली जायेंगी। और 'क्लान' ही का क़ानून यहाँ चलेगा।"

"तो तुम्हें यह मंज़ूर है?"

"हाँ, मुझे यह मंजूर है। मैंने कहा था न मैं आपसे सच बात कहूँगा। लेकिन अब हम करेंगे क्या? अपने होश-हवास खोदेंगे? हत्या करेंगे? अपने टुकड़े-टुकड़े करवादें? उनके करने से पहले ही उनका काम खुद शुरू करदें? क्या यही आप लोग चाहते हैं?" गिडियन कुछ रुका और उनकी ओर घूर कर देखने लगा। "क्या यही आप चाहते हैं?" उसने दुहराया। और अगर "आप यही चाहते हैं तो फिर मेरा यहाँ कोई काम नहीं,—मैं चला जाऊँगा।"

कुछ क्षण एक लंबी खामोशी रही, फिर फ्रैंक कैर्सन ने कहा, "कहो गिडियन, तुम क्या सोचते हो?"

"अच्छा तो फिर यह याद रखो कि हम अभी भी शक्तिशाली हैं। यहाँ इस कमरे में हम ५० लोग बैठे हैं। हमारे पास शस्त्र हैं, हमारे पास गोला-बारूद है, हमने साथ-साथ परेड की है और काम किया है। मैं समझता हूँ अगर हम अपने होश-हवास बरकरार रखें तो हम अपनी रक्षा कर सकते हैं। लेकिन सिर्फ रक्षा से ही काम नहीं चलेगा, शानदार पराजय भी काम न आयगी। हमें दूसरों को अपने साथ लाना है, उनका संगठन करना है—दक्षिण भर में हम जैसे हजारों और भी हैं। मैं चार्लस्टन जाकर फ्रैंसिस कार्डोजो और दूसरे हब्शी-नेताओं से मिलने का कार्यक्रम बना चुका हूँ। एण्डर्सन क्ले और एर्नल्ड मर्फी वगैरह गोरे भी वहीं होंगे। शायद एक साथ सर जोड़कर हम उनका अनुमान लगाने की कोई तदबीर सोच सकें। मैं आपसे कोई वादा नहीं करता हूँ; मुझे बहुत आशा भी नहीं है। पता नहीं—लेकिन फिर भी मुझे प्रयत्न करने दीजिए। उसके बाद दूसरी बातों के लिए भी समय होगा। पहले मुझे यह कोशिश करने दीजिए। जैसन ह्यूगर को भी जिंदा ही रहने दीजिये, उसे मार डालने से स्थिति में कोई परिवर्तन नहीं आ जायगा। अगर आप मुझे अवसर दें..."

लोग बैठे रहे और कुछ ने सिर हिलाया। "ठीक है," एब्नेर लैट ने नर्मी से कहा "करो कोशिश।"

एलेन रात भर न सो सकी, सारी रात वह दीवार से लगी हुई मैक्हफ की नर्म और पशुओं जैसी कराहट सुनती रही। उसका शरीर, आवाज और उस पर किये गये अत्याचार की वह स्मृति उसमें जागने लगी, जिसे वह भूल जाना चाहती थी।

उसे जंगलों में छिपना और मौत व चीख-पुकार याद आने लगी। वह लरजती हुई वहीं पड़ी रही और कराहट सुनती रही, आखिर जब उससे न सहा गया तो उसने जेफ़ को जगा लिया। जेफ़ ने पूछा। "क्या हुआ, क्या है प्यारी?"

"मुझे डर लगाता है।"

"डरने की कोई बात नहीं।"

"मुझे डर लग रहा है—"उसने जेफ़ के शरीर को अपने हाथों से महसूस किया। उसकी मजबूत गठी हुई रानें, उसका चौड़ा सीना, चिकनी और ढीली पेशियाँ, जिनकी तहें उसके सारे जिस्म पर थीं, उसकी गर्दन, ठोड़ी, आँखें, मुँह—इस सबको उसने महसूस किया। रात के समय अंधकार में वह और जेफ़ दोनो एक ही हो जाते थे, वह उससे लिपट गई और घबराकर कहने लगी, "जेफ़, जेफ़, जेफ़!"

"देखो, मैं यहीं हूँ एलेन! मैं हमेशा यहीं रहूँगा।"

लेकिन वह अपना शक न दूर कर सकी, और वहीं पड़ी हुई उन चुभने वाली दुःखप्रद कराहों को सुनती रही। अकस्मात् ही अंधकार घना हो गया और वह उसमें घिर गई। यह अंधकार का वह कुँआ था जिसमें लोग जाते थे और बाहर से आ जाते थे। वे सब परछाइयाँ जिनमें एलेन्बी और दूसरे सब आ जा रहे थे। वह जेफ़ से सटकर लेट गई और अपनी पूरी शक्ति से उससे लिपट गई, परन्तु उससे कोई लाभ न हुआ।

कार्डोजो ने गिडियन से कहा, "मैं तुम्हारे निष्कर्षों के सत्य से इंकार नहीं करता पर उस नाटकीय अंदाज़ पर मुझे एतराज है जिससे तुम ये सब पेश कर रहे हो।"

"मुझे भावों व हवाई बातों से कुछ नहीं करना है, बल्कि इस अंदाज से ही तो मेरा संबन्ध है। और यह अन्दाज़ ही तो है जिसके बूते पर मैं जी रहा हूँ।"

एण्डर्सन क्ले ने कहा, "बहुत अच्छे, मैं भी गिडियन से सहमत हूँ।"

पाँच हब्शी और तीन गोरे वे आठों कार्डोजो के कमरे में बैठे हुए थे। उनमें से चार तो दक्षिण कैरोलिना से आये थे, एक जॉर्जिया से, दो ल्यूसियाना से और एक फ्लोरिडा से। वे लगभग तीन घण्टों से बातें कर रहे थे, पर अब तक किसी निष्कर्ष पर न पहुँचे थे। उनमें से कुछ बड़े लड़ाकू थे और कुछ भयभीत।

उनमें-से-कम से कम आधे लोग तो ऐसे थे जो शब्दों की शरण लेकर क्षणिक अवसर से लाभ उठा रहे थे।

वे कभी-कभी गोलमाल बातें करते थे; अपनी सफलताओं का अनुमान लगाते थे कि उन्होंने क्या प्राप्त किया है, क्या लाभ हुआ है, क्या किया है,—और आखिर गिडियन ने तंग आकर उन्हें फटकारा :

"खत्म करो ये बातें, मैं कहता हूँ। यह सब बीती हुई बातें हैं जो खत्म हो गई हैं। आज इनका कोई अर्थ नहीं।

"लेकिन रेकार्ड, दर्जनों हब्शी और ग़रीब गोरे सभा में हैं, सिनेट में हैं, रियासती सरकारों में हैं और गवर्नर भी हैं—"

"मैं कहता हूँ यह सब बीती हुई बातें हैं," गिडियन ने कहा। "किस तरह ?" कार्डोजो ने शांति पूर्वक पूछा, उसकी न्याय प्रद शांत ध्वनि से अनुचित बात भी उचित जान पड़ती थी। "गिडियन जानते हो मुझसे ज्यादा सम्मान तुम्हें और कोई नहीं देता; लेकिन क्या तुम्हारे निष्कर्ष, चाहे उनका कितना ही महत्त्व क्यों न हो, प्रयोगात्मक नहीं हैं ?"

"क्योंकि किसी व्यक्ति को यहाँ पीटा गया, वहाँ मारा गया, या धमकाया गया, क्योंकि सिनेटर होम्स ने मुझ पर विश्वास किया तो क्या मैं परिणामों की आशा न करूँ ? क्या आपका मतलब यही है ? क्या मैं कोई डराने वाला हूँ ?"

"हाँ, एक हद तक।"

फिर भी फ्रांसिस तुम गये साल तक खज़ांची थे, लेकिन अब नहीं। आखिर वे कौन सी शक्तियाँ थीं जो इसके पीछे कार्य कर रही थीं ? अगर मैं फिर कहूँ कि मैं सभा में बैठने न दिया जाऊँगा तो क्या आप उसकी परीक्षा करेंगे ? क्या मैं अपनी नाक से परे की चीजें अनदेखी करदूँ ? और यदि ऐसा होता तो फ्रांसिस मैं आज भी गुलाम ही रहता और ४० लाख दूसरे हब्शी भी गुलाम ही रहते।"

कप्ता, बूढ़ा हब्शी, जो किसी समय फ़्लोरिडा से सभा का प्रतिनिधि था कहने लगा, "गिडियन, तुम्हारी व्यक्तिगत प्रामाणिकता पर किसी को अविश्वास नहीं है।"

"अपनी व्यक्तिगत प्रामाणिकता की मैं कौड़ी भर परवाह नहीं करता।"

"लेकिन गिडियन तुमने तो हमसे कहा कि रिपब्लिकन पार्टी ने चुनाव

जीतने के लिए पुर्ननिर्माण का सौदा कर लिया है। पार्टी हम हैं, और हमने पार्टी को अपनी जिंदगियाँ समर्पित कर दी हैं। पार्टी ने ही हमारे लिए संघर्ष किया और हमें स्वतंत्रता दी। तुम्हारे पास कोई प्रमाण नहीं है, तुम कहते हो कि दस दिन के अन्दर दक्षिण से फौजें हटाली जायेंगी—लेकिन इस बात का तुम्हारे पास सबूत क्या है ? तुम कहते हो कि आतंक फैलाया जायगा और हमने जो कुछ निर्माण किया है वह नष्ट कर दिया जायगा। लेकिन इसका सबूत क्या है ?"

"नष्ट किया जा रहा है," गिडियन ने थकावट भरे स्वर में कहा। "अपने आस-पास नजरें दौड़ाकर ज़रा देखो। इस रेल पर कोई हब्शी नहीं है। बेंचों पर हब्शी नहीं है, सिर्फ गोरे ही गोरे हैं हर जगह,—इस स्कूल में कोई हब्शी नहीं है; हम ही ने यह स्कूल बनाया था लेकिन हमारे ही बच्चे इसमें नहीं पढ़ सकते; अदालत में कोई हब्शी जज नहीं है; क्योंकि प्रतिवादी का वकील आपत्ति करता है। गये साल जज एक काला आदमी था, एक ग़रीब गोरा—और आज साहूकार या उसका गुर्गा वकील के एतराज का समर्थन भी करता है। हब्शी पर मुक़दमा तो चल सकता है पर उसके साथ न्याय करने वाला कोई मुंसिफ़ अदालत में नहीं।"

"मैं यह सब समझता हूँ," कार्डोज़ो ने सिर हिलाया। "दर असल हमसे जबरदस्ती समझौता करवाया गया है—"

"इसे समझौता कहते हैं ?" एण्डर्सन क्लें मुस्कराया। "क्या तुम उस हवा से भी समझौता करते हो फ्रांसिस, जिसमें साँस लेते हो ? उस खाने से दोस्ती करते हो जो खाते हो ? ये चीजें हमारी जिंदगी का खून, हड्डियाँ और पेशियाँ हैं। तुम उस कुतिया के पिल्ले से समझौता नहीं कर सकते, जो तुम्हारा खून चूसना चाहता है !"

"तुम तो गोरों की बातें कर रहे हो। ज़रा किसी काले से तो पूछो—"

"गोली मारो उसे, मैं तो ऊब गया यह सब सुनते-सुनते। हमें जो कुछ मिला है इसीलिए कि गोरे-काले कंधे-से-कंधा मिला कर उसके लिए लड़े हैं, उनमें एकता रही है। गिडियन ठीक कहते हैं, जिस तरह तुम सोच रहे हो

अगर उस पर अमल किया और हम अलग हो गये,—तो समझलो हमारी मौत आगई।''

एवल्स ने जो तीन वर्ष पहले स्टेट का सेक्रेटरी था, गिडियन से पूछा, "लेकिन तुमने जो कहा है तो आखिर पार्टी ने हमें इस बार वेत्र क्यों दिया ? उसे उससे क्या फायदा होता था ?''

"इसलिए कि हम अपने उद्देश्य में सफल हुए, हमने बड़े काश्तकारों की कमरें तोड़ दीं। गत आठ वर्षों में यह औद्योगिक राष्ट्र बन गया. दुनिया की सबसे बड़ी मीशन में परिर्तन हो गया। उत्तरी प्रदेश में पश्चिम और दक्षिण पश्चिम मिल चुके हैं, यहाँ दक्षिण में अब मिलें खुलने लगी हैं। अगर बड़े काश्तकार अपने गुलामों को फिर से रखलें तो कोई हर्ज नहीं है— उत्तरी प्रदेश सुरक्षित रहेगा !''

"और जनता की पार्टी—''

"जनता की आज कोई पार्टी नहीं है।'' क्लें ने गुर्राकर कहा।

कार्डोजो ने थके स्वर में कहा, "फिर भी जो तुम माँग रहे हो, वह तो तुम्हें नहीं मिल सकता, गिडियन ! तुम्हारा मतलब है हब्शियों और ग़रीब गोरों की सेना को जबकि उसे खत्म कर दिया गया है, फिर से संगठित कर लें—यह कैसे हो सकता है ? कानून की खिलाफवर्ज़ी करके ?''

"जनता क़ानून है।''

"गिडियन, यह तो बहुत पुराना ख्याल है, मैं तुमसे इसकी आशा नहीं करता। जनता तो क़ानून एक सही तरीके से ही बना सकती है ना !''

"वह तरीक़ा जिसने विधान में जनता को यह अधिकार दिया है कि वह शस्त्र रख सकती है, अपनी सेना रख सकती है।''

"हम इस मामले को सुप्रीम कोर्ट तक ले जा सकते हैं, लेकिन उसमें कई महीने लग जायेंगे। आपका सुझाव है कि दक्षिण में जितनी शक्तियाँ भी पुनर्निर्माण के हक़ में हैं उन्हें एक करके एक परिषद् बनाई जाय—लेकिन गिडियन, वह तो हिंसा व ध्वंस को ही बढ़ावा देगा।''

"अच्छा, यानी अगर हम अपनी सुरक्षार्थ आवाज उठायेंगे तो उससे हिंसा,

को बढ़ावा मिलेगा ?"

"जी हाँ।"

गिडियन ने कहा, "और अगर ऐलान करने के बावजूद हिंसा हुई तो, जैसी कि अब तक होती रही है ?"

एब्ल्स ने अपना सिर हिलाया। "पर इससे फायदा क्या है, जैक्सन ?" यह तो हम बार-बार सोचते ही रहे हैं और दोहराते रहे हैं।"

"क्या आप सब लोगों का यही विचार है ?" गिडियन ने पूछा। वह अब थक चुका था। किसी भी चीज़ को शुरू करते हैं तो वह कहीं खत्म भी होती ही है और यही उसका खात्मा था। "क्या यही इस बहस का अंत है, साहिबान ? एक तरफ तो हमारे देश के सारे अखबार हमारे खिलाफ़ झूठा प्रचार करते हैं, सुनहले उगालदानों में हम थूकते हैं, लाखों डालर हमारी धारा सभा की दीवारों को शीशों और मुलम्मों से सजाने में खर्च किये जाते हैं। हमने इस बेबस ज़मीन को चूस लिया है। हमने दक्षिणी प्रदेश का पुरुषत्व और स्त्रीत्व दूषित कर दिया है और हम क़ालीन बुनकरों, दुष्ट धनोन्मत्त यैंकियों के इशारों पर चलते हैं—यही सब मैं अखबारों में पढ़ता हूँ। एक तरफ तो यह हो रहा है सज्जनो ! और दूसरी ओर आप और हम यहाँ बैठे हैं और आप मुझ से कहते हैं कि हम अपनी सुरक्षा के लिए भी आवाज़ न उठायें और यह हमारा दक्षिणी प्रदेश जो दो बार उनके प्रकोप का शिकार हो चुका है, इसमें एकता स्थापित करने की भी कोशिश न करें। मुझे अपने देश से प्रेम है महाशयो, मैं इस प्रकार की बातें भी यहाँ नहीं करना चाहता था, लेकिन मुझे विवश होना पड़ा। मुझे अपने देश से प्यार है क्योंकि यह मेरा अपना देश है; क्योंकि इसने मेरा कल्याण किया है, मुझे गौरव, साहस और आशा प्रदान की है। क्या मैं इस विचार का अकेला ही व्यक्ति हूँ, महानुभावो ?"

वे खामोश बैठे रहे; कुछ फर्श की ओर घूरते रहे; कुछ अनिश्चितता के साथ गिडियन की ओर देखते रहे। एण्डर्सन क्लै किंचित मुस्कराया।

"तो क्या आप सब मिस्टर एबल्स से सहमत हैं ?"

अब भी सब खामोश रहे।

"और अजीब बात तो यह है," गिडियन ने शान्तिपूर्वक कहा, "कि जिन चीज़ों से आज आप चिपके हुए हैं वे भी भुला दी जायेंगी। जो काले आदमी सभा में बैठे, सिनेट में गये, वे सब भुला दिये जायेंगे। वे सब काले आदमी जिन्होंने मदरसे बनाये, अदालतें क़ायम कीं, सब भुला दिए जायेंगे, मेरे दोस्त! हमारी मानवीयता खत्म हो जायगी। वे हमें उस समय तक कुचलते रहेंगे जब तक कि हममें इंसानियत बाक़ी रहेगी, जब तक कि हम ग़ोरों से उतनी ही नफ़रत नहीं करेंगे जितनी कि वे हमसे करते हैं। वे हमें यातनाएँ देंगे, हमे नीचा दिखाएँगे और हमें उस हद तक गिरा देंगे जिस हद तक दुनिया के कोई लोग नहीं गिरे हैं। लेकिन कब तक, दोस्त? तभी तक ना जब तक कि हम दोबारा सूर्य का प्रकाश देखेंगे? कब तक? अपने आप से ही पूछिये।"

गिडियन ने एण्डर्सन क्ले से कहा है,"आओ चलें, ज़रा जेफ़ से मिल लो। वे चार्ल्सटन की सूर्य से प्रकाशित, शान्त और सफ़ेद दीवारोंवाली गलियों में साथ-साथ चलते रहे। यह बसंत का वह सुहाना दिन था कि गिडियन को अपने पहले के क़याम की याद आ गई, जब बरसों पहले वह इस शहर में आया था। खजूर के वृक्षों पर नव बसन्त के स्वच्छ हरे पत्ते अपनी छतरियाँ फैलाये हुए थे। पक्षी चह-चहा रहे थे और अपने चमकीले पंख फड़फड़ा रहे थे। आकाश हल्का नीला-सा था और उसमें कहीं-कहीं कोहरे की धारियाँ पड़ी हुई थीं। वही चीजें जिन्हें गिडियन बरसों से देखता चला आया था अब भी जानी-पहचानी लग रही थीं और यह जान-पहचान उसके अँधियारे विचार-वातावरण में प्रकाश की किरण थी। शहर इतना गम्भीर, इतना सुन्दर और इतना सुसभ्य प्रतीत हो रहा था कि किसी विरोध अथवा दबाव से नहीं बल्कि, अपनी सादगी और वास्तविकता द्वारा उसे पुनः आश्वासन दिला रहा था।

एण्डर्सन क्ले ने कहा, "मैंने सोचा था कि कभी यहाँ भी रहूँगा।"

"यह जगह है बढ़िया रहने के लिए।"

क्ले ने ज़रा मुस्कराते हुए कहा, "जानते हो गिडियन एक तरफ़ से तुम ग़लती पर थे और वे ठीक ही कह रहे थे। वे तो ज़िंदा रहेंगे ही, लेकिन तुम··"

"हाँ, वे ज़िंदा रहेंगे और धीरे-धीरे उनमें परिवर्तन भी आयगा," गिडियन ने

सोचकर जवाब दिया। "हर साल उनका जोर बढ़ता जायगा, आज एक चीज़ छीनेंगे तो कल दूसरी की बारी आयगी। उनको पता भी न चलेगा। क्या यही सबसे अच्छा तरीका है?"

"नहीं, मैं इसे सबसे अच्छा तरीका नहीं समझता।"

"लेकिन तुम समझते थे कि यह तो शुरू से ही बेकार है?"

"देखो गिडियन, हम उसके बारे में जानते नहीं थे। हमने जो शुरूआत की थी वह तो नहीं के बराबर थी और इसलिए हम अँधेरे में रास्ता टटोलते रहे। हमारा तो बस एक ही ख्याल था कि स्कूल, अदालतें, अस्पताल, सड़कों वगैरह का निर्माण करें और साथ ही जनता को भी शिक्षित करें, उन्हें नये साँचे में ढालें। हो सकता है तुम यह कहो कि हम सब-के-सब—तुम्हारे लोग और मेरे सब भावी स्वतंत्रता को देखकर पागल-से हो गये और यह समझ बैठे कि हमारा मुक्ति-मार्ग हमेशा-हमेशा के लिए खुला रहेगा। क्योंकि उनकी जो योजना थी या विचार था वह था निर्माण-कार्य। जबकि दूसरों का मन्सूबा था ध्वंस और नाश, इसलिए उन्होंने उनके लिए संगठन किया। और दस दिन या एक साल संगठन के लिए कोई बड़ा भारी समय नहीं है गिडियन!"

"तो फिर क्या होना चाहिए?"

"क्या, क्या, हम लड़ेंगे," क्लै ने कंधे सिकोड़े। "हम लड़ेंगे क्योंकि हमें पहले भी इसके लिए लड़ना पड़ा है, क्यों कि हमें लड़ने और जद्दोजहद करने के लिए ही शिक्षित किया गया है। वे भी इस बात को समझ चुके हैं। हमें अकेले ही लड़ना होगा।"

जेफ़ तोपखाने के पास बैठा हुआ उनकी प्रतीक्षा कर रहा था। गिडियन ने कहा, "यह है मेरा बेटा, डॉक्टर जैक्सन! जेफ़ यह हैं एण्डर्सन क्लै, मेरे पुराने अज़ीज़ दोस्त।" जेफ़ ने इस ऊँचे गोरे आदमी से हाथ मिलाया।

"मैंने सुना है, डॉक्टर साहब आप चार्ल्सटन में सामान वगैरह खरीदने आये हैं।"

"हम कार्वेल में एक छोटा सा अस्पताल बना रहे हैं।

क्लै ने कहा, "अगले साल मेरा कार्वेल आने का इरादा है।"

"वह तो तुम आज नौ बरस से कहते आ रहे हो," गिडियन ने मुस्कराते हुए कहा। "हर साल कहते हो अगले साल आऊँगा।"

"हाँ, लेकिन अब अगले बरस ज़रूर आऊँगा।" वे समुद्र के किनारे की ओर घूमे और धीरे-धीरे चलते रहे। क्ले और जेफ़ ने स्कॉटलैण्ड की दवाइयों और राज्य में अस्पताल के लिए काफी सहूलियतों की कमी के बारे में बातचीत की। "कुछ मुहलत दो बेटे, सब हो जायगा।" क्ले ने कहा।

"बड़े काश्तकारों के कार्वेल में जो ये बड़ी-बड़ी आलीशान कोठियाँ हैं," जेफ़ ने कहा, "वे यों ही खाली पड़ी हुई हैं, कोई उनका उपयोग नहीं करता—और वे अस्पताल के लिए बिल्कुल ठीक हैं, गाँव में अस्पताल कम-से-कम इतना बड़ा और साफ़-सुथरा तो होना ही चाहिए।"

गिडियन ने एण्डर्सन क्ले की ओर देखा।

"राजनीतिज्ञ तो इससे भी बदतर चीज़ें कर सकते हैं," जेफ़ ने कहा।

"हाँ, कर सकते हैं," क्ले ने सिर हिलाया। "मैंने सुना है तुम्हारी हाल ही में शादी हुई है। मुबारक हो!"

"धन्यवाद," जेफ़ ने कहा। और क्षण भर बाद, बोला, "अजीब बात है मुझे आप की सभा के बारे में तो कुछ पता ही नहीं—और शायद मुझे उसकी अधिक चिंता भी नहीं है। हम तो, आप जानते ही हैं, किसी-न-किसी तरह काम चला रहे हैं। वह आदमी जिसने 'व्हाइट हाउस' में रहने के लिए अपनी आत्मा बेच दी हो, कोई परिवर्तन नहीं कर सकता।"

वे धीरे-धीरे चलते रहे। अस्त होते हुए सूर्य ने खाड़ी के पानी में बदलते हुए रंग की चमक पैदा कर दी थी। समुद्री पक्षी पानी में गिरते और विजयी हो निकल रहे थे। रेल की पटरी पर एक जगह जहाँ प्रवेश निषिद्ध था, एक छोटी-सी पट्टी पर लिखा था, "केवल गोरों के लिए।" एक स्टीमर धुआँ उड़ाता हुआ बन्दरगाह में दाखिल हो रहा था। किनारे-किनारे एक छोटी नाव तैर रही थी जिसमें कुछ लड़कों का एक गिरोह खिल-खिला कर हँस रहा था। करीब से ही एक गाड़ी घड़-घड़ाती हुई गुज़र गई। सड़क के उस पार तार से घिरा हुआ, घास से भरा मैदान था जहाँ दो बच्चे रस्सी पर कूद कर खेल रहे थे।

कई वर्ष के बाद आज पहली बार गिडियन को अचानक ही कार्वेल में सब कुछ स्थिर व गतिहीन दिखाई पड़ा। गिडियन के वापस आने के दो दिन बाद जब भाई पीटर उससे मिलने आये तो वह अपनी ड्योढ़ी के सहारे बैठा था। उसके घुटनों पर बाहें धरी थीं और हाथ ठोड़ी पर रखे हुए थे। "घण्टों से ऐसे ही नीचे बैठे हुए हैं," मार्कस ने कहा। गिडियन ने कहा, "ईवनिंग, भाई पीटर!"

"हूँ।"

भाई पीटर अपने काले कोट के दामन फैला कर उसके पास ही बैठ गये। उन्होंने अपने हाथ का बेंत जो वह हाल ही में इस्तेमाल करने लगे थे, ड्योढ़ी के सहारे रख दिया और अपना ऊँचा काला हैट पास ही रख लिया। फिर साँसें खींचते हुए उन्होंने अपने पैर फैलाये और कहा, "बड़ा लंबा रास्ता है। और अब मुझ में वह फुर्ती भी नहीं है जो पहले कभी थी।

"नहीं है?"

"नहीं, वह फुर्ती कहाँ, गिडियन!"

गिडियन ने उत्तर नहीं दिया। रैचल बाहर ड्योढ़ी में आ गई और भाई पीटर उठने लगे। "नहीं, नहीं आप वहीं बैठे रहिए। बड़ी खुशी हुई आप पधारे।"

"धन्यवाद, बहन!"

"रात को खाना यहीं खाइएगा ना?"

"हाँ, चलो, यहीं खालूँगा। कोई खास एतराज़ भी नहीं है, धन्यवाद।" भाई पीटर ने कहा। रैचल ने गिडियन पर नज़र डाली, वह अभी वैसे ही बैठा हुआ था, उसने घूमकर भी न देखा और भाई पीटर ने सिर हिलाकर संकेत किया। रैचल क्षण भर वहाँ खड़ी रही और फिर घर में चली गई। भाई पीटर ड्योढ़ी के किनारे फिर बैठ गए। "रैचल बहन बड़ी अच्छी स्त्री है। उसका पकाया भोजन खाकर और उसके साथ मेज़ पर बैठकर बड़ी खुशी होती है। जब तुम वाशिंगटन में थे ना गिडियन, तो मुझे ये चीजें बहुत याद आती थीं।"

"हाँ।"

एक क्षण बाद भाई पीटर ने फिर कहना जारी किया। "क्या तुम बातें करके किसी का भला कर सकते हो? बातों से कोई भी कुछ भला कर सकता है, चाहे

उसका बातें करते-करते पित्ता ही क्यों न पानी-पानी हो जाय, लेकिन वह यह निश्चित रूप से कर सकता है। क्या चार्ल्सटन में बातें-ही-बातें होकर रह गईं ?"

"हाँ, कुछ-कुछ ऐसा ही हो गया।"

"तो फिर क्या होगा अब, गिडियन ! यह तो बहुत बुरी बात है। खुदा देता है और खुदा ही वापस भी ले लेता है। उसके यहाँ न्याय होता है जो सब पर बराबर लागू होता है। पर तुम्हें तो आस्था ही नहीं, क्यों गिडियन ?"

कुछ मुस्कराहट के साथ गिडियन ने कहा, "काश यही संतोष होता।"

"तो फिर यह कैसे होता है कि इन्सान ज़रा से बच्चे की शक्ल में संसार में नंगा आता है और नंगा ही वापस जाता है। और यही न्याय है, यही इसका प्रमाण भी। मैं खुदा के बारे में कुछ नहीं कह रहा हूँ; क्योंकि मैंने तो बरसों पहले यह जान लिया था कि अब तुम्हें ईश्वर पर विश्वास नहीं। तुम बहुत बड़ी शक्ति के मालिक हो और हो सकता है गिडियन यदि ईश्वर में आस्था रखो तो वह शक्ति और भी बढ़ जाय। अच्छा, तो मैं तुमसे इन्सान के बारे में ही बातें कर लूँ। ज़रा देर के लिए खुदा को एक तरफ रख दें, उसे तो इसका बुरा नहीं लगेगा कि हम उसे छोड़कर इन्सानों की बात क्यों कर रहे हैं। तुम्हारी मनुष्यों में तो आस्था है ?"

"हाँ उनमें है।"

"अच्छा गिडियन !"

गिडियन ने कुछ सोचते हुए बूढ़े की ओर देखा। भाई पीटर ने अपने ऊँचे काले हैट पर से धूल झाड़ी। यह हैट चार वर्ष पहले एक धार्मिक समारोह में उन्हें उपहार स्वरूप मिला था और तब से उन्होंने उसे पार्टी के अलावा दिन-रात ओढ़ा है, लेकिन वह अब भी उतना ही अच्छा और नया है जितना पहले रहा था।

"मैं समझता हूँ इन्सानों पर मुझे विश्वास है," गिडियन ने कहा। "मैं नहीं जानता ....."

"यह कैसे हो सकता है कि तुम उसके बारे में कुछ जानो ही नहीं। हो सकता है किसी मनुष्य के कंधों पर पाप का भार पड़ा हुआ है लेकिन यह कैसे हो जाता है कि हब्शी आज जो गुलाम है और कल वह आज़ाद हो जायगा ?"

"और फिर गुलाम बन जायगा," गिडियन ने कहा।

"क्या तुम्हारा ऐसा ख्याल है ? कल्पना करो गिडियन कि हम सब यहीं मर जायँ, क्या तुम यह नहीं समझते कि किसी-न-किसी चीज़ का कोई ज़र्रा बच जायगा, एक छोटा-सा ज़र्रा जो पहले से ज़रा ज़्यादा बड़ा होगा। तुम समझते हो हमारे कोई 'हालेलुजाह' गीत फिर कभी गाये ही नहीं जायेंगे ?"

गिडियन ने कुछ भी नहीं कहा, शाम ढल गई और सूर्य डूब गया। मार्कस आया, उसने उन्हें देखा और घर में दाखिल हो गया। अन्त में गिडियन ने कहा, "खाने का समय हो गया, भाई पीटर !"

"हाँ, हाँ, हो तो गया है, सच कहता हूँ बूढ़ा हो गया हूँ लेकिन मेरी खुराक अब भी अच्छी है। घूमता हूँ ना, घूमने से भूख खूब लगती है। तुम चलो अन्दर, मैं अभी आया।"

गिडियन उठ कर घर में चला गया। जेफ़ रसोई में लगे नल पर हाथ धोकर उठा ही था कि रैचल ने कहा, "भाई पीटर को भी बुलालो न गिडियन, वह भी तो खायेंगे।"

"हाँ, मालूम है।"

जेफ़ रसोई से बाहर आ गया। रैचल गिडियन की ओर घूमी, एक पल उसे देखा और फिर उसके पास चली गई।

"गिडियन ?"

"हाँ।"

रैचल ने क़रीब जाकर उसकी कमीज़ छूई और उसकी बाज़ू पर हाथ फेरा। "मैं सब कुछ बर्दाश्त कर सकती हूँ, गिडियन," उसने कोमल स्वर में कहा। "लेकिन तुम्हें उदास व व्याकुल नहीं देख सकती। मैं अब ज़्यादा कुछ तो नहीं कर सकती पर, तुम्हें व्यथित भी नहीं देख सकती।"

गिडियन ने उसे अपनी बाजुओं में लेकर भींचा और उस दबाव से रैचल की साँस फूल गई। उसने उसे बेताब हो रीछ की भाँति अपने सीने से चिपका लिया और रैचल के शब्द टूटे स्वर में ज़बान से निकल पड़े, "मैं यह नहीं देख सकती गिडियन, नहीं देख सकती—"

"रैचल, रैचल मेरी नन्हीं।"

"तुम मुस्कराओगे नहीं गिडियन? मुस्करा दो ना!"

वह मुस्करा दिया और वह भी बेताब हो उसके सीने से चिपकी रही। उसकी उँगलियाँ गिडियन की कमीज़ से खेलती रहीं।

अगले दिन सुबह गिडियन, जेफ़ और एलेन के साथ खड़ा हुआ हैनिबाल वाशिंगटन को नये मकान की चिमनी बनाते हुए देख रहा था कि उस तरफ़ से एब्नेर लेट गुज़रा। गाड़ी रोक कर वह नीचे उतरा और गिडियन के पास आकर खड़ा हो गया।

"यह राज-मज़दूर का काम तुमने कहाँ सीख लिया?" उसने हैनिबाल वाशिंगटन से पूछा।

"सीखता कहाँ से, अपने बाप से सीखा,—यह जो बड़ा मकान है उसकी सात चिमनियाँ उन्होंने ही बनाई थीं।"

"चल-चल, मुझे बनाने चला है।"

"हाँ हाँ भई," हैनिबाल वाशिंगटन ने कहा। "उन्होंने तो बनाई ही थीं ये, हाँ इन्हें हो भी काफी साल हो गये बने हुए।"

"यह बड़ा मकान बनवाया कब था उन्होंने?"

"पचास साल तो ज़रूर हो गये होंगे इसे बने।"

"यह तो मालूम होता है हमेशा से ही खड़ा है," एब्नेर ने कहा और गिडियन की आस्तीन पकड़ कर उसे बुलाया। गिडियन उसकी गाड़ी के पास तक गया और गोरे आदमी ने कहा, "मैं अभी-अभी शहर से आ रहा हूँ, गिडियन! लगता है तुम ठीक ही कह रहे थे। अध्यक्ष ने उस कुतिया के बच्चे साले बूढ़े खूसट वेड हैम्पटन से सौदा कर लिया। कोलम्बिया की फौजों को उन्होंने आर्डर भी देदिये हैं—दस अप्रेल को वे उत्तर की ओर प्रस्थान कर देंगी।"

"तुम्हें किसने बताया यह?"

"यह देखो, अखबार में लिखा है," एब्नेर ने कहा और गाड़ी में पहुँच कर अखबार निकाला और उसकी सुर्खी बताते हुए बोला; "**मुक्ति-संग्राम में दक्षिण की दूसरी विजय**।" यह रहा सारा क़िस्सा। शहर में हर जगह इसी की चर्चा

है। जैसन ह्यूगर फौजी लिबास पहने अकड़ता फिर रहा है। अब वे लोग कोलंबिया की विजय परेड में जाने वाले हैं। तुमने कहा था, झगड़ा मत करो, मैंने कोई झगड़ा नहीं किया, बस उस कुतिया के पिल्ले ह्यूगर की चालें ही देखता रहा। और खून के घूँट पीता रहा। वह लड़ेगा कहाँ ? आता क्या है उस साले को ? मैं सैकड़ों मैदानों में लड़ चुका हूँ, पर आज तक इस साले को कहीं नहीं देखा मैंने।"

गिडियन खबर पढ़ रहा था, जल्दी-जल्दी और घबराहट में पंक्तियाँ पढ़ रहा था—"गवर्नर से मित्रतापूर्ण क़रारनामे पर अध्यक्ष हेज़ ने उस आर्डर पर अपने हस्ताक्षर किये जिसके द्वारा दक्षिण में जनवाद और गृह-शासन स्थापित हो जायगा। अंतिम फेडरल सेनाएँ दस अप्रैल को वहाँ से हटाली जायेंगी—"

"अच्छी खासी पिकनिक होगी यह तो," एब्नेर लैट बड़बड़ाया।

"क्या ?"

"तुम तो जानते हो गिडियन, मेरे दादा तो पश्चिम की ओर चले जाते। बूढ़ा डान बून आया और उसने उनसे प्रार्थना की कि वह केण्टुक चले जायँ। नहीं, नहीं मेरे चालाक दादा ने कहा। खुदा करता वह चले जाते तो बड़ा ही अच्छा होता,—केण्टुक चले जाते और फिर इलिनाइस पहुँच जाते और फिर इस सारे मरदूद देश से बाहर चले जाते। काश, वह यहाँ से उस नीले प्रशान्त महा-सागर की ओर ही चले जाते, काश—"

"खामोश," गिडियन ने एलैन की ओर इशारा करते हुए कहा। हैनिबाल वाशिंगटन और जेफ़ उन दोनों की ओर देख रहे थे।

"अब तुम क्या करोगे, गिडियन ?"

"आज छः तारीख है ना ? हमारे पास चार दिन हैं। मैं कोलंबिया जाता हूँ। कह नहीं सकता वहाँ क्या करूँगा; पर कुछ-न-कुछ करने की कोशिश करूँगा।"

गिडियन ने कोलंबिया में सम्टर स्ट्रीट के वेस्टर्न यूनियन आफिस में तार लिखा और सामने के क्लर्क को थमा दिया। क्लर्क उन्नीस साल का

लड़का था, जिसका चेहरा मुहासों से भरा था। "ज़रा मुझे पढ़ कर सुना दीजिए," गिडियन ने कहा। लड़के ने उसकी ओर देखा और कुछ न बोला।

"मैंने कहा, कृपया इसे पढ़ दीजिए।"

लड़के ने पढ़ कर सुनाया।

"रुथरफोर्ड बी० हेज़,

ह्वाइट हाउस, वाशिंगटन डी० सी०।

श्रीमान् अध्यक्ष महोदय, मैं प्रार्थना करता हूँ कि कोलंबिया से अपनी फेडरल सेनाएँ वापस बुलाने की अपनी कार्यवाही रोक दें। हब्शियों और ग़रीब गोरों की सेना के उन्मूलन से पुनर्निर्माण की समर्थक शक्तियाँ फेडरल सुरक्षा पर ही निर्भर हो जायेगी। दंगों व आतंक की शंका है। यहाँ के देशभक्त रिपब्लिकन नागरिक यह नहीं समझ पा रहे हैं कि दक्षिणी प्रदेश से यूनियन के तमाम तत्त्व व प्रभाव क्यों उठाये जा रहे हैं। हम आपकी सहायता व सहानुभूति की माँग करते हैं।

गिडियन जैक्सन
दक्षिणी कैरोलिना का प्रतिनिधि"

"कितने पैसे लगेंगे इसके?" गिडियन ने पूछा।

लड़का पहले झिझका, फिर बोला, "दस डालर।"

गिडियन ने क्षण भर उसे देखा, डालर दिये और चला आया। लड़का ऑपरेटर के पास गया और अकड़ से कहने लगा, "ऐसा तो हब्शी मैंने देखा ही नहीं जिसे यह भी नहीं मालूम कि तार में क्या दाम लगते हैं।"

"अच्छा देख साले, अब जो तुझे डाँट न दिलवाऊँ तो कहना! क्या लिया उससे तूने?"

"दस।"

"अच्छा तो ला आधे, जल्दी कर, ला दे।" लड़के ने तार उसे दिया और आपरेटर उसे देखने लगा। उसने सीटी बजाई और कुछ सावधानी से पढ़ा। "किसने दिया है यह तुझे?"

"कोई बड़ा-सा हब्शी था।"

"अच्छा, देख इसे अब जज क्लेटन के पास लेजा। उनसे कहना कि वह बताएँ इसे भेजूँ या न भेजूँ। और वहाँ ज़रा अपनी कतरनी बंद रखना।"

कोई बीस मिनट में लड़का वापस आगया। "जज ने तार रख लिया और मुझे एक डालर देदिया।"

"तो अब बाँट लें इसे!"

"जज ने कहा हम इस पर चुप ही रहें वरना वह कारण समझ जायगा।"

तारघर से गिडियन कर्नल जे० एल० विलियम्स से मिलने गया जो यूनियन की सेनाओं का कमांडर था। उस दिन कर्नल व्यस्थ था; कोई डेढ़ घण्टे बाद गिडियन को अन्दर आने की इजाज़त मिली। तब उसने कहा, "प्रतिनिधि, क्षमा कीजियेगा आपको इतनी देर इन्तजार करना पड़ा। दक्षिण का प्रत्येक व्यक्ति आज मुझसे बातचीत करना चाहता है।"

"मुझे मालूम है," गिडियन ने सिर हिलाते हुए कहा। "मैं नहीं जानता मेरा मामला उनसे किस तरह भिन्न है। बहरहाल अध्यक्ष को जो मैंने तार किया है उसकी प्रतिलिपि यह है। जवाब आजकल में ही आजाय या दस दिन भी लग जायँ,—जब तक वह आये मेरी आपसे नम्र प्रार्थना है कि आप फौजें यहाँ से न भेजें।"

कर्नल ने तार पढ़ा और सिर हिला दिया। "मुझे आर्डर—"

"मैं जानता हूँ आपको आर्डर मिल चुके हैं, कर्नल," गिडियन ने कहा। "मैं कोई व्यक्तिगत स्वार्थ के लिए आपसे एहसान नहीं करवा रहा। यह हज़ारों लोगों की जिंदगी और मौत का सवाल है।"

"मैं कुछ नहीं कर सकता," कर्नल ने कहा। "मैं मजबूर हूँ।"

"आप जानते हैं अगर आपकी फौजें यहाँ से चली गईं तो उसके क्या परिणाम होंगे?"

"कुछ भी परिणाम क्यों न हों," कर्नल ने कहा, "मुझे तो अपने आर्डरों की तामील करना है। बेहतर हो यदि आप जिले के कमाण्डर जनरल हैम्पटन से इस बारे में बातचीत करें—"

"वह सब बेकार है," गिडियन ने कहा। "वह इसे नहीं मानेंगे। मैं जानता हूँ आर्डरों का क्या अर्थ है। मैं भी फौज में रह चुका हूँ, कर्नल!"

"मैं मजबूर हूँ।"

"आप यह समझते हैं कि अध्यक्ष इस तार को नजरअंदाज कर देंगे?"

"मेरा 'कोर्ट मार्शल' हो जायगा।"

"वाशिंगटन में मेरा कुछ प्रभाव है।"

"मैं मजबूर हूँ!" कर्नल ने बुलन्द आवाज़ में कहा। "मुझ पर विश्वास कीजिए साहब, चाहे मैं ऐसा करने की कितनी ही कोशिश करूँ लेकिन यह मेरे अख्तियार से बाहर है। क्या मेरे आँखें नहीं हैं? मैं फौजी आदमी हूँ, राजनीतिज्ञ नहीं!"

एक क्षण के लिए गिडियन स्थिर, व्यथित और आतंकित हो, खड़ा रहा; फिर उसने सिर हिलाते हुए कहा, "मुझे अफसोस है।"

"और मुझे भी," कर्नल बोला।

और फिर गिडियन चला गया।

वह दस तारीख तक कोलम्बिया में ही रहा और बार-बार तारघर जाता रहा। ९ वीं तारीख को उसने दूसरा तार भेजा। दसवीं को उसने फौजों को वापस जाते हुए देखा और वह भी कार्वेल लौट आया।

पन्द्रह अप्रैल के तीसरे पहर कार्वेल के लोगों ने किसी स्त्री की चीखों की आवाज़ सुनी। उसकी ज़ोर की चीख-पुकार और रोने को सुनकर लोग इधर-उधर से दौड़े हुए आगये। एक भयभीत लड़के ने, जो जंगल की ओर भागा जा रहा था, रोते हुए कहा, "घोड़ा आगया, वह वापस आ गया।" लोग इस लड़के-जुडीहेल के जो अपने बाप के खेत की ओर जा रहा था, पीछे हो लिए। उसका बाप जेक हेल एक हब्शी था, अच्छी तरह खेती करता था और कार्वेल में सब से ज्यादा पैदावार करता था और खूब नफा कमाता था। उन्होंने देखा कि उसकी पत्नी फ्रेनी हेल ज़ोर-ज़ोर से और पागलों की भाँति रो रही है। वहीं एक गाड़ी भी खड़ी थी जिसमें एक घोड़ा जुता हुआ था और जब उन्होंने उसके अन्दर की चीज़ें देखीं तो उससे मुँह फेर लिया।

घटना के विभिन्न अंशों को जोड़ कर उन्होंने कहानी बनाई। ज़ेकहेल अपने बच्चे के लिए जो अभी दस वर्ष का हुआ था नये जूते और कुछ चीज़ें खरीदने शहर गया था। जाहिर है कि लौटते वक्त वह आहिस्ता-आहिस्ता गाड़ी हाँकता आ रहा था और बसंत की इस सेपहर का आनन्द ले रहा था। खैर वह आदमी ही ऐसा दिलचस्प था कि जब कभी संभव होता और खासकर गर्मी के दिनों में अपने घोड़े को बड़े धीरे-धीरे चलाता था।

जब वह अपने गाँव लौट कर आरहा था तो कहीं किसी जगह पर कोई शख्स उसकी धीमी चलती हुई गाड़ी पर चढ़ गया और छोटी बंदूक से उसने ज़ेक के सिर पर दो गोलियाँ चलादीं। बंदूक की आवाज़ से घोड़ा आगे की ओर बिदक कर भागने लगा और ज़ेक हेल पीछे को गिर पड़ा। घोड़ा वहाँ से कार्वेल तक भागता चला आया और फ्रेनी हेल ने गाड़ी के अन्दर झाँक कर देखा कि नजदीक से मारी गई गोली से आदमी का क्या हो जाता है।

उन्होंने ज़ेक हेल को दफ़ना दिया और उसके बाद ६ वर्षों में पहली बार कार्वेल में रहने वाले लोग अपने कंधों पर बंदूकें लटकाये काम पर गये।

: १० :

१८७७ ई० का साल था, कार्वेल में १८ अप्रैल की सुबह का समय था। घाटियाँ कोहरे से ढँकी हुई थीं और सरो वृक्षों के जंगलों में कोहरा दूध की नाईं बह रहा था। चार शिकारी जो रात भर शिकार खेलते फिरे थे, देवदार के वृक्षों में से होते हुए थके-हारे लंबे-लंबे डग भरते हुए घरों को लौटे। बस्ती के मुर्गों की बुलन्द बाँगों ने उनका स्वागत किया और कौए उषा-आगमन से आनंदित हो काँव-काँव करते हुए बस्ती की ओर उड़ने लगे। फिर किसान उठकर दूध दुहने लगे और सुबह के अन्य काम करने लगे। काम करते समय हमेशा की भाँति आज भी उनके मस्तिष्क में रोज़मर्रा की ज़िंदगी के विचार घूमने लगे,—आज दिन साफ़ रहेगा या धुँधला, नेली अपनी बाल्टी को दूध से ऊपर तक भरेगी या नहीं जैसी कि सदा करती है; घाटी के उस पार का पागल कुत्ता भूँकने से बाज़ आयगा भी या नहीं, कौओं की काँव-काँव कितनी सुन्दर और सरल होती है, यह आवाज़ सर्वदा समान रहती है लेकिन प्रातःकाल यह न जाने क्यों सुन्दर प्रतीत होती है। सुबह के नाश्ते में सूअर का नमकीन गोश्त होगा, या मुर्गी के तले हुए चूज़े, क्या वह बेचारा बछड़ा इसी तरह से क़ै करता रहेगा? क्या उसकी पीठ में फिर गठिया हो जायगी?—इनमें से कोई भी प्रश्न पेचीदा और महत्त्व का नहीं है। फिर भी कोई एक भी ऐसा प्रश्न नहीं है जिसको बिल्कुल ही महत्त्वहीन समझ लिया जाय। सूर्य पहाड़ के माथे से उदय हुआ और प्रकाश यकायक एक शानदार ढंग से सर्वत्र फैल गया। पहाड़ी गाँवों में पहाड़ के एक ओर प्रकाश फैल जाता है, लेकिन दूसरी ओर अंधकार ही छाया रहता है। घाटियों का कोहरा दलदली प्रदेश के नमीपूर्ण वातावरण को छोड़कर हर जगह पिघलने के बाद ग़ायब हो जाता है। काले और भूरे साँप तथा समुद्री पशु धूप लेने के लिए बाहर निकल आते हैं। ख़रगोश घनी छाँव में छिप जाते हैं, गिलहरियाँ ऊपर-नीचे दौड़ने लगती हैं और हिरन घने जंगलों में विश्राम करने के लिए चले

जाते हैं।

कार्वेल में प्रातः के आवश्यक कार्यों से निवृत्त होने के उपरान्त लोग नाश्ते पर बैठ जाते थे। गरम केक, रोटियाँ, शीरा, ठण्डा मक्खन जिस पर पानी की बूँदें होती थीं, सूअर का गोश्त, भुना हुआ गोश्त, अण्डे, चूज़े या भुनी हुई मछली, मक्खन और दूध जिस पर बालाई जमी होती थी, दूध, भुने हुए आलू, भुनी हुई पीली दाल जिसको सुअर की चर्बी में पकाया जाता था—ये सब खाने बदलते हुए मिश्रण के साथ बारी-बारी से कार्वेल के नाश्ते में खाये जाते थे। और ऐसे लोगों के लिए जो पहले ही दो-तीन घण्टे काम कर चुके हों, नाश्ते की मात्रा कुछ ज़्यादा नहीं होती थी। स्कूल की घण्टी ने बच्चों को बुलाया और वे सड़क छोड़कर गलियों या खेतों के कम फासलेवाले रास्तों से होकर स्कूल जाने लगे। आठ बजे उनमें सजीवता आ जाती थी, खेतों से गुज़रते हुए वे एक दूसरे पर चीखते थे, पहाड़ पर दौड़ते समय शोर मचाते थे और देवदार के घने जंगलों से आते हुए मुर्गों की भाँति कुड़-कुड़ाने लगते थे। और रोज़-रोज़ उनकी, अविश्वसनीय, प्रचण्ड और अंधी जीवन-शक्ति को नियंत्रित करना विन्थ्रोप के लिए दुःसह हो गया था। वह खुद में साहस पैदा करने के लिए स्कूल की घण्टी बजाता था और बहुधा बड़ी गंभीरता के साथ कहता था कि सीधे-सादे शरीफ़ लड़कों को तो कोई भी व्यक्ति पढ़ा सकता है। उसने फ्रैंक कार्सन की सोलह-वर्षीया लड़की का विचार किया। वह अपनी गोल, साफ़ और नीली आँखों से बड़ी निर्भीकता के साथ दिन भर उसकी ओर देखती रहती थी। और उसने तमाम चीज़ों पर ग़ौर किया जो उसके मस्तिष्क में पैदा हो रही थीं। पादरियों की कांग्रेस के शिक्षा विभाग ने उसे कार्वेल भेज दिया था। वे कहते थे कि यह खुदा का काम है लेकिन कुछ महीने बाद ही उसकी समझ में यह बात अच्छी तरह आगई थी कि खुदा ने अपने इस फ़र्ज़ को दूसरों के सुपुर्द क्यों कर दिया है। और उसे अपने चंद अच्छे और मेहनती विद्यार्थियों को देखकर बड़ा संतोष और सुख प्राप्त होता था। इन अच्छे विद्यार्थियों में हैनिबाल वाशिंगटन का लड़का जेमो, एब्नेर लेट की लड़की और दो-चार और होंगे। आज वह ऊँची कक्षाओं में एमर्सन का पाठ शुरू करेगा। "इमर्सन," उसने अपने आप दोहराया। वह स्कूल के सामने खड़ा हुआ बच्चों

का कोलाहल सुन रहा थी, उसकी आँखें सूर्य से प्रकाशित खेतों और जंगलों के दृश्यों पर लगी हुई थीं। "इमर्सन," उसने दृढ़ता के साथ अपने आपसे कहा।

नाश्ते की मेज़ पर मार्कस से बातें करते हुए मौज में आकर गिडियन ने सोचा कि मनुष्य की प्रकृति में हर चीज़ को जानने और स्वीकार करने की क्षमता कितनी अधिक है। कितनी सुगमता से असाधारण और दुःखप्रद चीज़ साधारण और सरल बन जाती है और हम लगभग हर स्थिति में अपने सम्बन्धों का कितना पूर्ण मेल-जोल कायम कर लेते हैं। वह मार्कस से कह रहा था :

"मैं कपास की नहीं, बल्कि तम्बाकू की एक एकड़ ज़मीन बढ़ाऊँगा।" इस प्रकार वह रोज़-मर्रा की बातें कर रहा था, दरवाजे की चौखट से दो रायफलें टिकी हुई थीं और लोगों के काम पर जाने का इन्तज़ार था।

"यह तम्बाकू उपजाने की ज़मीन नहीं है।"

"फिर भी," गिडियन ने कहा, "हमारे यहाँ अच्छा-खासा पत्ता होता है। पीडमौंट या विर्जीनियाँ के जैसा तो अच्छा नहीं होता, यह मैं मानता हूँ, लेकिन ऐसा बुरा भी नहीं होता कि बाज़ार में न बिक सके। यह जो सिग्रेट नाम की चीज़ निकल आई है अब इसको लोग ज़्यादा पीने लगेंगे।"

"तम्बाकू मिट्टी के लिए हानिकारक है।"

"यों कपास से भी तो मिट्टी खराब हो जाती है। अगर बदलकर फसलें न बोई जायँ या फिर किसी साल ज़मीन को खाली छोड़कर आराम लेने का मौका न दिया जाय तो वह यों भी ख़राब हो जाती है। मैं तो यह बात कई वर्षों से कहता चला आ रहा हूँ।"

रैचल ने कहा, "यदि मेरे अधिकार की बात होती तो मैं अनाज बोती।"

"हम संग्रहकर्ता किसान थोड़े ही हैं।"

"क्या तुम वही करोगे जो तुम्हारे बाप-दादा करते आये थे?"

"मैं आज तीसरे पहर सामान ख़रीदने जाऊँगी," जेनी ने कहा।

"शहर से?"

"हाँ-हाँ।"

मार्कस ने अपना सिर हिलाया।

"क्यों ?"

"हफ़्ते के आखिर में कुछ लोग शहर जायेंगे, उनके साथ चली जाना," गिडियन ने उससे कहा।

"आज बड़ा अच्छा मौसम है।"

"लेकिन तुम यहीं रहो," मार्कस ने कहा।

"मैं कोई तुम्हारे हुक्म की पाबन्द नहीं हूँ। तुम्हारे कहने से यहाँ नहीं ठहरूँगी।"

"तुम यहीं ठहरोगी!"

जेनी सिसकियाँ भरकर रोने लगी। एलेन जेनी के समीप ही बैठी थी, वह उसका हाथ पकड़कर सहलाने लगी। गिडियन उठा और उसके बाद मार्कस भी उठ गया। कमरे से बाहर जाते समय गिडियन ने रायफ़लों की ओर देखा, कुछ हिचकिचाया और फिर रायफल उठाकर बाहर चला गया।

दस बजे जेफ़ मेरियन जेफर्सन के घर पहुँच गया। उसकी पत्नी लुइज़ी के हाथों पर जगह-जगह फुंसी-फोड़े हो गये थे; यह कोई ख़तरनाक बीमारी नहीं थी, लेकिन फुंसियों में खुजली और चलती थी, जिसके कारण वह रात-भर जागती रहती थी। जेफ़ ने उसे बताया कि फुंसियों का मरहम किस प्रकार बनाया जाता है, और फिर वह वक्त गुज़ारने के लिए मैरियन के साथ ड्यौढ़ी पर बैठ गया। लड़कपन में मैरियन को जेफ़ से बहुत मुहब्बत थी और अब डाक्टर की हैसियत से तो वह मैरियन को खुदा नज़र आने लगा था। वे अभी बातें कर ही रहे थे कि ट्रूपर अपने घर से दौड़ा हुआ आया। वह हाँफता-काँपता खड़ा हो गया और कहने लगा :

"जेफ़, मैंने अभी-अभी जैसन ह्यूगर और शेरिफ बेण्टले को तुम्हारे बाप के घर की ओर जाते हुए देखा है। मैंने ऊपर खड़े होकर शेरिफ की बग्घी को पहचान लिया और उसके साथ दूसरा आदमी ज़रूर जैसन ह्यूगर था।"

"लेकिन यह कोई घबराने की बात तो नहीं है," जेफ़ ने कहा।

"शायद हो, और न भी हो," मैरियन ने कहा। "हम क्यों न तुम्हारी गाड़ी में बैठकर उस तरफ ही चलें।" वह अपनी रायफल लेने के लिए अंदर

चला गया। उसकी पत्नी ने घबराकर पूछा, "क्या बात है ? आखिर तुम यह क्या करना चाहते हो ?"

"कुछ भी नहीं," उसने मुस्कराकर कहा, "अभी शेरिफ़ गिडियन की तरफ गया है और हम भी वहाँ मालूम करने जा रहे हैं कि क्या बात है।"

"कोई झगड़ा न कर बैठना, मैरियन ! मैं तो झगड़ों से तंग आ चुकी हूँ।"

"हाँ, तंग तो मैं भी आ गया हूँ," उसने धीमे स्वर में कहा, "लेकिन यह कोई झगड़े की बात नहीं है। फिर भी तुम ऐसा करो कि एब्नेर लेट के यहाँ चली जाओ और उससे कहो कि शेरिफ गिडियन के यहाँ गया है।"

नाश्ते से निपट चुकने के बाद मार्कस और गिडियन देवदार के एक लम्बे वृक्ष को काटने में लगे थे। सुबह की सर्दी में वे कोई ऐसा ही मेहनत का काम पसंद करते थे। कुल्हाड़ी चलाने से आदमी का क्रोध निर्जीव वस्तुओं पर उतर जाया करता है, जो बेचारी कोई मुक़बला नहीं कर सकतीं। देवदार के वृक्ष को गिराकर वे उसे बसंत और शरद् ऋतु तक पड़ा रहने देते थे और जब पेड़ सूख जाता तो उसकी फाड़ें काग़ज़ की भाँति जलती थीं। अब यह पेड़ गिरने ही वाला था, इसका तना डगमगाने लगा था कि इतने में मार्कस को शेरिफ की बग्घी दलदल की तरफ से जैक्सन के मकान की ओर जाती नज़र पड़ी। उसने अपनी कुल्हाड़ी पटक कर बग्घी की तरफ इशारा किया।

"कौन शेरिफ ?" गिडियन ने पूछा।

"बग्घी तो उसी की मालूम होती है। मैं जाकर देखता हूँ।"

गिडियन ने सिर हिलाकर सहमति प्रकट की। उन्होंने अपनी बंदूकें उठा लीं और तेज़ क़दम उठाते हुए घर की ओर रवाना होगये। जब पहाड़ी के एक किनारे ने घर को उनकी आँखों से ओझल कर दिया तो वे भागने लगे और हाँफते हुये बग्घी के पहुँचने से दो-तीन क्षण पहले ही घर पहुँच गये। जैसन ह्यूगर और शेरिफ साथ ही बैठे हुए थे, उनकी आस्तीनें कुहनियों तक चढ़ी हुई थीं दोनों के घुटनों में दुनाली बंदूकें रखी हुई थी और दोनों चमड़े की वास्कटें पहने थे और रैचल ड्योढ़ी में घबराई और भयभीत हो खड़ी हुई थी। गिडियन और मार्कस को देखकर उसने संतोष की साँस ली।

"मॉर्निंग, शेरिफ," गिडियन ने कहा। जेनी और एलैन भी ड्यौढ़ी में आकर रैचल के पीछे खड़ी हो गई। उनका शिकारी कुत्ता, फ्रैंकस मूर्खों की नाईं मार्कस पर भूँकने लगा और जब उसने देखा कि भूँकने का कोई असर नहीं हो रहा तो लेटकर खामोशी से देखने लगा। मार्कस बंदूक को कंधे से लगाये हुए सीधा और खामोश खड़ा था। और रैचल ही यह जानती थी कि वह एक बारूद का गोला है जो शांत होने पर भी कभी भी विस्फुटित हो सकता है। गिडियन की बंदूक की ओर इंगित करते हुए शेरिफ ने कहा :

"शिकार को जा रहे हो, गिडियन ?"

"हाँ यही समझ लो !" मार्कस भड़क उठा। "और जब तुम मेरे बाप से बात करो तो उन्हें मिस्टर से संबोधित किया करो, समझे ?

"मिस्टर," जैसन ह्यूगर ने गुर्राकर कहा। "मिस्टर !"

"हाँ, यह ठीक है।"

"अच्छा मिस्टर," ह्यूगर ने मुस्करा कर कहा।

"मेरे योग्य कोई सेवा, शेरिफ साहब ?" गिडियन ने नर्मी से पूछा।

"यह बात है," बेण्टलै ने सिर हिलाकर कहा। "खुदा की क़सम, तुम बड़े विवेकशील व्यक्ति हो, गिडियन ! और आजकल जिस आदमी में यह गुण न हो वह आदमी बेकार है। बिगड़ने की कोई बात नहीं है। यहाँ एक काम से आया था लेकिन यहाँ क्या देखता हूँ कि तुम बंदूकों से क़ानून की खिलाफ़वर्ज़ी करने की धमकी दे रहे हो। गिडियन खुदा के लिए हब्शियों को इस प्रकार बर्ताव नहीं करना चाहिए, इससे तुम मुसीबत में पड़ जाओगे।"

मार्कस ने कहा, "चुप रह बंद कर यह बकवास !"

"अच्छा, अच्छा तेरी यह मजाल," ह्यूगर ने कहा। "हरामी के बच्चे हब्शी," और यह कहते हुए उसने बंदूक को सीधी करके अपनी उंगलियों को बंदूक के घोड़े पर रख लिया। "अगर तूने अपनी बंदूक को जरा भी हाथ लगाया तो मैं तेरी आँतें निकाल लूँगा—"

रैचल चीख पड़ी, उसकी चीख पूरी नहीं निकल सकी; गिडियन ने मार्कस के कन्धे को पकड़कर उसे अपने करीब कर लिया। लड़के ने यह महसूस किया कि

जैसे लोहे की उंगलियाँ उसके कन्धों में गड़ गई हैं। "गरम न होओ, मि० ह्यू गर" गिडियन ने कहा। "झगड़े की कोई बात नहीं है। शेरिफ बेण्टले को मालूम है कि हम लोग कायदे-कानून की पाबन्दी करते हैं और हमने कभी भी कोई झगड़ा नहीं किया। अगर हमारे पास बंदूकें हैं तो इसका मतलब यह नहीं है कि हम कानून की खिलाफ़वर्ज़ी करना चाहते हैं। ये तो हमने अपनी सुरक्षा के लिए रख ली हैं; क्योंकि कुछ दिन पहले हमारे एक पड़ोसी को कत्ल कर दिया गया।"

"मुझसे पूछो गिडियन," बेण्टले ने कहा, "जब कोई हब्शी अपनी मर्यादा से आगे निकल जाता है तो बड़ी मुसीबत आ जाती है। तुम लोग यह समझते हो कि जब वह हब्शी गाड़ी में बैठा आ रहा था तो किसी ने ऊपर चढ़कर उसको गोली मार दी। लेकिन खुदा की कसम इसमें कोई तथ्य नहीं है गिडियन! भला यह भी कोई समझ में आने वाली बात है? क्या मैं जान सकता हूँ कि वह उस तरफ गया ही क्यों था? किसी हब्शी को ज़रा भी मुँह चढ़ालो तो वह उँगली पकड़ते-पकड़ते पोंहचा पकड़ने लगता है।"

"और इसीलिए हम यहाँ आये हैं," ह्यू गर ने कहा।

"तुम क्यों आये हो?" गिडियन ने पूछा।

"लानत हो तुम पर, सवाल पूछने का हक़ तो हमको है।"

"बिगड़ो मत जैक्सन," शेरिफ ने समझाते कहा, "गिडियन को सवाल करने का हक़ है। हम इस समय उसके घर पर हैं और वह कानूनी तौर से हमसे प्रश्न पूछ सकता है। लेकिन हमको भी प्रश्न पूछने का हक है। हम जिस मामले को लेकर यहाँ आये हैं उसे शांति के साथ सुलझाना चाहते हैं, गिडियन! कल तीसरे पहर तीन हब्शी, क्लार्क हैस्टिंग्स के मकान के पिछले दरवाजे पर आये। क्लार्क उस समय भंडार में काम कर रहा था, सैली और छोटी लड़की घर पर ही थीं। एक हब्शी ने भिखारियों की तरह कहा, 'मिस सैली हम भूखे हैं, हमें कुछ खाने को दो।' और तुम्हें यह तो मालूम ही है कि क्लार्क के घर से कोई हब्शी खाली हाथ वापस नहीं आता। इसलिए सैली कुछ लेने के लिए अन्दर चली गई और उसने यह न सोचा कि हब्शी किस इरादे से आये हैं। इस दौरान में क्लार्क की नौवर्षीया पुत्री वहीं खड़ी हुई हब्शियों को देख रही थी—"

शेरिफ अभी यहीं तक पहुँचा था कि जेफ़, ट्रूपर और मैरियन जेफर्सन की गाड़ी आ पहुँची। उनको देखकर गिडियन का दिल बढ़ गया। मैरियन और जेफ़ उतर पड़े, ट्रूपर गाड़ी में ही बैठा रहा। उसने युद्ध में इस्तेमाल की हुई अपनी बंदूक उठाली और उसकी नाल सीधी करते हुए धीमे स्वर और गहरी आवाज़ में बोला, "ह्यूगर, अपनी उँगलियाँ बंदूक के घोड़े पर से हटालो।"

ट्रूपर का चेहरा क्रोध से तमतमा उठा, माथे की एक-एक नस उभर आई और उसका चौकोर शरीर तन गया।

"जल्दी से हटा अपनी उँगलियाँ," ट्रूपर ने कहा।

बेण्टले ने ह्यूगर के कान में कहा, "मूर्ख न बनो और जैसा वह कहता है करो।" एब्नेर लैट भी हल में जुतने वाले घोड़े पर सवार हो आ पहुँचा, उसकी बंदूक कंधे पर लटक रही थी। "जैसा वह कहता है करो," बेण्टले ने फिर कहा। ह्यूगर की उँगलियाँ घोड़े पर से अपने आप हट गईं।

"बंदूक को नीचे अपने क़दमों में ले लो," ट्रूपर ने कहा। "और तुम भी शेरिफ।"

"तुम बीच में नहीं बोल सकते—"

"अपने कदमों में," ट्रूपर ने इशारा करते हुए कहा।

उन्होंने बंदूकें अपने कदमों में रख लीं। एब्नेर लैट भी बग्घी के आसपास लगी भीड़ में शामिल हो गया। फ्रैंक कार्सन भी दलदल की दिशा से अपनी गाड़ी लिए हुए आ गया। ह्यूगर ने कहा :

"हम यह बात याद रखेंगे, लैट!"

"और मुझको भी कुछ बातें याद हैं।"

"शेरिफ़ हमें बता रहे थे कि वह यहाँ क्यों आये," गिडियन ने कहा और वह सब कुछ दोहराया जो शेरिफ़ ने कहा था।

"हाँ, साहब उसके बाद क्या हुआ, हम कहानी का बाकी हिस्सा भी सुनना चाहते हैं।" गिडियन कहा।

फ्रैंक कार्सन भी आकर भीड़ में शामिल हो गया। बेण्टले ने मुड़कर एक-एक की सूरत देखी और फिर अपना बयान जारी किया, "वह छोटी लड़की उन्हें खड़ी

हुई देख रही थी कि एक हब्शी ने आगे बढ़कर उसको नंगा कर दिया। वह चीखने-चिल्लाने लगी, इतने में सैली दौड़ती हुई आ गई। एक दूसरे हब्शी ने सैली को मारा और वह रेंगती हुई उस जगह गई जहाँ क्लार्क अपनी पिस्तौल रखता था। उसके बाद हब्शी भाग खड़े हुए।"

"और इससे हमारा क्या सम्बन्ध है ?" गिडियन ने पूछा।

"उन हब्शियों को पहचान लिया गया है, और वे सबके सब कार्वेल के थे।"

पहले तो कुछ देर स्तब्धता रही, एब्नेर लेट ठहाका मारकर हँस पड़ा। फिर जेफ़ ने कहना शुरू किया, "तमाम बेबुनियादी और पागलतापूर्ण—" "चुप रहो," गिडियन ने बात काटकर कहा। "मैं बात कर लूँगा।"

और उसने बेएटले से पूछा, "अब आप क्या चाहते हैं ?"

"हम उन तीनों हब्शियों को पकड़ना चाहते हैं, गिडियन !"

"किस अपराध के लिए ?"

"आक्रमण और बलात्कार के प्रयत्न के अपराध में।"

"और उन अपराधियों के नाम क्या हैं ?" गिडियन ने पूछा।

"हैनिबाल वाशिंगटन, एण्ड्रिव शेर्मन, और एक और हब्शी है जिसके बारे में सैली कहती है कि उसने कार्वेल के हब्शियों के साथ भंडार में काम करते देखा था लेकिन वह उसका नाम भूल गई।"

"अच्छा," गिडियन ने कहा। "हम आपकी इस कहानी पर बातचीत नहीं करेंगे; क्योंकि हमें इससे कोई सरोकार नहीं है। लेकिन इन दोनों आदमियों में से कोई भी हफ्ता भर से शहर नहीं गया है। कल दिन भर हैनिबाल वाशिंगटन स्कूल की इमारत में ईंटें जमाने का काम करता रहा, एण्ड्रिव शेर्मन हल चलाता रहा। और इसके दसियों गवाह मिल जायेंगे। ये सब लोग मेरे बयान की तस्दीक कर सकते हैं। और यह है आपके अपराधों की सफ़ाई, शेरिफ़ साहब ! कल कार्वेल से कोई व्यक्ति शहर नहीं गया।"

"हम हब्शियों की गवाही नहीं मानते," ह्यूगर ने कहा।

गिडियन के होंठ चिपक गये। एब्नेर लेट ने बग्घी के करीब जाकर कहा, "मैं हब्शी नहीं हूँ, ह्यूगर ! ज़रा ग़ौर से देख !"

"हम तुम्हारी गवाही भी नहीं मानते।"

"कुतिया के पिल्ले, साले हरामी मैं तो बहुत दिन पहले तुझको मार डालने की ठान चुका हूँ," एब्नेर ने धीमे स्वर में कहा।

बेरटले ने कहा, "इस गर्मा-गर्मी से तो हम किसी नतीजे पर नहीं पहुँचेंगे। हम कोई झगड़ा नहीं चाहते, गिडियन!"

"झगड़ा तो हम भी नहीं चाहते।"

"लेकिन हम उन मुलजिमों को ले जाना चाहते हैं, उनपर निष्पक्ष रूप से मुकद्दमा चलाया जायगा और सही गवाही भी ली जायगी।"

"सही गवाही तो यहाँ भी मिल सकती हैं," गिडियन ने कहा।

"लेकिन मैं तो गिरफ्तार करने वाला हूँ, क्या तुम इसमें रोड़ा अटकाओगे?"

"अगर आप यह कहते हैं तो यों ही सही," गिडियन ने सिर हिला कर कहा।

"मैं ऐसा ही कह रहा हूँ। हम यहाँ शांतिपूर्ण ढंग से कानून और अनुशासन कायम करने आये हैं। और तुम हमें घेर कर सशस्त्र हस्तक्षेप कर रहे हो। यह बड़ा घोर अपराध है, गिडियन!"

"आपको इन व्यक्तियों के बिना ही वापस जाना होगा," गिडियन ने कहा।

"और आप झगड़ा करना चाहते हैं, शेरिफ़ साहब, तो कर सकते हैं। मैं कहता हूँ आप लोग झूठ बोल रहे हैं और आप लोगों ने जो मन-गढ़न्त किस्सा सुनाया है इस पर कोई भी बुद्धिमान व्यक्ति विश्वास नहीं करेगा। अब मैं यह कहूँगा।"

"मैं सुन रहा हूँ," शेरीफ़ ने सिर हिला कर कहा। "मैं पाँच मील दूर से भी हब्शी की बात सुन लेता हूँ, उसकी गंध सूंघ लेता हूँ और इन आदमियों को मैं लेकर रहूँगा, गिडियन! चाहे मुझे ज़िले का एक-एक आदमी ही इस काम के लिए लगाना पड़े।"

"या फिर क़िले के बाहर के आदमी भी हो सकते हैं," गिडियन ने कहा। "या वह हर नीच बदमाश हो सकता है जो ह्यूगर की बातों में आजाय। लेकिन

इस समय तो खैर इसी में हैं कि तुम कार्वेल से बाहर निकल जाओ बेएटलें! तुम हमारी सीमा में खड़े हुए हो, दूर हो जाओ यहाँ से। जाओ जहन्नुम में!"

लोग सब मिल कर खड़े हो गये और बग्घी को वापस जाते हुए देखने लगे। कुछ क्षण खामोशी छायी रही और फिर एब्नेर लेट ने धीमे स्वर में, धारा-प्रवाह गालियाँ बकना शुरू कर दीं। जेफ़ ने कहा, "आश्चर्य है कि इतनी बातें होने पर भी कुछ नहीं हुआ?"

"यह कोई बात नहीं है," फ्रैंक कार्सन ने कंधे सिकोड़ कर कहा। "यह तो कई दिनों से होनेवाला ही था और इन बातों से उनके रवैये में कोई तबदीली नहीं होगी।

"इस हफ़्ते हर सुबह जब मैं जागता था तो मुझे किसी ऐसी घटना का भय बना रहता था," गिडियन ने सोचते हुए कहा "हफ़्ते-भर मुझे हर रोज़ यही ख्याल आता था कि कहीं कुछ हो न जाय। हर रोज़ यही ख्याल आता था और आखिरकार वह बात सामने आ ही गई।"

बच्चे भयभीत और शांत थे। वे चारों तरफ खड़े हो गये और उनकी समझ में नहीं आ रहा था कि ठीक स्कूल के समय उनकी पढ़ाई क्यों रोक दी गई; और किसलिए लोग स्कूल की इमारत में आकर एकत्र होने लगे हैं। बड़े लड़कों में से कुछ, आदमियों के साथ ही प्रविष्ट हुए और इन्हें किसी ने भी नहीं रोका। पंक्तियों में बैठे हुए लगभग आधे आदमियों के पास किसी-न-किसी प्रकार के अस्त्र थे। वे सब-के-सब अपनी भाव-भंगिमा से बड़े बोझिल और सुस्त मालूम हो रहे थे। यह स्थिति उस समय हो जाती है जब कि लोग अपने विचार, व्यवहार और आशाओं के बीच कोइ साम्य नहीं पाते है। बेंजामिन विन्थ्रोप हाल के एक कोने में खड़ा हुआ उन्हें देख रहा था; वह भी सहमा हुआ और परेशान था। वह नवजवान था और न्यू इङ्गलैड के एक औसत श्रेणी के धार्मिक परिवार से सम्बन्ध रखता था, जिनका वंश बूढ़े गवर्नर से मिलता था, हालाँ कि वह अपने नाम के हिज्जे अलग ही करते थे। और चूंकि वह ऐसे परिवार से सम्बन्ध रखता था जिसमें घरेलूपन अधिक पाया जाता था, इसलिए उसमें मानवता के प्रति प्रेम व सहानुभूति काल्पनिक अधिक और वास्तविक कम थी।

यही कारण था कि इन अजनबी, शान्त और हिंसावादी लोगों के मध्य रहने में उसे बहुत ज्यादा अपनी संकल्प-शक्ति से काम लेना पड़ा। उसके दिल में बराबर एक कश-म-कश-सी रहती थी और इस समय जब वह उन्हें देख रहा था तो उनकी ही ओर से उसने भी समझ लिया कि अब सब कुछ समाप्त हो चुका है, उसका काम भी हो चुका और वह यह सोच रहा था कि यदि सम्भव हो सका तो मैं आज स्टेशन जाकर पहली गाड़ी से चला जाऊँगा।

भाई पीटर ने यह कहकर सभा की कार्यवाही शुरू की, "भाइयो, हम इस समय भय और क्रोध की अवस्था में एकत्र हुए हैं। खुदा से दुआ है कि वह हमें सही राह बताये और जब हम उस रास्ते को पालें तो खुदा हमें उस पर चलने की शक्ति दे। गिडियन क्या तुम कुछ कहोगे ?"

गिडियन सबसे पीछे बैठा हुआ था, वह अपनी जगह पर खड़ा होकर ही बोला, "यह केवल मेरा ही मामला नहीं है। इस सवाल पर मैं दूसरों से बेहतर नहीं बोल सकता। हमें अब क्या करना चाहिए इस बात का ज्ञान मुझे अपने पड़ोसियों से कुछ अधिक नहीं है। लोग अपना प्रतिनिधित्व स्वयं कर सकते हैं।"

लोग मुड़-मुड़कर गिडियन की ओर देखने लगे। वह पहले से अब बूढ़ा नजर आ रहा था। हैनिबाल वाशिंगटन ने कहा, "शायद यह बेहतर होगा कि गिडियन ही हम लोगों की ओर से बोले। कोई और दूसरा व्यक्ति हममें से हो या न हो लेकिन तुम हमारे ही हो, गिडियन ! तुम ने हमें कभी नहीं छोड़ा, तुममें जो कमजोरियाँ हैं उनका ज्ञान सिर्फ खुदा को है। लेकिन खुदा बेहतर जानता है कि तुम दीनता व नम्रता के साथ रहते हो, तुम्हें कुछ तो कहना ही चाहिए।"

"कहने को तो कुछ अधिक नहीं," गिडियन ने कहा। "तुम सबको मालूम है कि क्या हुआ और क्यों हुआ, यह भी तुम जानते हो और तुम यह भी अच्छी तरह से समझते हो कि अगर उन्होंने हमारे तीन आदमियों को लेजाकर फाँसी देदी तो मामला यहीं समाप्त नहीं हो जायगा; बल्कि यह केवल प्रारम्भ होगा असंख्य फाँसियों का।

एण्ड्रिव शेर्मन ने थके हुए स्वर में कहा, "गिडियन, मैं मामले को खींचना नहीं चाहता, झगड़ा तो बहुत हो चुका। मेरा ख्याल है कि वे फाँसी की हद तक

नहीं जायेंगे। फर्ज करलो कि मैं शहर जाता हूँ और वे मुझे देखकर कहते हैं कि वह हब्शी नहीं है। यह कैसे कह सकते हैं कि मैं वही हब्शी हूँ ? मैं कल तो क्या हफ्ता-भर से शहर गया ही नहीं।

"वे तुम्हें फाँसी देंगे।" एब्नेर लेट ने कहा "मैं खुदा की क़सम खाकर कहता हूँ कि तुम्हें ज़रूर फाँसी देंगे।"

"हाँ, वे फाँसी देंगे।" गिडियन ने सहमति प्रकट की। "अब मैं कोई फ़ैसला नहीं करूँगा। फैसले की बात तो मैं तुम लोगों पर छोड़ता हूँ। उसके बाद अगर तुम चाहोगे कि मैं इस फैसले को अमली जामा पहनाने के लिए तुम्हारा नेतृत्व करूँ तो मैं पीछे नहीं हटूँगा; और वह जो उन्होंने फैसला सुनाया था; उसका केवल इतना ही अर्थ है कि उन्हें बहाने के लिए कोई-न-कोई किस्सा तो गढ़ना ही था। उन्हें कोई ऐसा तरीक़ा अपनाना था जो कि क़ानून और जाब्ते से मिलता-जुलता हो। लेकिन अभी उन्हें शक्ति प्राप्त किये केवल आठ दिन ही तो गुज़रे हैं और आठ दिन हमारे आठ साल के निर्माण को नष्ट-भ्रष्ट करने के लिए काफ़ी नहीं हैं।"

"अच्छा तो फिर हमें क्या करना चाहिए, गिडियन !" फ्रैंक कार्सन ने कहा।

"यह फैसला तो तुम लोगों को करना है। मैं समझता हूँ कि वे आज रात फिर आयेंगे,—यदि आज रात नहीं तो फिर कल, लेकिन वे आयेंगे ज़रूर। और इस बार वे एक-दो नहीं; बल्कि बहुत-से होंगे जो हमें नष्ट करने का कार्य शुरू कर देंगे। और फिर कुछ दिन उन्हें क़ानूनी तरीकों की ज़रूरत महसूस नहीं होगी। अब दूसरा प्रश्न यह उठता है कि तुम क्या कर सकते हो—अनेक काम कर सकते हो तुम ! तुम अपने घरों में बैठे रहकर दो-दो और तीन-तीन की संख्या में क़त्ल हो सकते हो—लेकिन सब नहीं; क्योंकि तुममें से कुछ लोग भाग भी सकते हैं या फिर तुम सब भागकर बड़े-बड़े काश्तकारों के यहाँ रोटी-कपड़े और गज़ भर सोने के लिए ज़मीन के बदले काम कर सकते हो, और ऐसे में भी तुम्हें इस शर्त पर ज़िन्दा रहने दिया जायगा कि तुम अपने मुँह बंद रखो। गोरों की स्थिति भी इससे कुछ अधिक भिन्न नहीं होगी, शायद वे जैसन ह्यूगर के गिरोह में शामिल हो जायँ, लेकिन मैं निश्चय से नहीं कह सकता कि वह अब उन्हें अपने गिरोह में शामिल करेगा भी या नहीं,—मेरा अनुमान है कि गोरों की स्थिति भी कुछ

अधिक भिन्न नहीं होगी। या फिर दूसरा मार्ग यह है कि तुम सब एक होकर अपने शत्रुओं से लड़ सकते हो!"

जेफ़ ने चिल्लाकर कहा, "यह देश अब भी संयुक्त राज्य अमेरिका कहलाता है। यहाँ अब भी क़ानून हैं और अदालतें क़ायम हैं। क्या साहब, हम सब अपने आपको तबाह करलें?"

"तबाह करने की क्या ज़रूरत है?" गिडियन ने कहा। "मैंने सब तरीके तुम्हारे सामने रख दिये हैं। मैं किसी एक तरीके को तो नहीं चुन रहा हूँ। आठ दिन से यहाँ सिवाय हिंसा के और कोई क़ानून लागू नहीं है, अदालतें हमारी नहीं हैं और हमारे अन्दर लड़ने की शक्ति इसलिए बाकी है कि यह देश अमरीका कहलाता है। और नाश? न मालूम होगा भी या नहीं—जब बूढ़ा ओसावाटॉमी ब्राउन उन्नीस आदमियों के साथ हार्पर की नाव में बैठकर गया था तो उसके पास हम से कम शक्ति थी और सफलता की सम्भावना भी कम थी। लेकिन उसने सारे राज्य को झकझोर डाला—और उसे जगा दिया, और जो कुछ वह कहता था उसे करके बता दिया। मैं मरने के लिए लड़ने का प्रस्ताव नहीं रख रहा बल्कि जिंदा रहने के लिए लड़ना चाहता हूँ ताकि समस्त देश की दृष्टि हमारी ओर आकृष्ट हो और वे देखें कि यहाँ क्या हो रहा है।"

"कोई दूसरा तरीक़ा होना चाहिए," जेफ़ ने कहा।

"दूसरा रास्ता क्या है?"

"यदि आप वाशिंगटन वापस जायें तो?"

"मैंने वहाँ प्रयत्न किया और असफल रहा," गिडियन ने कहा।

"यदि एक बार फिर प्रयत्न करें तो?"

"मैं फिर असफल हो जाऊँगा, और अब ऐसी कोशीश के लिए समय भी नहीं रहा। कल तक का समय भी नहीं है।"

विल बून ने नम्रता व सुस्ती से कहा, "फ़र्ज़ करो गिडियन, यदि हम लड़ाई का ही फैसला करते हैं तो मैं उसके लिए तैयार हूँ। वर्त्तमान स्थिति में यही सबसे अच्छा तरीक़ा है; लेकिन हम किस तरह से लड़ेंगे? हम कोई फौज तो नहीं हैं—मारे देश में कुल साढे तीन हज़ार एकड़ पर ही हमारा अधिकार है और यह

बहुत ही कम जगह है।"

"मैंने इस पर भी सोचा है," गिडियन ने सहमति प्रकट करते हुए कहा। खुदा जानता है कि मैंने सिवाय इस मसले के और किसी चीज पर नहीं सोचा। अगर हम लड़ते हैं तो हमें सबसे पहले अपनी स्त्रियों व बच्चों को किसी ऐसे स्थान पर रखना पड़ेगा जहाँ वे कुछ समय के लिए सुरक्षित रह सकें। वह स्थान कुछ समय तक जताया न जा सके। और न ही उससे बाहर निकलने पर मजबूर होना पड़े। हमारी बस्ती में इस प्रकार का एक बड़ा मकान है जिसकी सुरक्षा सरलता के साथ की जा सकती है और वह मकान भी कार्वेल के पुराने काश्तकार का है, वह एक पहाड़ी पर बस्ती के ठीक मध्य में स्थित है—

"मैं बहुत कुछ कह चुका हूँ, और अब आप सोचकर कोई फैसला कीजिये," गिडियन ने अपनी बात खत्म करते हुए कहा।

एक घण्टे के बाद उन्होंने निश्चय कर लिया और यह फैसला उनकी शक्ति, निर्बलता, भय, क्रोध, ज़ख्म, दर्द और अपनी मुहब्बत की स्मृति का ही यह परिणाम था। जब तमाम आवाजें दब गईं तो एब्नेर लेट ने कहा :

"गिडियन, हम लड़ेंगे। क्या तुम हमारे साथ रहोगे?"

"अगर तुम चाहोगे तो?" गिडियन ने उत्तर दिया।

"हाँ हम तुम्हें चाहते हैं।"

गिडियन ने हाल के चारों ओर देखा और उसके बाद सहमति प्रकट करने के लिए अपना सिर हिलाया। जब वह पीछे से उठकर कमरे के अगले भाग की ओर जाने लगा तो उसके कदम लड़खड़ा रहे थे। भाई पीटर उसकी ओर देखते रहे। उनकी आँखों में दर्द व पीड़ा झलक रही थी। गिडियन ने अपनी घड़ी देखते हुए कहा, "अब तीन बजा चाहते हैं। हमें जो कुछ भी करना है उसे शाम से पहले ही कर लेना चाहिए। हो सकता है कि वे आज रात को ही आजायँ या फिर कुछ दिनों तक भुलावे में रखें। मेरा यह सुझाव है कि हम सब अपने बीवी-बच्चों को उस बड़े मकान में ले जायँ और वहीं पर खाने और सोने का प्रबन्ध भी कर लें। हम दिन के समय उन्हें अपने नियुक्त किये गये रक्षकों की निगरानी में छोड़ कर अपने-अपने कामों पर चले जाया करेंगे और इस प्रकार हमें कम से

कम संतोष तो होगा कि वे सुरक्षित हैं। हम खतरे से सावधान करने के लिए स्कूल की घण्टी इस्तमाल कर सकते हैं. लेकिन मैं स्कूल की इमारत का उपयोग करने के पक्ष में नहीं हूँ"—

इसके बाद उसने बेंजामिन विन्थ्रोप से संबोधन किया, "मुझे नहीं मालूम मि० विन्थ्रोप कि आप का इन सब बातों के संबन्ध में क्या विचार है क्यों कि इन सब बातों का आपसे कोई सम्बन्ध नहीं हैं। लेकिन फिलहाल हमें स्कूल को बन्द करना पड़ेगा।"

विन्थ्रोप ने व्याकुलता के साथ हाथ मलते हुए उत्तर दिया, "मैं हिंसा का पक्षपाती नहीं हूँ, मि० जैक्सन! और आप जो कुछ कर रहे हैं मैं उससे महमत नहीं हूँ; लेकिन मेरा इससे कोई सम्बन्ध नहीं है। लेकिन आप बच्चों को एक स्थान पर एकत्र करके उन्हें असभ्य रखना तो पसन्द नहीं करेंगे"—

"लेकिन अब इसके सिवाय चारा हो क्या है?"

विन्थ्रोप ने लाचारी से कहा, "मैं उस वक्त तक ठहरूँगा जब तक कि सब कुछ ठीक न हो जाय। शुरूआत में तो कोई भी चीज़ पूरी नहीं होती है।"

"यदि आप ठहर जायँ तो हम आपके आभारी होंगें।" फिर उसने लोगों को संबोधित करके कहा, "अपनी बारूद और गोलियाँ ले जाकर बड़े मकान में रख दो। खाने का सामान जो कुछ भी आसानी के साथ ले जाय जा सके बड़े मकान में रख दो।"

वे एक-एक करके धीरे-धीरे स्कूल से बाहर निकलने लगे। स्तब्धता और गांभीर्य छाया हुआ था। उन्होंने अपने बच्चों को एकत्र कर लिया और घरों को ओर चल दिये। बाहर आकर ट्रूपर ने गिडियन को रोकते हुए कहा:

"मैं अपने मकान को नहीं छोड़ूँगा।"

"क्यों?"

ट्रूपर गिडियन से कई इंच ऊँचा और कई इंच चौड़ा, भारी भरकम आदमी था, उसने इन्कार में अपना सिर हिलाते हुए कहा, "मैं नहीं छोड़ूँगा गिडियन!"

"खैर, जैसा तुम ठीक समझो, करो" गिडियन ने कहा।

और फिर उसने एक-एक शब्द पर जोर देते हुए कहा, "मैं तुम्हारी तरह नहीं हूँ, गिडियन ! जब मैं गुलाम हूँ तो गुलामी के कोड़े का आघात मुझ पर औरों की अपेक्षा अधिक भारी पड़ना चाहिए, 'काले हरामी के बच्चे, गधे, साले हरामी, मरदूद काले हरामी के बच्चे !' मैं तो हमेशा से यही सुनता रहा हूँ। मि० डडले कार्वेल ने आॅलिन्सी के एक नीलाम में मुझे खरीदा था, उसने मेरी बोली सबसे ऊँची लगाई और काम भी सबसे ज़्यादा लिया। मैं सुबह से लेकर दोपहर और दोपहर से लेकर रात तक काम करता था। मुझे कभी भी सूर्य निकलते देखकर खुशी नहीं हुई। मुझे खुशी की एक रात भी नसीब न हो सकी। और जब कोड़े लगाये जाते थे तो बूढ़ा कारिन्दा कहता था कि, 'इस काले हरामी के बच्चे पर तो कोड़ों का भी कोई असर नहीं होता है।"

उसने अपनी कमीज उतार कर कहा, "इस पीठ को देखा है, गिडियन !" भाई पीटर और कुछ दूसरे ट्रूपर की बातें सुनने के लिए ठहर गये। उन्होंने भी उसकी पीठ को देखा जिस पर कोड़ों के इतने निशान थे कि वह किसी देश का विकृत प्राकृतिक मान-चित्र प्रतीत होता था।

"मैं अपना घर नहीं छोड़ूँगा, गिडियन। मैं और मेरी घरवाली वहीं रहेंगे और अपने घर की जमीन पर ही प्राण दे देंगे। क्योंकि यह ज़मीन का टुकड़ा ही मेरा सब कुछ है। अब न कोई मेरा स्वामी है और न ही कोई ओवरसियर। कभी-कभी मेरा दिल चाहता है कि नये घर की ज़मीन पर सिर नवाऊँ, और उसका चुम्बन लूँ, वह घर मेरा अपना घर है। मैं वहाँ बैठता हूँ, और मेरी घरवाली मेरे लिए खाना लाती है। वह न किसी गुलाम की झोंपड़ी है, न किसी कारवास की कोठरी। वह तो मेरा घर है मैं उसे नहीं छोड़ूँगा, गिडियन ! मुझे कोई ताकत इस घर से बाहर नहीं निकाल सकती।"

"और तुम्हारे बच्चे ?" भाई पीटर ने पूछा।

"वे भी मेरे साथ ही रहेंगे। मेरे होते हुए उनका कोई बाल बाँका नहीं कर सकता।"

आठ साल पहले अगर ट्रूपर इस प्रकार की बातें करता तो गिडियन उस पर बरस पड़ता और अपनी करके रहता पर अब उसने कहा, "अच्छा ट्रूपर,

अगर तुम्हारे दिल में यही समाई है तो फिर ठीक है।"

अठारह अप्रैल की तीसरी पहर-भर कार्वेल के लोग अपने-अपने खेतों से बड़े मकान में मुन्तकिल होते रहे। औरतों ने गाड़ियाँ भरनी शुरू कर दीं, उनके सामान में बिस्तर, बर्तन, खाने, अनाज, कुछ कीमती चीजें, कलेण्डर और कोई किताब या बाइबिल व सिलाईदानी आदि चीजें थीं। अब वे इस प्रश्न पर कोई बात-चीत नहीं कर रहे थे क्योंकि हफ्तों इस पर काफ़ी चर्चा हो चुकी थी। यद्यपि बच्चों के सरल और मन्द गति से चलनेवाले जीवन में यह संसार को हिला देनेवाली घटना थी, जिसने उन्हें उत्तेजित किया था, लेकिन वे भी असाधारणतः भयभीत व शान्त प्रतीत हो रहे थे। लोगों के स्वभाव में चिड़चिड़ापन आ गया था। कोई औज़ार ग़लत जगह पर रख दिया जाय या कोई बच्चा उत्पात करे तो ऐसी छोटी-छोटी बातों पर मर्दों का क्रोध फूट पड़ता था। स्त्रियाँ भी अकारण ही लाल-पीली हो जाती थीं; हालांकि उन सबने परिस्थति के महत्त्व को स्वीकार करने में न चूँ चंरा ही की थी और न इस पर आँसू ही बहाये थे। परिवार-के-परिवार गाड़ियों में भरे हुए हर दिशा से उस बड़े मकान की ओर जा रहे थे। एक-एक करके गाड़ियाँ बड़े मकानपर एकत्र हो गईं। जब यह पुरानी सफ़ेद इमारत अस्त होते हुये सूर्य के प्रकाश से पीली और सुनहरी नज़र आने लगी तो वे सब वहाँ एकत्र हो चुके थे।

गिडियन ने बहुत थोड़ी किताबें अपने साथ रखीं। जेफ़ ने अपने औज़ार और चार्ल्सटन से खरीदी हुई दवाइयाँ रख लीं। उन्होंने गल्ला ढोनेवाली गाड़ी में बिस्तर बिछाकर बेचारे फ्रेड मैक्हफ को उस पर आराम से लिटा दिया। हथियार भी सारे के सारे रख लिये गये। इन हथियारों में गिडियन की फ़ौजी स्पेन्सर बंदूक, मार्कस की कार्बाइन रायफल, दो छोटी बंदूकें और एक लम्बी नाल की पिस्तौल थी जिसे गिडियन ने एक वर्ष पहले वाशिंगटन से खरीदा था। रैचल ने सबसे अच्छे बर्तन और सन के कपड़े रख लिए। वह इन कपड़ों को घर पर ही छोड़ देना चाहती थी। यह बड़ा अच्छा सफ़ेद कपड़ा था। गिडियन इसे हर साल थोड़ा-बहुत खरीद लिया करता था, क्योंकि वह जानता था कि रैचल उसकी चिकनी सफ़ेद चादरों और तकिये के गिलाफ़ों को कितना पसंद करती है। लेकिन जेफ़ ने भी बिना कोई वजह बताये यही कहा, "इन सब कपड़ों को अपने साथ रख लो।"

और उसने रख लिए।

एब्नेर लेट ने अपने उन्नीस वर्षीय पुत्र जिमी से पूछा, "तुम्हारा क्या विचार है? अब वह ज़माना नहीं जो आज से दस वर्ष पहले था! मैं तो गिडियन के साथ रहने का आदी हो चुका हूँ, लेकिन तुम्हारे लिए यह कोई ज़रूरी नहीं है।"

एक वर्ष पूर्व जब जिमी का विवाह हुआ था तो उसके लिए सौ एकड़ ज़मीन खरीदने में गिडियन ने एब्नेर की सहायता की थी। लड़के ने उस बात की याद दिलाई।

"मुझे भी याद है, यह उपकार नहीं भुलाया जा सकता।"

"मैं आपके साथ ही रहूँगा।"

एब्नेर ने गर्दन हिलाई और लड़के के कंधे पर बंदूक लटकादी। प्रेम और स्नेह इस प्रकार बहुत कम प्रकट किया जाता है। लड़के ने बंदूक को उतारकर रख दिया और काम में अपनी माँ का हाथ बँटाने के लिए अंदर चला गया।

भाई पीटर और एलेन्बी के लड़के सबसे पहले मकान में पहुँच गये। समय ने इमारत की आकृति व दिखावट में कोई अधिक परिवर्तन नहीं किया था। हाँ, दीवार की पुताई कहीं-कहीं से झड़ जरूर गई थी। दूर से देखने पर इस इमारत के वैभव और सौन्दर्य में अब भी कोई अन्तर नहीं पड़ता था। लेकिन समीप जाने पर मालूम होता था कि खिड़कियाँ टूट गई हैं। सब्ज़ी उगी हुई है और दरवाजे चूलों से अटके हुए हैं। अन्दर का तमाम साज़-समान नीलाम कर दिया गया है, लेकिन खाली होने के बावजूद मकान की पुरानी शान-शौकत नष्ट नहीं हुई थी। इस खाली मकान में मध्य का जीना महोगनी और बलूत की लकड़ी का बना हुआ था जो दर्शकों को बड़ा प्रभावित करता था। दीवार पर चिपकाये हुए काग़ज़ फट गये थे; लेकिन उनका रंग अभी तक नहीं उड़ा था। अखरोट के स्तंभों पर सुन्दर आकृतियाँ खुदी हुई थीं जो धैर्य के साथ उस दिन की प्रतीक्षा करते हुए दीख पड़ती थीं जब उनके सहारे अल्मारियों को रखा जायगा और कुर्सियों और सोफ़ों को उनसे टिकाया जायगा। जगह-जगह बढ़िया, सख्त लकड़ी के फ़र्श पर फूल, पत्तियाँ और कूड़ा-कचरा पड़ा हुआ था जो बच्चों ने वहाँ के खाली कमरों में खेल-खेल कर इकट्ठा किया था।

भाई पीटर सबसे पहले इसलिए वहाँ चले गये कि उन्होंने अपने साथ बहुत कम चीजें रखी थीं। तीनों लड़के एलेन्वी की मृत्यु के बाद उनके साथ ही रहने लगे थे। उन्होंने आते ही झाडुओं से मकान को साफ़ करना शुरू कर दिया। थोड़ी देर बाद ही दूसरे लोग भी उनके काम में हाथ बँटाने लगे। बारह साल के इकट्ठे हुए कचरे को आसानी से साफ़ नहीं किया जा सकता था लेकिन कुछ परिवारों के पहुँचने तक मकान में खासी सफ़ाई नज़र आने लगी। गिडियन ने अंदरूनी इन्तेज़ाम की जिम्मेदारी ले ली। यद्यपि मकान में बीस से अधिक कमरे थे, फिर भी उन्हें एक ही परिवार की भाँति हिल-मिल कर रहना था। मर्द उस कमरे में सोयेंगे जो पहले स्वागतार्थ उपयोग में आता था। एक ही परिवार के लोगों को यथासंभव साथ रहने के अतिरिक्त उसने औरतों और छोटे बच्चों को कई सोने के कमरों में बाँट दिया। कुछ परिवार जो बहुत बड़े थे, मसलन जेक सटर का परिवार-जिसमें एक दादी, एक पत्नी, एक बहन और तीन लड़कियाँ थीं-उसने एक पूरा कमरा ले दिया। खाने के लिए इस्तेमाल करने और रात के समय ज़्यादातर मर्दों और ग्यारह से बीस साल तक के लड़कों के लिए सोने का कमरा बना देने का निश्चय किया गया। रसोई से सटे हुए कमरे में खाना रखा जाता था और गिडियन ने खाना पकाने और उसे बाँटने के लिए औरतों की एक कमेटी नियुक्त करदी थी। स्त्रियों के एक और गिरोह को सफ़ाई के काम पर लगा दिया गया था। मर्दों ने खिड़कियों में कागज़ चिपकाना शुरू कर दिये। हैनिबाल वाशिंगटन दो आदमियों को साथ लेकर पानी का हौज़ साफ़ करने लगा; ताकि वह इस्तेमाल के काबिल बन जाय। क्योंकि हौज़ के चारो ओर मकान की पिछली दो दीवारें थीं और रसोई से वह सिर्फ़ एक कदम दूर था, इसलिए गिडियन ने पानी के पीपों का इस्तेमाल करने के बजाय सारी जरूरतें हौज़ के पानी से पूरा करने का निश्चय कर लिया। सूर्यास्त तक हौज़ साफ़ हो गया और हैनिबाल वाशिंगटन ने लड़कों के एक गिरोह को कुएँ से पानी ला-लाकर हौज़ को भरने का काम सौंप दिया। इस अर्से में गिडियन ने छः गाड़ियाँ लकड़ियों के लिए वापस भेज दीं।

कुछ लोग और विशेषकर वे जिनके दूध-पीते बच्चे थे अपने साथ गायें भी लेते आये थे और उनके लिए कुछ दिन का चारा भी इकट्ठा कर लिया था। बहुत दिन

पहले कार्वेल के और अस्तबल आग की नज़र हो चुके थे। इसलिए गिडियन ने मकान के दोनों तरफ़ मैदानों में गाड़ियों से अहाता बनाया और उनमें गायों और घोड़ों को रख दिया। तीसरे पहर से शाम तक क्या-कुछ हो गया यह देखकर आश्चर्य होता था और लोग इसे देखकर ही खुश हो रहे थे। विंथ्रोप के सिवा वहाँ कोई अजनबी नहीं था। और जो लोग एक दूसरे को बचपन से नहीं जानते थे वे कम-से-कम कुछ वर्षों से तो दोस्त थे। अपने-अपने तौर-तरीके और आदतें अपरिचितों में एक-दूसरे के लिए विचित्र और क्रोध दिलाने वाले होते लेकिन वे अपरिचित नहीं थे। उनके इस प्रकार साथ रहने, एक दूसरे के मामले में शरीक होने और रात देर तक बातें करने में जिनकी उन्हें पहले आदत नहीं थी, एक नवीनता थी, जिसने उन्हें बहुत आनन्दित किया था। कार्वेल के मकानों में पुराने फ़ानूस अभी तक लगे हुए थे; गिडियन ने आज रात मोमबत्ती के उपयोग में फिज़ूल खर्ची बरती; उसने हर बड़े फ़ानूस में दो दर्जन मोमबत्तियाँ जलाकर रख दीं, जिनके प्रकाश से, जो तराशे हुए काँच से बिखर रहा था, सारा-का-सारा मकान जग-मगा उठा और समस्त वातावरण हर्ष व उल्लास से भर गया।

गिडियन ने लोगों को कमेटियों में विभाजित कर दिया। मकान की देख-भाल के लिए दस आदमी काफ़ी थे। जिनका अर्थ यह था कि यदि लड़कों को भी शामिल कर लिया जाय तो एक आदमी को हफ्ते में सिर्फ एक दिन निगरानी करनी पड़ेगी। उन्हें भविष्य की गहराइयों में जाने की आवश्यकता न थी; अगर जाते तो निराशा और व्यग्रता ही का मुँह देखना पड़ता। वे तो कल और परसों की सुरक्षा से ही संतुष्ट थे। एक कमेटी घोड़ों की निगरानी करेगी और एक दूसरी कमेटी मकान में रहने वालों के लिए एक प्रकार के अदालती बोर्ड का काम करेगी। आज रात को तो सब ठीक रहेगा लेकिन कुछ समय बाद संभव है इस प्रकार से साथ रहना कुछ लोगों को दूभर मालूम होने लगे और आपस में रंजिश बढ़े और झगड़े होने लगें। बच्चों के लिए भी बहुत काम निकाल लिया गया, ताकि वे इसमें लग जायँ और उत्पात व शरारत न करें।

बक्सों और तख्तों को साथ रखकर गिडियन ने अपने लिए एक मेज़ बनाली।

एक सादी और ज़रूरी चीज़ है। जब सामूहिक रूप से पहली बार भोजन बनाने और खिलाने का कोलाहल शांत हुआ तो गिडियन तार लिखने के लिए अपनी मेज़ पर बैठ गया। वह तार 'न्यूयार्क हेराल्ड' के सम्पादक बेनेट को भेजने वाला था जिसमें अपने संवाददाताओं को दूर-दूर तक भेज रखा था लेकिन अब तक कोई ऐसी रिपोर्ट नहीं आ पाई थी जिससे कार्वेल का कच्चा चिट्ठा सामने आ सके। एक तार अध्यक्ष को, दूसरा राज्य के मंत्री को और तीसरा हब्शियों के पुराने वयोवृद्ध नेता फेडरिक डगलास को भेजना था। कार्डोजो का भी उस आसन्न स्थिति की सूचना देने और दक्षिणी प्रदेशों के अच्छे तत्वों में एकता और मिली-जुली कार्यवाही की अपील करने के लिए एक तार भेजना था। कार्डोजो को उसने लिखा, 'फ्रांसिस' याद रखिए कि हम अकेले नहीं, और दक्षिण के अच्छे और न्यायप्रिय काले व गोरे आदमी इस सच्चाई से सबक़ हासिल करके एक जूट हो सकते हैं। कार्वेल के लागों ने तानाशाही, अत्याचार और आतंक को अवश्यंभावी मानने से इंकार कर दिया है।" उसने एक तार में राल्फ़ वाल्डो एमर्सन से अपील की कि इस हब्शी बुज़ुर्ग हस्ती को एक बार फिर न्याय के लिए अपनी आवाज़ बुलंद करना चाहिए। सब तार लिखने के बाद उसने वे लोगों को दे दिये कि वे उन्हें पढ़े और उन पर नुक्ताचीनी करें। और जब यह काम भी खत्म हो गया तो उसने मार्कस को एक तरफ़ बुलाकर कहा:

"बेटे, मैं चाहता हूँ कि तुम यह काम करो। यह बहुत महत्त्वपूर्ण काम है। मार्कस ने सहमति प्रगट की।

कोलंबिया जाओ। आज रात ही यहाँ से चल पड़ो और सुबह तक पश्चिमी यूनियन के दफ्तर में पहुँच जाओगे। अपनी घोड़ी और एब्नेर की जीन ले जाओ चाहे कुछ हो जाय मार्कस, लेकिन यह तार जरूर पहुँच जाने चाहिएँ। और तार देते ही तुम फ़ौरन वापस आ जाना।"

"जी हाँ, मैं जल्द ही लौट आऊँगा," मार्कस ने कहा।

गिडियन उसे बाहर थोड़ी दूर छोड़ने के लिए गया। मार्कस लम्बे जूते पहने था और जैकेट की जेब में तार और बड़ी कई नाल की पिस्तौल रखी थी, उसने विदा लेते समय हाथ मिलाकर इस प्रकार सलाम किया कि गिडियन को उसके

काम करने की योग्यता पर विश्वास हो गया। अब उसमें काम करने का जोश और नई ज़िन्दगी पैदा होगई थी; चाँदनी रात थी और ऐसी चाँदनी रातों में घोड़े पर कोलंबिया की यात्रा बड़ी सुखप्रद व आनन्ददायक होती थी। छोटी-सी-घोड़ी हवा से बातें करती थी; किसी चीज़ से न रुकती थी, कोई उसकी धूल को भी न पहुँच सकता था। और अब चन्द घण्टों में ही सारे देश के लोग जान जायेंगे कि कार्वेल में क्या हो रहा है। गिडियन उसको बड़े गर्व से देखता रहा। वह उसका बेटा था, यह सुडौल शरीर वाला नवयुवक जो निडर, सजीव और आत्माभिमानी है और यह इस बात का प्रमाण है कि निर्माण-कार्य ने कैसे-कैसे नवयुवक पैदा किये हैं। भविष्य अपनी चिन्ता आप ही कर लेगा। "तुम्हें डर तो नहीं लग रहा है ?" उसने मार्कस से पूछा। और वह लड़का मुस्करा दिया। जब वह घोड़ी पर सवार होने लगा तो जेफ़ बाहर आगया और उसने मार्कस की रान को हाथ से दबाते हुए मुस्करा कर कहा, "गुडलक।"

"शुक्रिया, डाक्टर," मार्कस ने मुस्करा कर कहा। और इस बार भी उसके स्वर में कुछ व्यंग्य और बड़े भाई के लिए आदर झलक रहा था।

"मैं तुम्हारे लिए गोलियों का एक बक्स खरीद कर लाऊँगा !" और यह कह कर वह रवाना होगया। उसकी घोड़ी पहाड़ों से उतर कर गुलामों के केबिनों व खण्डरों से गुज़रती हुई नज़रों से ओझल हो गई।

उसके थोड़ी देर बाद ही गिडियन स्वागत के कमरे में जाकर अपने बिस्तर पर लेट गया। आस-पास के लोगों की करवटों और ख़र्राटों की आवाजें आ रही थीं और उसे वह सब अजीब-सा लग रहा था। बड़ी-बड़ी खिड़कियों से चाँद की चाँदी सी रोशनी ने एक स्वप्न-संसार का निर्माण कर दिया था। उसे वह दृश्य याद आगया जबकि फ़ौज में वह लेटा-लेटा रात भर जागा करता था। उस समय वह कार्वेल से बहुत दूर था। अपनी प्यारी नौजवान पत्नी रैचल से बहुत दूर था, अपने बच्चों से दूर था। क्योंकि वक्त आने पर इन्सान को सभी कुछ छोड़ना पड़ता है और वह पारिवारिक मोह की अपेक्षा जाति व राष्ट्र को तरजीह देता है। इस प्रकार अतीत की एक-एक घटना को स्मरण करके उन पर ग़ौर करते हुए गिडियन को नींद आ गई। न जाने वह कितनी देर सोया और कब वादी के उस पार बंदूकों की

गोलियों की गूंज ने उसे उठा दिया। गोलियों की आवाजें निरंतर गूंजती रहीं और फिर सन्नाटा छा गया।

ट्रूपर की पत्नी केटी ने उससे कुछ न कहा; वह उससे जितना प्रेम करती थी उतना ही भय भी खाती थी। वह कार्वेल भर में सबसे अधिक हृष्ट-पुष्ट और बलवान था, लेकिन स्त्रियों की भाँति शरीफ व दयालु भी था। उसे रुला देना या क्रोधित कर देना बहुत सरल था। केटी उसके स्वाभाव से परिचित थी और उसने अपने पति के साथ बहुत ही अच्छी ज़िंदगी बिताई थी; वह छोटी, सादगीपूर्ण और साधारण रूप-रंग की स्त्री थी, ट्रूपर उसके साथ बड़ी नम्रता से पेश आता था; वह कभी दूसरी स्त्री के पास नहीं गया, उसने घर की सारी ज़रूरतें पूरी कीं और कभी अपनी बीवी व बच्चों पर हाथ नहीं उठाया। यह सही है कि उसका अपना निराला ढंग था, जब कोई बात उसके दिल में समा जाती थी तो बस वह समा ही जाती थी और उसे वहीं पर छोड़ना पड़ता था। उसने जब इन्कार कर दिया तो फिर वह दूसरों की भाँति कोई पारिवारिक नाम स्वीकार करने पर तैयार न हुआ। ट्रूपर एक नाम था और अच्छा-खासा नाम था, यही हमेशा से उसका नाम था और आइंदा भी उसका यही नाम रहेगा। जब उसने यह बात कही थी, उसे मान-लेने के सिवा कोई चारा ही न था; क्योंकि सब यह जानते थे कि बहस करना बेकार है। अतएव जब उसने कहा कि हम अपना मकान नहीं छोड़ेंगे तो केटी ने बिना चूँ-चरा किये उसकी बात मान ली। केटी ने अपनी दोनों बच्चियों से कहा, "हम अपने घर ही ठहरेंगे।" यद्यपि परिवारों को गाड़ियों में बड़े मकान की ओर जाते देखकर उसका दिल बैठ गया लेकिन बेचारी क्या कर सकती थी? और जब रात हो गई तो ट्रूपर की छोटी सी झोंपड़ी मानो एकांत के गहरे कुएँ में डूबने लगी। केटी भयभीत होने लगी, लेकिन उसने अपनी भावनाओं व विचारों को ट्रूपर पर प्रकट नहीं होने दिया।

वह उस दिन सारी रात न सोई, जागती ही रही और ट्रूपर के पास ही लेट कर हर आवाज़ को सुनती रही। वह सोता रहा, उसे किसी बात का भय न था यह मकान उसका था, उसे कौन उससे छीन सकता था? वह लेटे-लेटे तमाम आने वाली फ़ौजों के बारे में सोचती रही। मिनट, घण्टे गुज़रते गये और उसने यकायक

कुछ सुना।

उसने ट्रूपर को जगा दिया। "सुनो, सुनो तो!"

"क्या हुआ?"

और उसने भी कुछ सुना। ये तेजी से दौड़ते हुए घोड़ों की चापें थीं। उसने बिस्तर से उठकर अपनी पतलून पहन ली, खिड़की में से छन कर चाँदनी कमरे में छिड़क रही थी। उसके प्रकाश में चमकती हुई रायफल को उसने उठा लिया और नंगे पैरों ही बाहर को चल दिया।

"कहाँ जा रहे हो?" केटी ने धीरे से पूछा।

"बाहर! तुम यहीं ठहरो।"

वह रायफल को मज़बूती से पकड़े हुए बाहर जाकर अपने छोटे से मकान के सामने खड़ा होगया और जब उसे याद आया कि रायफल में कार्तूस नहीं हैं तो अन्दर आकर कार्तूस भर लिए। बच्चे कुन-मुनाने लगे तो उसने उन्हें थपकियाँ देकर सुला दिया। केटी खामोशी से उसकी ओर देखती रही।

वह फिर बाहर जाकर चाँदनी में खड़ा हो गया और टापों की गूँज सुनने लगा। वह उस समय एक भीमाकार मनुष्य दीख रहा था, कमर तक नंगा था और उसके शरीर की उभरी हुई वज़नी मांसपेशियाँ चाँदनी में चमक रही थीं।

अचानक टापों की आवाज़ बंद होगई और फिर गिडियन के मकान की दिशा से आने लगी और देवदार वृक्षों वाली सड़क से कुछ मध्यम सुनाई पड़ने लगी देवदार के वृक्ष खत्म होने के बाद ही सड़क बिल्कुल साफ़ थी और चाँदनी में हर चीज़ अच्छी तरह से दिखाई दे सकती थी। और यहाँ ट्रूपर ने देखा कि आदमियों का एक गिरोह उसी ओर चला आता है। वे संख्या में लगभग तीस थे, और अपने घोड़ों को एक दूसरे के नज़दीक लगाये हुए थे। सफेद कफ़नी और *क्लान* के नुकीले कंटोप पहने थे। उसने एक साँस ली, मुँह-ही-मुँह में बड़-बड़ाया और निश्चल खड़ा रहा। इसके बाद वे आँखों से ओझल हो गये और घोड़ों की टापों की गूँज भी बन्द होगई। शायद वे हैनिवाल वाशिंगटन के मकान पर गये थे। अब वे इतने निकट आ चुके थे कि ट्रूपर उनके बोलने की मध्यम आवाज़ भी सुन सकता था। टापों की आवाजें फिर आने लगीं, अब उसके मकान

की बारी थी। ट्रूपर भी तैयार होगया और तन के खड़ा हो गया, उसका सीना उभरने लगा।

थोड़ी देर के बाद ही उसने उन्हें सड़क के उस भाग पर देखा जिस पर पेड़ों से छन-छन कर चाँदनी पड़ रही थी। उसका कुत्ता भूँकने लगा; वह एक बड़ा अच्छा शिकारी कुत्ता था जो अक्सर घोड़ों के झुण्ड पर निर्भीकता और मूर्खता के साथ टूट पड़ता था। वे थके हुए और धीरे-धीरे आ रहे थे; ट्रूपर को देखकर वह मंद-गति और भी धीमी पड़ गई। उन्होंने देखा कि वह एक विचित्र कठोर काले, चमकते हुए स्तम्भ की भाँति खड़ा हुआ है। उसकी कमर सीधी थी। और वह रायफल हिलाते हुए खड़ा था। कुछ मिनटों तक वे रुके रहे और धीरे-धीरे आगे बढ़ने लगे।

"क्या चाहते हो?" उसने पूछा, उसकी गहरी आवाज़ में ग्लानि और क्रोध झलक रहा था। केटी दरवाजे के पास आगई; उसने कण्टोपधारी आदमियों को देखा तो पागलों की भांति सिसकियाँ भरने लगी।

आगे खड़े एक आदमी ने कहा, "हम हैनिबाल वाशिंटगन, एण्ड्रिव शेर्मन और तुझे पकड़ने आये हैं।"

"तुमने मुझे देखा है?" ट्रूपर ने कहा।

"बंदूक नीचे रख दे!"

"तुम जानते हो मुझे?" ट्रूपर ने दोहराया, उसकी आवाज़ बजते हुए ढोल के समान थी और उसमें घृणा कूट-कूटकर भरी थी।

"तुम मेरी ज़मीन पर हो! डायन के मरदूद बच्चो, चले जाओ मेरी ज़मीन से।" कुत्ता अपने मालिक की आवाज़ से उसके क्रोध को समझ गया। वह भी गुस्से से भूँकने लगा और दौड़कर घोड़े के पैरों से झूम पड़ा। घोड़ा बितक कर पीछे हटा। किसी ने कहा, "कुत्ते को खामोश करता है या नहीं?"

एक पिस्तौल चली और कुत्ता ज़मीन पर लौटने लगा। ट्रूपर का चेहरा क्रोध से ऐंठ गया और उसने निशान साध कर गोली चलादी। एक आदमी जीन पर डग-मगाकर घोड़े से गिर गया और उसकी एक टाँग रकाब से अटकी रह गयी। घोड़े घबड़ाकर पीछे हटने लगे। और उसके बाद एक समय में आधी दर्जन राय-

फलों के चलने की आवाज़ आई। कारतूस ट्रूपर के शरीर पर हथौड़ों की भाँति पड़ने लगे।

परन्तु वह आगे बढ़ता गया। उसके भरे हुए सीने से खून के फौवारे छूट पड़े, उसकी पत्नी पागलों की भाँति चीखने लगी। किसी ने ललकार कर कहा, "मारो ईरानी के बच्चे को।"

एक रायफल और चली और ट्रूपर लड़खड़ाने लगा। सवारों ने समीप आकर उसको घेर लिया, उसने अपनी रायफल घुमाई और घुमाने में उसका ऊपरी बाजू सूखी शाखा की भाँति चटखने लगा।

उसने फिर रायफल को घुमाया और कारतूसों को पास खड़े आदमी की हँसली की हड्डी पर खाली कर दिया। हड्डी टूटकर उसके सीने में घुस गई। अब ट्रूपर पर गोली चलाना कठिन था क्योंकि वह उसके बहुत ही समीप आ गये थे और एक-दूसरे के गोली लग जाने का भय था। उसने एक कदम पीछे हटते हुए घोड़े के सवार को टाँग पकड़कर नीचे घसीट लिया। और वह उस चूहे की भाँति चिल्लाने लगा जो कुत्तों के बीच में आकर असमर्थ हो गया हो। एक और मनुष्य अपने घोड़े से फिसल पड़ा, उसने अपनी बंदूक की नाल ट्रूपर की पीठ पर जमाकर गोली चलादी। उसका राक्षस जैसा शरीर कठोर होकर खाली थैले की भाँति ढेर हो गया। जिस मनुष्य को उसने आखिर में घोड़े से घसीट लिया था वह जमीन पर पड़े-पड़े दर्द से कराहने लगा। जिस मनुष्य की हड्डी टूट गई थी वह भी अचा-नक असभ्यता से चीखें मारने लगा। वे ट्रूपर के निर्जीव शरीर पर गोलियाँ चलाते रहे और उसकी मृत्यु का विश्वास हो जाने पर वे अपने-अपने घोड़ों से उतरने लगे। केटी अपने पति को देखने के लिए घर से बाहर निकल आई। उन्होंने उसे पकड़ कर उसके वस्त्र फाड़कर तार-तार कर दिये। उसको जमीन पर पटक दिया और टाँग पर टाँग रखकर चीरने का प्रयत्न करने लगे परन्तु उसने किसी-न-किसी प्रकार से अपने पाँव को छुड़ा लिया। एक दूसरा कण्टोपधारी क्रोध में बड़बड़ाता हुआ आगे बढ़ा और उसने केटी के सिर पर बन्दूक का कुन्दा दे मारा, उसका सिर चकनाचूर हो गया और वह एकाएक मर गई। उसके अंग बेकार थे और उसका ध्यान किसी ओर भी नहीं था। एक आदमी ने ललकार कर कहा :

"मरदूद कुतिया का बच्चा।"

वह खड़े होकर मुर्दे को देखने लगे। उसका वस्त्रहीन शरीर किस प्रकार पूर्ण रूप से और कितनी शीघ्रता से बेकार हो गया था। फिर वह उस आदमी के आस-पास एकत्रित हो गये जिसकी हँसली टूट गई थी।

वह आदमी जिसको ट्रूपर ने पहले गोली मारी थी वह तो कभी का मर चुका था और अब यह मर रहा था, वे उसको मरता हुआ देखने के लिए खड़े हो गये। उसका गाढ़ा-गाढ़ा खून खुली हुई नसों से झरने की भाँति बाहर निकलने लगा।

वे ट्रूपर के मकान की ओर मुड़े। अब हर चीज कितनी स्तब्ध हो गई थी, उन में से एक खलिहान में गया और भूसा भरकर ले आया जिसको खुले दरवाजे पर बिछा दिया गया। किसी ने उसे दियासलाई से जला दिया। वे आग को दहकाते रहे और शीघ्र ही मकान का अगला भाग जलने लगा। उसके बच्चे अन्दर से चीखने लगे। अब तक वह अपने भय को दिल-ही-दिल में दबाये बैठे थे। परन्तु अब उनका विलाप डरावनी आवाज से होने लगा। वे भयभीत थे परन्तु उनमें यह समझने की शक्ति न थी कि इस डर का कारण क्या है। लोग आस-पास बेचैनी की दशा में खड़े थे।

"अन्दर बच्चे हैं," किसी ने कहा।

एक दूसरे ने कहा, "इन कम्बख्त हब्शियों के बच्चे भी बहुत होते हैं।"

"ये सब काले हरामी बच्चे कहाँ चले गये?"

"मुझसे पूछो, वे सब कार्वेल के पुराने मकान में हैं।"

सबसे पहले जो आदमी बोला था उसने कहा, "हेनरी तुम वापस शहर जाकर बेण्टले से पूछो कि वह कालहून जिले का गिरोह जहन्नुम में चला गया क्या? वह आज रात हमारे साथ दो सौ आदमी भेजने वाला था। उससे पूछो कहाँ हैं वे आदमी?"

और फिर उसने कुछ सोचकर कहा, "उससे यह भी कह देना कि मैटी क्लार्क और हेप लासन मारे गये।"

इसके बाद वह जलते हुए घर को देखने लगा। बड़े मकान के अतिथियों के स्वागत के कमरे में रायफलें चलने की आवाज़ें सुनकर सब आदमी जाग उठे। वे

खिड़कियों में एकत्रित होकर पहाड़ी के उस पार देखने लगे जहाँ अब भी बंदूक चलने की आवाज़ गूँजती हुई मालूम हो रही थी। वे अपनी-अपनी रायफलें उठाकर बरामदे में आ गये और सुन्दर चाँदनी के धुँधले वायुमण्डल में उनकी नज़रें तैरने लगीं। औरतों ने ऊपर से पूछा, "क्या है ? क्या है ?"

बच्चे भी जाग उठे और बौखला कर बातें करने लगे।

कुछ आदमी मकान से बाहर निकलकर मकान के आसपास पहरा देने लगे, लेकिन उनको कुछ भी नहीं मिला। गिडियन को सबसे पहले मार्कस का ध्यान आया, लेकिन अब रात के तीन बज चुके थे और वह जानता था कि मार्कस अब तक मीलों दूर निकल गया होगा, वह बाहर मकान के दरवाजे पर खड़ा हुआ था, उसने एब्नेर लेट से पूछा।

"तुम्हारे ख्याल में यह आवाजें कहाँ से आ सकती हैं ?"

"नीचे घाटी में जहाँ पर ट्रूपर का मकान है वहाँ से आती हुई मालूम पड़ती हैं।" अब उन्हें ट्रूपर का ख्याल आया और वे एक दूसरे की ओर देखने लगे, "या खुदा !" फ्रैंक कार्सन ने नम्रता से कहा। वह घाटी की ओर इशारा करके हैनिबाल वाशिंगटन चीख उठा—"देखो !" रात के वातावरण में एक सुर्खी थी जो बराबर बढ़ती ही जा रही थी। पहले-पहले तो ऐसा प्रतीत होता था कि किसी खलिहान में आग लग गई है परन्तु जब आग के शोले भी दिखाई देने लगे तो पता चला कि इससे भी बड़ी कोई चीज़ जल रही है। धीरे-धीरे सारा आकाश लाल हो गया और किसी ने अचानक वह बात कह दी जो सबके दिलों में थी।

"वह ट्रूपर का मकान है।"

"उसके दोनों बच्चे—"

वे सब-के-सब बरामदे से बाहर जाने लगे लेकिन गिडियन ने उन्हें वापस बुला लिया। "अपने हवास क्यों खोते हो ? खुदा के लिए ज़रा सब्र से काम लो यहीं ठहरो ! हैनिबाल, तुम जाओ और देखो तो क्या बात हुई है ?"

हैनिबाल वाशिंगटन ने सिर हिला कर सहमति प्रकट की और एकदम दौड़ गया। आदमी की एक छोटी सी परछाईं चाँदनी में विलीन होती हुई प्रतीत हुई। उसके चले जाने पर फिर स्तब्धता छा गई, केवल कुछ व्यक्ति गिडियन की ओर

देखते रहे।

"हम अब से यहाँ साथ ही रहेंगे और बाहर नहीं जायेंगे," गिडियन ने कहा। "तुम चाहते थे मैं तुम्हारी अगुवाई करूँ, इसलिए अब अगर मेरी अगुवाई में चलना है तो मेरा हुक्म मानो, वरना किसी और को मेरी जगह चुन लो।"

"अच्छा, गिडियन," एब्नेर ने नम्रता से कहा।

"जेम्स, एण्ड्रिव, इज़रा तुममें से हरेक को मकान की तीनों दिशाओं में तीस गज़ के फासले पर जाकर पहरा देना चाहिए और ज्योंही तुम कुछ सुनो या देखो तो हमें पुकार लेना।"

तीनों आदमी चले गये। कुछ औरतें बरामदे के क़रीब आकर मर्दों से खुसर-पुसर करने लगीं; उन्हें वापस अंदर भेज दिया गया। उनसे कहा गया कि वे बच्चों को फिर सुला दें। उस रात कार्वेल में फिर कोई न सो सका। और जब काफी वक़्त गुजरने के बाद कुछ नहीं हुआ तो लोग छोटे-छोटे गिरोहों में बँट गये और उस परिस्थिति पर विचार-विनिमय तथा भविष्यवाणियाँ करने बैठ गये, उनकी आवाज़ें बड़ी धीमी पर कर्कश थीं। कुछ तो मकान की चौड़ी-चौड़ी सीढ़ियों पर बैठ गये और कुछ बड़े-बड़े खम्भों से, जो रात को बड़े ही भव्य व ऊँचे लग रहे थे, टिक कर बातें करने लगे। उन सबकी नज़रें पहाड़ी की तराई पर लगी हुई थीं जहाँ हैनिबाल वाशिंगटन जाकर अदृश्य हो गया था। कोई एक घण्टे बाद किसी की आकृति समीप आती हुई दिखाई पड़ी।

"हैनिबाल?"

वह हाँफता-काँपता वापस आया। सिर से पैर तक वह ओस से तर हो गया था; कुछ कहने से पहले उसे दम लेना पड़ा।

"बच्चे कहाँ हैं?"

उसने सिर हिलाकर कहा, "जल गये होंगे, शायद। मैं चुपके-चुपके उनके समीप पहुँच गया। वे लोग मुझे साफ दिखाई पड़ रहे थे। मैंने उन्हें बातें करते भी देखा।"

"क्या बातें सुनी तुमने?" गिडियन ने पूछा।

"वे क़रीब दो सौ आदमियों की राह देख रहे हैं जो कालहून ज़िले से आने

वाले हैं। मेरा ख्याल है कि जौर्जिया के क्लान की शाखा भी कुछ आदमियों को भेजेगी। उन्हें मालूम है कि हम लोग यहाँ पर हैं।"

सत्रह साल का एक लड़का बरामदे में कै करने लगा, उसे रह-रहकर मचली आ रही थी और वह उल्टी किये जा रहा था। आग की लपटें अब मध्यम पड़ती जाती थीं, लेकिन कुछ लोगों की नज़रें एक दूसरी ही दिशा में लगी हुई थीं। वहाँ पेड़ों के अँधियारे झुण्ड के ऊपर कोई हल्की लाल चीज़ नज़र आ रही थी; यह चीज़ ज्यों-ज्यों बढ़ने लगी लोग एक-एक करके एब्नेर लेट की तरफ देखने लगे। वह ड्यौढ़ी पर खड़ा था, उसकी बड़ी-बड़ी लाल मुट्ठियाँ भिंची हुई थीं और वह अपने निचले होंठ को दाँतों से इतने ज़ोर से काट रहा था कि खून उसकी ठोढ़ी तक झलक आया। फिर गो उसका झुलसा हुआ चेहरा निश्चल था, उसने यकायक रोना शुरू कर दिया और आँसू उसके काले-काले गालों से टपकने लगे। वह मंद स्वर में बोला :

"हरामी कहीं के—जो कुछ मेरे पास था, जो कुछ मैं लेना चाहता था सब नष्ट हो गया, खुदा गारत करे इन हरामी पिल्लों को, खुदा इन्हें जहन्नुम बख्शे—कोई काम करे, निर्माण करे, मन्सूबे बाँधें, स्वप्न देखे और ये हरामी कहीं के उसे—"

हैनिबाल वाशिंगटन ने कहा, "गिडियन, इससे पहले कि वे बस्ती के सब मकानों को आग लगादें हम क्यों न उन्हें रोक दें?"

"वे इसीलिए तो मकानों को आग लगा रहे हैं, क्योंकि वे चाहते हैं कि हम खुले तौर पर उनके सामने आजायें।" गिडियन ने कहा।

"मैं तो जाता हूँ वहाँ," एब्नेर लेट बोला।

"नहीं, तुम मत जाओ। हमने ट्रूपर को वहाँ छोड़कर उसका अंजाम देख लिया। वह और उसकी घरवाली सड़क पर मरे हुए पड़े हैं।"

"मैं जारहा हूँ, गिडियन!"

"नहीं, नहीं तुम नहीं जाओगे," गिडियन की आवाज़ स्पष्ट और रूखी थी।

अब एक और नई चीज़ हुई। इज़रा गोल्डन चिल्लाया; उन्हें कुछ दूर टापों की मंद ध्वनि सुनाई देने लगी। और फिर कोहरे के धुँधलके में उन कपटोपधारी

सफेद भूतों की आकृतियाँ नज़र आने लगीं। कुछ ही क्षण बाद बीस या इससे भी अधिक सफेदपोश घुड़सवारों का एक झुण्ड डेढ़ सौ गज़ के फासले पर आकर रुक गया।

"कौन है वहाँ, रुक जाओ!"

"क्या चाहते हो?" गिडियन ने चिल्लाकर कहा। "कौन हो तुम?" उसके शब्द रात्रि के अंधकारमय वातावरण में ऊँचे-नीचे लगे।

"जानते नहीं तुम, हम कौन हैं? हम उन आदमियों को पकड़ना चाहते हैं!"

"तुम्हें जवाब देना बेकार है," गिडियन बोला। "तुम्हें जवाब देना बिल्कुल बेकार है।"

हम उन्हीं को लेने यहाँ आये हैं जैक्सन! उन्हें हमारे हवाले कर दो, वरना इस बस्ती का एक-एक मकान जलाकर खाक कर दिया जायगा!"

गिडियन ने तेजी से कहा, "मकान के चारों तरफ फैल जाओ और घास व झाड़ियों में छुप जाओ। जब तक वे पचास गज के फासले तक न आजायँ गोली न चलाना।"

लोग चारों तरफ फैलकर झाड़ियों में छिप गये। जो बरामदे में थे उन्होंने लेटकर अपनी रायफलें सीधी करलीं। गिडियन, एब्नेर और भाई पीटर एक खंभे से लगकर खड़े हो गये। गिडियन ने एब्नेर की ओर देखा, वह अपनी बन्दूक को देख रहा था,—यह एक पुरानी, लंबी, पर ठीक निशानेवाली रायफल थी। वह चट्टान की भाँति अटल व अचल खड़ा था लेकिन आँसू अब भी उसके गालों पर झलक रहे थे। "खुदा हम पर रहम करे, खुदा हमें माफ करदे," भाई पीटर कह रहे थे। गिडियन ने अपनी स्पेन्सर बन्दूक उठाली और निशाना साधकर देखने लगा। कितने दिन गुज़र गये जब वह इस प्रकार किसी को मारने के लिए निशाना साधा करता था। दुनिया में सबसे ज़्यादा असभ्य व पागलपन का काम किसी को जान से मारना है। लेकिन अब तक इसीसे सत्य व असत्य के निर्णय होते आये हैं। भूतों की सफेद क़तारें आगे बढ़ने लगीं। पहले तो टापों की आवाज़ तेज़ थी लेकिन बाद में रफ़्ता-रफ़्ता मध्यम पड़ गई। वे अभी सौ गज़ की दूरी पर ही थे कि एब्नेर लेट की रायफल चली और एक सवार अपने

घोड़े से नीचे आ गिरा। सफेदपोश भी गोलियाँ चलाने लगे। पचहत्तर गज़ के फ़ासले पर मकान के चारों तरफ से गोलियाँ चलने लगीं। हालांकि गिडियन ने उन्हें आदेश दिया था कि पचास गज़ के फ़ासले से गोलियाँ चलाना। एक और सवार अपने घोड़े से गिर पड़ा और दूसरा दर्द के मारे चीखने-चिल्लाने लगा। सफेदपोश सवारों की क़तार रुक गई, वे संकोच में पड़ गये और लौटकर इतनी तेज़ी से भागे कि क्षण भर में चाँदनी में विलीन हो गये।

बरामदे के लोग अपनी कमींगाहों से निकलकर आहिस्ता-आहिस्ता बाहर आ गये। सफेदपोश घास पर पड़े हुए थे। कार्वेल के दो आदमियों ने उनके चेहरे से कनटोप उतार लिए। दोनों आदमी मर चुके थे, उन्हें कोई न जानता था और कार्वेल के किसी आदमी ने भी उनकी सूरत इससे पहले नहीं देखी थी।

पहले आक्रमण में मकान के अन्दर किसी को भी कोई नुकसान नहीं पहुँचा लेकिन उससे जो थोड़ी-बहुत खुशी लोगों को हुई थी वह आकाश में नई लपटें देखकर ख़त्म हो गई। एक के बाद दूसरा मकान और खलिहान आग की भेंट हो गये, और हर आतिशज़नी से किसी-न-किसी की तबाही, मायूसी और विपत्ति का आभास होने लगा। बच्चे और औरतें एक जगह एकत्र होकर ये दृश्य देख रही थीं। सूर्योदय हुआ; लेकिन जलते हुए मकानों पर अब भी धुएँ के काले झण्डे लहरा रहे थे।

औरतों ने नाश्ता तैयार किया और सबने मिलकर खाया, लेकिन किसी के होंठों पर मुस्कराहट न थी, सब खामोश थे। गिडियन को यही तसल्ली थी कि अब तक तो मार्कस ने तार भेज दिये होंगे।

मार्कस ने पहाड़ी के नीचे उतर कर अपनी घोड़ी को चरागाहों के उस मैदान में डाल दिया जहाँ पहले ज़माने में अच्छी नस्लों के घोड़ों को पाला-पोसा जाता था। इस प्रकार नई सड़क और दलदल की सड़क के लम्बे रास्ते को छोड़कर वह ख़ास सड़क पर पहुँच गया। छोटी घोड़ी तेजी से दौड़ती रही, वह इस तरह घण्टों चल सकती थी। चाँदनी से प्रकाशित सड़क सुनसान थी और ऐसी रात में जब ठण्डी हवा चल रही थी तो आदमी जहन्नुम तक भी जा सकता था और लौट सकता है। कार्वेल से आठ मील दूर निकल जाने के बाद मार्कस ने घोड़ी को

आराम देने के लिए रोक लिया। उसके कानों में सवारों के आने की आवाज आई। वह घोड़े से उतर पड़ा, उसे थपकियाँ दीं और उसके कान में कुछ कहते हुए देवदार के घने वृक्षों के एक झुण्ड में चला गया। वहाँ खड़े होकर उसने सवारों के एक गिरोह को आते हुए देखा; वे संख्या में लगभग बीस थे और क्लान की सफेद वेश-भूषा में थे। जब वे काफ़ी दूर निकल गये तो मार्कस फिर अपनी घोड़ी पर सवार होकर आगे बढ़ गया।

वह कण्टोपधारी हमलावर सवारों को देखकर परेशान हो गया। उसने सोचा ज़रूर ये लोग कार्वेल जा रहे थे। मैं क्यों न वापस जाकर लोगों को सूचना दे दूँ। परन्तु उसने यह भी सोचा कि बीस आदमी बड़े मकान पर [illegible] के लिए काफी नहीं हैं, इसके लिए उसका बाप भी होशियार होगा और अगर वह वापस गया तो हो सकता है कि ये लोग उसको रास्ते में मिल जायँ और उसे घेर कर मार डालें। ये बातें सोचकर वह आगे बढ़ता गया। उसका माथा घोड़े की गर्दन से लगा हुआ था। कभी-कभी नींद का झोंका भी आ जाता था, लेकिन घोड़ी हवा से बातें करती हुई चली जा रही थी। घंटे गुज़रते गये और सड़क भी कदमों के नीचे से गुज़रती गई। मार्कस में अभी इतना बचपन बाकी था कि अपने उद्देश्योल्लास में वह कार्वेल के लोगों की संकटापन्न स्थिति को भूल गया, और अपनी घोड़ी से बड़े मजे-मजे की बातें करने लगा :

"आह! क्या घोड़ी है तू भी मेरी नन्हीं मुन्नी-सी माशूक़ा! तेरा दिल क्या है जैसे तोप का गोला! जैसे चढ़ता हुआ सूरज़—" जब सुबह हुई और आकाश का अंधकार दूर होने लगा तो मार्कस ने घोड़ी की बागें खींचीं, उसकी रफ्तार को धीमा कर दिया और थोड़ी दूर इस प्रकार चलने के बाद वह सड़क को छोड़कर एक मैदान में चला गया। घोड़ी हाँफ रही थी; अब दोनों को आराम की ज़रूरत थी, वह भी बहुत थक चुका था। बागों को अपनी कलाई में लपेट कर वह कुछ देर दम लेने के लिए लेट गया; इस सख्त और नर्म ज़मीन पर तो सोने का विचार करना ही व्यर्थ था लेकिन, उसने सिर्फ एक क्षण के लिए अपनी आँखें बंद कर लीं। लेकिन बागें खींचने की वजह से जो तकलीफ उसे हुई उससे उसकी आँख खुल गई, और जब उसने देखा तो दिन चढ़ आया था और घोड़ी उस पर अपने

मुँह को झुकाये उठकर मुहब्बत ज़ाहिर कर रही थी। उसकी घड़ी में साढ़े आठ बज रहे थे, वह कम-से-कम एक घंटे तक सोता रहा। जब उठा तो सवार होकर रवाना हो गया और दस बजे के बाद कोलम्बिया पहुँच गया।

जब वह शहर की गलियों से गुज़र रहा था तो लोग उसे कौतूहल भरी नज़रों से देख रहे थे। वह सीधा पश्चिमी यूनियन के दफ्तर में गया और अपनी घोड़ी को बाहर के कड़े से बाँध कर अन्दर चला गया; नींद से उसमें काफ़ी स्फूर्ति नहीं थी; वह अब भी थका हुआ था; वह अपना काम जल्दी से करके शहर से बाहर जाकर किसी सायेदार जगह पर सोना चाहता था। इस समय वह मुहाँसे-भरे चेहरे वाला लड़का नहीं था; केवल चालीस साल का ऑपरेटर सुस्त अकेला बैठा हुआ था। खिड़की के करीब आने से पहले वह एक क्षण तक मार्कस के चेहरे की ओर देखता रहा।

"क्या काम है लड़के ?"

मार्कस ने सारे तार निकाल कर उसके सामने रख दिये,—"मेहरबानी करके इन सबको भेज दीजिये।"

काग़ज के टुकड़ों पर उड़ती हुई नज़र डाल कर ऑपरेटर ने कहा, "इन पर तो बहुत डालर खर्च हो जायेंगे लड़के।"

मार्कस ने पाँच और दस-दस डालर के नोट निकालकर खिड़की पर रख दिये।

"एक हब्शी के पास इतने पैसे कहाँ से आ सकते हैं ?"

गिडियन ने मार्कस से कहा था, "चाहे कुछ हो जाय पर इन तारों को ज़रूर पहुँचाना चाहिये। मुझे तुम पर भरोसा है।" मार्कस ने उसे पटाने की ग़रज़ से जवाब दिया, "मैं ये तार प्रतिनिधि जैक्सन की तरफ से भेज रहा हूँ। ये पैसे उन्होंने ही मुझे दिये हैं"।

"क्या उन्होंने दिये हैं ?"

"जी हाँ, मेहरबान ! यह डालर उन्होंने मुझे ही दिये हैं।"

ऑपरेटर ने तारों को पढ़ना शुरू कर दिया। इसके बाद उसने बड़े ग़ौर से मार्कस, और उसके मैले कीचड़ में भरे हुए, कपड़ों को देखा और नज़र

आराम देने के लिए रोक लिया। उसके कानों में सवारों के आने की आवाज आई। वह घोड़े से उतर पड़ा, उसे थपकियाँ दीं और उसके कान में कुछ कहते हुए देवदार के घने वृक्षों के एक भुण्ड में चला गया। वहाँ खड़े होकर उसने सवारों के एक गिरोह को आते हुए देखा; वे संख्या में लगभग बीस थे और क्ल'न की सफेद वेश-भूषा में थे। जब वे काफ़ी दूर निकल गये तो मार्कस फिर अपनी घोड़ी पर सवार होकर आगे बढ़ गया।

वह कण्टोपधारी हमलावर सवारों को देखकर परेशान हो गया। उसने सोचा जरूर ये लोग कार्वेल जा रहे थे। मैं क्यों न वापस जाकर लोगों को सूचना दे दूँ। परन्तु उसने यह भी सोचा कि बीस आदमी बड़े मकान पर [illegible] के लिए काफी नहीं हैं, इसके लिए उसका बाप भी होशियार होगा और अगर वह वापस गया तो हो सकता है कि ये लोग उसको रास्ते में मिल जायँ और उसे घेर कर मार डालें। ये बातें सोचकर वह आगे बढ़ता गया। उसका माथा घोड़े की गर्दन से लगा हुआ था। कभी-कभी नींद का झोंका भी आ जाता था, लेकिन घोड़ी हवा से बातें करती हुई चली जा रही थी। घंटे गुज़रते गये और सड़क भी कदमों के नीचे से गुज़रती गई। मार्कस में अभी इतना बचपन बाकी था कि अपने उद्देश्योल्लास में वह कार्वेल के लोगों की संकटापन्न स्थिति को भूल गया, और अपनी घोड़ी से बड़े मजे-मजे की बातें करने लगा :

"आह! क्या घोड़ी है तू भी मेरी नन्हीं मुन्नी-सी माशूक़ा! तेरा दिल क्या है जैसे तोप का गोला! जैसे चढ़ता हुआ सूरज़—" जब सुबह हुई और आकाश का अंधकार दूर होने लगा तो मार्कस ने घोड़ी की बागें खींचीं, उसकी रफ्तार को धीमा कर दिया और थोड़ी दूर इस प्रकार चलने के बाद वह सड़क को छोड़कर एक मैदान में चला गया। घोड़ी हाँफ रही थी; अब दोनों को आराम की ज़रूरत थी, वह भी बहुत थक चुका था। बागों को अपनी कलाई में लपेट कर वह कुछ देर दम लेने के लिए लेट गया; इस सख्त और नर्म ज़मीन पर तो सोने का विचार करना ही व्यर्थ था लेकिन, उसने सिर्फ एक क्षण के लिए अपनी आँखें बंद कर लीं। लेकिन बागें खींचने की वजह से जो तकलीफ उसे हुई उससे उसकी आँखें खुल गई, और जब उसने देखा तो दिन चढ़ आया था और घोड़ी उस पर अपने

आराम देने के लिए रोक लिया। उसके कानों में सवारों के आने की आवाज आई। वह घोड़े से उतर पड़ा, उसे थपकियाँ दीं और उसके कान में कुछ कहते हुए देवदार के घने वृक्षों के एक झुण्ड में चला गया। वहाँ खड़े होकर उसने सवारों के एक गिरोह को आते हुए देखा; वे संख्या में लगभग बीस थे और क्ल'न की सफेद वेश-भूषा में थे। जब वे काफ़ी दूर निकल गये तो मार्कस फिर अपनी घोड़ी पर सवार होकर आगे बढ़ गया।

वह कण्टोपधारी हमलावर सवारों को देखकर परेशान हो गया। उसने सोचा जरूर ये लोग कार्वेल जा रहे थे। मैं क्यों न वापस जाकर लोगों को सूचना दे दूँ। परन्तु उसने यह भी सोचा कि बीस आदमी बड़े मकान पर हमला करने के लिए काफी नहीं हैं, इसके लिए उसका बाप भी होशियार होगा और अगर वह वापस गया तो हो सकता है कि ये लोग उसको रास्ते में मिल जायँ और उसे घेर कर मार डालें। ये बातें सोचकर वह आगे बढ़ता गया। उसका माथा घोड़े की गर्दन से लगा हुआ था। कभी-कभी नींद का झोंका भी आ जाता था, लेकिन घोड़ी हवा से बातें करती हुई चली जा रही थी। घंटे गुजरते गये और सड़क भी कदमों के नीचे से गुजरती गई। मार्कस में अभी इतना बचपन बाकी था कि अपने [illegible] में वह कार्वेल के लोगों की संकटापन्न स्थिति को भूल गया, और अपनी घोड़ी से बड़े मजे-मजे की बातें करने लगा :

"आह! क्या घोड़ी है तू भी मेरी नन्हीं मुन्नी-सी माशूका! तेरा दिल क्या है जैसे तोप का गोला! जैसे चढ़ता हुआ सूरज—" जब सुबह हुई और आकाश का अंधकार दूर होने लगा तो मार्कस ने घोड़ी की बागें खींचीं, उसकी रफ्तार को धीमा कर दिया और थोड़ी दूर इस प्रकार चलने के बाद वह सड़क को छोड़कर एक मैदान में चला गया। घोड़ी हाँफ रही थी; अब दोनों को आराम की जरूरत थी, वह भी बहुत थक चुका था। बागों को अपनी कलाई में लपेट कर वह कुछ देर दम लेने के लिए लेट गया; इस सख्त और नर्म जमीन पर तो सोने का विचार करना ही व्यर्थ था लेकिन, उसने सिर्फ एक क्षण के लिए अपनी आँखें बंद कर लीं। लेकिन बागें खींचने की वजह से जो तकलीफ उसे हुई उससे उसकी आँख खुल गई, और जब उसने देखा तो दिन चढ़ आया था और घोड़ी उस पर अपने

मुँह को झुकाये उठकर मुहब्बत ज़ाहिर कर रही थी। उसकी घड़ी में साढ़े आठ बज रहे थे, वह कम-से-कम एक घंटे तक सोता रहा। जब उठा तो सवार होकर रवाना हो गया और दस बजे के बाद कोलम्बिया पहुँच गया।

जब वह शहर की गलियों से गुज़र रहा था तो लोग उसे कौतूहल भरी नज़रों से देख रहे थे। वह सीधा पश्चिमी यूनियन के दफ्तर में गया और अपनी घोड़ी को बाहर के कड़े से बाँध कर अन्दर चला गया; नींद से उसमें काफ़ी स्फूर्ति नहीं थी; वह अब भी थका हुआ था; वह अपना काम जल्दी से करके शहर से बाहर जाकर किसी सायेदार जगह पर सोना चाहता था। इस समय वह मुहाँसे-भरे चेहरे वाला लड़का नहीं था; केवल चालीस साल का ऑपरेटर सुस्त अकेला बैठा हुआ था। खिड़की के करीब आने से पहले वह एक क्षण तक मार्कस के चेहरे की ओर देखता रहा।

"क्या काम है लड़के?"

मार्कस ने सारे तार निकाल कर उसके सामने रख दिये,—"मेहरबानी करके इन सबको भेज दीजिये।"

काग़ज के टुकड़ों पर उड़ती हुई नज़र डाल कर ऑपरेटर ने कहा, "इन पर तो बहुत डालर खर्च हो जायेंगे लड़के।"

मार्कस ने पाँच और दस-दस डालर के नोट निकालकर खिड़की पर रख दिये।

"एक हब्शी के पास इतने पैसे कहाँ से आ सकते हैं?"

गिडियन ने मार्कस से कहा था, "चाहे कुछ हो जाय पर इन तारों को ज़रूर पहुँचाना चाहिये। मुझे तुम पर भरोसा है।" मार्कस ने उसे पटाने की ग़रज़ से जवाब दिया, "मैं ये तार प्रतिनिधि जैक्सन की तरफ से भेज रहा हूँ। ये पैसे उन्होंने ही मुझे दिये हैं"।

"क्या उन्होंने दिये हैं?"

"जी हाँ, मेहरबान! यह डालर उन्होंने मुझे ही दिये हैं।"

ऑपरेटर ने तारों को पढ़ना शुरू कर दिया। इसके बाद उसने बड़े ग़ौर से मार्कस, और उसके मैले कीचड़ में भरे हुए, कपड़ों को देखा और नज़र

हटा कर उसकी घोड़ी को देखने लगा। मार्कस ने जैकेट में हाथ डालकर पिस्तौल को अपनी मुट्ठी में दबा लिया। ऑपरेटर ने फिर तारों को पढ़ना शुरू कर दिया। और उन्हें एक ओर रख कर कहने लगा :

"अच्छा लड़के, मैं इनको भेज दूँगा।" और उसने पचास डालर माँगे।

"इनको इसी समय मेरी मौजूदगी में भेज दो" मार्कस ने कहा।

ऑपरेटर के जवाब में कटुता थी। "देखो लड़के, तार भेजने में वक्त लगता है, बहुत वक्त लगता है। मुझे यह बिल्कुल पसन्द नहीं है कि एक हब्शी मुझको मेरे काम का तरीका बताये। चले जाओ यहाँ से, और उन तारों की कोई फिक्र मत करो।"

"मैंने इनकी फीस अदा कर दी है, उनको इसी वक्त भेज दो!" मार्कस ने कहा।

"निकल जाओ, यहाँ से।"

मार्कस ने पिस्तौल निकाल लिया, और इसकी नाली ऑपरेटर के पेट से कुछ इंच ही दूर थी, पिस्तौल को उसने अपने शरीर से इस प्रकार छिपा रखा था कि बाहर चलनेवाला आदमी न देख सके। उसकी उँगलियाँ घोड़े पर रखी हुई थी।

"इसी वक्त भेजना होगा, बोर्ड पर बैठकर भेजना शुरू करदे वर्ना चला दूँगा गोली।" मार्कस ने कहा।

ऑपरेटर के चेहरे का रंग फीका पड़ गया, वह अपना निचला होंठ काटने लगा और लड़खड़ाते स्वर में बोला, "लड़के यह तो बहुत बुरी—"

"भेजता है कि नहीं? और कोई गड़बड़ करने की कोशिश न करना समझा। तू जो कुछ भेजेगा मैं वह सब समझ लूँगा, मुझे भी यह काम आता है।"

मार्कस की तरफ देखते हुए ऑपरेटर अपनी मेज़ पर आकर बैठ गया। उसने तारों को सामने रख कर टिक-टिक करना शुरू कर दिया; टिक-टिक की आवाज से मालूम हो रहा था मानो कह रही हो, "सावधान, प्रधान दफ्तर सावधान, सम्टर स्टेशन कोलम्बिया रिपोर्ट करता है कि एक हब्शी स्टेशन पर पिस्तौल ताने खड़ा है, पुलिस को सूचना कर दो, सावधान—"

ऑपरेटर इसी खबर को दोहराता रहा। थोड़ी देर बाद उसने बहाना किया कि एक तार खत्म हो गया, और उसको मुट्ठी में मसल कर टोकरी में डाल दिया। फिर उसने दूसरा तार अपने सामने रख लिया। मुहाँसे भरे चेहरेवाला लड़का अन्दर दाखिल हुआ। मार्कस ने उसको देखा और पिस्तौल की नाल उसकी तरफ करके बोला, "सामने दीवार से लगकर खड़ा हो जा।" लड़का हक्का-बक्का हो घूरता हुआ दीवार से लग कर खड़ा हो गया। उसका मुँह खुला का खुला रह गया और एक शब्द भी वह न बोल सका। ऑपरेटर की टिक-टिक से मालूम होता था "सावधान, प्रधान दफ्तर सावधान! मैं रिपोर्ट देने पर मजबूर हूँ—" उसने तीसरा तार भी खत्म करके टोकरी में डाल दिया। एक मध्य वर्ग का व्यापारी दफ्तर में प्रविष्ट हुआ। मार्कस ने उसको पिस्तौल से इशारा किया और वह लड़के के करीब जाकर खड़ा हो गया। ऑपरेटर ने चौथा तार भी टोकरी में डाल दिया। टिक-टिक जारी रही और इसी तरह पाँचवा और छठा तार भी खत्म हो गया।

"बस," ऑपरेटर ने कर्कश स्वर में कहा।

"अपनी जगह पर बैठे रहो," मार्कस पीछे हटते-हटते बाहर हो गया। "यहीं बैठे रहो, बिलकुल मत हिलो।" वह पीछे हटते-हटते दरवाजे से बाहर हो गया और सड़क पर आ गया, उसके हाथ में अब भी पिस्तौल था। उसके बाद उसने एक रायफल चलने की आवाज़ सुनी और उस आवाज़ के साथ ही उसके बायें बाजू में ज़ोर का दर्द शुरू हो गया, यह जैसे किसी गर्म हथौड़े की चोट थी, जिससे उसका बाजू टूट कर बेकार हो गया था। उसके शरीर ने इतना सख्त दर्द इससे पहले कभी महसूस नहीं किया था, वह किसी-न-किसी तरह से अपने पाँव पर खड़ा रहा, और लड़खड़ाता हुआ घोड़ी तक पहुँच गया, उसको खोला और उस पर सवार होने लगा। दो आदमी सड़क पर रायफलें लिये चले आ रहे थे, उनमें से एक निशाना साधने के लिए खड़ा हो गया और मार्कस की रान में भी गोली लग गई। सामने के कोने से चार सशस्त्र मनुष्य और आ गये। लोग हर तरफ से दौड़ते चले आ रहे थे।

मार्कस ज़ीन पर जम गया और रकाब हिला कर घोड़ी से कहने लगा

"दौड़ो बच्ची दौड़ो," वह जीन पर लेट गया, और घोड़ी हवा से बातें करने लगी। सशस्त्र मनुष्य रुक गये और गोलियाँ चलाने लगे। रायफल पर रायफल चल रही थी और कारतूसों से मार्कस का शरीर छलनी हो गया था। एक कारतूस घोड़ी को भी लगा और वह लड़खड़ा कर गिर पड़ी और मार्कस भी उसके साथ नीचे आ गिरा। जंगली हिन-हिनाहट के साथ घोड़ी फिर अपने पाँवों पर खड़ी होकर भाग गई। सशस्त्र मनुष्य धीरे-धीरे मार्कस के करीब पहुँचे, वे अब भी गोलियाँ चला रहे थे, और हर क़दम पर रायफल में कारतूस भरने के लिए रुक जाते थे। अंत में जब उन्हें विश्वास हो गया कि मार्कस मर चुका है तो वे बिलकुल ही क़रीब आ गये, और उनमें से एक आदमी ने जूते की नोक से मार्कस की लाश को पलट दिया।

पहले नाश्ते के बाद गिडियन ने बैंजामिन विथ्रोप को एक ओर ले जाकर कहा, "क्या अब भी तुम यहीं ठहरे रहना चाहते हो? क्या वे तुम्हें सही सलामत चला जाने देंगे।"

"मैं रात भर इस सवाल पर ग़ौर करता रहा हूँ," विंथ्रोप ने कहा। उसकी दाढ़ी बढ़ी हुई थी और वह थका हुआ नज़र आरहा था। अगर तुम चाहो तो मैं ठहरा रहूँगा, मेरा ख्याल है मैं तुम्हारी मदद कर सकता हूँ।"

"शुक्रिया! मुझे खुदा पर भरोसा है कि तुम अपने फैसले पर नहीं पछताओगे।

"मैंने इस पर भी कुछ सोचा है। मैं हमेशा ऐसी कोशिश करता हूँ कि ऐसा काम न करूँ जिस पर मुझको पछताना पड़े।" विन्थ्रोप ने कहा।

"अगर तुम ऊपर जाकर बच्चों की पढ़ाई का काम करो तो बहुत अच्छा हो। भाई पीटर हर प्रकार से तुम्हारी मदद करेंगे। अब उन्हें काबू में रखना ज़रा मुश्किल है, वह हमेशा घर में ही बन्द रहते हैं। बच्चे इस किस्म की पाबन्दी को ज़रा मुश्किल से ही गवारा करेंगे। उनकी समझ में नहीं आयगा कि वे क्यों बन्द हैं? अगर हो सके तो उन्हें सीधे-सादे तरीक़े से समझाओ कि हम यहाँ पर क्यों है? क्या कर रहे हैं और किस लिए हमारा इस मकान के अन्दर रहना बेहतर है?"

"मैं अपनी पूरी कोशिश करूँगा" विन्थ्रोप ने कहा।

"उनको भयभीत न करना। उन्हें ढाढ़स बँधाना। मेरा ख्याल है कि अभी हमें आशा का दामन नहीं छोड़ना चाहिए।"

विन्थ्रोप ने इस बात के जवाब में सिर हिलाया और भाई पीटर से बात-चीत करने के लिए चला गया। ज़्यादातर औरतें अब खाने के कमरे में चली गई थीं। गिडियन ने उनसे भी बात-चीत की, और सीधी-सादी ज़बान में उन्हें बताया कि वे किस परिस्थिति में हैं।

"हम इस परिस्थिति से नहीं बच सकते थे, यह हमारे लिए अवश्यम्भावी होगई है। अब हमें साथ-साथ मिलकर रहना चाहिए। ट्रूपर ने अपना अलग रास्ता ग्रहण किया, और उसका क्या परिणाम हुआ तुमको मालूम है। हमारे बचाव की एक ही सूरत है कि हम सब साथ रहें और साथ ही पुनः निर्माण करें और ऐसी कोई चिरस्थायी और सुन्दर वस्तु बनायें जिसकी कीमत हमारी कुरबानियों के बराबर हो। मुझे पूरी-पूरी उम्मीद है हम यह कर पायेंगे। हम यहाँ पर एक सुरक्षित स्थान पर हैं। हमारे पास कई दिन का खाना है, पानी है, दवाएँ हैं, और एक डाक्टर भी है। मि० विन्थ्रोप ने भी हमारे साथ रह कर बच्चों को पढ़ाने का दायित्व ले लिया है। मेरे ख्याल में यह एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण कार्य है; मैं समझता हूँ कि उनकी पढ़ाई जारी रहेगी और चाहे कुछ भी हो, जारी रहनी चाहिये। एक प्रकार से इस मकान में एक पूरा समाज आबाद हो गया है, और सबसे बड़ा सवाल यह है कि इतने सारे खान्दान एक लम्बे समय या थोड़े समय के लिए एक साथ रहकर अपने रोज़ाना के मसलों को आसानी से हल कर सकते हैं। मेरा ख्याल है कि हम ऐसा कर सकते हैं। पहले इससे भी बड़े-बड़े मसले हमारे सामने आये थे और हमने साथ मिलकर उन्हें हल किया था। इस मकान में काले लोग गोरे लोगों से दुगने से भी ज़्यादा हैं और मैं नहीं समझता कि इनसे हमारे रहन-सहन में मुश्किल पैदा होगी। हमने मिल कर रहने और काम करने का सबक़ सीख लिया है, और हम एक दूसरे की इज़्ज़त करते हैं। जो कुछ भी हमने अब तक किया है उसकी बुनियाद इस सिद्धान्त पर है कि इस राज्य में जहाँ काले व गोरे साथ ही रहते हैं, उन्हें साथ

ही मिल कर काम करना चाहिए; और साथ मिल कर निर्माण करना चाहिए। बाहर के लोग इस सिद्धान्त की सत्यता से इन्कार करते हैं। और उन्होंने हमारे मकानों को आग लगादी है, यह साबित करने के लिए कि वे ही सत्य और न्याय, के प्रतिनिधि हैं। परन्तु हमने अपने सिद्धान्तों के सत्य को साबित करने का दूसरा उपाय सोचा है। हम भय, हिंसा, और नाश पर विश्वास नहीं करते, परन्तु अपनी जान व माल की रक्षा के लिए अवश्य लड़ेंगे और क़ौम के सामने आज़ादी से मुहब्बत करने वाले, सभ्य लोगों की एक मिसाल कायम करेंगे।

"हमने कल ही यह फ़ैसला कर लिया है कि हम अपने खेतों पर काम करेंगे। परन्तु वर्तमान परिस्थिति में यह असंभव है। बग़ैर इजाज़त के कोई भी इस मकान को नहीं छोड़ सकता। पानी के हौज़ को भरा हुआ रखने के अलावा; मर्दों के और भी काम होंगे। उन्हें अपने माल की देख-भाल करनी होगी; जलाने की लकड़ी का प्रबन्ध करना होगा, इस मकान की हिफ़ाज़त भी करनी होगी। मकान के अन्दर का इन्तज़ाम औरतों के सुपुर्द रहेगा। तुम पर खाना बाँटने की जिम्मेदारी होगी। तुम बीमार और जख्मियों की देख-भाल करोगी। तुम्हें और छोटे-मोटे काम भी करने होंगे जो घर के अन्दर के इन्तज़ाम से सम्बन्ध रखते हैं।

"अन्त में मेरा तुमसे आग्रह है कि निराश न होओ। हमें ऐसा अनुभव होता है कि हम अकेले हैं। परन्तु हम अकेले नहीं हैं। हम इस देश का ही एक भाग हैं और असंख्य अच्छे लोगों से सम्बन्ध रखते हैं, जिन्होंने इस राष्ट्र को बनाया है। वे हमसे बेख़बर नहीं रहेंगे। हमें अकेला नहीं छोड़ेंगे।"

सुबह के वक्त गिडियन और दूसरे लोग, दूर खेतों के पार जंगल से बाहर आते हुए और अन्दर जाते हुए आदमियों को देखते रहे। वे रायफल के निशाने से दूर थे; और निरुद्देश्य इधर-उधर भटकते हुए मालूम हो रहे थे। उनमें से कुछ अब भी सफेद वेश भूषा और कंटोप पहने थे, लेकिन अधिकतर लोगों ने उस लिबास को उतार कर अलग रख दिया था। उन्होंने अंदाज़ा लगाया कि बीती हुई रात से अब तक उनके दुश्मनों की तादाद कम से कम ढाई सौ आदमियों तक पहुँच गई है और वे कार्वेल के आस-पास घूम रहे हैं। आज सुबह लगभग

ग्यारह बजे पचास आदमी और बढ़ गये हैं जो पूर्व की ओर से घोड़ों पर सवार होकर आये थे। नवागंतुकों में से बहुत से आस-पास घूम रहे थे, और सिर उठा कर मकान को देखते जाते थे।

अब आदमियों और बड़े लड़कों को गिरोह में बाँट दिया, हर गिरोह में आठ आदमी थे। हर गिरोह का एक कप्तान भी नियुक्त था और हर गिरोह के आदमियों को चार घंटे मकान पर पहरा देना पड़ता था, मकान की तीनों दिशाओं में हर एक पर दो आदमी तैनात थे। गिडियन उन सबका सेनापति था, एब्नेर लैट और हैनिबाल वाशिंगटन उसके सहायक थे। गिरोह के सेनापति अनुभवी सिपाही थे। लैज़ली कार्सन युद्ध के ज़माने में बिगुल बजाने के काम पर नियुक्त था उसके पास फ़ौज की पुरानी बिगुल थीं, उसे ख़तरे के वक्त बिगुल बजा कर ख़बरदार करने का काम सौंपा गया। मकान के पीछे, दोनों ओर बीच में गाड़ियों को उलटा करके बड़ा कारगर मोर्चा बनाया गया और सामान लाने-लेजाने के लिए थोड़ा सा रास्ता छोड़ा गया।

दोपहर के समय जब गिडियन और एब्नेर बरामदे में खड़े हुए थे तो उन्होंने एक आदमी को पहाड़ी की तरफ़ से आते देखा। वह एक लकड़ी से तकिये का एक सफ़ेद ग़िलाफ़ बाँधे हुए पैदल चला आरहा था। सौ गज़ की दूरी पर वह रुक गया, और चिल्लाया :

"जैक्सन ! जैक्सन !! क्या मैं ऊपर आ सकता हूँ ?"

"यह बेन्टले है" एब्नेर लैट ने कहा।

"आ सकते हो !" गिडियन ने कहा।

बहुत से आदमी और कुछ औरतें बरामदे में आकर एक भीड़ के समान खड़ी हो गईं; वे सब बेन्टले की तरफ देख रहे थे, उनके चेहरे पर विचित्र उदासीनता-पूर्ण कौतूहल झलक रहा था, ऐसा मालूम होता था जैसे आगजनी और क़त्ल व ग़ारतगिरी ने बन्टले को एक नया स्वरूप प्रदान किया है—एक ऐसा स्वरूप जिसे समझ लेना उनके लिए ज़रूरी है। बेण्टले सीढ़ियों पर आगया और एक घुटना उठाकर उस पर दोनों हाथ बाँध कर बैठ गया। उसका साहस निसन्देह था; ये वही लोग थे जिनके घरों में उसने आग लगवा दी थी और जिनके

पड़ोसियों को कत्ल कर दिया था। लेकिन यहाँ वह बिना हथियार के अकेला ही आगया था। उसने गिडियन से कहा :

"आओ हम सीधी-सादी मतलब की बातें करें। हम लड़ाई शुरू नहीं करना चाहते, गिडियन! मैं यहाँ कुछ आदमियों को गिरफ्तार करने आया हूँ, और देखो जरा सी बात पर क्या हो गया ?"

"मैं जानता हूँ क्या हुआ है ?" गिडियन ने कहा।

"अच्छा, तो तुम फिर उन आदमियों को हमारे हवाले क्यों नहीं कर देते ?"

"और उसके बाद ?" गिडियन ने पूछा।

"और उसके बाद हम तुम से कुछ नहीं कहेंगे।" बेएटले ने जवाब दिया।

"और फिर हम अपने घरों को वापस जा सकेंगे, यही ना ? या हमें जानवरों की भाँति खुले मैदानों में रहना पड़ेगा ? या कार्वेल छोड़ कर जाना पड़ेगा ? क्या, चाहते हो तुम हम से आखिर ?"

"देखो, गिडियन," बेएटले ने लापरवाही से कहा, "तुम्हें इस प्रकार की बातें करने का कोई अधिकार नहीं है। तुमने कल दो आदमी मार डाले, मैं इसी बात पर कार्वेल के बच्चे-बच्चे को सज़ा दिला सकता हूँ, लेकिन मैं इसे एक अचानक और इत्तेफाक की बात कहकर भी टाल सकता हूँ। वे तीन आदमी मेरे हवाले करदो और मैं जाता हूँ।"

"और उन तीन को पकड़ने के लिए तुम्हें तीन सौ लाने पड़े ?"

बेएटले ने एक ग्लानिपूर्ण दृष्टि गिडियन पर डाली। "क्लान कुछ और चीज़ है गिडियन! तुम जानते हो मैं क्लान का आदमी नहीं हूँ। जैसन ह्यूगर का रास्ता अलग है। तुम तो खुद जानते हो कि अगर ज़रा भी कुछ हो जाय तो लड़कों का जोश बढ़ जाता है और वे उस प्रमाद में कुछ कर बैठते हैं। लेकिन अब जो हुआ सो हुआ।"

"और इसी प्रमाद में ट्रूपर के बच्चों को जला दिया उन्होंने ?" गिडियन ने संतापपूर्ण स्वर में कहा।

"वह भी एक इत्तेफ़ाक़ था, लड़के अपने काबू में नहीं रहे और क्या ?"

विल बून ने बरामदे के पिछले हिस्से से जोर से और साफ़-साफ़ शब्दों में

कहा, "उससे बातें करना बेकार है। इस कुतिया के बच्चे को गोली क्यों नहीं मार दें गिडियन ?"

बेण्टले ने बून की ओर देखा और कहा, "मैं यह बात याद रखूँगा, बिल," और अपना सिर हिलाया।

"मैं तुम्हें बताता हूँ, मेरा क्या इरादा है," गिडियन ने कहा।

"मेरा ख्याल है तुम इस वक्त जिन्दा इसलिए बैठे हो बेण्टले, क्योंकि हम लोग सभ्य और क़ानून के पाबन्द हैं। और शायद तुम यह भली भाँति जानते थे इसीलिए आ भी गये। तुम जैसे लोगों का यह गुण दक़ियानूसी होने पर भी सराहनीय है कि तुम सभ्यता व शिष्टता को समझते हो; समझे ?"

"समझ गया," बेण्टले ने हल्की मुस्कराहट के साथ कहा।

"मैं चाहता हूँ कि तुम मेरी बातें समझ लो। क्या तुम जानते हो, बेण्टले, कि इस देश और इस राज्य के नागरिकों के क्या अधिकार हैं ? मैं उन्हें अच्छी तरह जानता हूँ; इस राज्य के विधान बनाने में मेरा भी हाथ है। इस मकान के किसी भी व्यक्ति को तुम गिरफ्तार नहीं कर सकते। बल्कि इसके विपरीत हम तुम्हें और तुम्हारे गिरोह को क़ानून के सामने जवाबदेह ठहराएँगे। हम तुमसे ट्रूपर और उसकी बीवी की हत्या के बारे में भी जवाबतलब करेंगे। तुम्हारी उस पाशविक करतूत का भी जवाब तुम से माँगेंगे जो तुमने उसके दो छोटे-छोटे बच्चों को जिंदा जला कर की है; और जो तुम्हारे क्लान के हज़ारों सियाह कारनामों की पराकाष्ठा है। हम तुम्हें मैक्हफ़ की पत्नी की मौत का जिम्मेदार ठहराएँगे; फ्रेंड मैक्हफ़ पर किये गये अत्याचार, ज़ेक हेल और ऐनी फिशर की हत्या और उस तमाम आतंक, क़त्ल व ग़ारतगरी जो तुमने कार्वेल में की है, उस सबका हम तुम्हें और तुम्हारी टोली को जिम्मेदार ठहराते हैं। बेण्टले, हमने सब्र किया, निर्माण-कार्य किया और अब हम अपने मार्ग से नहीं हटेंगे; हम अब भी अपना निर्माण-कार्य जारी रखेंगे और न केवल तुम्हारा बल्कि उन तमाम चीज़ों का नाश करके छोड़ेंगे जिनका प्रतिनिधित्व तुम और तुम्हारे दोस्त कर रहे हैं। मुझे यही कुछ कहना था। और ये बातें मैं अपने लोगों की तरफ़ से कह रहा हूँ। जाओ और यह बात अपने साथियों को भी बता दो। कह देना उनसे कि जो भी आदमी

हमारे मकान के क़रीब रायफ़ल की ज़द में आयगा हम उसे वहीं ढेर कर देंगे। जाओ और बता दो उन्हें।"

"बस, यही कहना था, जैक्सन ?" बेयटले ने पूछा।

"हाँ, बस यही कहना था।"

"बहुत अच्छा !" शेरिफ़ उठा, अपने पतलून की धूल झाड़ी और बरामदे में खड़े हुए लोगों को देखने लगा, उसकी नज़रें विशेषतया गोरों के चेहरों पर ठहर जाती थीं। वह लौटकर पहाड़ी से नीचे उतर गया।

उसी दिन सायंकाल पहला वास्तविक आक्रमण शुरू हुआ। क्लान के लगभग दो सौ आदमी थे जो सफेद पोशाक नहीं पहने थे; उन्होंने पश्चिमी दिशा से पहाड़ी पर चढ़ना प्रारम्भ कर दिया। उन्होंने बड़ी सावधानी व सतर्कता से आक्रमण का संगठन किया था और इसलिए ऐसा समय चुना था जबकि सूर्य अस्त हो रहा हो, उसका प्रकाश मकान पर पड़ रहा हो और उस मकान की सुरक्षा करनेवालों की आँखें उसके प्रकाश से चौंधिया गई हों। गिडियन ने इस मोर्चे पर मकान की तीन कम्पनियों को भेज दिया। वे उल्टी गाड़ियों और खिड़कियों के पीछे छिप गये। बाकी अठारह आदमियों को तीन दिशाओं में फैला दिया गया। उन्होंने अपनी रायफलें सीधी करके जहाँ तक मुमकिन था आँखों पर साया कर लिया। ऊपर दोमंजिले पर औरतों और बच्चों को हिदायत कर दी गई कि वे फर्श पर लेटे रहें। क्लान के आदमी घास और झाड़ियों में छिपते-छिपाते धीरे-धीरे आ रहे थे।

"पता नहीं उन लोगों में कितने ऐसे वीर थे जो गेटिसबर्ग के युद्ध में लड़े थे।" फ्रैंक कार्सन ने कहा।

उसे वह समय स्मरण हो आया जबकि गेटिसबर्ग में वीरों की पाँतें संगठित रूप से आग के जहन्नुम में झोंक दी गई थीं।

तीन सौ गज़ के फासले पर हैनिबाल वाशिंगटन ने निशाना साधा और अपनी रायफल आगे बढ़ाकर पहली गोली चलाई। "चूक गई !" उसने कहा। क्लान के आदमिनों ने अब गोलियाँ चलाना शुरू कीं। उनकी ये गोलियाँ या तो ज़मीन पर लगीं या रास्ते में ही गिर गईं। मैरियन जैफर्सन, जो एक पुरानी लम्बी

बंदूक लिए लेटा हुआ था, ने एक गोली चलाई जो किसी चीज़ पर जाकर लगी। दूर से एक आदमी के दर्द से चीखने की आवाज़ सुनाई दी। दूसरे लोग भी ठहर-ठहर कर सावधानी से फायर करते रहे। सौ गज़ के फ़ासले पर क्लान के आदमी खड़े हो गये। और उन्होंने आगे बढ़कर वार करने की कोशिश की। अब सूर्य बहुत नीचे उतर चुका था और उसकी किरणों में वह शक्ति न रही थी जो सुरक्षा करनेवालों की आँखों पर इतना असर डाल सकती कि वे ठीक निशाना न लगा सकें। मकान का पिछला सारा भाग रायफलों की आग से जगमगा उठा। बीस गज़ के अंदर ही क्लान वालों की पाँतें टूट गईं और उनका हमला खत्म हो गया। उनके कम-से-कम बारह आदमी काम आ गये। बाक़ी अपनी जान बचाने के लिए पहाड़ी पर से लुढ़कने लगे,—कोई पेट के बल घिसट रहा था, कोई लँगड़ा रहा था।

"गोलियाँ न चलाओ," गिडियन चिल्लाया। "बस करो!"

उसके बाद जो स्तब्धता छाई वह बड़ी कष्टप्रद थी। मोर्चे के पीछे कोई दर्द से कराह रहा था। किसी ने जेफ़ को पुकारा। मकान की बाईं ओर दोनों बाजुओं के मध्य घनी छाँव थी। एक आदमी अपने हाथ से बाजू के घाव को दबाये था जिसमें से खून छल-छल निकल रहा था। कराहनेवाला लैसी डगलास था, जिसकी हँसली की हड्डी टूट गई थी। जेफ़ ने बाजू पर पट्टी बाँध कर कहा, "इसे छूना नहीं। यह जैसा लेटा है इसे ऐसा ही लेटा रहने दो।" लोग खड़े हुए देख रहे थे कि क्या-क्या नुक्सान हुआ है और उनकी दृष्टि पहाड़ी की तराई पर लगी हुई थी। मैरियन जेफ़र्सन जिस तरह अपनी लम्बी रायफल को लिए हुए लेटा था, वैसा ही लेटा रहा। जब विल बून ने कंधा पकड़ कर उसे हिलाया तो वह लुढ़क गया। उसकी दोनों आँखों के बीच एक छेद हो गया था, कुछ लोग आसपास इकठे होकर खामोशी से उसकी ओर देखने लगे। संध्या की अंधकार-ग्रस्त पहाड़ी के नीचे से किसी के चीखने की आवाज़ें आने लगीं। जेफ़ ने कंधा टूटे हुए आदमी की तरफ़ से अपना ध्यान हटा कर कहा, "तुम कुछ करते क्यों नहीं? देखो ना, बाहर भी कोई घायल कराह रहा है।" लेकिन कोई वहाँ से न हिला। तब विल बून ने अपनी जैकेट उतार कर मैरियन जेफ़र्सन का चेहरा ढँक दिया। गिडियन

ने हैनिबाल वाशिंगटन की बाजू स्पर्श करके कहा, "किसी को अपने साथ ले जाकर बाहर पड़े हुए घायल को उठा लाओ।"

हैनिबाल आगे बढ़ा, फिर कुछ सकुचाया। "वहीं पड़ा रहने दो उसे," एब्नेर लैट ने कहा।

"जाओ, चले जाओ।" गिडियन ने मंद स्वर में कहा।

जेफ़ ने पहले से ही एक कमरे को अस्पताल बना दिया था। उसने कमरे में बेहतरीन लैंप लगा लिये थे और इवा कार्सन और हन्ना वाशिंगटन को मजबूर करके अपनी नर्सें बना लिया था। लैंपों की रोशनी क़रीब करके उसने क्लान के आदमियों के पाँव की गोली खोजना शुरू किया। उस आदमी के दो जगह गोलियाँ लगी थीं—एक पाँव में और दूसरी पेट में। उसके बचने की अभी कुछ उम्मीद थी। जेफ़ ने सीने की गोली तलाश करके निकाल ली। उस आदमी का चेहरा छोटा और लाल था और नीली तरल आँखें थीं। वह जेफ़ से कुछ कहने की कोशिश कर रहा था, लेकिन उसकी बातें समझ में नहीं आ रही थीं।

"तुम कहाँ से आये हो?" जेफ़ ने उससे पूछा। "तुम्हारा क्या नाम है?"

"स्क्रीवेन," उसने हकलाकर कहा। "स्क्रीवेन, स्क्रीवेन—" लेकिन जेफ़ यह न समझ सका कि क्या यह उसका नाम है या जौर्जिया के किसी जिले का नाम है।

लैसी डगलास को बहुत तकलीफ़ हो रही थी पर जेफ़ उसके लिए कुछ न कर सकता था। उसकी हड्डी कई जगह से टूटी थी और खून में ज़हर फैलने को रोकने के लिए एकमात्र तरीक़ा यही था कि वह हफ्तों तक एक ही करवट से बिना हिले-डुले लेटा रहे। दूसरे आदमी की हड्डी में कोई तकलीफ़ नहीं थी। हाँ, कुछ खून ज़रूर बह गया था। परन्तु कोई बहुत बड़ा घाव न था।

घायलों की चिकित्सा करते समय जेफ़ ने महसूस किया कि उसमें कटुता व निराशा बढ़ती जा रही है। यह गिडियन का तरीक़ा था और वह उसे सही नहीं समझता था। आख़िर आदमियों का लड़ने का तरीक़ा सिवाय नुक़सान, मौत, और तबाही के क्या हो सकता है?

उन्होंने मैरियन जेफर्सन की लाश को बायें कमरे के एक भाग में रख दिया

और वहाँ उसकी बीवी, बहन, बूढ़ी माँ और बच्चे रोने-चीखने लगे। उनके रोने और सिसकियों की आवाज सारे मकान में आने लगी थी। भाई पीटर जाकर उन्हें सान्त्वना देने लगे। उन्होंने वही पुराने शब्द दोहराए, "जिसने दिया था उसी ने ले लिया खुदा का शुक्र अदा करो।"

परन्तु वह इसका उत्तर नहीं दे सके कि आखिर ऐसा क्यों होता है। वह जिस समुदाय के पादरी थे वह साधारण समुदाय की भाँति नहीं था, जो प्रायः पादरियों की अगुआई में चलता है। वह उन लोगों की जिन्दगी को तमाम अवस्थाओं से गुजरते हुए देख चुके थे,—जन्म, बचपन, युवावस्था और अधेड़ अवस्था भी भाई पीटर ने देखी थी, और अब वह उनकी मृत्यु को देख रहे थे। यह मृत्यु भी कोई साधारण मृत्यु नहीं थी, जो प्राकृतिक रूप से सहज ही हो जाय; यह वह मौत नहीं थी जो इस प्रकार से आती है कि मनुष्य बिस्तर पर लेट कर अपनी साँस को सर्वदा के लिए अपने शरीर से त्याग देते हैं, बल्कि यह वह मौत थी जो अत्यन्त भयंकर और नाशकारी थी। भाई पीटर की अक्ल काम नहीं कर रही थी। उन्होंने एक बार गिडियन से कहा था, "तुम एक दूध पीते बच्चे के समान हो। सब कुछ तैयार है। तुम्हारा काम तो केवल इतना है कि अपने आपको को भरलो, बिल्कुल उसी प्रकार जिस प्रकार से खाली डोल कुएँ के पानी में जाकर भर जाता है। ज़रा ठहरो और देखो क्या होता है?" एक बार ये बातें उन्होंने गिडियन से कही थीं। परन्तु अब उनकी अक्ल काम नहीं कर रही थी। गिडियन में कठोरता आ गई थी, वह विचित्र-सा प्रतीत होता था और हर काम को विश्वास के साथ करता था; जब उसने कमरे में आकर मैरियन जेफर्सन की लाश को देखा तो उसके चेहरे पर एक शिकन तक नहीं पड़ी। वह पाँच मिनट तक खड़ा मैरियन जेफर्सन की ओर देखता रहा और सिर हिलाकर बाहर चला गया। उसने लुइसी से सान्त्वना का एक शब्द भी नहीं कहा; भाई पीटर से भी कोई बात नहीं की और बच्चों से भी कुछ नहीं बोला।

गिडियन, हैनिबाल वाशिंगटन और एब्नेर लेंट बरामदे में खड़े हुए बीती हुई और होनेवाली घटनाओं पर बातचीत करने लगे। वे क्या काम कर चुके हैं और कौन से काम करने बाकी हैं, इसका लेखा-जोखा भी उन्होंने किया। यह दूसरी

चाँदनी रात थी, वह दूसरी रात जबकि मकान के आस-पास मैदान और खेत चाँदनी से नहाये हुए मालूम होते थे। नीचे घाटी में वृक्षों के इस ओर क्लान के आदमियों ने जगह-जगह पर अँगीठियाँ जला रखी थीं। यह अँगीठियाँ मकान के चारों ओर जल रही थीं, परन्तु वे एक-दूसरे से काफी दूर थीं। आज सारी शाम गिडियन को मार्कस का ख्याल आता रहा। अगर सब कुछ ठीक ही हुआ है तो लड़के को शीघ्र ही वापस आ जाना चाहिए। हो सकता है कि कहीं सोने के लिए रुक गया हो। उसे क्लान वालों को धोखा देकर निकल आने में कोई कठिनाई न होगी। मार्कस लोमड़ी की तरह चालाक है। अगर घोड़ी उसके हाथ से चली जाय तो भी वह आसनी से घर आ जायगा। लेकिन उससे ज़्यादा आशा यह है कि उनके पास से निकलकर भागता हुआ पहाड़ी पर चढ़ जायगा। गिडियन ने पहरेदारों को पहले से ही सावधान कर दिया था। लेकिन मार्कस किसी दुर्घटना का शिकार न हो गया हो, यह ख्याल आते ही गिडियन का दिल धड़कने लगा और उसके शरीर में निराशा और भय समा गया। वह कोई और तो क्या रैचल तक को नहीं बता सकता था कि मार्कस और उसके बीच क्या चीज़ काम करती है, गोश्त का गोश्त से खून का खून से क्या सम्बन्ध होता है; वह नहीं कह सकता था कि अपने उस लड़के के साथ शिकार खेलने, काम करने और गाने बजाने में उसे कितना आनन्द आता था। जेफ़ से उसका सम्बन्ध कुछ भिन्न था और वह जानता था कि जेफ़ उससे इतना निकट नहीं है।

एब्नेर लेट कह रहा था, "चौदह के मुकाबले में हमारा एक आदमी मारा गया गिडियन, यह कोई बुरा नतीजा नहीं है।"

"लेकिन उसके पीछे एक परिवार था," गिडियन ने कहा।

"मालूम होता है कि वह दुबारा आक्रमण नहीं करेंगे।"

हैनिबाल वाशिंगटन ने कहा, "वे मूर्ख हैं परन्तु मैं कहता हूँ कि वे आक्रमण करना सीख लेंगे। वे डरते हैं। उनमें अब यहाँ आने का साहस न होगा, पर हो सकता है कि वे और ज्यादा आदमी ले आयें। वह छः-सात सौ आदमी भी ला सकते हैं और मैं क़सम खाकर कहता हूँ कि वे कुछ-न-कुछ ज़रूर कर लेंगे।"

"हमने कुछ ग़लतियाँ भी की हैं," गिडियन ने क़हा। "अगर हम

दोमंजिलें पर अपना मोर्चा बनाते तो वे झाड़ियों में छिपकर भी हमको दीख पड़ते। औरतें नीचे की मंजिल में भी ज्यादा सुरक्षित रहेंगी।

"मैं अपनी गोलियाँ गिन रहा था," हैनिबाल ने कहा।

"मुझे मालूम है।"

किसी ने भी मार्कस का हाल नहीं पूछा, एब्नेर लैट ने कहा, "मौका है मैं कोलम्बिया चला जाऊँ, गिडियन!"

"जरा और ठहर जाओ।"

"मैं लोगों को गोली मारने की तरकीब बताऊँगा, जब तक उन्हें निशाना नज़र न आये गोली नहीं चलानी चाहिए। आज रात तो वह आतिशबाजी की तरह गोलियाँ चला रहे थे।"

"मैं लाशों को आज रात ही दफ़न करना चाहता हूँ।" गिडियन ने कहा।

"मैरियन?"

"और दूसरे मैं यह भी नहीं चाहता कि दिन के समय बच्चे इन्हें देखें।" और थोड़ी देर के बाद उसने पूछा, "हमारे पास कुल कितनी कारतूसें बाकी हैं?"

"भरत की गोलियाँ तो मैंने नहीं गिनीं।"

"रायफलों के कारतूस?"

"लगभग दो हज़ार होंगे।"

"मार्कस आज रात ज़रूर आ जायगा," गिडियन ने कहा।

गिडियन मकान के बड़े दरवाजे पर अकेला खड़ा हुआ था, वहाँ रैचल ने आकर धीरे से कहा, "गिडियन!"

"हाँ?"

वह उसकी बगल में चिपक कर खड़ी होगई, "मुझको यहीं रहने दो, गिडियन!" उसने अपना एक हाथ रैचल की गरदन में डालते हुए कहा। "मार्कस आज रात ही वापस आ जायगा।"

"तुमने उसे क्यों भेज दिया गिडियन?"

"क्योंकि मुझे उस पर भी उतना ही भरोसा है जितना अपने आप पर।"

वे थोड़ी देर तक इसी तरह खड़े रहे, उसके बाद रैचल ने पूछा :

"अगर वह आया तो किस रास्ते से आयेगा, गिडियन ?"

"मालूम नहीं जो रास्ता भी मुनासिब होगा उससे आ जायगा वह ।"

"तुम्हारे ख्याल में वह आ जायगा, गिडियन ?"

"हाँ, मेरा यही ख़्याल है," गिडियन ने कहा ।

"तुम जो बात भी कहते हो गिडियन, वह ऐसी होती है कि होकर ही रहती है ।"

गिडियन ने उसके दोनों कन्धे पकड़ कर उसे बिलकुल अपने सामने कर लिया, "रैचल प्यारी ! मुझे तुमसे कितनी मुहब्बत है ।" रैचल का सिर उसकी ठोढ़ी से लगा हुआ था । "विश्वास रखो, चाहे कुछ हो जाय लेकिन मुझे हमेशा तुमसे मुहब्बत रहेगी । मैं जो कुछ नहीं बनना चाहता था, वह बन गया । लोगों को किसी पथ-प्रदर्शक की आवश्यकता थी, मैंने उनकी इस आवश्यकता को पूरा कर दिया और जब मैंने ऐसा किया तो मैं तुमसे दूर हो गया, तुम्हें अजनबी लगने लगा पर मैं मजबूर था शायद मैं अगर एक बेहतर और ज्यादा शक्तिशाली मनुष्य होता तो—"

"तुम बड़े अच्छे हो, गिडियन !" रैचल ने धीरे से कहा ।

"मुझे तो अस्थायी रूप से दायित्व सम्हालना था, शायद यह लोगों की शक्ति हो जिसने मुझ जैसे हेय व्यक्ति को उन्नति के शिखर पर पहुँचा दिया । मुझे तो कुछ भी नहीं आता । मुझे नहीं मालूम कि कौनसा रास्ता अच्छा है । लेकिन एक दिन वह भी आयगा जब ऐसे लोग पैदा होंगे जो यह सब समझ सकेंगे, अतीत की हमारी त्रुटियों से सीखेंगे । वे एकता का अर्थ समझकर एक साथ मिलकर काम करेंगे, योजनाएँ बनाएँगे और ऐसी चीजें निर्मित करेंगे जिन्हें कोई नहीं जला सकेगा—"

"गिडियन, प्यारे गिडियन," उसने वही शब्द दोहराये जो वह कभी किसी ज़माने में कहा करती थी ।

ओसारे में बातें करते-करते वह गिडियन की गोद में सो गई । गिडियन भी ऊँघने लगा और जब उसकी आँखें खुली तो हैनिबाल वाशिंग्टन सामने खड़ा कह रहा था :

"सुबह हो गई गिडियन !"

अचानक उसका दिल बैठ गया, एक विचित्र-सी टीस उसने महसूस की जब उसे ख्याल आया कि मार्क्स अब वापस नहीं आयगा।

उस दिन और फिर अगले दिन क्लान की पातें बहुत समीप तक पहुँच गईं। अब उनकी संख्या पाँच या छः सौ के लगभग थी और अब पहले से अधिक अनुशासनबद्ध मालूम होती थीं। उन्होंने अपनी रायफलों से निशाना लगाने के लिये ज़मीन में गढ़े खोद लिये और छिप-छिपकर बराबर गोलियाँ चलाते रहे। गाड़ियों के पीछे खड़े हुए दो खच्चर और एक गाय गोलियों का शिकार होगये। लेकिन उससे ज़्यादा उन्हें और कोई नुक़सान नहीं हुआ। औरतों और बच्चों को पहली मंजिल के बड़े हाल में भेज दिया गया, दीवारों पर चटाइयाँ लटका दी गईं और तख्ते लगा दिये गये। गिडियन ने हुक्म दिया कि विल बून और हैनिबाल वाशिंगटन के सिवाय कोई और गोलियों का जवाब न दे। उन दोनों का निशाना सबसे अच्छा था। वे दोनों छत पर चढ़कर साथ-साथ लेट गये, उन्होंने अपनी नालों को गीला कर लिया। वे एक मोर्चे पर केवल पाँच मिनट ठहरते, और बड़ी सावधानी से गोलियाँ चलाते थे। विल बून अपने बड़े दादा के बारे में बात-चीत करने लगा। उसका बड़ा दादा सौ गज की दूरी से भी गिलहरी को निशाना बना देता था, उसका बड़ा दादा यह कर सकता था और वह कर सकता था। आखिर तंग आकर हैनिबाल वाशिंगटन ने कहा :

"बड़ी दादा ! बड़ा दादा !! आखिर बड़ा दादा तेरा होता कौन था ?"

"अच्छा बेटा हब्शी, क्या मेरे नाम से पता नहीं चलता कि बड़ा दादा मेरा कौन था ?"

इनके इस प्रकार छिप-छिपकर गोलियाँ चलाने से क्लान वालों का पूरा ध्यान उनकी ही ओर होगया। मकान की छत पर दो या तीन सौ रायफलों के मुँह मोड़ दिये गये। गोलियाँ छज्जे से टकराती थीं और छावन के परत उड़-उड़ कर उनके चेहरों पर आ रहे थे; उसके दस मिनट बाद ही हैनिबाल वाशिंगटन ने हल्की सी आह भरी और बदन को ढीला छोड़ कर अपनी रायफ़ल पर लेट गया। विल बून ने उसे कोहनी से हिलाया; और फिर यह गोरा आदमी क्लान वालों को

मुँह-ही-मुँह में गालियाँ देने लगा। वह अपनी जगह पर जमा हुआ बड़ी सावधानी के साथ गोलियाँ चला रहा था। उसकी रायफल गर्म हो गई, हाथ लगाने से उँगलियाँ जलती थीं और थोड़ी देर के बाद उसका गोलियाँ चलाना भी बन्द हो गया। उन्होंने अपने आदमियों की लाशों को उस छोटे से अहाते में दफ़न कर दिया जहाँ पर घोड़े और चौपाये इत्यादि बाँधे जाते थे। आश्चर्य की बात यह थी कि अब कोई भी नहीं रो रहा था; लोग खाली-खाली आँखों से देख रहे थे, उनके चेहरों से गम्भीरता प्रकट हो रही थी, बच्चों के चेहरों पर बुढ़ापे की गम्भीरता आगई थी। भाई पीटर ने एक भजन पढ़ा, "मुझ पर जब विपत्ति आई तो मैंने खुदा को पुकारा और उसने मेरी आवाज़ सुनी और कहा तथास्तु।" गिडियन खामोश खड़ा हुआ देखता रहा, सुनता रहा, और उसे वह समय याद आया जबकि हैनिवाल वाशिंगटन जैसा कोई आदमी नहीं था—वह बौने से क़द का काला आदमी जिसका रंग कोयले से मिलता-जुलता था, जो सज्जन, बुद्धिमान, स्वाभिमानी और वीर था। उसका व्यक्तित्व स्वाभिमान और प्रतिष्ठा का प्रतीक था। वह किसी भी काम में चतुराई से हाथ डाल देता था और उसका दिल सारे समाज की मुसीबतों, शिकायतों और समस्याओं का संग्रह बना हुआ था। आज वह कैरोलिना की गर्म ज़मीन पर लेटा हुआ था, और उसकी बगल में एक गोरा आदमी आराम कर रहा था, जिसके परदादा को लोग डैनियल बून के नाम से पुकारते थे।

सारी रात हमला जारी रहा और सुबह होते-होते समाप्त होगया। लोगों ने जब नाश्ता किया तो चारों ओर स्तब्धता का वातावरण था, और उसी स्तब्ध वातावरण में ही बेंजामिन विन्थ्रोप ने बच्चों को पौराणिक कथा पढ़कर सुनाई। उस सन्नाटे की स्थिति में जेफ़ क्लान वाले जख्मी के सरहाने खड़ा होकर उसे दम तोड़ते हुए देख रहा था और उसे यह भी मालूम न हो सका कि उसका नाम क्या है? वह कहाँ का निवासी है और किन चीजों ने उसे यहाँ आने पर मजबूर किया?

इसी सन्नाटे की हालत में बेन्टले एक सफेद झंडा लिए हुए सामने आकर चिल्लाने लगा, "क्या मैं ऊपर आ सकता हूँ?"

कोई जवाब नहीं दिया गया। वह धीरे-धीरे आगे बढ़ा और पचास गज़ की दूरी पर रुककर जो कुछ उसे कहना था वह चिल्लाकर कहने लगा। "कार्वेल-निवासियों में जेफ़ जैक्सन नामक एक डाक्टर है। बूढ़ा डाक्टर लीड एक सप्ताह से शराब के नशे में चूर पड़ा है। क्लान के आदमी ज़ख्मी हैं। एक आदमी का पाँव टूट कर सूज गया है। अगर वह पाँव न काटा गया तो आदमी मर जायगा। क्या जेफ़ जैक्सन नीचे आकर हमारे घायलों का इलाज करेंगे? हम वचन देते हैं कि हम उन्हें सुबह सही-सलामत वापस भेज देंगे।"

एब्नेर लेट ने गिडियन की ओर देखा, और गिडियन ने कटु मुस्कराहट से कहा, "तुमने देखा, वे हमें समझते हैं। हम उन्हें इतना नहीं समझ पाये जितना वे हमें समझ पाये हैं।"

बेंटले वापस चला गया। जेफ़ बरामदे में आकर गिडियन के पास खड़ा हो गया। "सुना तुमने?" गिडियन ने पूछा। जेफ़ ने सिर हिलाकर 'ना' कह दिया।

एब्नेर लेट ने कहा, "मरने दो उनके मरदूद घायलों को।"

फ्रैंक कार्सन बोला, "खुदा की कसम अगर अब की बार वह कुतिया का बच्चा ऊपर आया तो मैं उसे मार डालूँगा।"

"मैं वहाँ जा रहा हूँ," जेफ़ ने कहा।

गिडियन ने उसके बाज़ू पकड़कर उसे अपने सामने घसीट लिया और चीख कर कहने लगा, "क्या तेरा दिमाग खराब हो गया है! मेरा बेटा होकर यह कहता है! क्या इतनी-सी बात भी तेरी समझ में नहीं आती? तुम अब तक शायद यह नहीं समझे हो कि हमारा वास्ता सभ्य लोगों से नहीं है, और हमारे दुश्मन वैसे नहीं हैं जैसा तुम समझते हो। वे लोग जो नीचे खड़े हुए हैं हमें तबाह करना चाहते हैं। इन्सान की जो कल्पना हम करते हैं वे वैसे इन्सान नहीं हैं। वे इस शब्द का अर्थ तक नहीं जानते। नेकी और बदी उनकी दृष्टि में कोई चीज़ ही नहीं। तुम उनकी सही बात नहीं समझा सकते। उन्होंने विवेक व बुद्धि को दूषित कर दिया है। यदि हम उन्हें समझने में ग़लती न करते, यदि हम उन्हें इन्सान समझने की मूर्खता न करते, यदि हम उन पशुओं सम्मुख शिष्टता, सत्य और न्याय को सजाकर न पेश करते तो आज हम ये

न देखते । यही मात्र कारण है कि वे जीत रहे हैं और आज हमारे इस दक्षिणी प्रदेश में तमाम अच्छे, शिष्ट स्त्री-पुरुष उनसे दबे हुए हैं, असंगठित हैं, बँटे हुए हैं और उलझन में पड़े हुए हैं।"

"मैं नीचे जा रहा हूँ," जेफ़ ने कहा। "मैंने शपथ ली थी कि मैं जनता की सुश्रुषा व चिकित्सा करूँगा, प्रण किया था कि मैं लोगों की तोड़ी हुई चीजों को जोड़ कर रखूँगा—"

"नहीं, तुम नहीं जाओगे," गिडियन ने डाँटा। "मैं एक बेटे से हाथ धो बैठा हूँ। लेकिन वह कम-से-कम समझता तो था कि यह क्यों हो रहा है, हम किससे, क्यों लड़ रहे हैं।"

"आप मुझे मारकर ही यहाँ रोक सकते है," जेफ़ ने धीरे से कहा।

"या रब, मेरी मदद कर—" गिडियन कहने लगा और एब्नेर ने उसे डाटते हुए कहा, "उसे जाने दो, गिडियन!"

जेफ़ ने पैर काट दिया और वे उस कराहते हुए, अर्द्ध-चेतन घायलों को उठा ले गये। ज्योंही जेफ़ ने अपने हाथ पोंछे अपने सम्मुख खड़े विस्मय और कौतूहल से उसकी ओर देखते हुए लोगों से उसने कहा :

"अब उसे आराम की जरूरत है। बाक़ी चीजें प्राकृतिक तौर पर ठीक हो जायेंगी। जब मुर्दार गोश्त झड़ जायगा तो टांके आसानी से निकल जायेंगे। उन्हें बहुत ही सावधानी से धीरे-धीरे निकालना चाहिए, क्योंकि उससे बहुत कष्ट होगा। जब टाँके निकल जायेंगे तो घाव अच्छा होने लगेगा। यदि खून में ज़हर न फैला तो कोई भी डाक्टर इलाज कर सकेगा। सबसे बड़ा ख़तरा ज़हर फैलने का ही है।"

वह थक गया था; खुले मैदान में चिलचिलाती धूप में उसको शिगाफ़ करने पड़े। उसने दर्जन-भर घायलों का इलाज किया। अब वह बिल्कुल थक गया था, "अब मैं जाता हूँ," उसने कहा।

"साहब!"

वह झुक कर अपना बैग बंद कर रहा था, ऊपर नजरें उठाईं तो देखा कि वह आदमी खड़ा है जिसने "साहब" कहा था। वह चौड़े कंधों का, धूप से

झुलसे चेहरे वाला आदमी था जिसका हाथ पिस्तौल के घोड़े पर था।

"मैंने कहा, मैं अब जा रहा हूँ।"

"साहब!"

शेरिफ बेंटले के समीप खड़े होकर जैसन ह्यूगर ने कहा, "आप डाक्टर बन गये। जब हब्शी भी डाक्टर होने लगे हैं तभी तो ऐसी विपत्तियाँ आने लगी हैं। जिनका हमें सामना करना पड़ रहा है।"

जेफ़ ने क्षण भर उसकी ओर देखा, अपना बैग बंद करके उठा लिया और चलने लगा। चौड़े कंधों वाला आदमी उसके सामने खड़ा हो गया।

"साहब!" उसने कहा।

"क्या चाहते हैं आप?" जेफ़ ने पूछा।

"मैं चाहता हूँ कि तुम उसी तरह का व्यवहार करो जो कि एक मरदूद हब्शी को करना चाहिए। जब अपने से बड़े से बात करो तो **साहब** कहो समझे!"

जेफ़ ने विस्मय व कौतूहल से उस व्यक्ति को देखा। उस समय उसके विचार भय और आतंक से घिर गये, लेकिन उसकी तार्किक उत्सुकता उससे भी बढ़कर थी, जो अपने आप उसमें उत्पन्न हो रही थी। यह वह इच्छा थी जिसके द्वारा जेफ़ कार्वेल की पाशविक घटनाओं और गिडियन की बातों की रोशनी में उस व्यक्ति की शिष्टता पर युक्तिपूर्वक विचार करना चाहता था।

"आप चाहते हैं, मैं आपको **साहब** कह कर संबोधित करूँ?"

"हाँ।"

"साहब!" जेफ़ ने सिर नीचा करके कहा, "अगर आप आज्ञा दें तो मैं जाऊँ, साहब?"

बेंटले हँस पड़ा। जैसन ह्यूगर ने कहा, "तुम नहीं जाओगे, जैक्सन!"

"क्या मतलब है आप का?"

"तुम वापस नहीं जाओगे बस, और क्या?"

बेण्टले ने बीच में पड़कर कहा, "कल तुम्हारी वहाँ कोई जरूरत नहीं होगी, जैक्सन! इसलिये तुम यहीं रहो।"

जेफ़ ने बड़ी स्थिरता से उनकी ओर देखा, अब भी भय उसकी उत्सुकता का

एक अंश-मात्र था। विज्ञान में असंभव कोई चीज़ नहीं होती। सदा हर चीज़ का कोई कारण होता है और वह भी तर्कपूर्ण।

"मैं यहाँ इसलिए आ गया," उसने कहा, "क्योंकि मैं रोगियों व घायलों की चिकित्सा करना अपना कर्त्तव्य समझता हूँ। समझे आप? मैं यहाँ आगया क्योंकि आपने मुझे बुलाया था। एक डाक्टर की हैसियत से मैं आपको इन्कार नहीं कर सकता था। तो क्या यही आपका विवेक और न्याय है कि मैं यहाँ रुक जाऊँ?"

चौड़े कंधों वाले आदमी ने कहा, "कुतिया के बच्चे हब्शी, 'साहब' क्यों नहीं कहता?"

जेफ़ ने सिर हिलाया, "मैं जा रहा हूँ।" वह चौड़े कंधों वाले आदमी को अलग हटा कर आगे बढ़ गया। यही सब कुछ वह जान सका, यही उसकी स्मृति थी जो शीघ्र ही समाप्त हो गई, एक विस्फोट हुआ और उसने उसे निगल लिया। वह जमीन पर गिरा, उसका बैग उसके नीचे दब गया। चौड़े कंधों वाले आदमी ने कहा :

"मरदूद! साला हब्शी।"

रैचल और जेनी एलेन के पास बैठी थीं; लेकिन उससे कहने के लिए उसके पास कुछ नहीं था। उसकी आँखों के अँधेरे में सारी दुनिया खो गई थी और अब उस अँधेरे की कोई सीमा न थी।

उस रात एब्नेर लेट ने गिडियन से कहा, "मार्कस का क्या हुआ, तुम्हें मालूम है?"

"हाँ, मालूम है।"

"मुमकिन है वह तार न भेज सका हो।"

"हाँ, हो सकता है उसने न भेजे हों," गिड़ियन ने कहा। दुःख और दर्द की भी एक सीमा होती है।

"किसी न किसी को तो यह काम करना ही है," एब्नेर लेट ने कहा। "लोगों को किस तरह मालूम होगा कि हम पर यहाँ क्या बीत रही है? इस अभागी दुनिया में किसी को क्या पता चलेगा कि यहाँ क्या हो रहा है? क्या हम

जानते हैं दूसरी जगह क्या हो रहा है? उन्होंने हमें घेर कर सारी दुनिया से अलग कर दिया है। उन्होंने हमें ऐसा अलग किया है और जकड़ा है कि क्या नरक में भी लोग जकड़े जायेंगे। शायद दक्षिणी प्रदेश के हर स्थान को इसी प्रकार उन्होंने कैद कर रखा है। शायद कोई भी यह न जानता हो, कहाँ क्या हो रहा है।"

"हाँ, शायद।" गिडियन ने कहा।

"तार फिर से लिख दो। कोलम्बिया जाकर उन्हें भेज दूँगा।"

"और यदि उन्होंने न भेजे तो?"

"तो फिर मैं उन्हें सीधा वाशिंगटन ले जाऊँगा।"

"अच्छा तो ठीक है," गिडियन ने कहा। "अगर तुम यहाँ तक तैयार हो तो ठीक है।"

एब्नेर ने हैनिबाल वाशिंगटन का बेहतरीन घोड़ा चुन लिया। पैदल जाना तो बेकार था; केवल एक यही तरीका था कि वह घोड़े को एड़ लगाकर उनके बीच से निकल जाय; और यह संभव भी था।

यह हो भी जाता लेकिन घोड़ा मकान से आधा मील भी न जा पाया होगा कि उन्होंने गोली चला दी, घोड़ा वहीं गिर पड़ा और एब्नेर लेट उसके नीचे दब गया, उसकी टाँग टूट गई थी। वे घोड़े के नीचे से निकाल कर जैसन ह्यूगर के पास ले गये। ह्यूगर ने उससे कहा :

"हब्शियों के प्रेमियों व समर्थकों को दण्ड देने का विशेष ढंग होता है। फ्रेड मैक्हफ उसका मजा चख चुका है।"

"तू जा जहन्नुम में," एब्नेर ने उससे कहा।

इसके बाद एब्नेर कुछ न बोला। उन्होंने उसके हाथ बाँध कर लटका दिया और रात भर उसके शरीर पर कोड़े मारते रहे।

जैसन ह्यूगर की बारी आई तो उसने कोड़े को हाथ में लेते हुए कहा, "मैं इस कुतिया के पिल्ले से बुलवा कर छोड़ूँगा।" लेकिन एब्नेर लेट ने अपने होंठ बन्द रखे। दूसरे दिन भी वह इसी तरह लटका रहा; लेकिन अब वह अचेत था, उसे अब होश न था कि उसकी शक्ति अनेकों की शक्ति का अंश-मात्र थी और अब

उसे यह भी खबर नहीं थी कि वह खूब लड़ा था। वह संसार जिसका केवल एक छोटा टुकड़ा ही उसने देखा था और वे अच्छे साथी जिन्हें वे जानता था, सब कुछ वह भूल चुका था, उसे कोई सुध न थी।

अगले दिन गिडियन ने उन्हें एक छोटी तोप घसीटकर लाते हुए देखा। उसे मील के एक तिहाई भाग के फ़ासले पर लाकर रख दिया गया। पहले तो गिडियन की समझ में न आया कि यह माज़रा क्या है। लेकिन जब उन्होंने चौबीस घण्टे मकान पर गोली भी नहीं चलाई तो उसे शंका हुई कि कुछ अनहोनी होनेवाली है। और अनेकों संभावनाओं में से एक यह भी थी। फ्रैंक कार्सन ने कहा :

"उन्होंने यह किसी शस्त्रागार से प्राप्त की होगी।"

"हूँ, हमारा इतना महत्त्व है," गिडियन ने कटु स्वर में कहा। उससे अधिक कहने को कुछ न था। जब उसने बेंजामिन विंथ्रोप से बातचीत की तो वह असाधारणतया शांत व स्थिर प्रतीत हो रहा था। उसने कहा, "सब को नीचे तहखाने में ले जाओ।" तुमने कोशिश की कि अंत न आय; तुम युद्ध करते रहे। तुमने आशा का दामन नहीं छोड़ा और वह भी एक तरीक़ा था। सभी प्रकार के अमानुषिक अत्याचारों को सहन करके तुमने समझा कि उसके आगे भी कोई चीज है, उस आवश्यम्भावी अंत के आगे भी है और जब तुमने यह समझ लिया तो तुम्हारा नाता दूसरों से जुड़ गया, तुम्हारा सम्बन्ध उन तमाम छोटे, शूरवीर, भयभीत लोगों से होगया जिन्होंने उस समय भी अपना सिर नहीं नवाया जबकि उनका अंत निकटतम था।

"यही ठीक भी होगा," बेंजामिन विंथ्रोप ने कहा। "हम गीत गायेंगे। मैं उन्हें प्रसन्न रखूँगा।" वह अब भी अपना धातु के फ्रेम का चश्मा लगाये हुए था।

"धन्यवाद," गिडियन ने कहा।

वह फ्रैंक कार्सन, लेजली कार्सन, फर्डिनैण्ड लिंकन के साथ बरामदे में खड़ा होकर देखने लगा कि वे तोप के निशाने की दूरी जानने की कोशिश कर रहे थे।

"वे अच्छे तोपची नहीं हैं," लेजली कार्सन ने ग्लानि से कहा।

पहला गोला मकान से सौ गज उस पार एक ओर जाकर गिरा। चार और

गोले मकान के इस तरफ और उस तरफ दूर फासले पर जा गिरे। गिडियन ने लोगों को अंदर बुलाया। वे तख्तों और चटाइयों के पीछे खड़े होकर लम्बे फासले पर खड़े हुए तोपचियों पर निशाना लगाने लगे। अब इन्हें बारूद के खतम हो जाने की कोई चिंता न थी। वे गोलियाँ चला रहे थे, क्योंकि वे किसी-न-किसी तरीके से सामना करना अपना कर्त्तव्य समझते थे। मकान पर लगने वाला पहला गोला ऊपर की चाँदनी पर पड़ा और उन पर मिट्टी व चूने की वर्षा होने लगी।

"सफेद झण्डा लहराओ," गिडियन चिल्लाया। "जल्दी करो, हम औरतों और बच्चों को यहाँ से निकाल कर ले जाने की कोशिश करेंगे।"

जेक सटर सफेद झण्डा लेकर बरामदे में चला गया। वह इसे दायें-बायें हिलाने लगा। क्लान वालों ने उसे देखा और अपनी तोप का थोड़ा-सा रुख उसकी ओर कर दिया। दूसरा गोला बरामदे में ठीक उसी जगह लगा जहाँ वह खड़ा हुआ था।

भाई पीटर लोगों के बीच खड़े हुए थे। उनके आसपास औरतें, नवयुवतियाँ, बच्चे और लड़के खड़े थे—ऐसे लड़के जिन्होंने अभी दुखदायी व आश्चर्यजनक युवावस्था में पदार्पण किया था, ऐसी लड़कियाँ जिनकी सख्त छातियाँ पके हुए सेबों की भाँति फराकों में से उभरी हुई दिखाई दे रही थीं। उनके आस-पास बूढ़ी दादियाँ और दूधमुँहे बच्चे थे और ये बच्चे शब्दों के रहस्य को समझने की चेष्टा कर रहे थे। भाई पीटर ने निर्भय होकर कहा, "जब मुझे खुदा पर विश्वास है और वही मुझे मोक्ष प्रदान करेगा तो मैं फिर किसी से क्यों डरूँ ?"

पहला गोला छत पर आकर गिरा। मि० विथ्रोप ने एक काले लड़के और भूरे बालों वाली छोटी लड़की को अपनी बाजुओं में छिपा लिया।

"तो फिर मैं किसी से क्यों डरूँ ?" भाई पीटर ने पूछा।

लोगों ने कहा, "आमीन।"

"खुदा मेरी जिंदगी की ताक़त है......"

गिडियन के मस्तिष्क की अंतिम स्मृति प्रारम्भिक काल से शुरू हुई—लोग किस प्रकार गुलाम बनाये जाते थे, उन्हें किस तरह जानवरों की तरह बेचा और खरीदा जाता था। किस तरह उनकी हालत का बुरा असर उन लोगों पर पड़ा जिनका रंग

काला नहीं था, मगर जो अपने हाथों से मेहनत-मज़दूरी करते थे। किस तरह आशा की किरण उस अँधियारे वातावरण में विलीन हो गई थी; लेकिन उसके बावजूद लोगों ने उम्मीद का दामन न छोड़ा था।

जब गोला गिरा, फटा और उसने गिडियन जैक्सन की अंतिम स्मृति को भी समाप्त कर दिया तो उसके मस्तिष्क में आखिरी याद अपने देश की काली व गोरी जनता की शक्ति का प्रतिबिम्ब था। वह शक्ति जिसने एक लंबे युद्ध के बाद विजय प्राप्त की थी, जिसने बर्बादी के बावजूद उन्हें निर्माण-कार्य करने योग्य बना दिया था, जिसने उनसे एक उज्वल भविष्य का वायदा किया था। यह वायदा एक प्रकार से संसार के तमाम अन्य वायदों से श्रेष्ठ था। इस शक्ति की आश्चर्यजनक पर सीधे-सादे अवयव—जनता थी। उसका बेटा मार्कस था, उसकी पत्नी रैचल थी, उसकी बेटी जेनी थी; वह बूढ़ा आदमी था जिसे लोग भाई पीटर के नाम से पुकारते थे; वह ऊँचा व लाल बालोंवाला गोरा आदमी था जिसे एब्नेर लेट कहते थे। वह नाटा, बुद्धिमान, काला आदमी था जो हैनिबाल वाशिंगटन कहलाता था—ये अवयव असंख्य थे, उनके रूप-रंग, और बनावटें असंख्य थीं, कुछ बलवान, कुछ निर्बल, कुछ बुद्धिमान, कुछ मूर्ख; लेकिन उन सबको मिलाकर वही पूरी चीज़ बनती थी जो गिडियन के मस्तिष्क में आखिरी याद बनकर आई थी, चीज़ जिसकी ठीक-ठीक परिभाषा करना असंभव है और जो अविजेय है।

कार्वेल के मकान के चारों ओर खड़े हुए क्लान वालों ने धूप से बचने के लिए सफेद कनटोप ओढ़ रखे थे और वे खड़े हुए पुराने मकान को जलता हुआ देख रहे थे। मकान की लकड़ी सूखी थी। एक बार आग पकड़ने पर किसी प्रकार बुझ न सकती थी। दिन भर मकान जलता रहा, और शाम होते-होते सब कुछ राख हो गया। लेकिन वे सात लम्बी चिमनियाँ अब भी बाकी रह गई थीं, जिन्हें हैनिबाल वाशिंगटन के बाबा ने बनाया था।

उपसंहार

आप मुझसे पूछेंगे और वह न्याय-संगत भी होगा कि इस कहानी में कुछ सच्चाई भी है ? और यदि है तो वह इससे पहले क्यों प्रगट नहीं की गई ?

पहले प्रश्न का उत्तर यह है कि इस कहानी की तमाम आवश्यक घटनाएँ सच्ची हैं। उस काल में दक्षिणी प्रदेश में एक नहीं बल्कि छोटे-बड़े हजारों कार्वेल थे। वे सब कुछ जिसका होना मैंने कार्वेल में बताया है, वह कई स्थानों पर दुहराया गया था। मैंने जिस प्रकार चित्रित किया है काले और गोरे लोग साथ-साथ रहते थे, साथ मिलकर काम करते थे और उनका निर्माण भी एकजूट संघर्ष का ही परिणाम था। और एक जगह नहीं बल्कि अनेक स्थानों पर उन्होंने अपने निर्माण की रक्षा के लिए साथ मिलकर ही जानें दी थीं। जो व्यक्ति इन तथ्यों की खोज-बीन करना चाहे उसके लिए साधनों की कमी नहीं होगी। कू क्लुक्स षड़यत्र पर ज्वाईंट सिलेक्ट कमेटी का प्रमाण मौजूद है, जो विद्रोही राज्यों की परिस्थितियों की खोज-बीन करने के लिए बैठाई गई थी और जिसने इस प्रकार की घटनाओं से भरे तेरह ग्रंथ संकलित किये हैं। सन् १८७५ ई० के मिसीसिपी-चुनावों की तहक़ीक़ के लिए जो सिनेट कमेटी बैठाई गई थी उसकी रिपोर्ट भी दो जिल्दों में मौजूद है। दक्षिणी केरोलिना और जॉर्जिया आदि की स्थिति पर काल शुर्ज ने कांग्रेस के सामने जो रिपोर्ट पेश की थी, वह भी एक बहुत बड़ा प्रमाण है। "मुक्ति-संग्राम में हब्शी सिपाही" नामक हॉलोवेल की पुस्तक है। सिमकिन्स और वुडी की पुस्तक, "दक्षिणी केरोलिना और पुर्ननिर्माण" भी मौजूद है। और यह तो केवल प्रारम्भ ही है। यदि इससे आगे भी बढ़ें तो उस समय के अखबार हैं; कांग्रेस में हुई बहसें हैं; और दक्षिणी व उत्तरी प्रदेशों के अखबारों के सम्पादकीय लेख हैं, जिनसे प्रकट होता है कि उन्हें उस आमहत्या व संहार का पूर्ण ज्ञान था।

जहाँ तक गिडियन जैक्सन का सम्बन्ध है, वह उस ज़माने के कई हब्शी